Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10.83
UHP2

...ु यीशु

...और

...अनुचर

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'प्रभु का आत्मा मुझ पर है
उन्होंने मुझको अभिषिक्त किया है,
कि दीन जनों को सुसमाचार सुनाऊं।
उन्होंने मुझे भेजा है कि बंदियों को मुक्ति का
और अंधों को दृष्टि प्राप्ति का संदेश दूं,
दलितों को स्वतंत्रता प्रदान करूं,
तथा प्रभु की प्रसन्नता के वर्ष का प्रचार करूं।'

—लूका ४:१८,१९

क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम रखा कि अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे, नष्ट न हो, परन्तु शाश्वत जीवन पाए।

— यूहन्ना ३:१६
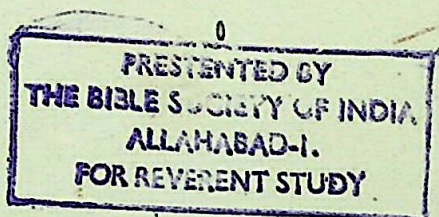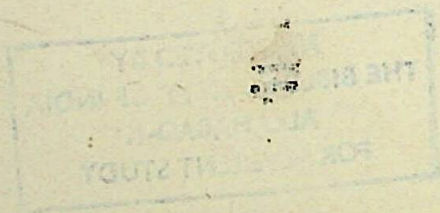
PRESENTED BY
THE BIBLE SOCIETY OF INDIA
ALLAHABAD-1.
FOR REVERENT STUDY

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूची–पत्र

पुस्तकों के नाम | पृष्ठ

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब पौलुस अरियोपिगुस के बीच खड़े होकर कहने लगे, 'अथेने निवासी सज्जनो, मैं देखता हूं कि तुम बड़े धर्मप्रेमी हो। जब मैं घूमता-फिरता तुम्हारी आराध्य वस्तुओं को देख रहा था तो मुझे एक वेदी भी मिली जिस पर लिखा था, "अज्ञात देवता के लिए।" जिसे तुम अनजाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसी का संदेश देता हूं। जो परमेश्वर जगत् एवं उसमें स्थित प्रत्येक वस्तु के रचयिता हैं, जो आकाश और पृथ्वी के अधिपति हैं, वह हाथ के बनाए मंदिरों में निवास नहीं करते और न उन्हें किसी वस्तु का अभाव है कि मनुष्य के हाथों से सेवा ग्रहण करें; क्योंकि वह तो स्वयं सबको जीवन, श्वास और समस्त वस्तुएं प्रदान करते हैं। उन्होंने एक ही मूल से मनुष्य की प्रत्येक जाति का निर्माण किया कि वे सारी पृथ्वी पर निवास करें। उन्होंने इतिहास की अवधि और निवास की सीमाएं निर्धारित कर दीं कि लोग परमेश्वर को ढूंढ़े और खोजते हुए कदाचित उन्हें प्राप्त करें। फिर भी वह हम में से किसी से दूर नहीं हैं, क्योंकि "उन्हीं में हम जीवित रहते, चलते-फिरते और अस्तित्व रखते हैं;" तुम्हारे ही कुछ कवियों ने कहा है, "निश्चय ही हम उनके वंशज हैं।"

'अब यदि हम उनके वंशज हैं, तो हमें समझना चाहिए कि परमेश्वरतत्व, सोने, चांदी अथवा पत्थर की प्रतिमा के सदृश नहीं है जो मनुष्य की कला और कल्पना की उपज हैं। परमेश्वर ने अज्ञानता के समय पर ध्यान नहीं दिया, परंतु अब उनकी आज्ञा है कि सर्वत्र सब मनुष्य हृदय-परिवर्तन करें, क्योंकि उन्होंने एक दिन निश्चित कर दिया है जब वह पूर्व-निर्धारित मानव के द्वारा संसार का धर्मपूर्वक न्याय करेंगे, और उन्होंने इस व्यक्ति को मृतकों में से जीवित कर सब को इस बात का प्रमाण दे दिया है।"

—प्रेरित १७:२२-३१

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा निश्चित मत है कि जो महिमा हम पर प्रकट होनेवाली है, उसकी तुलना में वर्तमान समय के दुःख नगण्य हैं। सृष्टि आतुर उत्कंठा से परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रही है; क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से निस्सारता के अधीन नहीं हुई परंतु उसकी इच्छा से जिसने उसे अधीन कर दिया; इस आशा से कि स्वयं सृष्टि विकृति की दासता से मुक्त हो और परमेश्वर के संतान की गौरवपूर्ण स्वतंत्रता में भाग ले। हम जानते हैं कि समस्त सृष्टि अब तक प्रसव वेदना के कष्ट में कराह रही है। केवल यही नहीं, वरन् हम भी, जिन्हें आत्मा का प्रथम फल प्राप्त है. भीतर ही भीतर तड़पते हैं और दत्तकता अर्थात् शरीर के विमोचन की प्रतीक्षा करते है। इस आशा में हमारा उद्धार हुआ है। यदि आशा दृष्टि का विषय हो जाय तो वह आशा कहाँ रही। मनुष्य जिस वस्तु को देख रहा है उसकी आशा क्या करेगा? परंतु यदि हम उस वस्तु की आशा करते हैं जिसे नहीं देखते, तो धीरतापूर्वक उसकी प्रतीक्षा करते हैं।

रोमियो ८:१८-२५

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएं बोलूं, किंतु मुझमें प्रेम न हो, तो मैं ठनठनाता घड़ियाल और झनझनाती झांझ हूं। यदि मैं नबूवत कर सकूं, समस्त रहस्य और समस्त ज्ञान को जान लूं, एवं मेरा विश्वास इतना पूर्ण हो जाए कि पहाड़ों को विचलित कर सकूं, किंतु मुझमें प्रेम न हो, तो मैं कुछ भी नहीं हूं। यदि मैं अपनी संपूर्ण संपत्ति दान में वितरित कर दूं और अपना शरीर भस्म होने के लिए अर्पित कर दूं, किंतु मुझमें प्रेम न हो, तो मुझे कोई लाभ नहीं।

प्रेम सहिष्णु है, प्रेम दयालु है, यह ईर्ष्या नहीं करता, अहंकार नहीं करता, आत्मश्लाघा नहीं करता, । प्रेम अभद्र व्यवहार नहीं करता, स्वार्थ नहीं खोजता, झुंझलाता नहीं, बुराई का लेखा नहीं रखता, पतन पर प्रसन्न नहीं होता—वरन् सत्य से प्रसन्न होता है। प्रेम सब बातें सहन करता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धैर्य रखता है।

प्रेम का अंत कभी न होगा: नबूवतें हैं, वे समाप्त हो जाएंगी; भाषाएं हैं, वे मौन हो जाएंगी; विद्या है, वह व्यर्थ हो जाएगी; क्योंकि हमारी विद्या अधूरी है, और अधूरी है हमारी नबूवत, किंतु जब पूर्ण आएगा तो अपूर्ण का अंत हो जाएगा। जब मैं बालक था तो बालक से सदृश बोलता था, बालक के सदृश सोचता था और बालक के सदृश समझता था; परंतु जब वयस्क हुआ तो बालकों की सी बातेंछोड़ दीं। इस समय हमें दर्पण में धुंधली प्रतिच्छाया दीख पड़ती है, परंतु उस समय हम प्रत्यक्ष देखेंगे। इस समय मेरा ज्ञान अपूर्ण है—उस समय पूर्ण रूप से जानूंगा, जैसे परमेश्वर मुझे पूर्ण रूप से जानते हैं अस्तु, विश्वास, आशा और प्रेम, ये तीनों स्थायी हैं, किंतु इन सबमें महान् है प्रेम।

— कुरिन्थियों १३:१-१३

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लूका रचित सुसमाचार

प्रस्तावना

1 अनेक लेखकों ने प्रयास किया है कि हमारे बीच में सम्पन्न १
हुई घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करें, जैसा कि हमें उनसे २
प्राप्त हुआ है जो आरंभ से ही प्रत्यक्षदर्शी और वचन के सेवक
थे, अतः हे थियुफिलुस महोदय, सब बातों का आरंभ से सावधानी ३
पूर्वक अनुशीलन करने के पश्चात् मैंने भी उचित समझा कि आपके
लिए क्रमानुसार विवरण लिखूं कि जिन बातों की शिक्षा आपको ४
मिली है, उनकी सत्यता के संबंध में आप जान सकें।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के जन्म के संबंध में भविष्यवाणी

यहूदिया के राजा हेरोदेस के समय में अविय्याह के दल में ५
जकरयाह नामक पुरोहित थे। उनकी पत्नी हारून-वंश की थीं
और उनका नाम इलीशिवा था। वे दोनों परमेश्वर की दृष्टि ६
में धर्मात्मा थे और उनका आचरण प्रभु की समस्त आज्ञाओं और
विधियों के अनुसार निर्दोष था। पर उनके कोई संतान नही थी; ७
क्योंकि इलिशिवा वांझ थीं और दोनों की आयु ढल चुकी थी।

जब जकरयाह अपने दल की पारी पर परमेश्वर के सामने ८
पुरोहित का कार्य कर रहे थे तो पुरोहितों की प्रथा के अनुसार ९
उनके नाम पर चिट्ठी निकली कि प्रभु के मंदिर में जाकर धूप-दान
दें। धूप-दान के समय लोगों का समस्त समुदाय बाहर प्रार्थना १०
कर रहा था। तब प्रभु का दूत धूप की वेदी की दाहिनी ओर ११
खड़ा हुआ उनको दिखाई दिया। उसे देखकर जकरयाह व्याकुल १२
और भयभीत हो उठे।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरियम-इलीशिवा मिलन

३९ उन दिनों मरियम उठीं और पहाड़ी प्रदेश में यहूदा के एक नगर
४० को शीघ्रता से गईं। उन्होंने जकरयाह के घर में प्रवेश कर इलीशिवा को
४१ नमस्कार किया। जब इलीशिवा ने मरियम का नमस्कार सुना तो उनकी कोख में बालक उछल पड़ा। इलीशिवा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गईं,
४२ और ऊंचे स्वर में बोल उठीं, 'नारियों में आप कीर्तनीय हैं, और कीर्तनीय
४३ है आपकी कोख का फल। मुझ पर यह अनुग्रह कैसे हुआ कि मेरे प्रभु
४४ की माता यहां पधारीं। देखिए, आपके अभिवादन की वाणी ज्योंही मेरे
४५ कानों में आई, बालक मेरी कोख में उल्लास के कारण उछल पड़ा। धन्य हैं वह नारी जिसने विश्वास किया कि जो कुछ प्रभु ने उससे कहा है, वह पूर्ण होगा।'

मरियम का स्तोत्र

४६ इस पर मरियम ने कहा,
'मेरे प्राण प्रभु का गुणगान करते हैं,
४७ मेरी आत्मा अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में उल्लसित है,
४८ क्योंकि उन्होंने अपनी दासी की दीनता पर दया-दृष्टि की है।
देखिए, अब से सब पीढ़ियां मुझे धन्य कहेंगी,
४९ क्योंकि सर्वशक्तिमान् ने मेरे लिए महान् कार्य किए हैं।
'पवित्र' है उनका नाम,
५० और उनकी दया, उन पर जो उनसे डरते हैं,
पीढ़ी से पीढ़ी तक रहती है।
५१ उन्होंने अपना बाहुबल प्रदर्शित किया है,
और उन अहंकारियों को जो मन में अपने को कुछ समझते थे,
उन्होंने तितर-बितर कर डाला है।
५२ उन्होंने शक्तिशालियों को सिंहासनों से उतारा है,
और दीनों को महान् बनाया है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया है, ५३
और धनवानों को रिक्तहस्त लौटा दिया है।
उन्होंने अपनी दया का स्मरण कर ५४
अपने दास इस्राएल को संभाला है,
जैसा उन्होंने हमारे पूर्वज, ५५
अब्रहाम तथा उनकी संतान से सदा कहा था।'

मरियम प्रायः तीन महीने इलीशिवा के साथ रह कर अपने घर ५६ लौट गईं।

यूहन्ना का जन्म, जकरयाह का गान

प्रसवकाल आने पर इलीशिवा के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। जब ५७ उनके पड़ोसियों और संबंधियों ने सुना कि उन पर प्रभु की बड़ी दया ५८ हुई है तो उनके साथ आनन्द मनाया। आठवें दिन वे बालक का खतना ५९ करने आए और उसके पिता के नाम पर उसका नाम जकरयाह रखने लगे; परंतु उसकी माता ने कहा, 'नहीं, उसका नाम यूहन्ना रखा जाएगा।' ६० लोगों ने कहा, 'यह नाम आपके कुटुम्ब में किसी का नहीं है,' और उसके ६१ पिता से संकेत कर पूछा, 'आप इसका नाम क्या रखना चाहते हैं?' उन्होंने ६२ पट्टी मांग कर लिखा, 'उसका नाम यूहन्ना है।' इस पर सब चकित हुए। ६३

उसी क्षण जकरयाह का मुख तथा वाणी खुल गई और वह परमेश्वर ६४ की स्तुति करने लगे। इससे पड़ोसियों पर भय छा गया, और इन सब ६५ बातों की चर्चा यहूदिया के समस्त पर्वत-प्रदेश में फैल गई। सब सुनने ६६ वालों ने ये बातें मन में रखीं और कहा, 'कौन जाने यह बालक क्या बनेगा?' क्योंकि सचमुच उस पर प्रभु का हाथ था।
उसके पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर नबूवत करने लगे, ६७
'इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो; ६८
क्योंकि उन्होंने अपनी प्रजा की सुधि ली और उसकी मुक्ति की है। ६९
उन्होंने अपने सेवक दाऊद के वंश में

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे लिए शक्तिशाली उद्धारकर्ता* को उत्पन्न किया है ;
७० जैसा उन्होंने अपने पवित्र नबियों द्वारा
प्राचीन काल से ही कहा था,

७१ कि वह हमारे शत्रुओं से
और सब द्वेषियों के हाथ से
हमारा उद्धार करेंगे ।
७२ वह हमारे पूर्वजों के साथ दयापूर्ण व्यवहार करेंगे,
और अपने पवित्र व्यवस्थान को स्मरण करेंगे—
७३ उस शपथ को जो उन्होंने हमारे पूर्वज अब्राहम से खाई थी
७४-७५ कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से मुक्त होकर,
निर्भयता, पवित्रता और धार्मिकता के साथ,
जीवन भर उनकी सेवा करें ।
७६ और हे बालक, तू सर्वोच्च का नबी कहलाएगा
क्योंकि तू प्रभु के आगे आगे चलेगा
कि उनके मार्ग तैयार करे,
७७ और उनकी प्रजा को पाप-क्षमा द्वारा
उद्धार का ज्ञान प्रदान करे ।
७८ हमारे परमेश्वर के सदय हृदय होने के कारण
हम पर स्वर्ग से प्रात:कालीन प्रकाश का उदय होगा,
७९ कि वह अंधकार और मृत्यु की छाया में
बैठे हुओं पर प्रकाशित हो,
और हमारे चरणों को शान्ति के पथ पर सीधे चलाए ।'

८० वह बालक बढ़ता गया और आत्मा में सबल होता गया । तथा इस्राएल के सामने प्रकट होने के दिन तक निर्जन प्रदेश में रहा ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*अक्षरशः 'उद्धार का सींग'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यीशु का जन्म

2 उन दिनों औगुस्तुस कैसर ने आदेश निकाला कि समस्त साम्राज्य की जनगणना की जाए। यह पहिली जनगणना उस समय हुई जब क्विरिनियुस सूरिया का राज्यपाल था। सब लोग नाम लिखवाने अपने अपने नगर को जाने लगे। यूसुफ भी, क्योंकि वह दाऊद के कुटुंब और वंश के थे, गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गए कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थीं, नाम लिखवाएं। जब वे वहां थे तो मरियम का प्रसवकाल आ गया, और उन्होंने अपने पहिलौठे पुत्र को जन्म दिया तथा उन्हें वस्त्र में लपेट कर चरनी में लिटाया, क्योंकि उनके लिए सराय में स्थान नहीं था। उस प्रदेश में चरवाहे थे जो रात को मैदान में रह कर अपने झुंड की रखवाली कर रहे थे। सहसा प्रभु का दूत उनके समीप आ खड़ा हुआ और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमकने लगा। वे अत्यंत भयभीत हो उठे। स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'डरो मत, देखो मैं तुम्हें बड़े आनंद का सुसमाचार सुनाता हूं, जो सब लोगों के लिए होगा : आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता ने जन्म लिया है ; यही प्रभु ख्रिस्त हैं। तुम्हारे लिए चिह्न यह होगा कि तुम एक नवजात बालक को वस्त्र में लिपटे और चरनी में लेटे पाओगे।' तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गीय सेना का समूह दिखाई पड़ा जो परमेश्वर की स्तुति कर रहा था,

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३

'आकाश में परमेश्वर की महिमा, १४
पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न हैं शांति *।'

जब स्वर्गदूत उनसे विदा होकर स्वर्ग को चले गए तो चरवाहे आपस में कहने लगे, 'आओ, हम बैतलहम चलें और यह घटना देखें जो प्रभु ने हम १५

---

*अथवा 'पृथ्वी पर उनके कृपापात्र जनों में शांति' ;
अथवा 'पृथ्वी पर शांति और मनुष्यों में सद्भावना'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६ पर प्रकट की है।' वे शीघ्रतापूर्वक गए और पता लगाने पर मरियम
१७ यूसुफ एवं चरनी में लेटे बालक को पाया। यह देखकर उन्होंने बालक
१८ के संबंध में कही गई बातें प्रकट कर दीं। चरवाहों के कथन पर सब सुनने
१९ वालों को आश्चर्य हुआ, पर मरियम सब बातें मन में रखे रहीं और उनका
२० चिंतन करती रहीं। चरवाहे,जैसा उनसे कहा था वैसा ही सब सुन कर और देखकर, परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए।

२१ आठ दिन की समाप्ति पर जब बालक का खतना हुआ तो उनका नाम यीशु रखा गया। यही नाम उनके गर्भ में आने के पूर्व स्वर्गदूत ने उनको दिया था।

यीशु का मंदिर में समर्पित किया जाना

२२ मूसा की व्यवस्था के अनुसार उनके शुद्धिकरण के दिन पूरे हुए तो वे
२३ बालक को यरूशलेम ले गए कि उन्हें प्रभु को अर्पित करें (जैसा प्रभु की व्यवस्था में लिखा है कि प्रत्येक पहिलौठा प्रभु के लिए पवित्र माना जाएगा),
२४ और प्रभु की व्यवस्था के अनुसार 'एक जोड़ा पंडुक या कबूतर के दो बच्चों की बलि दें।'

शमौन का गीत

२५ यरूशलम में शमौन नामक एक धर्मात्मा और श्रद्धालु मनुष्य थे, जो इस्राएल के आश्वासन की प्रतीक्षा कर रहे थे। पवित्र आत्मा उन पर था,
२६ और उन्हें पवित्र आत्मा से यह प्रकाश मिला था कि जब तक प्रभु के ख्रिस्त
२७ का दर्शन न कर लें उनकी मृत्यु न होगी। वह आत्मा की प्रेरणा से मंदिर में आए; और जब माता पिता बालक-यीशु को भीतर लाए कि उनके
२८ लिए व्यवस्था की विधि पूरी करें तो शमौन ने बालक को गोद में लिया तथा परमेश्वर की स्तुति कर कहा,

२९ 'हे स्वामी, अब अपने दास को अपने वचन के अनुसार शांति से विदा कीजिए,

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि मेरी आंखों ने आपके उद्धार को देख लिया, ३०
जिसे आपने सब लोगों के संमुख प्रस्तुत किया है। ३१
यह अन्य जातियों को प्रकाश ३२
और आपकी प्रजा को गौरव देनेवाली ज्योति है।'

यीशु के संबंध में ये बातें सुनकर उनके माता-पिता चकित हुए। ३३ शमौन ने उन्हें आशीर्वाद देकर उनकी माता मरियम से कहा, 'देखिए, ३४ यह बालक एक ऐसा प्रतीक होगा जिसका लोग विरोध करेंगे; और यह ३५ तलवार आपके प्राणों को आर-पार वेध देगी। इसके कारण इस्राएल में बहुतों का उत्थान और पतन होगा, और इस प्रकार अनेक मनुष्यों के मनोभाव प्रकट हो जाएंगे।'

हन्नाह

हन्नाह नामक एक नबिया थीं जो अशेर वंश के फनूएल की पुत्री थीं। ३६ वह बहुत बूढ़ी थीं, विवाह* के पश्चात् वह सात वर्ष पति के साथ रहीं और ३७ अब चौरासी वर्ष की विधवा थीं। उन्होंने मंदिर कभी नहीं छोड़ा और दिन रात उपवास तथा प्रार्थना करते हुए परमेश्वर की सेवा में लगी रहीं। वह भी उसी क्षण आ पहुंचीं और परमेश्वर को धन्यवाद देने तथा ख्रिस्त ३८ के विषय में उन सब को बताने लगीं, जो इस्राएल की मुक्ति की प्रतीक्षा में थे।

यीशु का बाल्यकाल

जब वे प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ कर चुके तो गलील में ३९ अपने नगर नासरत को लौट आए। बालक यीशु बढ़ कर बलिष्ठ हुए ४० और बुद्धि से परिपूर्ण होते गए। और उन पर परमेश्वर का अनुग्रह था।

---

*अक्षरशः : 'कौमार्य'

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक यीशु का मंदिर में पाया जाना

४१ उनके माता-पिता प्रति वर्ष फसह के पर्व पर यरूशलेम की यात्रा किया
४२ करते थे। जब यीशु बारह वर्ष के हुए तो वे लोग अपनी प्रथा के अनुसार
४३ वहां पर्व मनाने गए। जब वे उन दिनों को पूर्ण कर लौटे तो बालक यीशु
४४ यरूशलेम में ही रह गए। उनके माता-पिता यह नहीं जानते थे और यह समझ कर कि वह यात्रियों के दल में होंगे, एक दिन का पड़ाव निकल
४५ गए, और तब उन्हें अपने कुटुम्बियों और परिचितों में ढूंढ़ने लगे। उनको
४६ न पाकर वे ढूंढ़ते हुए यरूशलेम लौटे। तीन दिन के पश्चात् उन्होंने यीशु को मंदिर में उपदेशकों के बीच बैठे, उनकी बातें सुनते और उनसे प्रश्न
४७ करते हुए पाया; सब श्रोतागण उनकी बुद्धि और उनके उत्तरों पर
४८ विस्मित थे। यीशु को वहां देख कर वे चकित हो गए। उनकी माता ने कहा, 'पुत्र, तुमने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? देखो,
४९ तुम्हारे पिता और मैं व्यथित होकर तुम्हें ढूंढ़ रहे थे।' उन्होंने कहा, 'आप मुझे क्यों ढूंढ़ रहे थे? क्या आप नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर में होना ही है?'

५० पर जो बात उन्होंने कही उसे वे न समझे। तब यीशु उनके साथ
५१ नासरत गए और उनके अधीन रहे। उनकी माता ने सब बातें अपने मन में रखीं।

५२ यीशु बुद्धि में, डील-डौल में और परमेश्वर तथा मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ते गए।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और उनका उपदेश

3 तिबिरियुस कैसर के शासन काल के पंद्रहवें वर्ष में जब पुंतियुस पिलातुस यहूदिया का राज्यपाल था, और गलील में हेरोदेस, इतूरैया एवं त्रखोनीतिस में उसका भाई फिलिप्पुस, और अबिलेने में लिसानियास
२ राजा * थे, और हन्ना तथा कैफा महापुरोहित थे, उस समय परमेश्वर का

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* मूल में तित्रिअर्खेस

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वचन निर्जन प्रदेश में जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा। वह यरदन ३
के आसपास समस्त प्रदेश में पाप क्षमा के लिए हृदय-परिवर्तन के
बपतिस्मा का प्रचार करने लगे, जैसा यशायाह नबी की पुस्तक में लेख है, ४

'निर्जन प्रदेश में पुकारनेवाले की वाणी,
"प्रभु का मार्ग तैयार करो,
उनके पथ सीधे बनाओ,
प्रत्येक घाटी भर दी जाएगी, ५
प्रत्येक पहाड़ और पहाड़ी नीची की जाएगी,
टेढ़े पथ सीधे और विषम मार्ग समतल बनेंगे,
तथा सब प्राणी परमेश्वर के उद्धार के दर्शन करेंगे।" ' ६

जो जनसमूह उनसे बपतिस्मा लेने आता था, वह उससे कहते थे, 'हे ७
सांप के बच्चो, किसने तुमको आगामी प्रकोप से भागने की सूचना दी है।
हृदय-परिवर्तन के अनुरूप आचरण करो और अपने मन में यह न कहो कि ८
अब्रहाम हमारे पिता हैं, मैं तुमसे कहता हूं कि परमेश्वर इन पत्थरों से ९
अब्रहाम के लिए संतान उत्पन्न कर सकते हैं। अब कुल्हाड़ी वृक्षों की जड़
पर रखी जा चुकी है। अस्तु, जो वृक्ष उत्तम फल नहीं देता, वह काटा
और आग में झोंका जाएगा।'

लोगों ने उनसे पूछा, 'तो हम क्या करें?' यूहन्ना ने उत्तर दिया, १०
'जिसके पास दो कुरते हों, वह एक उसको दे दे, जिसके पास नहीं है; ११
और जिसके पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही करे!' कर लेने वाले बप- १२
तिस्मा लेने आए और उनसे पूछा, 'हे गुरु, हम क्या करें?' उन्होंने उत्तर १३
दिया, 'जितना तुम्हारे लिए निश्चित है, उससे अधिक मत लो।'
सैनिकों ने भी उनसे पूछा, 'और हम लोग क्या करें?' वह बोले, १४
'अत्याचार से अथवा झूठे मुकदमे चलाकर रुपया मत लो, और अपने
वेतन से संतुष्ट रहो।'

जनता में उत्सुकता थी और सब यूहन्ना के विषय में मन ही मन तर्क १५
वितर्क कर रहे थे कि कहीं यह ख्रिस्त न हों। यूहन्ना ने सबसे कहा, 'मैं १६

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तो तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूं, पर एक मुझ से अधिक शक्तिमान् आ रहे हैं ; मैं इस योग्य भी नहीं कि उनके जूतों के बंध खोलूं ; वह तुम्हें
१७ पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देंगे। उनका सूप उनके हाथ में है कि अपना खलिहान भलीभांति स्वच्छ करें और गेहूं को अपने कोठार में एकत्रित करें। वह भूसी को उस अग्नि में भस्म कर देंगे जो बुझने की
१८ नहीं।' ऐसी ही अनेक बातों से वह जनता को प्रोत्साहित करते और सुसमाचार सुनाते थे।

१९ परंतु जब उन्होंने राजा हेरोदेस को उसके भाई की पत्नी हेरोदियास
२० तथा अन्य सब कुकर्मों के विषय में फटकारा, तो उसने अपने कुकर्मों में यह और वृद्धि कर ली कि यूहन्ना को कारागार में डाल दिया।

यीशु का बपतिस्मा

२१ जब सब लोगों ने बपतिस्मा ले लिया और यीशु भी बपतिस्मा लेकर
२२ प्रार्थना कर रहे थे तो आकाश खुल गया और पवित्र आत्मा कपोत के रूप में उन पर सदेह उतरा एवं आकाशवाणी हुई,

'तू मेरा प्रिय* पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं।'

ख्रिस्त की वंशावली

२३ यीशु इस समय लगभग तीस वर्ष के थे। ऐसा माना जाता था कि
२४ वह यूसुफ के पुत्र थे, वह एली के, वह मत्तात के, वह लेवी के, वह मलकी
२५ के, वह यन्ना के, वह यूसुफ के, वह मत्तित्याह के, वह आमोस के, वह नहूम
२६ के, वह असल्याह के, वह नोगह के, वह मात के, वह मत्तित्याह के, वह
२७ शिमी के, वह योसेख के, वह योदाह के। वह यूहन्ना के, वह रेसा के,
२८ वह जरुब्बाबिल के, वह शालतिएल के, वह नेरी के, वह मलकी के,
२९ वह अद्दी के, वह कोसाम के, वह इलमोदाम के, वह एर के, वह येशु के, वह इलाजार के, वह योरीम के, वह मत्तात के, वह लेवी

* अथवा एकमात्र

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के, वह शमौन के, वह यहूदाह के, वह यूसुफ के, वह योनान के, वह ३०
इलयाकीम के, वह मलेआह के, वह मिन्नाह के, वह मत्तता के, वह ३१
नातान के, वह दाऊद के, वह यिशै के, वह ओवेद के, वह बोअज के, वह ३२
सलमोन के, वह नहशोन के, वह अम्मीनादाव के, वह अरनी के, वह ३३
हिस्रोन के, वह फिरिस के, वह यहूदाह के, वह याकूब के, वह इसहाक के, ३४
वह अब्रहाम के, वह तिरह के, वह नाहोर के, वह सरूग के, और वह ३५
रऊ के, वह फिलिग के, वह एबिर के, वह शिलह के, वह केनान के, वह ३६
अरफजद के, वह शेम के, वह नूह के, वह लिमिक के, वह मथूशिलह के, ३७
वह हनोक के, वह यिरिद के, वह महललेल के, वह केनान के, वह ३८
इनोश के, वह शेत के, वह आदम के, और वह परमेश्वर के।

खिस्त की परीक्षा

4 यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर यरदन से लौटे तो आत्मा १
उन्हें निर्जन प्रदेश में ले गया। वहां इवलीस चालीस दिन तक उन्हें २
प्रलोभन देता रहा। उन दिनों उन्होंने कुछ नहीं खाया; पर उनके बीत ३
जाने पर उन्हें भूख लगी। तब इबलीस ने उनसे कहा, 'यदि आप ४
परमेश्वर के पुत्र हैं तो इस पत्थर से कहिए कि यह रोटी बन जाए।'
यीशु ने उत्तर दिया, 'शास्त्र का लेख है,

"मनुष्य केवल रोटी से ही जीवित न रहेगा"।'

तब इबलीस उनको ऊपर ले गया और क्षण भर में संसार के सब राज्य ५
दिखाकर उनसे कहा, 'मैं आपको इन सबका अधिकार और वैभव दूंगा, ६
क्योंकि यह सब मुझे मिला है, और मैं जिसे चाहूं उसे देता हूं। यदि आप ७
मेरी वंदना करें तो यह सब आपका हो जाएगा।' यीशु ने उत्तर दिया, ८
'शास्त्र का लेख है,

"तू अपने प्रभु परमेश्वर की वंदना कर
और केवल उन्हींकी सेवा अर्पित कर"।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ तब वह यीशु को यरूशलेम में ले गया और मंदिर के शिखर पर खड़ा कर उनसे कहा, 'यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं तो यहां से नीचे कूद पड़िए,
१० क्योंकि शास्त्र का लेख है,

"वह आपके लिए अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देंगे कि वे आपकी रक्षा करें,"

११ और

"वह आपको अपने हाथों पर उठा लेंगे
कि कहीं ऐसा न हो कि आपके चरणों में पत्थर से ठेस लगे"।'

१२ यीशु ने उत्तर दिया, 'यह भी कहा गया है,

"प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा मत कर"।'

१३ जब इबलीस ने इस प्रकार उनकी परीक्षा कर ली तो उपयुक्त अवसर आने तक के लिए चला गया।

नासरत में उपदेश

१४ यीशु आत्मा की सामर्थ्य से भरकर गलील लौटे तो उनका नाम आस-
१५ पास सारे प्रदेश में फैल गया। वह उनके सभागृहों में उपदेश देते थे और सब लोग उनकी प्रशंसा करते थे।

१६ वह नासरत आए, जहां उनका पालन पोषण हुआ था, और अपनी रीति के अनुसार सबत के दिन सभागृह में गए। वह पढ़ने के लिए उठे
१७ तो उन्हें यशायाह नबी की पुस्तक दी गई। पुस्तक खोल कर उन्होंने वह स्थल निकाला जहां लिखा है,

१८ 'प्रभु का आत्मा मुझ पर है,
उन्होंने मुझको अभिषिक्त किया है,
कि दीन जनों को सुसमाचार सुनाऊं।
उन्होंने मुझे भेजा है कि बंदियों को मुक्ति का
और अंधों को दृष्टि-प्राप्ति का संदेश दूं,
दलितों को स्वतंत्रता प्रदान करूं
१९ तथा प्रभु की प्रसन्नता के वर्ष का प्रचार करूं।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने पुस्तक बंद करके सेवक को दी और बैठ गए। सभागृह में २० सब लोगों की आंखें उनकी ओर लगी थीं। तब वह लोगों से बोले, २१ 'शास्त्र का यह लेख आज तुम्हारे सामने पूरा हुआ है।' सब लोगों ने उनकी २२ सराहना की और उनके मुख से निकले अनुग्रहपूर्ण वचनों पर विस्मित हुए, और पूछने लगे, 'क्या यह यूसुफ के पुत्र नहीं हैं?' यीशु ने उनसे कहा, २३ 'निस्संदेह तुम मेरे विषय में यह कहावत कहोगे कि "हे वैद्य अपनी चिकित्सा कर," हमने जो कुछ सुना है कि आपने कफरनहूम में किया, वह यहां अपने नगर में भी कीजिए।' उन्होंने फिर कहा, 'मैं तुमसे सच कहता २४ हूं कि नबी का स्वागत अपने नगर में नहीं होता। सच्चाई की बात तो यह २५ है कि एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन वर्ष तक आकाश बंद रहा और सारे देश में भयानक अकाल पड़ा, उस समय इस्राएल में बहुत विधवाएं थीं, पर सैदा के सारफत में रहनेवाली विधवा को छोड़ अन्य किसी के पास २६ एलिय्याह नहीं भेजे गए। और इलीशा नबी के समय में इस्राएल में २७ बहुत कोढ़ी थे, पर सूरिया निवासी नामान के अतिरिक्त कोई और रोग-मुक्त नहीं हुआ।' ये वचन सुन कर सभागृह के लोग अत्यन्त क्रुद्ध २८ हुए, उनको नगर के बाहर निकाला और जिस पहाड़ पर उन लोगों का २९ नगर निर्मित था, उसकी चोटी पर ले चले कि नीचे ढकेल दें। परंतु वह ३० उनके बीच में से निकल कर चले गए।

अशुद्ध आत्मा-ग्रसित को स्वस्थ करना

अब यीशु गलील के नगर कफरनहूम में आए और सब्त के दिन ३१ सभागृह में जाकर उपदेश देने लगे। लोग उनकी शिक्षा पर चकित थे ३२ क्योंकि उनका उपदेश अधिकारपूर्ण था।

सभागृह में अशुद्ध आत्मा से ग्रसित एक मनुष्य था। वह उच्च स्वर ३३ से चिल्ला उठा, 'हे यीशु, नासरत निवासी, आपको हमसे क्या काम? ३४ हमें नष्ट करने आए हैं आप? मैं जानता हूं कि आप कौन हैं? परमेश्वर के पवित्र व्यक्ति!' यीशु ने उसे रोक कर कहा, 'चुप रह और उस में से ३५

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
निकल जा।' भूत ने मनुष्य को बीच में पटका और बिना हानि पहुंचाए
३६ उसमें से निकल गया। इस पर सब भय-चकित रह गए और आपस में कहने लगे, 'यह क्या बात है? यह अधिकार और सामर्थ्य के साथ अशुद्ध आत्माओं
३७ को आज्ञा देते हैं और वे निकल जाती हैं।' अस्तु, आसपास के सब स्थानों में उनकी चर्चा फैल गई।

पतरस की सास तथा अन्य लोगों को स्वस्थ करना

३८ वह सभागृह से उठकर शमौन के घर आए। शमौन की सास को तीव्र
३९ ज्वर चढ़ा था। उसके लिए लोगों ने यीशु से निवेदन किया। उन्होंने उसके समीप खड़े होकर ज्वर को रोका, और उसका ज्वर दूर हो गया। वह उसी क्षण उठी और उन लोगों का सेवा-सत्कार करने लगी।

४० सूर्यास्त के समय जिन-जिन के यहां विविध रोगों से पीड़ित रोगी थे, वे सब उनको यीशु के पास लाने लगे। यीशु ने उनमें से प्रत्येक पर हाथ रख
४१ कर स्वस्थ कर दिया। बहुतों में से भूत ऊंचे स्वर से यह कहते हुए निकले, 'आप परमेश्वर-पुत्र हैं;' यीशु ने उन्हें रोका और बोलने न दिया क्योंकि वे पहिचानते थे कि यह ख्रिस्त हैं।

४२ जब दिन हुआ तो यीशु किसी निर्जन स्थान में चले गए। भीड़ उन्हें ढूंढ़ती हुई उनके पास पहुंची और उनको रोकने लगी कि उससे पृथक् न
४३ हों। तब उन्होंने लोगों से कहा, 'यह अनिवार्य है कि मैं अन्य नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का समाचार सुनाऊं, क्योंकि मैं इसीलिए भेजा गया हूं।'
४४ और वह यहूदियों* के सभागृहों में प्रचार करने लगे।

प्रथम शिष्यों का बुलाया जाना

5 एक बार यीशु गन्नेसरत-सरोवर के तट पर खड़े थे, और जनता परमेश्वर का वचन सुनने के लिए उन पर टूटी पड़ती थी।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*कुछ प्रतियों में 'गलील'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उन्होंने सरोवर तट पर दो नौकाएं देखीं जिनसे उतर कर मछुए २
जाल धो रहे थे। वह उनमें से एक नौका पर, जो शमौन की ३
थी, चढ़ गए और कहा, 'नौका को तट से कुछ दूर ले चलो।'
वह बैठ गए और नौका से लोगों को उपदेश देने लगे। जब उन्होंने ४
बोलना समाप्त किया तो शमौन से बोले, 'गहरे में ले चलो और
मछली पकड़ने के लिए जाल डालो।' शमौन ने उत्तर दिया, 'स्वामी, हमने ५
रात भर परिश्रम किया, पर कुछ भी हाथ न लगा; फिर भी आपके कहने
पर जाल फेंकता हूं।' ऐसा करने पर बहुत मछलियां घिर आईं, यहां तक ६
कि उनके जाल फटने लगे। इस पर उन्होंने अपने साथियों को, जो दूसरी ७
नौका पर थे, संकेत किया कि आकर उनकी सहायता करें। वे आए और
उन्होंने दोनों नौकाएं इतनी भर लीं कि वे डूबने लगीं। यह देखकर ८
शमौन पतरस यीशु के चरणों में गिर पड़े और बोले, 'हे प्रभु, 'हे प्रभु, मेरे
पास से चले जाइए, मैं पापी हूं।' क्योंकि इतनी मछलियों के पकड़े जाने ९
से वह और उनके साथी भय-चकित हो गए थे। यही दशा याकूब और १०
यूहन्ना की हुई, जो जबदी के पुत्र और शमौन के साझेदार थे। यीशु ने
शमौन से कहा, 'डरो मत, अब से तुम मनुष्यों को जीवित पकड़ोगे।'
उन्होंने नौकाओं को किनारे से लगा दिया और सब कुछ परित्याग कर ११
यीशु के अनुयायी हो गए।

कोढ़ी को शुद्ध करना

जब यीशु किसी नगर में थे तो कोढ़ से भरा एक मनुष्य आया। वह १२
यीशु को देख कर मुंह के बल गिर पड़ा और विनय करने लगा, 'प्रभु, यदि
आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं।' उन्होंने हाथ बढ़ाया और उसे १३
स्पर्श कर कहा, 'मैं चाहता हूं, शुद्ध हो जा।' उसी क्षण उसका कोढ़
दूर हो गया। यीशु ने आज्ञा दी, 'किसी से न कहना, परंतु जाओ, अपने १४
आपको पुरोहित को दिखाओ और अपने शुद्धिकरण के लिए मूसा की
आज्ञानुसार भेंट चढ़ाओ, जिससे यह उनके लिए साक्षी रहे।' फिर भी १५
उनकी चर्चा अधिकाधिक फैलती गई और विशाल जनसमूह उन्हें सुनने
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
१६ और रोगों से स्वस्थ होने के लिए उनके पास एकत्रित होने लगा। पर यीशु प्राय: निर्जन स्थान में जाकर प्रार्थना किया करते थे।

अर्द्धांगी को स्वस्थ करना

१७ एक दिन यीशु उपदेश दे रहे थे, और स्वस्थ करने के लिए प्रभु का सामर्थ्य उनके साथ था। फरीसी और व्यवस्था के अध्यापक, जो गलील और यहूदिया के प्रत्येक ग्राम से और यरूशलेम से आए थे, उनके समीप
१८ बैठे हुए थे। इसी समय कई लोग एक अर्द्धांगी को शय्या पर लेकर आए
१९ और उसे भीतर लाने एवं उनके संमुख रखने की चेष्टा करने लगे; परंतु जब भीड़ के कारण भीतर लाने का कोई उपाय न सूझा तो वे छत पर चढ़ गए और खपरैल हटा कर उसे शय्या सहित बीच में यीशु के संमुख उतार
२० दिया।उनका विश्वास देखकर यीशु ने कहा, 'हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा
२१ हुए।'इस पर शास्त्री और फरीसी मन में तर्क-वितर्क करने लगे, 'कौन है यह जो परमेश्वर की निंदा करता है? केवल एक अर्थात् परमेश्वर को
२२ छोड़कर और कौन पाप क्षमा कर सकता है?" उनके तर्क-वितर्क को जान कर यीशु ने उनसे कहा, 'तुम अपने मन में तर्क-वितर्क क्यों कर रहे हो?
२३ सरल क्या है, यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, अथवा यह कहना कि उठ,
२४ चल फिर? परंतु जिससे तुम जान लो कि मानव-पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है'—वह अर्द्धांगी से बोले—'मैं तुझसे कहता हूं
२५ उठ अपनी शय्या उठा और अपने घर जा।' वह उन लोगों के सामने उसी क्षण उठा, और जिस शय्या पर पड़ा था, उसे उठा कर, परमेश्वर
२६ की स्तुति करता हुआ अपने घर चला गया। वे सबके सब आश्चर्य चकित हो परमेश्वर की स्तुति करने, और भयभीत होकर कहने लगे, 'आज हमने अद्भुत कार्य देखे हैं।'

मत्ती का आह्वान

२७ इसके अनंतर यीशु बाहर गए तो उन्होंने लेवी नामक कर लेने वाले को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा तथा उससे कहा, 'मेरा अनुयायी हो।'
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेवी उठे और सब कुछ त्यागकर उनके अनुयायी हो गए। लेवी ने उनके २८ लिए अपने यहां बड़ा भोज दिया। कर लेनेवालों का बृहत् समूह और २९ अन्य लोग भी उनके साथ भोज में सम्मिलित हुए। इस पर फरीसी और ३० शास्त्री बड़बड़ाने लगे और उनके शिष्यों से बोले, 'तुम लोग, कर लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?' यीशु ने उन्हें उत्तर ३१ दिया, 'स्वस्थ मनुष्यों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, पर रोगियों को होती है। मैं धार्मिकों को नहीं, पर पापियों को बुलाने आया हूं कि ३२ वे हृदय-परिवर्त्तन करें।'

उपवास का प्रश्न

उन्होंने कहा, 'यूहन्ना के शिष्य तो बार-बार उपवास करते और ३३ प्रार्थना में लगे रहते हैं और फरीसियों के शिष्य भी ऐसा ही करते हैं, पर आपके शिष्य खाते-पीते हैं।' यीशु ने उनसे कहा, 'जब तक दूलह साथ ३४ है, क्या आप बरातियों से उपवास करा सकते हैं? पर समय आएगा जब ३५ दूलह उनसे छीन लिया जाएगा, तब उन दिनों वे उपवास करेंगे।'

उन्होंने एक दृष्टांत भी कहा, 'कोई मनुष्य नए वस्त्र से थिगली ३६ फाड़ कर पुराने वस्त्र पर नहीं लगाता; यदि लगाए तो नया वस्त्र तो फटेगा ही, साथ ही पुराने वस्त्र पर वह थिगली शोभा नहीं देगी। इसी ३७ प्रकार नवीन मदिरा को पुराने चर्मपात्रों में कोई नहीं रखता; यदि रखे तो नवीन मदिरा चर्मपात्रों को फाड़ देगी, मदिरा बह जाएगी और चर्मपात्र नष्ट हो जाएंगे। नवीन मदिरा को नवीन चर्मपात्रों में ही रखना ३८ चाहिए। पुरानी मदिरा पी लेने पर कोई भी नवीन मदिरा नहीं चाहता, ३९ क्योंकि वह कहता है कि पुरानी ही उत्तम है।'

सबत-पालन

एक सबत के दिन जब वह खेतों में होकर जा रहे थे तो उनके शिष्य १ अनाज की बालें तोड़ने और हाथ से मसल-मसल कर खाने लगे। कुछ २

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
फरीसियों ने कहा, 'तुम लोग ऐसा काम क्यों कर रहे हो जिसे सबत के
३ दिन करना विहित नहीं है।' यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या तुमने नहीं पढ़ा कि जब दाऊद और उनके साथियों को भूख लगी तो दाऊद ने क्या किया
४ था? कैसे वह परमेश्वर के भवन में गए और अर्पित की हुई रोटियां लेकर खाईं जिनका खाना पुरोहितों को छोड़ और किसी को विहित नहीं है, और
५ अपने साथियों को भी दीं।' तब यीशु ने उनसे कहा, 'मानव-पुत्र सबत का भी स्वामी है।'

६ वह किसी दूसरे सबत को सभागृह में आकर उपदेश देने लगे।
७ वहां एक मनुष्य था जिसका दाहिना हाथ सूख गया था। शास्त्री और फरीसी इस ताक में थे कि वह सबत के दिन स्वस्थ करते हैं या नहीं, जिससे
८ उन पर अभियोग लगा सकें। यीशु उनके विचारों को जानते थे, इसलिए सूखे हाथवाले मनुष्य से बोले, 'उठ, बीच में खड़ा हो।' वह उठ कर
९ खड़ा हो गया। तब यीशु ने उन लोगों से कहा, 'मैं तुमसे पूछता हूं कि सबत के दिन भलाई करना विहित है अथवा बुराई, जीवन बचाना अथवा
१० नष्ट करना?' फिर उन्होंने चारों ओर सब पर दृष्टि डाली और उससे कहा, 'अपना हाथ बढ़ा।' उसने ऐसा ही किया और उसका हाथ पुनः
११ ठीक हो गया। इस पर वे लोग क्रोधोन्मत्त हो गए और आपस में तर्क-वितर्क करने लगे कि यीशु का क्या करें?

बारह प्रेरित

१२ उन दिनों वह पर्वत पर प्रार्थना करने गए और रात भर परमेश्वर की
१३ प्रार्थना में लीन रहे। जब दिन निकला तो उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाया और उनमें से बारह को चुन कर उन्हें 'प्रेरित' नाम दिया।
१४ शमौन जिनका नाम उन्होंने पतरस रखा; और उनके भाई अन्द्रियास;
१५ याकूब, यूहन्ना, फिलिप्पुस, बरतुलमय, मत्ती, थोमा, हलफई के पुत्र
१६ यूहन्ना, शमौन जो जेलोतेस कहलाते हैं, याकूब के पुत्र यहूदा, एवं यहूदा इस्करियोती जो विश्वासघाती निकला।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह उनके साथ उतर कर मैदान में खड़े हुए जहां उनके शिष्यों का विशाल समूह और लोगों की बड़ी भीड़ थी। वे लोग समस्त यहूदिया से, यरूशलेम से और सूर और सैदा के समुद्र तट से आए थे कि उनका उपदेश सुनें और अपने रोगों से मुक्त हों; अशुद्ध आत्माओं से पीड़ित व्यक्ति स्वस्थ हो रहे थे। सब लोग उनको स्पर्श करने का प्रयत्न कर रहे थे, क्योंकि उनसे सामर्थ्य निकल कर सबको स्वस्थ कर रही थी। १७ १८ १९

आशीर्वचन और अभिशाप

उन्होंने अपने शिष्यों की ओर दृष्टि उठा कर कहा: २०
'धन्य हो तुम जो दीन हो' क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। २१
'धन्य हो तुम जो अभी भूखे हो, क्योंकि तुम तृप्त होगे।
'धन्य हो तुम जो अब रोते हो, क्योंकि तुम हंसोगे।

'धन्य हो तुम जब लोग मानव-पुत्र के कारण तुमसे द्वेष करें, तुम्हारा बहिष्कार करें, तुम्हें बुरा-भला कहें और तुम्हारा नाम बुरा समझ कर काट दें। उस दिन आनंद मनाओ और उछलो-कूदो, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारे लिए बड़ा फल है: उनके पूर्वजों ने नबियों के साथ ऐसा ही किया था। २२ २३

'परंतु शोक तुम पर जो धनवान् हो, २४
'क्योंकि तुम्हें सुख का अपना भाग प्राप्त हो गया।
'शोक तुम पर जो अब तृप्त हो, २५
'क्योंकि तुम भूख से पीड़ित होगे।
'शोक तुम पर जो अब हंसते हो,
'क्योंकि तुम शोक मनाओगे और रोओगे।
'शोक तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हारी प्रशंसा करते हैं, २६
'क्योंकि उनके पूर्वजों ने झूठे नबियों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया था।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रुओं से प्रेम

२७ 'अस्तु, मैं तुम सुननेवालों से कहता हूं, अपने शत्रुओं से प्रेम करो;
२८ जो तुमसे द्वेष करते हैं, उनकी भलाई करो ; जो तुम्हें शाप देते हैं, उन्हें आशीर्वाद दो; जो तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं, उनके लिए प्रार्थना
२९ करो। जो तुम्हारे एक गाल पर तमाचा लगाता है, उसकी ओर दूसरा भी फेर दो ; जो तुम्हारा अंगरखा छीन रहा है, उसे अपना कुरता भी ले लेने
३० दो। जो कोई तुमसे मांगे, उसे दो; और जो कोई तुम्हारी वस्तु छीन ले,
३१ उससे फिर न मांगो। जैसा तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, वैसा ही तुम उनके साथ किया करो।

३२ 'यदि तुम उन्हींको प्रेम करते हो, जो तुमसे प्रेम करते हैं, तो तुम्हें क्या श्रेय! क्योंकि पापी भी अपने से प्रेम करनेवालों के साथ प्रेम करते
३३ हैं। यदि तुम उन्हीं की भलाई करते हो, जो तुम्हारे साथ भलाई करते हैं,
३४ तो तुम्हें क्या श्रेय! ऐसा तो पापी भी करते हैं। यदि तुम उन्हीं को उधार देते हो, जिनसे पाने की आशा रखते हो, तो तुम्हें क्या श्रेय! पापी
३५ भी तो उधार देते हैं कि उतना ही पुनः प्राप्त कर लें। परंतु तुम अपने शत्रुओं से प्रेम करो, उनकी भलाई करो और पुनः पाने की आशा न रख कर उधार दो, तो तुम्हारा पुरस्कार बड़ा होगा और तुम सर्वोच्च के संतान होगे, क्योंकि वह कृतघ्नों और दुष्टों पर भी कृपालु हैं।
३६ दयालु बनो, जैसे तुम्हारे पिता दयालु हैं।

दूसरों पर दोष लगाना

३७ 'दोष न लगाओ, तो तुम पर भी दोष न लगाया जाएगा। किसी के विरुद्ध निर्णय मत दो, तो तुम्हारे विरुद्ध भी निर्णय नहीं होगा। क्षमा
३८ करो, तो तुम्हें भी क्षमा प्राप्त होगी। दो और तुम्हें भी दिया जाएगा ; लोग दबा दबा कर, हिला हिला कर, बाहर गिरता हुआ माप तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस माप से तुम मापते हो, उसी माप से तुम्हारे लिए मापा जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यीशु ने उनसे एक दृष्टांत कहा, 'अंधा अंधे को मार्ग दिखा सकता ३९ है ? इससे क्या दोनों ही गड्ढे में नहीं गिरेंगे ? शिष्य गुरु से बढ़ कर नहीं ४० हैं, पर शिक्षा द्वारा वह गुरु जैसा हो जाता है ।

'तुम अपने भाई की आंख का तिनका क्यों देखते हो ? अपनी ४१ आंख का लट्ठा तुम्हें नहीं सूझता ? जब स्वयं अपनी आंख का लट्ठा नहीं ४२ देखते तो तुम अपने भाई से कैसे कह सकते हो, " भाई, लाओ, मैं तुम्हारी आंख का तिनका निकाल दूं।" हे पाखंडी, पहले अपनी आंख का लट्ठा निकाल ले, तभी अपने भाई की आंख का तिनका निकालने के लिए ठीक-ठीक देख सकेगा ।

'उत्तम वृक्ष पर निकृष्ट फल नहीं लगते, और न निकृष्ट वृक्ष पर ४३ उत्तम फल । प्रत्येक वृक्ष की पहिचान उसके फल से होती है । लोग कांटों ४४ से अंजीर एकत्र नहीं करते, और न कटीली झाड़ियों से अंगूर के गुच्छे । उत्तम मनुष्य अपने हृदय के उत्तम कोष से उत्तम वस्तुएं निकालता है, और ४५ बुरा मनुष्य बुरे भंडार से बुरी वस्तुएं ; क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है ।

सुनना और करना

'जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो मुझे "प्रभु, प्रभु" क्यों कहते ४६ हो ? मैं तुम्हें बताता हूं कि जो मेरे पास आता है और मेरे वचनों को सुनता ४७ तथा उन पर चलता है, वह किसके समान है । वह ऐसे मनुष्य के समान ४८ है जिसने घर बनाते समय गहरा खोदा और चट्टान पर नींव डाली । जब बाढ़ आई और जल की धाराएं घर से टकराईं तो वे उसे हिला न सकीं, क्योंकि वह सुदृढ़ बना था । परंतु यदि कोई सुनता है और करता नहीं, ४९ तो वह उस मनुष्य के समान है जिसने बिना नींव डाले भूमि पर घर बनाया । उससे जल-धाराएं टकराईं और वह तुरंत गिर पड़ा ; उस घर का ध्वंस भीषण था ।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतपति के दास को स्वस्थ करना

7 जब यीशु ये सब वचन लोगों को सुना चुके तो कफरनहूम आए। वहां किसी शतपति का अत्यन्त प्रिय दास रोगी था और मृत्यु शैया
३ पर पड़ा था। यीशु का समाचार पाकर शतपति ने यहूदियों के धर्मवृद्धों को उनके पास भेजा और निवेदन किया कि आकर उसके दास को स्वस्थ
४ करें। वे लोग उनके पास आकर आग्रह पूर्वक विनय करने लगे, 'वह इसका
५ पात्र है कि आप उस पर यह कृपा करें, क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम
६ करता है और उसी ने हमारे लिए सभागृह बनवा दिया है।' इस पर यीशु उनके साथ चले। जब वह उसके घर से अधिक दूर नहीं थे तो शतपति ने अपने मित्रों से कहला भेजा, 'हे प्रभु, कष्ट न कीजिए। मैं
७ इस योग्य नहीं कि आप मेरी छत के नीचे आएं। इसीलिए तो मैंने अपने को इस योग्य नहीं समझा कि आपके पास आऊं। एक शब्द कह दीजिए;
८ मेरा सेवक स्वस्थ हो जाएगा। मैं स्वयं शासन के अधीन हूं और सैनिक मेरे अधीन हैं। मैं एक से कहता हूं, "जा" तो वह जाता है, दूसरे से कहता हूं, "आ" तो वह आता है, और अपने दास से, "यह कर" तो
९ वह कर देता है।' यह सुनकर यीशु को उस पर आश्चर्य हुआ और उन्होंने अपने पीछे आती हुई भीड़ की ओर मुड़ कर कहा, 'मुझे ऐसा
१० विश्वास इस्राएल में भी नहीं मिला।' जब भेजे हुए लोग घर लौटे तो उन्होंने दास को स्वस्थ पाया।

नाईन की विधवा

११ इसके कुछ समय पश्चात् यीशु नाईन नगर को गए। उनके साथ
१२ उनके शिष्य और एक विशाल जनसमूह जा रहा था। जब वह नगरद्वार पर पहुंचे तो लोग एक मृतक को बाहर ले जा रहे थे। वह अपनी माता का एकमात्र पुत्र था, और वह विधवा थी। नगर का एक बड़ा जनसमूह
१३ उसके साथ था। माता को देखकर प्रभु का हृदय दया से भर आया।
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
१४ उन्होंने उससे कहा, 'रोओ मत'; और आगे बढ़ कर अर्थी को छुआ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कंधा देनेवाले रुक गए। तब यीशु ने कहा, 'नवयुवक, मैं कहता हूं उठ।' मृतक उठ बैठा और बोलने लगा। यीशु ने उसे माता को सौंप दिया। सब लोगों पर भय छा गया और वे परमेश्वर की स्तुति कर कहने लगे, 'हमारे बीच एक महान् नबी उठे हैं; परमेश्वर ने अपनी प्रजा की सुधि ली है।' उनके संबंध में यह समाचार समस्त यहूदिया तथा आसपास के सारे प्रदेश में फैल गया। १५ १६ १७

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का प्रश्न

यूहन्ना के शिष्यों ने उनको इन सब बातों का समाचार दिया। इस पर यूहन्ना ने दो शिष्यों को बुलाया और प्रभु के पास यह पूछने के लिए भेजा, 'क्या आनेवाले आप ही हैं अथवा हम किसी दूसरे की प्रतीक्षा करें?' उन्होंने यीशु के पास जाकर कहा, 'यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमको आप के पास यह पूछने भेजा है कि आनेवाले क्या आप ही हैं, अथवा हम किसी दूसरे की प्रतीक्षा करें?' १८ १९ २०

उसी समय यीशु ने अनेक लोगों को रोगों, पीड़ाओं और दुष्टात्माओं से स्वस्थ किया, और अनेक अंधों को दृष्टि प्रदान की। तब उन्होंने उत्तर दिया, 'जाओ, जो कुछ तुमने देखा और सुना है उसका समाचार यूहन्ना को दो कि अंधे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मृतक जीवित किए जाते हैं और दीनों को सुसमाचार सुनाया जाता है। धन्य है वह जो मेरे विषय भ्रम में नहीं पड़ता।' २१ २२ २३

यूहन्ना के संदेशवाहकों के चले जाने पर यीशु यूहन्ना के विषय में जनसमूह से कहने लगे, 'तुम निर्जन प्रदेश में क्या देखने निकले थे? नरकुल को जो वायु से प्रकंपित होता है? फिर तुम क्या देखने निकले थे? ऐसे मनुष्य को जो कोमल वस्त्र धारण करता है? जो राजसी वस्त्र धारण करते और विलास का जीवन बिताते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं। तो फिर तुम क्या देखने निकले थे? नबी को देखने? हां, मैं तुमसे २४ २५ २६

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
२७ कहता हूं, नबी से भी महान् व्यक्ति को। उन्हीं के विषय में शास्त्र का लेख है :

"देखो मैं तुम्हारे आगे अपना दूत भेज रहा हूं,
वह तुम्हारे आगे तुम्हारा मार्ग निर्माण करेगा।"

२८ 'मैं तुमसे कहता हूं कि जो स्त्रियों से उत्पन्न हुए हैं, उनमें यूहन्ना से महान् कोई नहीं, फिर भी परमेश्वर के राज्य का छोटे से छोटा व्यक्ति २९ उनसे अधिक महान् है।' सर्व साधारण ने और कर लेनेवालों ने जब यह सुना, तो यूहन्ना का बपतिस्मा लेने के कारण परमेश्वर की धार्मिकता ३० स्वीकार की* परंतु फरीसियों और व्यवस्थाचार्यों ने उनका बपतिस्मा न लेने के कारण अपने विषय में परमेश्वर की योजना व्यर्थ कर दी।

३१ 'मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना किससे करूं? ये किसके समान ३२ हैं? ये लोग बाजार में बैठे हुए बालकों के समान हैं जो एक दूसरे को पुकार कर कहते हैं,

"हमने तुम्हारे लिए बांसुरी बजाई, पर तुम न नाचे ;
हमने विलाप किया पर तुम न रोए।"

३३ क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले न रोटी खाते और न दाखरस पीते ३४ आए; इस पर भी तुम कहते हो, "वह भूत-ग्रसित है"। पर मानव-पुत्र खाता और पीता आया है; और तुम कहते हो, "देखो, पेटू और ३५ पियक्कड़ मनुष्य, कर लेनेवालों और पापियों का मित्र।" अस्तु, बुद्धि अपनी सब संतानों द्वारा प्रमाणित होती है ?'

चरण अभ्यंजन, दो ऋणियों का दृष्टांत

३६ किसी फरीसी ने उनको अपने साथ भोजन करने के लिए निमंत्रित ३७ किया। वह उस फरीसी के घर गए और भोजन करने के लिए बैठे। उस

*अथवा "परमेश्वर की स्तुति की"

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नगर की एक पापिनी स्त्री यह जान कर कि वह फरीसी के यहां भोजन करने बैठे हैं, संगमरमर के पात्र में सुगंधित द्रव्य लेकर आई। ३८ वह रोती हुई उनके पीछे, चरणों के समीप, खड़ी हो गई और अपने आंसुओं से उनके चरण धोने और सिर के बालों से उन्हें पोंछने लगी। वह बार-बार उनके चरणों का चुंबन करती एवं उन पर सुगंधित द्रव्य लगाती थी। ३९ यह देख कर वह फरीसी जिसने उनको निमंत्रण दिया था, सोचने लगा कि यदि वह नबी होते तो जान जाते कि यह स्त्री जो उन्हें छू रही है, कौन है और कैसी है, क्योंकि यह पापिनी है। ४० इस पर यीशु ने उससे कहा, 'शमौन, मुझे तुमसे कुछ कहना है।' वह बोला, 'गुरु, कहिए।' ४१ 'किसी महाजन के दो ऋणी थे। एक पर उसका पांच सौ दीनार ऋण था और दूसरे पर पचास। ४२ इन दोनों के पास ऋण चुकाने के लिए कुछ नहीं था, इसलिए उसने दोनों को क्षमा कर दिया। ४३ अब उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम करेगा?' शमौन ने उत्तर दिया, 'मेरी समझ में वह, जिसका अधिक ऋण क्षमा हुआ।' उन्होंने कहा, 'तुम्हारा निष्कर्ष ठीक है।' ४४ तब उस स्त्री की ओर मुड़कर उन्होंने शमौन से कहा, 'इस स्त्री को देखते हो? मैं तुम्हारे घर आया; तुमने मेरे पांवों के लिए जल नहीं दिया, पर इसने आंसुओं से मेरे पांव भिगोए और अपने बालों से उन्हें पोंछा। ४५ तुमने मेरा चुंबन नहीं किया, परंतु जब से यह भीतर आई है इसने मेरे पावों का चुंबन लेना नहीं छोड़ा। ४६ तुमने सिर पर तेल नहीं डाला, परंतु इसने मेरे पावों पर सुगंधित द्रव्य लगाया है। ४७ इस कारण मैं तुमसे कहता हूं कि इसके पाप, जो बहुत हैं, क्षमा हुए क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया है। अस्तु, जिसे थोड़ा क्षमा किया गया है, वह प्रेम भी थोड़ा करता है।' ४८ तब उन्होंने स्त्री से कहा, 'तेरे पाप क्षमा हुए।' ४९ जो उनके साथ भोजन पर बैठे थे, वे आपस में कहने लगे, 'यह कौन हैं जो पापों को भी क्षमा करते हैं?' ५० यीशु ने स्त्री से कहा, 'तेरे विश्वास ने तेरा उद्धार किया है; शांति से जा।'

8

१ इसके उपरांत यीशु प्रचार करते और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाते हुए नगर-नगर और गांव-गांव में विचरण करने लगे। उनके साथ "बारह" थे, और कुछ स्त्रियां भी जो दुष्ट आत्माओं २

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और रोगों से स्वस्थ हो गई थी : मरियम उपनाम मगदलीनी जिनसे सात
३ भूत निकले थे, योअन्ना जो हेरोदेस के गृहप्रबंधक खूजा की धर्मपत्नी थीं, मूसन्नाह, तथा अन्य अनेक स्त्रियां जो अपनी संपत्ति से उन लोगों की सेवा करती थीं।

बीज बोनेवाले का दृष्टांत

४ विशाल जनसमूह एकत्रित हो गया और नगर-नगर से लोग उनके
५ पास चले आ रहे थे। तब उन्होंने दृष्टांत कहा, 'एक बोनेवाला अपने बीज बोने निकला। बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरा और
६ पैरों से रुंद गया तथा पक्षियों ने आकर उसे चुग लिया। कुछ चट्टान पर
७ गिरा और नमी न होने के कारण उगते ही सूख गया। कुछ कांटों के बीच
८ गिरा और कांटों ने साथ-साथ बढ़कर उसे दबा दिया। पर कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और बढ़कर सौ गुना फलीभूत हुआ।' यह कहकर वह उच्च स्वर से बोले, 'जिसके सुनने के कान हों,सुन ले।'

९ उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, 'इस दृष्टांत का क्या अर्थ है ?' उन्होंने
१० कहा, 'परमेश्वर के राज्य के रहस्यों का ज्ञान तुम्हें दिया गया है; पर दूसरों के लिए पहेलियां हैं कि,

"वे देखते हुए भी न देखें
और सुनते हुए भी न समझें।"

११ दृष्टांत यह है : बीज परमेश्वर का वचन है। मार्ग में गिरे वे
१२ हैं जिन्होंने वचन को सुना है; पर शैतान आकर उस वचन को उनके हृदय से उठा ले जाता है कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करें और
१३ उनका उद्धार हो जाए। चट्टान पर के वे हैं जो वचन को सुनने पर उसे आनंद से ग्रहण करते हैं; पर उनमें जड़ें नही होतीं। वे कुछ काल के
१४ लिए विश्वास करते हैं पर परीक्षा के समय उनका पतन हो जाता है। कांटों के बीच गिरे यह वे हैं जिन्होंने वचन को सुना है, पर आगे चल कर चिंताओं, धन-संपत्ति और जीवन के सुखभोग से दब जाते हैं और परिपक्व

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं होने पाते। और जो अच्छी भूमि पर गिरे वे हैं जो वचन को सुनकर १५
उसे अपने सुंदर एवं अच्छे मन में सुरक्षित रखते और धीरता पूर्वक फल
देते हैं।

दीपक से शिक्षा

'कोई मनुष्य दीपक जलाकर उसे वर्तन से नहीं ढकता और न शय्या १६
के नीचे रखता है, वरन् दीवट पर रखता है कि भीतर आनेवालों को प्रकाश
मिले। क्योंकि कोई वस्तु छिपी नहीं जो प्रकाश में न लाई जाए और न कोई १७
वस्तु गुप्त है जो ज्ञात एवं प्रकाशित न हो। तो सावधान रहो कि तुम १८
कैसे सुनते हो! क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा, और जिसके पास
नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जिसे वह अपना समझता है।'

सच्चा नाता

उनकी माता और भाई उनके पास आए, पर भीड़ के कारण उनसे १९
भेंट न कर सके। उन्हें बताया गया, 'आपकी माता और आपके भाई २०
बाहर खड़े हैं और आपसे मिलना चाहते हैं'। इस पर यीशु ने उन्हें उत्तर २१
दिया, 'मेरी माता और मेरे भाई वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते और
मानते हैं।'

आंधी को शांत करना

एक दिन वह अपने शिष्यों के साथ नौका पर चढ़े और उनसे बोले, २२
'आओ, हम सरोवर के पार चलें।' उन लोगों ने नौका खोल दी। जब २३
नाव चली जा रही थी, तो यीशु सो गए। इसी बीच सरोवर में आंधी चलने
लगी; लोग जल से आप्लावित होने लगे और संकट में पड़ गए। वे २४
यीशु के पास गए और उन्हें जगाकर कहा, 'स्वामी, स्वामी, हम तो मरे।'
वह उठे और आंधी एवं लहरों को रोका। वे थम गईं और स्तब्धता छा
गई। तब वह शिष्यों से बोले, 'कहां है तुम्हारा विश्वास?' पर वे लोग भय २५
और आश्चर्य से चकित हो आपस में कहने लगे, 'यह न जाने कौन हैं जो
वायु और जल को आज्ञा देते हैं और वे इनकी मान लेते हैं।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरासेनी को स्वस्थ करना

२६ तब वे गिरासेनियों के प्रदेश में पहुंचे, जो गलील के सामने दूसरे तट
२७ पर है। जैसे ही यीशु भूमि पर उतरे, उनकी भेंट उस नगर के एक मनुष्य
से हो गई जिसमें भूत थे। वह बहुत दिनों से वस्त्र नहीं पहिनता था और
२८ घर में न रह कर कबरों में रहा करता था। वह यीशु को देखते ही
चिल्लाया, उनके संमुख गिर पड़ा एवं उच्च स्वर से बोला, 'हे यीशु,
सर्वोच्च परमेश्वर के पुत्र, आपको मुझसे क्या काम। मेरी विनय है कि मुझे
२९ न सताइए।' क्योंकि यीशु अशुद्ध आत्मा को मनुष्य में से निकल जाने की
आज्ञा दे रहे थे- कारण कि वह बार-बार उस मनुष्य को पकड़ लेता था ;
लोग सांकलों और बेड़ियों से बांध कर उसे पहरे में रखते थे, परंतु वह
बंधनों को तोड़ देता था और भूत उसे निर्जन प्रदेश में भगा ले जाता था।
३० यीशु ने उससे पूछा, 'तेरा नाम क्या है?' उसने उत्तर दिया, 'सेना';
३१ क्योंकि उसमें अनेक भूत घुस आए थे। वे गिड़गिड़ाकर कहने लगे, 'हमें
अथाह गर्त में जाने की आज्ञा न दीजिए।' वहीं पहाड़ पर शूकरों का
३२ विशाल समूह चर रहा था। उन्होंने निवेदन किया, 'हमें इनमें प्रविष्ट
३३ होने की अनुमति दीजिए।' उन्होंने अनुमति दे दी। तब भूत उस
मनुष्य से निकल कर शूकरों में प्रविष्ट हो गए और शूकर-समूह कगार
से सरोवर की ओर झपटा और डूब मरा।

३४ चरवाहे यह घटना देखकर भागे और नगर एवं गांवों में समाचार
३५ जा सुनाया। इसपर लोग बाहर निकलकर देखने आए कि क्या बात है।
उन्होंने यीशु के पास आकर देखा कि जिस मनुष्य में से भूत निकल गए थे,
वह वस्त्र पहने हुए है और स्वस्थ मन यीशु के चरणों में बैठा है। वे डर गए।
३६ देखने वालों ने उनको बताया कि भूतग्रसित कैसे स्वस्थ हुआ। तब
३७ गिरासेन के आसपास के सब लोगों ने यीशु से निवेदन किया, 'हमारे यहां
से जाइए,' क्योंकि वे बहुत डर गए थे। वह नौका पर चढ़ कर लौट गए।
३८ जिस मनुष्य से भूत निकल गए थे वह प्रार्थना करने लगा कि मुझे अपने साथ

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहने दीजिए, परंतु उन्होंने उसे विदा किया और कहा, 'अपने घर जा, ३९
और परमेश्वर ने जो कुछ तेरे लिए किया है, उसका वर्णन कर।' वह चला गया और सब नगर में प्रचार करने लगा कि यीशु ने उसके लिए क्या क्या किया।

याईर की पुत्री को जीवित करना और रक्तश्राव से पीड़ित स्त्री को निरोग करना

यीशु के लौटने पर जनसमूह ने उनका स्वागत किया, क्योंकि सब ४०
उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। याईर नामक एक मनुष्य जो सभागृह का ४१
अधिकारी था, आया और यीशु के चरणों में गिरकर अनुनय करने लगा कि वह उसके घर चलें, क्योंकि उसकी एकमात्र पुत्री, जो लगभग बारह ४२
वर्ष की थी, मरणासन्न थी।

जब वह जा रहे थे तो भीड़ ने उन्हें प्रायः दबा ही दिया, और एक ४३
स्त्री जिसे बारह वर्ष से रक्तश्राव था और जिसे कोई स्वस्थ नहीं कर सका था, पीछे से आई और उनके वस्त्र के सिरे को स्पर्श किया। तत्काल उसका ४४
रक्तश्राव बंद हो गया। यीशु ने पूछा, 'मुझे किसने छुआ?' सबके ४५
अस्वीकार करने पर पतरस बोले, 'स्वामी, आप भीड़ से घिरे हैं और लोग आप पर गिरे पड़ते हैं!' इस पर यीशु ने कहा, 'किसी ने मुझे छुआ अवश्य ४६
है, क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझसे सामर्थ्य निकली है।' जब स्त्री ने देखा ४७
कि वह छिपी नहीं रह सकती तो कांपती हुई आई, और उनके चरणों पर गिर कर सब लोगों के सामने बताया कि उसने किस कारण उनको स्पर्श किया और कैसे वह तत्काल स्वस्थ हो गई। उन्होंने कहा, 'पुत्री, तेरे ४८
विश्वास ने तुझे स्वस्थ किया है। शांति से जा।'

वह यह कह ही रहे थे कि सभागृह-अधिकारी के निवास-स्थान से ४९
एक मनुष्य आया और उससे बोला, 'आपकी पुत्री की मृत्यु हो गई, गुरु को अब कष्ट न दीजिए।' यीशु ने यह सुन कर उत्तर दिया, 'डरो मत; ५०
केवल विश्वास करो, वह स्वस्थ हो जाएगी।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५१ घर आने पर उन्होंने पतरस, यूहन्ना, याकूब और बालिका के माता-
५२ पिता के अतिरिक्त अन्य किसी को अपने साथ भीतर नहीं आने दिया। सब लोग रो रहे थे और उसके लिए विलाप कर रहे थे। यीशु ने उनसे कहा,
५३ 'रोओ मत,वह मरी नहीं किंतु सो रही है।' लोग यह जान कर कि वह मर
५४ गई है, उनका उपहास करने लगे। पर यीशु ने उसका हाथ पकड़कर पुकारा,
५५ 'हे बालिका, उठ।' उसके प्राण लौट आए और वह तत्काल उठ बैठी।
५६ उन्होंने आदेश दिया कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। उसके माता-पिता, आश्चर्य चकित हो गए। यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि यह घटना किसी को न बताएं।

प्रेरितों का भेजा जाना

9 उन्होंने "बारह" को एक साथ बुलाया, उन्हें सब भूतों और रोगों को दूर करने की सामर्थ्य और अधिकार दिया, तथा परमेश्वर के राज्य
३ का प्रचार करने तथा रोगियों को स्वस्थ करने भेजा।" यीशु ने उनसे कहा, 'यात्रा में कुछ भी साथ न लो, न लाठी, न झोली, न रोटी, न रुपए;
४ और न दो कुरते रखो। जिस घर में प्रवेश करो, वहीं रहो, और वहीं से
५ विदा हो। जो लोग तुम्हारा स्वागत न करें, तो नगर से निकलते समय
६ उनके विरुद्ध प्रमाण के लिए अपने पैरों की धूल झाड़ दो।' वे गए और गांव-गांव सुसमाचार सुनाते और सब कहीं लोगों को स्वस्थ करते हुए भ्रमण करने लगे।

हेरोदेस उलझन में पड़ा

७ राजा* हेरोदेस ने ये सब घटनाएं सुनीं तो दुविधा में पड़ गया;क्योंकि कुछ लोगों का कथन था, 'यूहन्ना मृतकों में से जीवित हो उठे हैं', कुछ
८ कहते थे, 'एलिय्याह प्रकट हुए हैं,' और अन्य कहते थे, 'प्राचीन नबियों
९ में से कोई जीवित हो उठे हैं।' हेरोदेस ने कहा, 'यूहन्ना का तो मैंने सिर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* मूल में—'तित्रअर्खेस'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कटवा दिया; फिर यह कौन है जिसके संबंध में ये बातें सुन रहा हूं ?' वह उनसे मिलने की चेष्टा करने लगा।

पांच सहस्र को भोजन कराना

प्रेरितों ने लौट कर जो कुछ किया था, यीशु को बताया। वह उनको लेकर एकांत में, बैतसैदा नामक नगर में चले गए। जब लोगों को इसका पता चला तो वे उनके पीछे-पीछे आए। यीशु ने उनका स्वागत किया, उन्हें परमेश्वर के राज्य के संबंध में बताया और जिन्हें रोगमुक्त होने की आवश्यकता थी, उनको स्वस्थ किया। अब दिन ढलने लगा था; इसलिए "बारह" ने पास आकर उनसे कहा, 'जनसमूह को विदा कीजिए कि आसपास के गावों और क्षेत्रों में जाकर अपने ठहरने और खाने का प्रबंध करें, क्योंकि यहां हम निर्जन स्थान में हैं।' उन्होंने कहा, 'तुम्हीं इन्हें खाने को दो। वे बोले, 'हमारे पास पांच रोटियों और दो मछलियों से अधिक कुछ नहीं है। हां, यदि हम जाकर इन सब लोगों के लिए भोजन मोल लें तो काम चले।' क्योंकि वहां पांच सहस्र के लगभग पुरुष थे। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, 'इनको पचास-पचास की पंक्तियों में बैठा दो।' उन लोगों ने ऐसा ही किया और सबको बैठा दिया। तब उन्होंने पांच रोटियां और दो मछलियां लीं और ऊपर आकाश की ओर देखकर उन्हें आशिष दी, फिर उनको तोड़ा और शिष्यों को दिया कि लोगों को परोसें। सबने भोजन किया और तृप्त हुए; और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाईं। १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७

पतरस की स्वीकारोक्ति

एक बार जब वह एकांत में प्रार्थना कर रहे थे और शिष्य उनके साथ थे तो उन्होंने पूछा, 'जनता क्या कहती है, मैं कौन हूं ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; कुछ कहते हैं एलिय्याह; और अन्य कहते कि प्राचीन नबियों में से कोई जीवित हो उठा है।' तब उन्होंने कहा, 'परंतु तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूं ?' पतरस ने उत्तर दिया, 'परमेश्वर के मसीह।' १८ १९ २०

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु एवं पुनरुत्थान संबंधी प्रथम भविष्यवाणी

२१ 'इस पर उन्होंने उन सब को चेतावनी एवं आज्ञा दी, कि यह बात
२२ किसी से न कहें,' और बताया, 'यह अनिवार्य है कि मानव-पुत्र को बहुत दुःख सहने पड़ें; वह धर्मवृद्धों, महापुरोहितों और शास्त्रियों के द्वारा तुच्छ समझा जाए, मार डाला जाए और तीसरे दिन मृतकों में से जीवित हो उठें।'

स्वार्थ-त्याग पर शिक्षा

२३ उन्होंने सबसे कहा, 'यदि कोई मेरे पीछे जाना चाहे तो अपने आपका
२४ परित्याग करे, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपने प्राण बचाना चाहे,वह उन्हें खोएगा और जो कोई अपने
२५ प्राण मेरे निमित्त खोएगा, वह उन्हें बचाएगा। यदि कोई मनुष्य समस्त जगत को प्राप्त करे परंतु अपने आप को नष्टकर दे अथवा गंवा दे तो उसे
२६ क्या लाभ? क्योंकि जो कोई मुझसे और मेरे वचनों से लज्जित होता है तो मानव-पुत्र भी,–जब वह अपनी, अपने पिता की और पवित्र स्वर्ग-
२७ दूतों की महिमा में आएगा,–उससे लज्जित होगा। मैं तुमसे सच कहता हूं कि यहां कुछ व्यक्ति खड़े हैं, वे जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, मृत्यु का आस्वादन नहीं करेंगे।'

दिव्य रूपांतर

२८ इस कथन के कोई आठ दिन पश्चात् यीशु ने पतरस, यूहन्ना और
२९ याकूब को लिया और पर्वत पर प्रार्थना करने गए। जब वह प्रार्थना कर रहे थे तो उनके मुख का रूप कुछ और हो गया और उनके वस्त्र उज्ज्वल
३० हो जगमगाने लगे। देखो, दो पुरुष, मूसा और एलिय्याह उनसे वार्तालाप
३१ कर रहे थे। वे दोनों तेजोमय दीख पड़े और उनके निर्गमन* के विषय
३२ चर्चा करने लगे जिसे वह यरूशलेम में संपन्न करने वाले थे। पतरस

* अर्थात् यीशु की मृत्यु

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रौर उनके साथी निद्रा से आक्रान्त थे;पर जब सचेत हुए तो उन्होंने यीशु के तेज को श्रौर उन दो पुरुषों को,जो उनके साथ थे,देखा। जब वे दोनों ३३ उनसे विदा होने लगे तो पतरस ने यीशु से कहा, 'स्वामी, कैसी उत्तम बात है कि हम यहां हैं। आइए हम तीन मंडप बनाएं। एक आपके लिए, एक मूसा के लिए श्रौर एक एलिय्याह के लिए'—परंतु वह नहीं जानते थे कि क्या कह रहे थे। वह इस प्रकार बोल ही रहे थे कि एक मेघ ने उन्हें ३४ आच्छादित कर लिया। मेघ में प्रवेश करते समय वे डर गए। श्रौर मेघ ३५ में से वाणी हुई, 'यह मेरा पुत्र है, मेरा चुना हुआ, इसको सुनो।' वाणी ३६ के पश्चात् यीशु मात्र ही दिखाई दिए। शिष्य चुप रहे श्रौर जो कुछ उन्होंने देखा था,उसके संबंध में एक शब्द भी उन दिनों किसी से न बोले।

अशुद्ध-आत्मा ग्रसित बालक को स्वस्थ करना

दूसरे दिन जब वे लोग पर्वत से उतरे तो यीशु को एक बड़ी भीड़ ३७ मिली। भीड़ में से एक मनुष्य ने उच्च स्वर से कहा, 'गुरुजी, मेरी आपसे ३८ प्रार्थना है कि मेरे पुत्र पर दया-दृष्टि करें; यह मेरा एकमात्र पुत्र है। एक ३९ आत्मा इसे पकड़ लेती है,श्रौर यह एकाएक चिल्ला उठता है। वह इसे ऐसा मरोड़ती है कि यह मुंह से झाग डालने लगता है; वह इसे क्षत-विक्षत करती है श्रौर बड़ी कठिनाई से छोड़ती है। मैंने आपके शिष्यों से निवेदन ४० किया कि उसे निकालें पर वे नहीं निकाल सके।' यीशु ने उत्तर दिया, ४१ 'हे अविश्वासी श्रौर भ्रष्ट पीढ़ी, कब तक मैं तुम्हारे साथ रहूंगा श्रौर तुम्हारी सहन करूंगा? अपने पुत्र को यहां लाओ।' बालक पास आ ४२ ही रहा था कि भूत ने उसे पटक दिया श्रौर उसे मरोड़ने लगा। यीशु ने अशुद्ध आत्मा को रोका तथा बालक को स्वस्थ करके उसके पिता को सौंप दिया। परमेश्वर का प्रताप देखकर सब लोग चकित रह गए। ४३

मृत्यु संबंधी द्वितीय भविष्यवाणी

जब सारी जनता उनके इन सब कामों को देखकर विस्मित थी, तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, 'कान खोल कर ये सब शब्द सुन लो; मानव ४४ पुत्र मनुष्यों के हाथ पकड़वाया जाने को है। यह बात उन लोगों को ४५

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ में न आई ; उनसे छिपी रही कि कहीं वे समझ न लें। और वे यीशु से इस संबंध में पूछने से डरते थे।

नम्रता और सहिष्णुता पर शिक्षा

४६ उनके बीच यह विवाद छिड़ा कि हम में बड़ा कौन है। यीशु
४७ ने उनके हृदय का विचार जानकर एक बालक को लिया ; और उसे
४८ अपने समीप खड़ा कर उनसे कहा, 'जो कोई मेरे नाम से इस बालक का स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत करता है, और जो मेरा स्वागत करता है, वह मेरे भेजनेवाले का स्वागत करता है ; क्योंकि जो तुम सब में छोटा है, वही बड़ा है।'

४९ यूहन्ना ने कहा, 'स्वामी, हमने एक मनुष्य को आपके नाम से भूत निकालते देखा तो उसे रोकने का प्रयास किया, क्योंकि वह हमारा सह-अनु-
५० यायी नहीं है।' यीशु ने उनसे कहा, 'उसे मत रोको, क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारे पक्ष में है।'

यरूशलेम-यात्रा का आरंभ

सामरियों द्वारा निरादर

५१ जब यीशु के स्वर्गारोहण के दिन निकट आए तो उन्होंने यरूशलेम
५२ जाने का दृढ़ निश्चय किया और संदेशवाहकों को अपने आगे भेजा। वे आगे गए कि सामरियों के एक गांव में प्रवेश कर यीशु के लिए तैयारी करें,
५३ पर वहां लोगों ने उनका स्वागत नहीं किया;क्योंकि वह यरूशलेम जा रहे
५४ थे। जब उनके शिष्य याकूब और यूहन्ना ने यह देखा तो बोल उठे, 'क्या आप चाहते हैं कि हम आज्ञा दें कि आकाश से आग गिरे और इन्हें भस्म
५५ कर दे?' यीशु ने पीछे मुड़ कर उनको रोका,* और वे दूसरे गांव को
५६ चले गए।

---

*कुछ प्राचीन प्रतियों में ये शब्द भी पाए जाते हैं : और कहा, 'तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो, क्योंकि मानव-पुत्र मनुष्यों का जीवन नष्ट करने नहीं वरन् उनका उद्धार करने आया है।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य बनने की उत्सुकता

जब वे लोग मार्ग में जा रहे थे तो किसी ने यीशु से कहा, 'जहां कहीं ५७ आप जाएंगे, मैं आपका अनुसरण करूंगा।' उन्होंने उत्तर दिया, ५८ 'लोमड़ियों के मांदें हैं और आकाश के पक्षियों के घोंसले, परंतु मानव-पुत्र के लिए सिर रखने को भी स्थान नहीं।' एक अन्य से उन्होंने कहा, 'मेरा ५९ अनुसरण करो।' पर उसने उत्तर दिया, 'मुझे पहले जाकर अपने पिता को गाड़ने की अनुमति दीजिए।' उन्होंने उससे कहा, 'मुरदों को अपने ६० मुरदे गाड़ने दो; परंतु तुम जाओ और परमेश्वर के राज्य का समाचार सुनाओ।' कोई दूसरा बोला, 'प्रभु, मैं आपका अनुसरण करूंगा, परंतु ६१ पहले मुझे अनुमति दीजिए कि अपने कुटुंबियों से विदा ले आऊं।' यीशु ६२ ने उससे कहा, 'जो हल पर हाथ रख कर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के उपयुक्त नहीं है।'

बहत्तर शिष्यों का भेजा जाना

10 इसके अनंतर प्रभु ने अन्य बहत्तर* को नियुक्त किया और १ प्रत्येक नगर या स्थान को, जहां वह स्वयं जाने वाले थे, उन्हें दो-दो करके आगे भेजा; और उनसे कहा, 'पके खेत तो बहुत हैं पर २ श्रमिक थोड़े हैं। इसलिए खेत के स्वामी से प्रार्थना करो कि वह अपने खेत काटने के लिए श्रमिक भेजे। जाओ, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच ३ मेमनों के सदृश भेज रहा हूं। न बटुआ लो, न झोली, न जूते। मार्ग में ४ किसी को नमस्कार न करो। जब किसी घर में प्रवेश करो तो पहले ५ कहो, "इस घर में शांति हो।" यदि वहां कोई शांति का पात्र‡ ६ होगा तो शांति उसमें विराजेगी, और नहीं तो तुम्हारे पास लौट आएगी। उसी घर में रहो, जो कुछ उनसे मिले, वही खाओ-पिओ; क्योंकि ७

---

* कुछ प्राचीन प्रतियों में, 'सत्तर'

‡ अक्षरशः 'शांति-पुत्र'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८ श्रमिक को अपना पारिश्रमिक मिलना चाहिए। जब तुम किसी नगर में प्रवेश करो और लोग तुम्हारा स्वागत करें तो जो कुछ तुम्हारे ९ संमुख रखा जाए, खाओ। वहां के रोगियों को स्वस्थ करो और १० कहो, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।" परंतु यदि किसी नगर में प्रवेश करो और लोग तुम्हारा स्वागत न करें तो ११ बाहर वहां की सड़कों पर निकल जाओ और कहो, "तुम्हारे नगर की धूल भी जो हमारे पैरों से लगी है, हम तुम्हारे सामने झाड़े देते हैं। १२ पर यह जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है।" मैं कहता हूं कि उस दिन उस नगर की अपेक्षा सदोम की दशा अधिक सहनीय १३ होगी। हाय खुराजीन! हाय बैतसैदा! जो सामर्थ्य के काम तुम में किए गए, वे यदि सूर और सैदा में किए जाते, तो उन्होंने बहुत पहले ही टाट १४ ओढ़कर और राख में बैठकर हृदय-परिवर्तन कर लिया होता। अस्तु, न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहनीय १५ होगी। और तू, हे कफरनहूम, क्या तू आकाश तक उठेगा? तू तो पाताल १६ में गिरेगा! जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है, जो तुम्हारी उपेक्षा करता है, वह मेरी उपेक्षा करता है, और जो मेरी उपेक्षा करता है वह उसकी उपेक्षा करता है जिसने मुझे भेजा है।'

बहत्तर शिष्यों का लौटना

१७ बहत्तर बड़े* आनंद में लौटे और कहने लगे, 'प्रभु, आपके नाम से १८ भूत भी हमारे अधीन हैं।' यीशु ने उनसे कहा, 'मैंने शैतान को बिजली १९ के सदृश आकाश से गिरा हुआ देखा। मैंने तुम्हें सर्पों और बिच्छुओं को कुचलने की सामर्थ्य एवं शत्रु की समस्त शक्ति पर अधिकार दिया है; २० और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी। तो भी इस कारण आनंद न मनाओ कि आत्माएं तुम्हारे अधीन हैं, परंतु इसलिए आनंदित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अथवा 'सत्तर'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यीशु का धन्यवाद देना

उसी समय उन्होंने पवित्र आत्मा में उल्लसित होकर कहा, 'हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी, मैं तुझे धन्यवाद देता हूं कि तूने ये बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से गुप्त रखीं और शिशुओं पर प्रकाशित की। हां, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है। कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है पर केवल पिता; और न कोई जानता है कि पिता कौन है पर केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकाशित करना चाहे।' २१ २२

तब उन्होंने शिष्यों की ओर मुड़कर व्यक्तिगत रूप से कहा, 'धन्य हैं वे नेत्र, जो ये बातें देखते हैं जिन्हें तुम देख रहे हो। मैं तुमसे कहता हूं कि अनेक नबियों और राजाओं ने चाहा कि जो बातें तुम देख रहे हो देखें, पर न देख सके; और जो बातें तुम सुन रहे हो सुनें, पर न सुन सके।' २३ २४

शाश्वत जीवन की प्राप्ति का उपाय

तब एक व्यवस्थाचार्य उठा और उसने यीशु की परीक्षा करने के लिए पूछा, 'गुरुजी, शाश्वत जीवन का उत्तराधिकारी होने के लिए मैं क्या करूं?' उन्होंने कहा, 'व्यवस्था में क्या लिखा है? तुम्हारा क्या अध्ययन है?' उसने उत्तर दिया, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को अपने संपूर्ण मन, संपूर्ण जीवन, संपूर्ण शक्ति और संपूर्ण बुद्धि से प्रेम कर, और अपने पड़ोसी को अपने समान।' उन्होंने उससे कहा, 'तुमने ठीक उत्तर दिया। यही करो, और तुम जीवित रहोगे।' २५ २६ २७ २८

दयालु सामरी

परंतु उसने अपने को ठीक प्रमाणित करने के लिए यीशु से पूछा, 'मेरा पड़ोसी कौन है?' यीशु ने उत्तर दिया, 'कोई मनुष्य यरूशलेम से यरीहो जा रहा था। वह डाकुओं से घिर गया। उन्होंने उसे लूट लिया और मार पीट कर उसे अधमरा छोड़कर चले गये। संयोगवश एक २९ ३० ३१

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरोहित उसी मार्ग से जा रहा था ; उसने उसे देखा तो कतरा कर चला
३२ गया। इसी प्रकार एक लेवी भी उस स्थान पर आया, उसे देखा और
३३ कतरा कर चला गया। अब एक सामरी यात्री उसके समीप से निकला।
३४ वह उसे देखकर दया से द्रवित हो उठा, उसके निकट गया और उसके घावों
पर तेल तथा दाखरस डालकर पट्टियां बांधीं, तब उसे अपनी सवारी पर
बैठाकर एक सराय में ले गया और वहां उसकी सेवा सुश्रूषा की।
३५ दूसरे दिन उसने दो दीनार निकाल कर सराय के स्वामी को दीं और कहा,
"इसकी सेवा सुश्रूषा करना ; यदि तुम्हारा अधिक व्यय हो जाए तो
३६ लौटने पर मैं तुम्हें चुका दूंगा।" तुम्हारे विचार में, इन तीनों में से कौन
३७ डाकुओं के हाथ पड़े मनुष्य का पड़ोसी सिद्ध हुआ।' उसने कहा, 'जिसने
उसके प्रति दया दिखाई।' यीशु ने उससे कहा, 'जाओ, तुम भी ऐसा ही
करो।'

मार्था और मरियम

३८ जब वे लोग यात्रा कर रहे थे तो यीशु किसी गांव में आए। और
वहां मार्था नामक स्त्री ने उनका अपने घर पर अतिथि-सत्कार किया।
३९ उसके एक बहिन थी जिसका नाम मरियम था। वह प्रभु के चरणों में
४० बैठी उनके वचन सुन रही थी, जब कि मार्था अनेक सेवा-कार्यों में उलझी
४१ हुई थी। उसने पास आकर कहा, 'प्रभु, आपको कुछ भी चिंता नहीं कि
मुझे मेरी बहिन ने सेवा-सत्कार करने के लिए अकेली छोड़ दिया है। उससे
कहिए कि मेरा हाथ बंटाए। प्रभु ने उसे उत्तर दिया, मार्था,मार्था, तुम बहुत
सी वस्तुओं के लिए चिंतित और व्याकुल हो। परंतु थोड़ी ही वस्तुओं की
४२ आवश्यकता है, वरन् एक ही की। मरियम ने उस उत्तम भाग को चुन
लिया है जो उससे छीना न जाएगा।'

प्रभु की प्रार्थना

११ एक समय वह किसी स्थान पर प्रार्थना कर रहे थे। जब समाप्त
कर चुके तो उनके एक शिष्य ने कहा, 'प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया, आप भी हमें सिखाइए।' उन्होंने २
कहा, 'जब तुम प्रार्थना करते हो तो कहो,

"पिता,
आपका नाम पवित्र माना जाए ;
आपका राज्य आए।
हमारे दिन भर की रोटी प्रति दिन हमें दिया कीजिए ; ३
हमारे पाप हमें क्षमा कीजिए, ४
क्योंकि हम भी अपने प्रत्येक ऋणी को क्षमा करते हैं।
और हमें परीक्षा में न डालिए।"'

आग्रहपूर्ण प्रार्थना

अर्द्धरात्रि में आनेवाले मित्र का दृष्टांत

उन्होंने यह भी कहा, 'मान लो तुममें से किसी का एक मित्र है। ५
वह आधी रात को उसके पास जाकर कहता है, "मित्र, मुझे तीन
रोटियां दो; क्योंकि मेरा एक मित्र यात्रा करके मेरे पास आया है और मेरे ६
पास उसे भोजन कराने के लिए कुछ भी नहीं है।" और मान लो वह भीतर ७
से उत्तर दे, "मुझे कष्ट न दो, द्वार बंद हो चुका है, मेरे बालक मेरे पास
बिछौने पर हैं; मैं उठकर तुम्हें दे नहीं सकता।" मैं तुमसे कहता हूं ८
कि यदि उसका मित्र होने के कारण, वह उठकर उसे कुछ नहीं देगा, तो
कम से कम लज्जा छोड़कर मांगने के कारण, वह उठेगा और उसकी आव-
श्यकता पूरी करेगा। मैं तुमसे कहता हूं, मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा ; ९
ढूंढ़ो तो तुम पाओगे ; खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा ; १०
क्योंकि जो मांगता है उसे मिलता है, जो ढूंढ़ता है वह पाता है, और जो
खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा। तुममें से ऐसा कौन पिता है कि ११
यदि उसका पुत्र मछली मांगे—क्या वह उस मछली के स्थान पर सांप देगा,
अथवा यदि अंडा मांगे तो क्या वह बिच्छू देगा? जब तुम बुरे होकर भी १२
अपने बालकों को उत्तम उपहार देना जानते हो तो स्वर्गिक पिता, उनसे १३
मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देंगे!

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैतान की शक्ति अथवा पवित्र आत्मा की

१४ वह एक भूत को जो गूंगा था, निकाल रहे थे। भूत के निकलते
१५ ही गूंगा बोलने लगा तो लोग चकित रह गए। परंतु उनमें से कई कहने लगे, 'यह भूतों के अधिपति बालजबूल की सहायता से भूतों को
१६ निकालता है।' दूसरों ने उनकी परीक्षा करने के लिए उनसे आकाश
१७ का कोई चिह्न मांगा। यीशु ने उनके विचार जानकर उनसे कहा, 'जिस राज्य में फूट पड़ जाए, वह उजड़ जाता है, और जिस घर में फूट पड़ जाए,
१८ वह ढह जाता है। यदि शैतान स्वयं अपना विरोधी हो जाए तो उसका राज्य कैसे स्थिर रहेगा? तुम कह रहे हो कि मैं बालजबूल द्वारा भूत
१९ निकालता हूं। अच्छा, यदि मैं बालजबूल द्वारा भूत निकालता हूं तो तुम्हारे पुत्र किसके द्वारा निकालते हैं? फलतः वे ही तुम्हारे न्यायकर्ता
२० होंगे। परंतु यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ्य* से भूतों को निकालता हूं तो
२१ परमेश्वर का राज्य तुम्हारे समीप आ पहुंचा है। यदि कोई बलवान सशस्त्र होकर अपने भवन का पहरा देता है तो उसकी संपत्ति सुरक्षित
२२ रहती है। परंतु यदि कोई उससे भी बलवान उस पर टूट पड़े और उसे जीत ले तो उसके वे शस्त्र जिन पर उसे भरोसा था, छीन लेता है और लूटी
२३ हुई संपत्ति बांट देता है। जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और
२४ जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बखेरता है। जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है तो निर्जन स्थानों में विश्राम की खोज में घूमती है; और न मिलने पर कहती है कि मैं अपने घर को जहां से मैं आई थी लौट
२५ जाऊंगी, और आकर उसे स्वच्छ एवं सुसज्जित पाती है। तब वह जाकर
२६ अपने से अधिक दुष्ट सात आत्माएं और ले आती है, जो वहां प्रवेश कर रहने लगती हैं; और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अक्षरशः 'अंगुली'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिह्न ढूंढ़ने के विरुद्ध चेतावनी

वह ये बातें कह ही रहे थे कि जनसमूह में से एक स्त्री ने उच्च २७
स्वर में उनसे कहा, 'धन्य है वह गर्भ जिसने आपको धारण किया, और वे
स्तन जिनसे आपने पिया।' इस पर यीशु ने कहा, 'परंतु अधिक धन्य हैं २८
वे. जो परमेश्वर का वचन सुनते और उसका पालन करते हैं।'

जब और भी जनसमूह एकत्रित हो गया तो वह कहने लगे, 'यह पीढ़ी २९
दुष्ट है। यह चिह्न मांगती है;परंतु इसे योना के चिन्ह के अतिरिक्त कोई
अन्य चिह्न न मिलेगा। क्योंकि जिस प्रकार योना नीनवे निवासियों के ३०
लिए चिह्न बने वैसे ही मानव-पुत्र इस पीढ़ी के लिए होगा। दक्षिण देश ३१
की रानी इस पीढ़ी के लोगों के साथ न्याय में खड़ी होगी और इन्हें दंडनीय
बताएगी; क्योंकि वह पृथ्वी के छोर से सुलैमान की बुद्धिमत्तापूर्ण बातें
सुनने के लिए आई थी; और देखो, यहां वह है जो सुलैमान से भी महान्
है। नीनवे के लोग इस पीढ़ी के साथ न्याय में खड़े होंगे और इसे दंडनीय ३२
बताएंगे; क्योंकि उन्होंने योना का संदेश सुन कर हृदय-परिवर्तन
किया, और देखो, यहां वह है जो योना से भी महान् है।

दीपक से शिक्षा

'कोई मनुष्य दीपक को जलाकर तलघर में अथवा आढ़क के नीचे नहीं ३३
रखता, वरन् दीवट पर रखता है कि भीतर आनेवालों को प्रकाश मिले।
शरीर का दीपक तुम्हारी आंख है। यदि तुम्हारी आंखें ठीक हों तो तुम्हारा ३४
समस्त शरीर प्रकाश में रहता है, किन्तु यदि वे रोगी हो जाएं तो तुम अंध-
कार में पड़ जाते हो। सजग रहो कि कहीं तुम्हारा प्रकाश अंधकार में ३५
परिणत न हो जाए। यदि तुम्हारा समस्त शरीर प्रकाश में है और उसका ३६
कोई अंश अंधकार में नहीं, तो वह सर्वथा दीप्तिवान् रहेगा; जैसे दीपक
अपने आलोक से तुम्हें दीप्तिमान् करता है।'

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरीसी एवं शास्त्रियों की भर्त्सना

३७ वह बोल ही रहे थे कि एक फरीसी नें उनसे निवेदन किया कि उसके साथ भोजन करें। वह भीतर जाकर भोजन करने बैठे। ३८ फरीसी को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उन्होंने भोजन से पूर्व ३९ हाथ-पांव नहीं धोए। प्रभु ने उससे कहा, 'तुम फरीसी लोग कटोरों और थालियों को बाहर-बाहर तो मांजते हो पर तुम्हारे भीतर लोलुपता ४० और दुष्टता भरी है। हे निर्बुद्धियो, जिसने बाहरी भाग बनाया है, ४१ उसने क्या भीतरी भाग नहीं बनाया? भीतरी वस्तुएं दान कर दो, और तुम्हारे लिए सब कुछ शुद्ध हो जाएगा।

४२ 'परंतु फरीसियो, शोक तुम पर! तुम पोदीने, सुदाब और सब प्रकार के शाकपात का दसवां अंश तो देते हो, परंतु न्याय एवं परमेश्वर के प्रेम की उपेक्षा करते हो। चाहिए तो था कि तुम इन्हें भी करते और ४३ उन्हें भी न छोड़ते। फरीसियो, शोक तुम पर, सभागृहों में प्रमुख आसन ४४ और बाजारों में प्रणाम लेना तुम्हें प्रिय है। शोक तुम पर, तुम उन अदृश्य कबरों के समान हो जिन पर लोग अनजाने चलते फिरते हैं।'

४५ एक व्यवस्थाचार्य ने उन्हें उत्तर दिया, 'गुरु, ऐसी बातें कहकर आप ४६ हमारा भी अपमान कर रहे हैं।' उन्होंने कहा, 'हे व्यवस्था के आचार्यो, तुम पर भी शोक! तुम मनुष्यों पर दुर्वह बोझ लादते हो पर स्वयं उस बोझ ४७ को उठाने के लिए एक अंगुली भी नहीं लगाते। शोक तुम पर, तुम उन ४८ नबियों की कबरें बनाते हो जिनको तुम्हारे पूर्वजों ने मार डाला। इस प्रकार तुम अपने पूर्वजों के कर्मों के साक्षी हो एवं उनसे सहमत हो, क्योंकि उन्होंने ४९ नबियों को मार डाला और तुम उनकी कबरें बनाते हो। इसी कारण परमेश्वर की प्रज्ञा ने कहा है, "मैं उनके पास नबियों और प्रेरितों को भेजूंगी; उनमें से कुछ को वे मार डालेंगे और कुछ पर अत्याचार करेंगे," ५० जिससे सभी नबियों के रक्त का, जो संसार के आरंभ से बहाया गया, लेखा

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस पीढ़ी से लिया जाए। मैं सच कहता हूं कि हाबिल के रक्त से लेकर, वेदी और मंदिर के मध्य मारे गए, ज़करियाह् के रक्त तक– इस सबका लेखा इस पीढ़ी से लिया जाएगा। शोक तुम व्यवस्थाचार्यों पर! क्योंकि तुमने ज्ञान की कुंजी तो ली है; पर तुमने स्वयं प्रवेश नहीं किया, और प्रवेश करनेवालों को भी रोक दिया है।' ५१ ५२

जब यीशु वहां से चले तो व्यवस्थाचार्य और फरीसी बुरी तरह उनके पीछे पड़ गए। और बहुत सी बातों के संबंध में उनसे प्रश्न पर प्रश्न करने लगे। वे लोग इस घात में थे कि उनके मुंह की कोई बात पकड़ें। ५३ ५४

पाखंड के विरुद्ध शिक्षा

12 इतने में सहस्रों की भीड़ लग गई यहां तक कि लोग एक दूसरे को कुचलने लगे। तब यीशु ने पहले अपने शिष्यों से कहा, 'फरीसियों के खमीर अर्थात् कपट से सावधान रहना। ऐसा कुछ नहीं जो ढका हो और खोला न जाएगा, जो छिपा हो और जाना न जाएगा। तुमने जो कुछ अंधकार में कहा है, वह प्रकाश में सुना जाएगा; और जो कोठरियों में कानाफूसी की है, वह छतों से प्रचारित की जाएगी। १ २ ३

अभय-भावना

'मैं तुमसे, अपने मित्रों से, कहता हूं कि उनसे मत डरो जो शरीर को मार डालते हैं, परंतु उसके पश्चात् कुछ नहीं कर सकते। मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम्हें किससे डरना चाहिए। उससे डरो जिसमें तुम्हें मार कर नरक में डालने की शक्ति है। हां, मैं तुमसे कहता हूं कि उससे डरो। क्या दो पैसे में पांच गौरैयां नहीं बिकतीं? परंतु परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलता। तुम्हारे तो सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। डरो मत, तुम अनेक गौरैयों से श्रेष्ठ हो। ४ ५ ६ ७

'मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई मनुष्यों के संमुख मुझे अंगीकार करता हूं, उसे मानव-पुत्र भी ... ८ ९

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो मनुष्यों के संमुख मुझे अंगीकार नहीं करता, वह परमेश्वर के दूतों के
१० संमुख अंगीकृत न होगा। जो मानव-पुत्र के विरुद्ध शब्द कहे, उसे क्षमा मिल
११ जाएगी, परंतु जो पवित्र आत्मा की निंदा करे, उसे क्षमा नहीं मिलेगी। जब
वे तुम्हें सभागृहों, शासकों और अधिकारियों के संमुख ले जाएं तो चिंता न
१२ करना कि तुम कैसे और क्या उत्तर दोगे ; क्योंकि उस समय पवित्र आत्मा
तुम्हें सिखा देगा कि तुम्हें क्या कहना चाहिए।'

लोभ: मूर्ख धनवान का दृष्टांत

१३ जनसमूह में से किसी ने कहा, 'गुरुजी, मेरे भाई से कहिए कि मेरे
१४ साथ पैतृक संपत्ति का बंटवारा कर ले।' उन्होंने उत्तर दिया, 'हे
मनुष्य, किसने मुझे तुम्हारा पंच या बंटवारा करनेवाला नियुक्त किया है?'
१५ और फिर उनसे बोले, 'सावधान, प्रत्येक प्रकार के लोभ से बचो, क्योंकि
१६ संपत्ति की संपन्नता में मनुष्य का जीवन नहीं है।' यीशु ने उन्हें एक
१७ दृष्टांत सुनाया, 'किसी धनवान की भूमि में बहुत अच्छी उपज हुई। उसने
मन ही मन सोचा, "मैं क्या करूं? मेरे पास अपनी उपज रखने के लिए
१८ स्थान नहीं है।" तब वह बोला, "मैं यह करूंगा: मैं अपने कोठार
तोड़कर उन्हें और भी बड़े बनाऊंगा, और वहां अपना सब अन्न और संपत्ति
१९ रखूंगा। मैं अपने प्राण से कहूंगा, "प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिए
२० प्रचुर संपत्ति रखी है ; चैन से रह, खा, पी और आनंद कर।" परंतु
परमेश्वर ने उससे कहा, "हे निर्बुद्धि, इसी रात्रि को तेरे प्राण तुझसे ले लिए
२१ जाएंगे, तब जो कुछ तूने एकत्र किया है, वह किसका होगा?" ऐसा ही
वह है, जो अपने लिए धन संचय करता है, परंतु परमेश्वर के यहां धनी
नहीं।'

चिंता-उन्मूलन

२२ फिर उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, 'इस कारण मैं तुमसे कहता
हूं कि जीवन की चिंता न करना कि हम क्या खाएंगे, और न शरीर की,
२३ कि हम क्या पहनेंगे। भोजन की अपेक्षा प्राण और वस्त्र की अपेक्षा शरीर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक मूल्यवान् है। कौवों पर ध्यान दो : वे न बोते हैं और न काटते २४
हैं; उनके न भंडार हैं और न कोठार; फिर भी परमेश्वर उन्हें
पालते हैं। तुम पक्षियों से कितने अधिक मूल्यवान् हो। चिंता करके २५
तुममें से कौन अपनी आयु को एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?'* अस्तु, २६
तुदि तुम इतना छोटा काम भी नहीं कर सकते तो फिर दूसरी बातों की
चिंता क्यों करते हो? पुष्पों पर ध्यान दो,‡ न तो वे कातते हैं और न २७
बुनते; फिर भी, मैं तुमसे कहता हूं कि स्वयं सुलैमान भी अपने समस्त
वैभव में उनमें से किसी के समान विभूषित नहीं थे। यदि परमेश्वर २८
घास को, जो आज मैदान में है और कल अग्नि में झोंकी जाएगी,
इस प्रकार पहिनाते हैं तो हे अल्प विश्वासियो, तुमको कितना अधिक
न पहिनाएंगे! तुम इस खोज में न रहो कि हम क्या खाएंगे अथवा २९
क्या पीएंगे, और न चिंतित हो; क्योंकि इन वस्तुओं की खोज तो संसार ३०
की अन्य सब जातियां करती हैं; और तुम्हारे पिता जानते हैं कि तुम्हें
इनकी आवश्यकता है। अस्तु, उनके राज्य की खोज में रहो और ये वस्तुएं ३१
भी तुम्हारी हो जाएंगी। हे छोटे झुंड, मत डर, तुम्हारे पिता की इसमें ३२
प्रसन्नता है कि तुम्हें राज्य प्रदान करें। अपनी संपत्ति बेचो और दान ३३
कर दो; अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ जो कभी पुराने नहीं होते।
स्वर्ग में अक्षय धन एकत्रित करो, जहां न चोर पहुंचता है और न कीड़े
लगते हैं; क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी होगा। ३४

सदैव जागृत रहो

'तुम्हारी कमर कसी रहे और दीपक जलते रहें। तुम उन लोगों ३५
के सदृश बनो जो अपने स्वामी की प्रतीक्षा करते हैं कि वह विवाहोत्सव से ३६
कब लौटे, कि जैसे ही वह आए और खटखटाए तो तुरंत उसके लिए द्वार

---

*देखिए मत्ती ६ : २७ की टिप्पणी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

‡कुछ प्रतियों में ये शब्द भी पाए जाते हैं– वे किस प्रकार खिलते हैं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३७ खोल दें। धन्य हैं वे दास, जिन्हें स्वामी आकर जागते पाए। मैं तुमसे सच कहता हूं कि वह अपनी कमर कसेगा, उन्हें भोजन करने के लिए बैठाएगा
३८ और घूम घूम कर उनकी सेवा करेगा। यदि वह रात्रि में दूसरे या
३९ तीसरे पहर आकर भी उन्हें इसी प्रकार पाए तो धन्य हैं वे दास। इतना जान रखो कि यदि गृहस्वामी को पता रहता कि चोर किस घड़ी आ रहा है
४० तो वह अपने घर में सेंध न लगने देता। तुम भी तैयार रहो;क्योंकि जिस घड़ी की तुम कल्पना भी नहीं करते, उसी घड़ी मानव-पुत्र आ जाएगा।'

विश्वासपात्र भंडारी

४१ पतरस ने पूछा, 'प्रभु, यह दृष्टांत आप हमसे कह रहे हैं या सबसे?'
४२ प्रभु ने कहा, 'तो कौन है वह विश्वासपात्र और बुद्धिमान् भंडारी जिसे उसका स्वामी अपने दासों पर नियुक्त करे कि नियत समय पर उन्हें निर्दिष्ट
४३ आहार दे? धन्य है वह दास जिसे उसका स्वामी आने पर ऐसा करते पाए।
४४ मैं तुमसे सच कहता हूं कि वह उसे अपनी समस्त संपत्ति पर अधिकारी
४५ नियुक्त करेगा। परंतु यदि वह दास अपने मन में कहे कि मेरे स्वामी के आने में देर है, और सेवक सेविकाओं को पीटने, खाने-पीने और नशे में चूर
४६ होने लगे, तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आ जाएगा, जब वह उसकी प्रतीक्षा नहीं करता होगा, और ऐसी घड़ी जिसे वह नहीं जानता होगा। वह उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा और उसकी गणना अविश्वासियों में करेगा।
४७ वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानते हुए भी तैयार नहीं रहा, और न
४८ उसकी इच्छा पर चला, वह बहुत मार खाएगा; परंतु जिसने अनजाने में मार खाने का काम किया है, वह थोड़ी मार खाएगा। जिसे बहुत मिला है, उससे बहुत मांगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत सा लिया जाएगा।

समय के लक्षण

४९ 'मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूं और चाहता हूं कि वह अभी
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
५० प्रज्वलित हो उठती। मुझे एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वह पूर्ण

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हो जाता, मुझे बड़ी आकुलता है। क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर शांति कराने आया हूं? मैं कहता हूं, नहीं वरन् फूट डालने आया हूं! क्योंकि अब से एक ही घर के पांच व्यक्ति एक दूसरे के विरुद्ध हो जाएंगे–तीन के विरुद्ध दो, और दो के विरुद्ध तीन। वे एक दूसरे का विरोध करेंगे–पिता पुत्र का और पुत्र पिता का, पुत्री माता का और माता पुत्री का, पुत्रवधू सास का और सास पुत्रवधू का।' ५१ ५२ ५३

उन्होंने जनसमूह से यह भी कहा, 'पश्चिम में मेघ उठते देखकर तुम तुरंत कह देते हो कि वर्षा होगी, और ऐसा ही होता है; और दक्षिणी वायु चलते देखकर कहते हो कि लू चलेगी, और ऐसा ही होता है। पाखंडियो, पृथ्वी और आकाश के लक्षणों की पहिचान तो तुम कर लेते हो, फिर इस काल के लक्षणों को क्यों नहीं पहिचानते? तुम अपने आप ही निर्णय क्यों नहीं कर लेते कि उचित क्या है? जब तुम वादी के साथ शासक के पास जा रहे हो, तो मार्ग में ही उससे समझौता करने की चेष्टा करो। ऐसा नहीं कि वह तुम्हें न्यायाधीश के पास खींच ले जाए, और न्यायाधीश तुम्हें अधिकारी को सौंप दे; और वह तुम्हें कारागार में डाल दे। मैं तुमसे कहता हूं कि जब तक तुम पैसा-पैसा न चुका दोगे, वहां से निकलने नहीं पाओगे।' ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९

हृदय-परिवर्तन के लिए उपदेश

13 उस समय कुछ लोग उपस्थित थे, जिन्होंने यीशु को उन गलील निवासियों के संबंध में सूचना दी जिनका रक्त पिलातुस ने उन्हींके बलिदानों के साथ मिलाया था। यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या तुम्हारा विचार है कि ये गलील निवासी अन्य सब गलील निवासियों से अधिक पापी थे कि उन्हें यह सहना पड़ा? मैं तुमसे कहता हूं, नहीं; परंतु यदि हृदय-परिवर्तन न करो तो तुम सब भी इसी प्रकार नष्ट हो जाओगे। अथवा क्या तुम्हारा विचार है कि वे अठारह, जो शीलोह के बुर्ज के गिरने से दबकर मर गए, यरूशलेम के अन्य सब निवासियों से अधिक अपराधी १ २ ३ ४

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे ? मैं कहता हूं, नहीं; परन्तु यदि हृदय-परिवर्तन न करो तो तुम सब भी इसी प्रकार नष्ट हो जाओगे।'

फलहीन अंजीर का वृक्ष

६ फिर उन्होंने यह दृष्टांत कहा, 'किसी मनुष्य के दाख-उद्यान में अंजीर का वृक्ष लगा था। वह उससे फल तोड़ने आया परंतु उसे कुछ ७ न मिला। इस पर उसने माली से कहा, "देखो, तीन वर्ष से मैं इस अंजीर के वृक्ष से फल लेने आ रहा हूं पर मुझे कुछ नहीं मिलता। इसे काट ८ डालो, यह भूमि को व्यर्थ क्यों घेरे हुए है ?" उसने उत्तर दिया, "प्रभु, इसे इस वर्ष और रहने दीजिए। मैं इसके आसपास खोदकर खाद डालूंगा। यदि यह आगे फल दे तो ठीक; यदि न दे तो काट डालिए।"'

कुबड़ी को सबत के दिन स्वस्थ करना

१० सबत के दिन वह किसी सभागृह में उपदेश दे रहे थे। वहां एक स्त्री ११ थी जिसे अठारह वर्ष से एक निर्बल करनेवाली आत्मा लगी थी। यह स्त्री झुक कर दुहरी हो गई थी और अपने आप को पूरी तरह सीधा नहीं कर १२ सकती थी। यीशु ने यह देखकर उसे बुलाया और कहा, 'हे नारी, तुम १३ अपनी निर्बलता से मुक्त हो गईं।' तब उन्होंने उसे स्पर्श किया; और १४ वह उसी क्षण सीधी हो गई, तथा परमेश्वर की स्तुति करने लगी। इस पर सभागृह का अधिकारी रुष्ट हो गया क्योंकि यीशु ने उसे सबत के दिन स्वस्थ किया था। वह लोगों से बोला, 'छः दिन हैं जिनमें काम करना उचित है; उन दिनों में आओ और स्वस्थ हो, सबत के दिन नहीं।' १५ प्रभु ने उसे उत्तर दिया, 'पाखंडियो, क्या सबत के दिन तुम में से प्रत्येक १६ अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाते ? फिर यह तो अब्रहाम की पुत्री है, जो इस अठारह वर्षों से शैतान के बंधन में थी! १७ क्या सबत के दिन इसे बंधन मुक्त करना अनुचित है ?' उनके इस कथन से सब विरोधी लज्जित हो गए, पर सब लोग उनके समस्त महिमामय कार्यों के कारण आनंदित हुए।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राई के दाने और खमीर का दृष्टांत

तब उन्होंने कहा, परमेश्वर का राज्य किसके सदृश है ? उसकी १८
उपमा मैं किससे दूं ? वह राई के बीज के सदृश है जिसे किसी मनुष्य ने १९
लेकर अपने उद्यान में बो दिया। वह बढ़ा और वृक्ष हो गया, तथा
आकाश के पक्षी आकर उसकी शाखाओं में बसेरा करने लगे।'

उन्होंने फिर कहा, 'परमेश्वर के राज्य की उपमा मैं किससे दू ? २०
वह ख़मीर के सदृश है जिसे किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी मैदे में २१
मिला दिया, और होते होते सब मैदे में खमीर उठ आया।'

संकीर्ण पथ

वह नगर-नगर और गांव-गांव भ्रमण कर उपदेश देते हुए यरूशलेम २२
की ओर यात्रा कर रहे थे। किसी ने उनसे पूछा, 'प्रभु, क्या उद्धार पाने २३
वाले थोड़े हैं ?' उन्होंने कहा, 'संकीर्ण द्वार से प्रवेश करने का प्रयत्न २४
करो ; क्योंकि मैं कहता हूं कि बहुत लोग प्रवेश करने की चेष्टा करेंगे,
पर नहीं कर सकेंगे। जब गृहस्वामी ने उठकर द्वार बंद कर लिया तो तुम २५
लोग बाहर खड़े हुए खटखटाओगे और कहोगे, "हे प्रभु, हमारे लिए द्वार
खोलिए।" वह उत्तर देगा, "मैं नहीं जानता कि तुम कहां से आए
हो।" तब तुम कहने लगोगे, "हमने आपके समक्ष खाया-पिया और २६
आपने हमारे मार्गों में उपदेश दिया।" परंतु वह तुमसे कहेगा, "मैं नहीं २७
जानता कि तुम कहां से आए हो ; हे सब कुकर्मियो, मुझ से दूर हो।"
जब तुम अब्रहाम, इसहाक, याकूब और सब नबियों को परमेश्वर के राज्य २८
में देखोगे, और अपने आपको बाहर निकाला हुआ पाओगे, तब वहां रोना
और दांत पीसना होगा। और पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से २९
लोग आएंगे और परमेश्वर के राज्य में भोजन करेंगे। देखो, जो अंतिम ३०
हैं, वे प्रथम होंगे; और जो प्रथम हैं, वे अंतिम।'

हेरोदेस की शत्रुता

उसी समय कुछ फरीसी आकर उनसे कहने लगे, 'आप विदा हों, ३१
और यहां से चले जाएं; क्योंकि हेरोदेस आपको मार डालना चाहता है।'

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३२ वह उनसे बोले, 'जाकर उस लोमड़ी से कह दो, "मैं आज और कल भूतों को निकालता और रोगियों को स्वस्थ करता रहूंगा और तीसरे दिन मेरा
३३ कार्य पूरा हो जाएगा। परंतु आज, कल और परसों मुझे चलते रहना है; क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई नबी यरूशलेम के बाहर मारा जाए।"

यरूशलेम पर विलाप

३४ 'हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, जो नबियों की हत्या करती और प्रेरितों को पत्थरों से मार डालती है, मैंने कितनी बार चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को पंखों के नीचे एकत्रित करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बच्चों को
३५ एकत्रित कर लूं, पर तूने न चाहा। देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है। मैं तुमसे कहता हूं कि तुम मुझे नहीं देखोगे जब तक कहने न लगो, "जो प्रभु के नाम से आता है, उसकी स्तुति हो।"

जलोदर-पीड़ित को सबत के दिन स्वस्थ करना

14 वह एक सबत के दिन किसी फरीसी अधिकारी के घर भोजन करने गए तो लोग उनकी घात में लगे थे। और देखो, जलोदर
३ से पीड़ित एक मनुष्य यीशु के सामने आया। यीशु ने व्यवस्थाचार्यों और फरीसियों से पूछा, 'सबत के दिन स्वस्थ करना विहित है या नहीं?'
४ पर वे चुप रहे। अस्तु उन्होंने रोगी को ले स्वस्थ किया और जाने
५ दिया; और तब उन लोगों से कहा, 'तुममें से ऐसा कौन है जिसका पुत्र या बैल कुएं में गिर जाए और वह सबत के दिन उसे तत्काल बाहर न
६ निकाल ले?' वे इसका कुछ उत्तर न दे सके।

नम्रता और आतिथ्य

७ जब उन्होंने अतिथियों को मुख्य-मुख्य स्थान चुनते देखा तो उनसे यह
८ दृष्टांत कहा : 'जब कोई तुम्हें विवाहोत्सव में निमंत्रित करे तो मुख्य स्थानों पर मत बैठो। कहीं ऐसा न हो कि उसने तुमसे भी अधिक सम्माननीय
९ व्यक्ति को निमंत्रित किया हो; और जिसने तुम्हें और उसे निमंत्रित

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है, वह आकर तुमसे कहे, "इनको स्थान दीजिए।" तब तुमको लज्जित होकर सबसे नीचे स्थान पर बैठना पड़ेगा। अतएव जब तुम्हें १० निमंत्रित किया जाए, तो जाकर सबसे नीचे स्थान पर बैठो कि जब तुम्हें निमंत्रण देनेवाला आए तो तुमसे कहे, "आगे बढ़कर बैठिए।" इससे सब अतिथियों के समक्ष तुम्हारी प्रतिष्ठा होगी; क्योंकि प्रत्येक मनुष्य ११ जो अपने आपको ऊंचा करता है, वह नीचा किया जाएगा, और जो अपने आपको नीचा करता है, वह ऊंचा किया जाएगा।'

उन्होंने निमंत्रण देनेवाले से भी कहा, 'जब तुम मध्याह्न अथवा १२ रात्रि का भोज दो तो अपने मित्रों, भाइयों, संबंधियों अथवा धनवान् पड़ोसियों को मत बुलाओ ; ऐसा न हो कि वे भी तुम्हें निमंत्रित करें और तुम्हें प्रतिदान मिल जाए। जब तुम भोज दो तो कंगालों, अपंगों, लंगड़ों १३ और अंधों को निमंत्रित करो तब तुम धन्य होगे; क्योंकि वे प्रतिदान १४ नहीं कर सकते, और तुम्हें धर्मात्माओं के पुनरुत्थान के समय इसका प्रतिदान मिलेगा।'

भोज का दृष्टांत

यह सुनकर उनके साथ बैठा हुआ कोई अतिथि बोला, 'धन्य है वह १५ जो परमेश्वर के राज्य में भोजन करेगा।' यीशु ने उससे कहा, 'किसी १६ मनुष्य ने बड़ा भोज दिया और बहुतों को निमंत्रित किया। भोज का १७ समय होने पर उसने निमंत्रित व्यक्तियों को अपने दास द्वारा कहला भेजा, "पधारिए, क्योंकि सब कुछ तैयार है।" पर वे सब के सब बहाना करने १८ लगे। पहले ने कहा, "मैंने एक खेत मोल लिया है और उसे देखने के लिए मेरा जाना आवश्यक है। निवेदन है कि मेरी ओर से क्षमा मांग लेना।" दूसरे ने कहा, "मैंने पांच जोड़े बैल मोल लिए हैं और उनको परखने जा १९ रहा हूं। निवेदन है कि मेरी ओर से क्षमा मांग लेना।" एक और बोला, २० "मैंने विवाह किया है, इसलिए नहीं आ सकता।" दास ने लौटकर ये २१ बातें अपने स्वामी को कह सुनाईं। इस पर गृहस्वामी ने क्रुद्ध होकर अपने

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास से कहा, "तुरंत नगर के मार्गों और गलियों में जाओ और कंगालों,
२२ लंगड़ों एवं अंधों को यहां ले आओ।" दास ने बताया, "स्वामी, आपने
२३ जो आज्ञा दी थी वह पूरी हो चुकी, और फिर भी स्थान है।" इस पर
स्वामी ने दास से कहा, "सड़कों और बाड़ों की ओर जाओ और लोगों
२४ को भीतर आने के लिए बाध्य करो कि मेरा घर भर जाए। क्योंकि मैं
तुमसे कहता हूं कि उन निमंत्रित व्यक्तियों में से कोई भी मेरे भोज का
स्वाद न लेने पाएगा।"'

शिष्यों के लिए आत्मत्याग की आवश्यकता

२५ अब विशाल जनसमूह उनके साथ चल रहा था; वह घूमकर उनसे
२६ कहने लगे, 'यदि कोई मेरे पास आता है और अपने माता-पिता, पत्नी और
बच्चों, भाइयों और बहिनों, यहां तक कि अपने प्राणों से भी वैर नहीं करता,
२७ वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता। जो अपना क्रूस नहीं उठाता
२८ और मेरे पीछे नहीं चलता, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता। तुममें से ऐसा
कौन है जो गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर व्यय का विचार न
२९ कर ले कि उसे पूरा करने के साधन उसके पास हैं या नहीं? ऐसा न हो कि
नींव डालने पर उसे पूरा न कर सके और देखनेवाले उसका उपहास करने
३० लगें कि इस मनुष्य ने निर्माण कार्य आरंभ तो किया, पर पूरा न कर
३१ सका। अथवा ऐसा कौन राजा है कि दूसरे राजा से युद्ध करने निकले,
और पहले बैठकर अच्छी तरह विचार न कर ले कि जो बीस सहस्र लेकर
मुझपर चढ़ा आता है, क्या मैं दस सहस्र के साथ उसका सामना कर
३२ सकूंगा? यदि नहीं तो उसके दूर रहते ही राजदूत भेजकर उससे
३३ संधि की चर्चा करेगा। इस प्रकार तुममें से जो अपना सर्वस्व त्याग न
करे, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता।

३४ 'नमक अच्छा है, परंतु यदि नमक अपना सलोनापन खो बैठे तो वह
३५ किससे स्वादिष्ट किया जाएगा? वह न तो भूमि के उपयोग का रहता है
और न खाद के। लोग उसे बाहर फेंक देते हैं। जिसके सुनने के कान
हों, सुन ले।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोई हुई भेड़

15 सब कर लेनेवाले और पापी उनके पास आ रहे थे कि उनकी बातें सुनें। इस पर फरीसी और शास्त्री बड़बड़ाने लगे, 'यह तो पापियों का स्वागत करता और उनके साथ खाता है।' तब यीशु ने उनसे यह दृष्टांत कहा, 'तुममें से कौन है जिसकी सौ भेड़ हों और उनमें से एक खो जाए तो निन्नानवे को निर्जन प्रदेश में छोड़कर खोई भेड़ को, जब तक वह मिल न जाए, ढूढ़ता न रहे? मिल जाने पर वह उसे आनंदपूर्वक कंधे पर उठा लेता है, और घर आकर अपने मित्रों तथा पड़ोसियों को एकत्रित करता और कहता है, "मेरे साथ आनंद मनाओ, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है।" मैं तुमसे कहता हूं कि इसी प्रकार, हृदय-परिवर्तन करनेवाले एक पापी के विषय में जितना आनंद स्वर्ग में मनाया जाएगा, उतना निन्नानवे ऐसे धार्मिकों के विषय नहीं, जिन्हें हृदय-परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है। १ २ ३ ४ ५ ६ ७

खोई हुई मुद्रा

'अथवा, कौन स्त्री होगी जिसके पास दस मुद्राएं* हों और उनमें से एक खो जाए तो दीपक जलाकर घर को नहीं बुहारे; और जब तक मिल न जाए, मन लगा कर उसे ढूंढ़ती न रहे? मिल जाने पर वह सहेलियों और पड़ोसिनों को एकत्रित कर कहती है, "मेरे साथ आनंद मनाओ, क्योंकि मेरी खोई हुई मुद्रा मिल गई है।" मैं तुमसे कहता हूं कि इसी प्रकार हृदय-परिवर्तन करने वाले एक पापी के विषय में स्वर्गदूतों के समक्ष आनंद मनाया जाता है।' ८ ९ १०

उड़ाऊ पुत्र का दृष्टांत

उन्होंने कहा, 'किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उनमें से छोटे ने पिता से कहा, "पिताजी, संपत्ति, से मेरा अंश मुझे दीजिए।" उसने ११

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* मूल में 'द्राख्मा'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३ संपत्ति उनमें बांट दी। बहुत दिन न बीते थे कि छोटा पुत्र अपना सब कुछ एकत्र कर किसी दूर देश को चला गया और वहां भोग-विलास में
१४ अपनी संपत्ति उड़ा दी। जब वह अपना सब कुछ व्यय कर चुका तो उस
१५ देश में भयंकर अकाल पड़ा और वह कंगाल हो गया। इसलिए उसने उस देश के एक नागरिक के यहां आश्रय लिया, जिसने उसे अपने खेतों में
१६ सूअर चराने भेजा। जो फलियां सूअर खाते थे, उनसे अपना पेट भरने के
१७ लिए वह तरसता था, पर उसे कोई कुछ नहीं देता था। तब वह अपने आपे में आया और कहने लगा, "मेरे पिता के कितने ही श्रमिकों को
१८ प्रचुर भोजन मिलता है, और मैं यहां भूखों मर रहा हूं। मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उनसे कहूंगा, 'पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध
१९ और आपके प्रति पाप किया है। अब मैं इस योग्य नहीं कि आपका पुत्र
२० कहलाऊं। मुझे एक श्रमिक के समान रख लीजिए।" तब वह उठा और अपने पिता के पास चला। अभी वह दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखा और दया से द्रवित हो उठा। उसने दौड़कर उसे गले लगा लिया और उसका
२१ चुंबन किया। पुत्र ने उससे कहा, "पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और आपके प्रति पाप किया है; अब मैं इस योग्य नहीं कि आपका पुत्र कहलाऊं।"
२२ परंतु पिता ने अपने दासों से कहा, "शीघ्रता करो, अच्छे से अच्छा वस्त्र निकाल कर इसे पहिनाओ, तथा इसके हाथ में अंगूठी और पांव में जूते
२३ पहिना दो। पाला हुआ बछड़ा लाकर काटो कि हम खाएं और आनंद
२४ मनाएं। क्योंकि मेरा पुत्र मर गया था, परंतु फिर जी गया है; खो गया था, और फिर मिल गया है।" अस्तु, वे आमोद-प्रमोद करने लगे।

२५ 'उसका ज्येष्ठ पुत्र खेत में था। लौटते समय घर के समीप पहुंचने
२६ पर उसे संगीत और नृत्य का शब्द सुनाई पड़ा। उसने एक सेवक को
२७ बुलाकर पूछा, "यह सब क्या हो रहा है?" उसने बताया, "आपके भाई आए हैं, और आपके पिताजी ने पला हुआ बछड़ा काटा है; क्योंकि
२८ उन्होंने उसको सानुग्रह पाया है।" इसपर वह क्रुद्ध हुआ और भीतर नहीं जाना चाहता था। तब उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लगा। उसने अपने पिता से कहा, "देखिए, मैं इतने वर्षों से आपकी २९
सेवा कर रहा हूं, और मैंने कभी आपकी आज्ञा नहीं टाली ; तो भी
आपने मुझे कभी बकरी का बच्चा तक न दिया कि मैं अपने मित्रों के
साथ आमोद-प्रमोद करता। परंतु जब आपका यह पुत्र, जिसने आपकी ३०
संपत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया तो उसके लिए आपने पला हुआ
बछड़ा कटवाया!" पिता ने उससे कहा, "पुत्र, तुम तो सदा मेरे साथ हो; ३१
और जो कुछ मेरा है, वह तुम्हारा है। परंतु हमें आमोद-प्रमोद करना और ३२
आनंद मनाना उचित था; क्योंकि तुम्हारा यह भाई मर गया था, फिर
जी गया है ; खो गया था, फिर मिल गया है ; "

अधर्मी भंडारी

16 उन्होंने शिष्यों से यह कहा, 'किसी धनी पुरुष का एक भंडारी १
था। स्वामी के संमुख उस पर अभियोग लगाया गया, "यह
मनुष्य आपकी संपत्ति उड़ा रहा है।" स्वामी ने उसे बुला कर पूछा, "मैं २
तुम्हारे विषय में यह क्या सुन रहा हूं? अपने भंडारीपन का लेखा दो,
क्योंकि अब तुम भंडारी नहीं रह सकते।" भंडारी ने अपने मन में कहा, ३
"अब मैं क्या करूं? स्वामी मुझसे भंडारीपन छीन रहे हैं। मिट्टी खोदने
की मुझ में सामर्थ्य नहीं, और भीख मांगने में मुझे लज्जा आती। समझा! ४
मुझे क्या करना है कि भंडारीपन से पृथक् किए जाने पर भी लोगों के घरों
में मेरा स्वागत हो!" उसने स्वामी के ऋणियों को एक-एक कर बुलाया ५
और पहले से पूछा, "तुम पर मेरे स्वामी का कितना ऋण है?" उसने ६
कहा, "सौ मन तेल।" तब वह उससे बोला, "यह अपना ऋणपत्र लो,
बैठो और शीघ्र पचास लिख दो।" तब उसने दूसरे से पूछा, "तुम पर ७
कितना ऋण है?" उसने उत्तर दिया, "सौ मन गेहूं।" तब वह उससे
बोला, "अपना ऋणपत्र लो और अस्सी लिख दो।" स्वामी ने उस ८
अधर्मी भंडारी की सराहना की कि उसने चतुराई से काम लिया। क्योंकि
इस युग की संतान अपनी पीढ़ी के प्रति, ज्योति की संतान की अपेक्षा,
CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
९ अधिक चतुर हैं। इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि अधर्म के धन से अपने लिए मित्र बना लो कि जब वह जाता रहे तो शाश्वत-निवास में तुम्हारा स्वागत हो।'

धन का उपयोग

१० 'जो थोड़े में विश्वासपात्र होता है, वह बहुत में भी विश्वासपात्र निकलता है; किंतु जो थोड़े में अधर्मी होता है, वह बहुत में भी अधर्मी
११ निकलता है। इसलिए यदि तुम अधर्म के धन में विश्वासपात्र न हुए तो
१२ तुमको सच्चा धन कौन सौंपेगा? और यदि तुम पराए धन में विश्वास-
१३ पात्र न हुए तो तुम्हें तुम्हारा अपना धन कौन देगा? कोई सेवक दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता; क्योंकि वह एक के प्रति द्वेष रखेगा और दूसरे से प्रेम करेगा, अथवा एक के प्रति भक्ति रखेगा और दूसरे को तुच्छ
१४ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।' धन
१५ के लोभी फरीसी ये सब बातें सुनकर उनका उपहास करने लगे। यीशु ने उनसे कहा, 'मनुष्यों के सामने अपने को तुम धर्मात्मा जताते हो, परंतु परमेश्वर तुम्हारे हृदय को जानता है; क्योंकि जो मनुष्यों के लिए महान् है, वह परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है।

१६ 'व्यवस्था और नबी यूहन्ना तक रहे; उस समय से परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार हो रहा है और प्रत्येक उसमें बलपूर्वक
१७ प्रवेश करने का प्रयत्न कर रहा है। व्यवस्था की एक मात्रा के मिटने की अपेक्षा आकाश और पृथ्वी का टल जाना अधिक सरल है।

१८ 'जो कोई अपनी पत्नी को त्याग कर दूसरी से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है और जो पति द्वारा परित्यक्त स्त्री से विवाह करता है, वह भी व्यभिचार करता है।

धनवान मनुष्य और निर्धन लाजर

१९ 'एक धनी मनुष्य था जो बैंजनी वस्त्र तथा मलमल पहिनता था, और
२० ऐश्वर्य के साथ नित्य आमोद-प्रमोद किया करता था। उसके द्वार पर
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाजर नामक एक दरिद्र मनुष्य घावों से भरा हुआ पड़ा रहता था। वह २१ उस धनवान की मेज से गिरी चूरचार से पेट भरने को तरसता था, और कुत्ते तक आकर उसके घाव चाटा करते थे। अब ऐसा हुआ कि वह दरिद्र २२ मनुष्य मर गया और स्वर्गदूतों ने उसे ले जाकर अब्रहाम की गोद में पहुंचाया। वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया। पाताल में उसने अपनी २३ आंखें ऊपर उठाईं और दूर से ही अब्रहाम को देखा एवं उनकी गोद में लाजर को। तब वह पुकार उठा, 'पिता अब्रहाम, मुझ पर दया कीजिए। लाजर २४ को भेजिए कि वह अपनी अंगुली का सिरा जल में डुबा कर मेरी जीभ को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं।" पर अब्रहाम ने उससे २५ कहा, 'पुत्र, स्मरण करो कि अपने जीवन में तुम अच्छी अच्छी वस्तुएं प्राप्त कर चुके हो और इसी प्रकार लाजर बुरी। परंतु अब वह यहां शांति में है और तुम यंत्रणा में। इसके अतिरिक्त हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी २६ खाई है; इससे यदि कोई यहां से तुम्हारे पास जाना चाहे तो नहीं जा सकता, और न वहां से कोई हमारे पास आ सकता है।" इस पर उसने कहा, "तब २७ पिता, मैं निवेदन करता हूं कि उसे मेरे पिता के घर भेजिए, क्योंकि मेरे २८ पांच भाई हैं; वह उन्हें चेतावनी दे कि वे भी इस यंत्रणा के स्थान में न आएं।" अब्रहाम ने कहा, "मूसा और नबियों की पुस्तकें उनके पास २९ हैं। वे उनकी सुनें।" वह बोला, "नहीं, पिता अब्रहाम; परंतु यदि मृतकों ३० में से कोई उनके पास जाए तो उनके हृदय-परिवर्तन होंगे।" अब्रहाम ३१ ने उत्तर दिया "जब वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो यदि कोई मृतकों में से जी उठे तो उसकी भी नहीं मानेंगे।" '

यीशु के कुछ उपदेश

17 उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, 'यह असंभव है कि प्रलोभन न आएं, १ परंतु शोक उस पर जिसके द्वारा वे आते हैं! जो इन छोटों में से २ किसी को फंसाता है, उसके लिए यह कहीं अच्छा होता कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता और वह समुद्र में डाल दिया जाता।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३ सावधान रहो! यदि तुम्हारा भाई अपराध करे तो उसे रोको, और यदि वह
४ हृदय-परिवर्तन करे तो उसे क्षमा कर दो। यदि वह दिन में सात बार तुम्हारे विरुद्ध अपराध करे और सातों बार आकर तुमसे कहे कि मैं हृदय-परिवर्तन करता हूं, तो तुम्हें चाहिए कि उसे क्षमा कर दो।'

५ प्रेरितों ने प्रभु से कहा, 'हमारा विश्वास बढ़ाइए।' प्रभु ने उत्तर
६ दिया, 'यदि तुममें राई के बीज के बराबर भी विश्वास हो और इस शहतूत के पेड़ से कहो कि उखड़ जा और समुद्र में लग जा, तो वह तुम्हारी आज्ञा मान लेगा।

७ 'तुम में ऐसा कौन है जिसका दास हल चलाकर अथवा भेड़ चराकर
८ खेत से आए तो उससे कहे, "शीघ्र आ और भोजन कर ले ;" और यह न कहे, "भोजन तैयार कर ; और जब तक मैं खा-पी न लूं कमर कसकर
९ मेरी सेवा कर, उसके पश्चात् तू भी खा-पी लेना।" क्या वह दास का
१० अनुगृहीत होगा कि उसने इन आज्ञाओं का पालन किया? इसी प्रकार तुम भी सब आज्ञाओं का पालन कर लेने पर कहो, "हम अयोग्य दास हैं, हमने केवल वही किया जो हमें करना चाहिए था।"

दस कोढ़ियों का स्वस्थ किया जाना

११ यरूशलेम जाते समय वह सामरिया और गलील के बीच से होकर
१२ निकले। किसी गांव में प्रवेश करते समय दस कोढ़ियों से उनकी भेंट हुई,
१३ जिन्होंने दूर खड़े होकर ऊंचे स्वर में कहा, 'हे यीशु, हे स्वामी, हम पर
१४ दया कीजिए।' उनको देखकर यीशु ने कहा, 'जाओ और अपने आप
१५ को पुरोहितों को दिखाओ।' जाते-जाते वे शुद्ध हो गए। तब उनमें से एक, यह देखकर कि मैं स्वस्थ हो गया हूं, उच्च स्वर से परमेश्वर की
१६ स्तुति करता हुआ लौटा। वह मुंह के बल उनके चरणों पर गिरा और धन्य-
१७ वाद देने लगा। यह सामरी था। तब यीशु ने कहा, 'क्या दस शुद्ध नहीं
१८ हुए? तो फिर नौ कहां हैं? क्या इस विदेशी के अतिरिक्त और कोई
१९ ऐसा न निकला जो लौटकर परमेश्वर की स्तुति करता?' तब उन्होंने

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे कहा, 'उठो और जाओ ; तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें स्वस्थ किया है।'

परमेश्वर का राज्य

फरीसियों के पूछने पर कि परमेश्वर का राज्य कब आ रहा है, २० उन्होंने उत्तर दिया, 'परमेश्वर के राज्य का आगमन आंखों का विषय नहीं है ; लोग यह नहीं कहेंगे, "देखो ,यहां है ! " अथवा "वहां है !" २१ क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।' फिर उन्होंने शिष्यों २२ से कहा,' वे दिन आ रहे हैं जब तुम मानव-पुत्र के दिनों में से एक दिन देखने को तरसोगे और देख न सकोगे। लोग तुमसे कहेंगे, "देखो, वहां! देखो, २३ यहां !" पर तुम न जाना, और उनके पीछे मत भागना। क्योंकि जैसे २४ बिजली कौंधकर आकाश में एक ओर से दूसरी ओर तक आलोकित हो उठती है,उसी प्रकार मानव-पुत्र अपने दिन में होगा। परंतु २५ इससे पहले यह अनिवार्य है कि उसे बहुत दुःख उठाने पड़ें और वह पीढ़ी द्वारा तुच्छ समझा जाए। जैसा नूह के दिनों में हुआ वैसा ही मानव–पुत्र २६ के दिनों में भी होगा। नूह के नौका पर चढ़ने के दिन तक लोग खाते-पीते २७ और विवाह करते कराते रहे; तब जल–प्रलय हुआ और सब नष्ट हो गए। इसी प्रकार लूत के दिनों में भी हुआ; लोग खाते-पीते, क्रय-विक्रय करते, २८ वृक्ष लगाते और घर बनाते रहे, परंतु जिस दिन लूत सदोम से निकला, २९ उसी दिन आकाश से आग और गंधक की वर्षा हुई और सब नष्ट हो गए। मानव-पुत्र के प्रकट होने के दिन भी ऐसा ही होगा। ३० उस दिन यदि कोई छत पर हो और उसकी संपत्ति घर ३१ में हो तो वह उसको लेने न उतरे; इसी प्रकार जो खेत में हो, वह पीछे की ओर न मुड़े। लूत की पत्नी को स्मरण रखो। जो ३२ अपने प्राण बचाने का प्रयत्न करे,वह उन्हें खोएगा, और जो खोए वह उन्हें ३३ जीवित रखेगा। मैं तुमसे कहता हूं, उस रात दो मनुष्य एक शय्या पर ३४ होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा ; दो स्त्रियां ३५ साथ-साथ चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३६ जाएगी। खेत में दो मनुष्य होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़
३७ दिया जाएगा।' उन्होंने पूछा, 'हे प्रभु, कहां?' यीशु ने कहा, 'जहां शव पड़ा है वहीं गिद्ध एकत्रित होंगे।'

अधर्मी न्यायाधीश

18 उन्होंने यह बतलाने के लिए कि सदा प्रार्थना में लगे रहना चाहिए और हतोत्साहित नहीं होना चाहिए, उनसे एक दृष्टांत कहा: 'किसी नगर में एक न्यायाधीश रहता था जो न परमेश्वर से
३ डरता था और न मनुष्यों का मान करता था। उसी नगर में एक विधवा रहती थी जो उसके पास आ आकर कहा करती थी, "न्याय कीजिए
४ और मेरे प्रतिवादी से मुझे बचाइए।" कुछ समय तक तो वह न माना; पर पीछे उसने अपने मन में कहा, "यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता हूं
५ और न मनुष्यों का मान करता हूं, परंतु यह विधवा मुझे सताती है, इसलिए मैं इसका न्याय कर दूंगा जिससे घड़ी-घड़ी आकर यह मुझे
६ कष्ट न दे।" प्रभु ने कहा, 'सुनो, इस अधर्मी न्यायाधीश ने क्या कहा।
७ तो क्या परमेश्वर अपने मनोनीत लोगों का, जो दिन रात उनकी दुहाई
८ देते हैं, न्याय नहीं करेंगे? क्या वह उनके लिए देर करेंगे? मैं कहता हूं कि वह शीघ्र ही उनका न्याय करेंगे। अस्तु, जब मानव-पुत्र आएगा तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?'

फरीसी और कर लेनेवाले की प्रार्थनाएं

९ फिर यीशु ने कुछ ऐसे लोगों से, जिन्हें अपने विषय में अभिमान था कि हम धार्मिक हैं और अन्य सभी को तुच्छ समझते थे, यह दृष्टांत कहा:
१० 'दो मनुष्य मंदिर में प्रार्थना करने गए। एक फरीसी था और दूसरा
११ कर लेनेवाला। फरीसी खड़ा होकर मन ही मन यों प्रार्थना करने लगा, "हे परमेश्वर, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि मैं अन्य लोगों-अत्याचारियों, अधर्मियों और व्यभिचारियों* के सदृश नहीं हूं; और न इस कर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*कुछ प्रतियों में यह तीन शब्द नहीं पाए जाते।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लेनेवाले के सदृश हूं। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं। मैं अपनी १२
समस्त आय का दसवां अंश दान करता हूं।" किंतु कर लेनेवाले ने दूर १३
खड़े होकर स्वर्ग की ओर आंखें तक न उठाईं, वरन् छाती पीट कर कहा,
"हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कीजिए।" मैं तुमसे कहता हूं कि १४
वह पहिला,नहीं, वरन् यह मनुष्य धार्मिक गिना जाकर अपने घर लौटा।
अस्तु, प्रत्येक मनुष्य जो अपने आपको ऊंचा करता है, नीचा किया
जाएगा; परंतु जो अपने आपको नीचा करता है, वह ऊंचा किया
जाएगा।'

बच्चों को आशीर्वाद

लोग बच्चों को उनके पास लाने लगे कि वह उन्हें स्पर्श करें। १५
शिष्यों ने यह देखकर लोगों को रोका। पर यीशु ने बच्चों को अपने १६
पास बुलाया और कहा, 'बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें मना न करो,
क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि १७
यदि कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की भांति स्वीकार न करे तो वह
उसमें कदापि प्रवेश न करने पाएगा।'

शाश्वत जीवन में धन से बाधा

एक अधिकारी ने उनसे पूछा, 'हे सद्गुरु, शाश्वत जीवन का उत्तरा- १८
धिकारी होने के लिए मैं क्या करूं?' यीशु ने उससे कहा, 'तुम मुझे सत् १९
क्यों कहते हो? एक परमेश्वर को छोड़ कोई अन्य सत् नहीं। तुम्हें २०
आज्ञाएं ज्ञात हैं: "व्यभिचार न कर, चोरी न कर, झूठी साक्षी न दे, अपने
माता पिता का आदर कर।"' उसने उत्तर दिया, 'इन सबका मैंने २१
अपनी बाल्यावस्था से पालन किया है।' यह सुनकर यीशु ने उससे कहा, २२
'तुम में अभी एक बात की कमी है; जाओ, अपना सब कुछ बेचकर दरिद्रों
को दे डालो और स्वर्ग में तुम्हें धन मिलेगा, तब आओ और मेरे अनुयायी
हो।' यह सुनकर उसे व्यथा हुई; क्योंकि वह बहुत धनवान था। यीशु ने २३
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४ उसे देखकर कहा, 'संपत्तिशालियों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना
२५ कितना कठिन है! परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने की
अपेक्षा, ऊंट का सुई के नाके में होकर निकल जाना अधिक सरल है।
२६ इस पर सुननेवालों ने पूछा, 'तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?'
२७ उन्होंने कहा, 'जो बातें मनुष्यों के लिए असंभव हैं, वे परमेश्वर के लिए
२८ संभव हैं।' पतरस बोले, 'देखिए, हम घर-बार छोड़ कर आपके
२९ अनुयायी हो गए हैं!' इस पर यीशु ने सब से कहा, 'मैं तुमसे सच कहता
हूं कि ऐसा कोई नहीं जो परमेश्वर के राज्य के लिए घर, पत्नी, भाई, माता-
३० पिता या संतान का परित्याग करे, और इस समय में उसे कई गुना न
मिले तथा आनेवाले युग में शाश्वत जीवन।'

मृत्यु संबंधी तृतीय भविष्यवाणी

३१ फिर उन्होंने बारह को साथ लेकर उनसे कहा, 'देखो, हम यरूशलेम
की यात्रा कर रहे हैं, और जो बातें नबियों ने मानव-पुत्र के विषय में
३२ लिखी हैं, वे सब पूर्ण होंगी। लोग उसे अन्यजातियों के हाथ सौंप देंगे;
वे उसका उपहास और अपमान करेंगे, उस पर थूकेंगे और कोड़ों से पीटने
३३ के पश्चात् उसे मार डालेंगे।' उन्हें ये बातें समझ में नहीं आईं। यह
३४ कथन उनके लिए रहस्य ही रहा और वे इसका तात्पर्य नहीं समझ पाए।

अंधे को दृष्टिदान

३५ वह यरीहो के निकट पहुंचे। वहां एक अंधा मार्ग के किनारे बैठा
३६ भीख मांग रहा था। वह जनसमूह के चलने का शब्द सुनकर पूछने लगा
३७ कि क्या बात है। लोगों ने उसे बताया कि नासरत निवासी यीशु जा
३८ रहे हैं। इस पर वह पुकार उठा, 'हे यीशु, हे दाऊद-पुत्र, मुझ पर दया
३९ कीजिए।' आगे चलनेवाले लोगों ने उसे रोका कि चुप रहे पर वह और
भी उच्च स्वर में पुकारने लगा, 'हे दाऊद-पुत्र, मुझ पर दया कीजिए।'
४० यीशु खड़े हो गए और उसे अपने पास लाने की आज्ञा दी। जब वह

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समीप आया तो उन्होंने उससे पूछा, 'तुम क्या चाहते हो कि मैं ४१
तुम्हारे लिए करूं ?' उसने कहा, 'प्रभु, मैं देखने पाऊं।' यीशु ने उससे ४२
कहा, 'तुम देखने लगो। तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें स्वस्थ किया।' उसी ४३
क्षण वह देखने लगा और परमेश्वर की स्तुति करते हुए उनके पीछे हो
लिया। यह देख कर सारी जनता भी परमेश्वर की स्तुति करने लगी।

जक्कई

19 वह यरीहो में प्रवेश कर मार्ग में जा रहे थे। वहां जक्कई १
नामक एक व्यक्ति था जो कर लेनेवालों का मुखिया था २
और धनवान था। वह यीशु को देखने के प्रयत्न में था कि वह ३
कौन हैं, किन्तु जनसमूह के कारण देख न पाता था; क्योंकि
वह नाटा था। अतः वह आगे दौड़ा और उन्हें देखने के निमित्त ४
एक गूलर के वृक्ष पर चढ़ गया, क्योंकि यीशु उसी मार्ग से जाने
वाले थे। जब यीशु उस स्थान पर पहुंचे तो ऊपर देखकर उससे बोले, ५
'जक्कई, शीघ्र उतरो, क्योंकि आज मुझे तुम्हारे घर रहना है।' वह ६
तत्काल उतर आया और सहर्ष उनका आतिथ्य किया। यह देखकर सब ७
बड़बड़ाने लगे कि वह एक पापी पुरुष के यहां अतिथि हुए हैं। इस पर ८
जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, 'प्रभु, देखिए, मैं अपनी आधी संपत्ति
दरिद्रों को दिए देता हूं, और यदि मैंने किसी से अन्यायपूर्वक कुछ लिया है
तो उसे चौगुना लौटाए देता हूं।' यीशु ने उससे कहा, 'आज इस घर में ९
उद्धार आया है, क्योंकि यह मनुष्य भी अब्रहाम का पुत्र है। मानव-पुत्र १०
खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।'

मुद्राओं का दृष्टांत

लोग ये बातें सुन रहे थे तो यीशु ने एक दृष्टांत भी कहा; क्योंकि ११
वह यरूशलेम के निकट थे और वे लोग समझते थे कि परमेश्वर का राज्य
अभी प्रकट होनेवाला है। उन्होंने कहा, 'एक कुलीन मनुष्य दूर देश १२
को चला कि राज्याधिकार प्राप्त करे और लौट आए। उसने अपने दस १३
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दासों को बुलाकर उन्हें दस मुद्राए* दीं और कहा, "मेरे लौटने तक इनसे
१४ व्यापार करो।" उसके नगर-निवासी उससे द्वेष करते थे, इसलिए
उन्होंने उसके पीछे दूत-मंडल भेजकर कहा, "हम नहीं चाहते कि यह
१५ व्यक्ति हम पर राज्य करे।" जब वह राज्याधिकार प्राप्त कर लौटा तो
उसने यह जानने के लिए कि किसने कैसा व्यापार किया है, उन दासों को
१६ अपने पास बुलवाया। पहिले ने आकर बताया, "स्वामी, आपकी
१७ मुद्रा से मैंने दस मुद्राएं और कमाई हैं।" उसने उससे कहा, "बहुत
ठीक, उत्तम दास तुम थोड़े में विश्वास-पात्र रहे, इसलिए तुम दस नगरों
१८ पर अधिकारी हुए।" दूसरे ने आकर बताया, "स्वामी, आपकी मुद्रा
१९ से मैंने पांच मुद्राएं और कमाई हैं।" उसने कहा, "तुम भी पांच नगरों
२० के अधिकारी हुए।" तब एक और ने आकर बताया "स्वामी, यह है
२१ आपकी मुद्रा, जिसे मैंने अंगोछे में छिपा रखा था; मैं आपसे डरता था,
क्योंकि आप कठोर मनुष्य हैं; जो आपने नहीं रखा, उसे ले लेते हैं,
२२ और जो नहीं बोया, उसे काटते हैं।" उसने कहा, "अरे दुष्ट दास! मैं
तेरे शब्दों से ही तुझे दोषी प्रमाणित करता हूं। तू जानता था
कि मैं कठोर मनुष्य हूं; जो मैंने नहीं रखा, उसे ले लेता हूं, और
२३ जो नहीं बोया, उसे काटता हूं; तो तूने मेरा धन महाजन के पास क्यों नहीं
२४ रख दिया कि मैं उसे ब्याज सहित प्राप्त कर लेता?" तब उसने समीप
खड़े लोगों से कहा, "वह मुद्रा उससे ले लो, और उसे दे दो जिसके पास
२५ दस मुद्राएं हैं।" लोगों ने उससे कहा, "स्वामी, उसके पास तो दस
२६ मुद्राएं हैं।" "मैं तुमसे कहता हूं कि जिसके पास है, उसे और मिलेगा;
और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, छीन लिया
२७ जाएगा। अच्छा, अब मेरे बैरियों को, जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर
राज्य करूं, यहां लाओ और उन्हें मेरे सामने मार डालो।"

यरूशलेम में धूमधाम के साथ प्रवेश

२८ ये बातें कहकर वह आगे बढ़े और यरूशलेम की ओर चढ़ना आरंभ
२९ किया। जब वह जैतून पर्वत पर बैतफगे और बैतनिय्याह के समीप

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* मूल में मीना

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आए तो उन्होंने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा, 'सामने के गांव में ३० जाओ। उसमें प्रवेश करते समय तुम्हें एक गदही का बच्चा बंधा हुआ मिलेगा, जिस पर कभी कोई नहीं चढ़ा। उसे खोलकर ले आओ। यदि ३१ कोई तुमसे पूछे कि क्यों खोलते हो तो कहना, "प्रभु को इसकी आवश्यकता है।" जो लोग भेजे गए थे, गए और कथन के अनुसार ही पाया। ३२ जब वे गदही के बच्चे को खोल रहे थे तो उसके स्वामियों ने कहा, 'तुम ३३ गदही के बच्चे को क्यों खोल रहे हो?' उन्होंने कहा, 'प्रभु को इसकी ३४ आवश्यकता है।' वे उसे यीशु के पास लाए। और बच्चे पर अपने वस्त्र ३५ डालकर यीशु को उस पर बैठा दिया। जैसे जैसे वह आगे बढ़ते थे, लोग ३६ मार्ग में अपने वस्त्र बिछाते चलते थे। जब वह जैतून पर्वत के निकट उतार ३७ पर पहुंचे तो शिष्यों का विशाल समुदाय, अपनी आंखों देखे सामर्थ्य के कामों के लिए आनंदित और उल्लसित हो उच्च स्वर से परमेश्वर की स्तुति करने लगा :

'प्रभु के नाम में आनेवाले ३८
राजा की स्तुति!
स्वर्ग में शांति और उच्चतम स्थानों में महिमा!'

इस पर जनसमूह में से कुछ फ़रीसियों ने कहा, 'गुरु, अपने शिष्यों को ३९ रोकिए।' उन्होंने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे कहता हूं कि यदि ये चुप रहे ४० तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।'

यरूशलेम पर विलाप

जब यीशु निकट आए और नगर को देखा तो उस पर रो पड़े ४१ और बोले, 'क्या ही अच्छा होता कि तू, हां तू, आज के दिन जानता कि ४२ शांति किन बातों में है; परंतु अभी ये बातें तेरी आंखों से छिपी हैं। तेरे लिए ऐसे दिन आएंगे कि शत्रु मोर्चा बांध कर तुझे घेर लेंगे और ४३ चारों ओर से तुझे दबाएंगे। वे तुझे और तुझमें निवास करनेवाली तेरी ४४ संतानों को मिट्टी में मिला देंगे, और तुझमें पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ेंगे, क्योंकि तूने अनुग्रहपूर्ण आगमन का अवसर नहीं पहिचाना।'

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदिर का परिष्करण

४५ तब यीशु ने मंदिर में प्रवेश किया और बेचने वालों को यह कह कर
४६ बाहर निकालने लगे, 'शास्त्र का लेख है, मेरा घर प्रार्थना का घर होगा, परंतु तुमने उसे डाकुओं का अड्डा बना रखा है।'

४७ वह मंदिर में प्रतिदिन उपदेश दिया करते थे। उधर महापुरोहित, शास्त्री और जनता के प्रमुख व्यक्ति इस प्रयत्न में थे कि कैसे उनका विनाश
४८ करें; उनकी समझ में नहीं आता था कि क्या करें, क्योंकि जनता यीशु की बातें सुनकर मुग्ध थी।

यीशु के अधिकार पर शंका

20 एक दिन वह मंदिर में शिक्षा दे रहे थे और सुसमाचार सुना रहे थे कि धर्मवृद्धों के साथ महापुरोहित एवं शास्त्री आए और पूछने
२ लगे, 'हमें बताइए कि किस अधिकार से आप ये कार्य करते हैं, अथवा वह
३ कौन है जिसने आपको यह अधिकार दिया है?' उन्होंने उत्तर दिया,
४ 'मैं भी तुमसे एक प्रश्न करता हूं; मुझे बताओ, यूहन्ना का बपतिस्मा
५ स्वर्ग की ओर से था या मनुष्यों की ओर से?' वे आपस में कहने लगे, 'यदि हम कहें "स्वर्ग की ओर से" तो यह कहेंगे, "तुमने उनका विश्वास
६ क्यों नहीं किया?" परंतु यदि कहें, "मनुष्यों की ओर से" तो जनता हमें पत्थरों से मार डालेगी'; क्योंकि उसकी धारण थी कि यूहन्ना नबी
७ हैं। इसलिए उन्होंने उत्तर दिया, 'हम नहीं जानते कि वह किसकी ओर
८ से था।' इस पर यीशु ने उनसे कहा, 'मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि मैं किस अधिकार से ये कार्य करता हूं।'

दाख-उद्यान का दृष्टांत

९ उन्होंने लोगों से यह दृष्टांत कहा: 'किसी मनुष्य ने दाख का उद्यान लगाया, और उसे कृषकों को पट्टे पर देकर बहुत दिनों के लिए विदेश चला
१० गया। समय आने पर उसने एक दास को कृषकों के पास भेजा कि वे दाख-उद्यान के फलों का कुछ भाग उसे दें, पर कृषकों ने उसे पीटा और खाली

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ लौटा दिया। उसने एक और दास भेजा; उन्होंने उसे भी पीटा और अपमानित कर खाली हाथ लौटा दिया। उसने एक तीसरे को भी भेजा; पर उन्होंने उसे घायल कर बाहर निकाल दिया। इस पर दाख-उद्यान के स्वामी ने कहा, "मैं क्या करूं? मैं अपने प्रिय पुत्र* को भेजूंगा। संभवतः वे उसका आदर करें।" किंतु उसे देखकर कृषकों ने आपस में परामर्श किया, "यह उत्तराधिकारी है। आओ इसे मार डालें जिससे इसकी पैतृक संपत्ति हमारी हो जाए।" इसलिए उन्होंने उसे दाख-उद्यान से बाहर निकाल कर मार डाला। तो दाख-उद्यान का स्वामी उनके साथ क्या करेगा? वह आकर कृषकों का विनाश करेगा और दाख-उद्यान दूसरों को दे देगा।' यह सुनकर लोग बोल उठे, 'ईश्वर न करे कि ऐसा हो।' यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, 'तो फिर शास्त्र में क्या लिखा है, ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७

> "जिस पत्थर को भवन निर्माताओं ने निकृष्ट समझा,
> वह मेहराब की केन्द्र-शिला बना है!"

जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा वह खंड-खंड हो जाएगा और जिस पर यह गिरेगा, उसको यह कुचल देगा।' शास्त्रियों और महापुरोहितों ने उनको उसी समय पकड़ना चाहा; क्योंकि वे समझ गए थे कि यीशु ने यह दृष्टांत उन्हीं के संबंध में कहा था; परंतु वे लोगों से डरे। १८ १९

कैसर को कर देना विहित है या नहीं

उन लोगों ने अवसर देखकर गुप्तचर भेजे कि धार्मिक होने का ढोंग रचें, और यीशु को किसी न किसी बात में पकड़ें कि उन्हें राज्यपाल के शासन तथा अधिकार में दे सकें। इन लोगों ने निवेदन किया, 'गुरुजी, हमें ज्ञात है कि आप ठीक बात बोलते और सिखाते हैं; आप मुंह देखी २० २१

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अथवा, 'एकमात्र पुत्र'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२ नहीं कहते, पर सच्चाई से परमेश्वर के मार्ग का उपदेश देते हैं। हमें कैसर
२३ को कर देना विहित है या नहीं?' यीशु ने उनकी धूर्तता समझ ली और
२४ बोले, 'मुझे एक दीनार दिखाओ। इस पर किसकी आकृति और लेख
२५ है?' उन्होंने कहा, 'कैसर का।' यीशु ने कहा, 'तो कैसर का कैसर
२६ को दो, और परमेश्वर का परमेश्वर को।' इस प्रकार वे लोगों के समक्ष उनको इस बात में न पकड़ सके, और उनके उत्तर पर स्तंभित हो चुप रह गए।

पुनरुत्थान का प्रश्न

२७ इसके पश्चात् कुछ सदूकी आए जो पुनरुत्थान को नहीं मानते।
२८ उन्होंने प्रश्न किया, 'गुरुजी, हमारे लिए मूसा का लेख है कि यदि किसी का भाई अपनी पत्नी के रहते हुए निस्संतान मर जाए तो उसे* चाहिए
२९ कि उस स्त्री से विवाह कर अपने भाई के लिए संतान उत्पन्न करे। सात
३० भाई थे। पहले ने विवाह किया और निस्संतान मर गया। और दूसरे
३१ ने, फिर तीसरे ने उस स्त्री से विवाह किया और इसी प्रकार सातों
३२ निस्संतान मर गए। अंत में वह स्त्री भी मर गई। तो पुनरुत्थान होने पर
३३ वह स्त्री इनमें से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी रही
३४ थी।' यीशु ने उनसे कहा, 'इस युग के संतान विवाह करते और विवाह
३५ में दिए जाते हैं; पर जो इस योग्य गिने जाते हैं कि उस युग को, और मृतकों के पुनरुत्थान को प्राप्त करें, वे न विवाह करते और न विवाह में
३६ दिए जाते हैं। वे तब मरने के नहीं, क्योंकि वे स्वर्गदूतों के तुल्य हैं और
३७ पुनरुत्थान के संतान होने के कारण परमेश्वर के संतान हैं। किंतु मृतक जी उठते हैं—यह तो मूसा ने भी झाड़ी के प्रकरण में दिखाया है, जहां वह प्रभु को "अब्रहाम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का
३८ परमेश्वर" कहते हैं। अस्तु, परमेश्वर मृतकों का नहीं, परंतु जीवितों

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*अक्षरशः 'भाई को'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का परमेश्वर है ; क्योंकि उसके लिए सब जीवित हैं।' इस पर कई ३९ शास्त्रियों ने उत्तर दिया, 'गुरुजी, आपने बहुत अच्छा कहा।' फिर उन्हें ४० और कोई प्रश्न पूछने का साहस नहीं हुआ।

दाऊद-पुत्र ख्रिस्त

यीशु ने उनसे कहा, 'लोग कैसे कहते हैं कि ख्रिस्त दाऊद का पुत्र है? ४१ क्योंकि स्वयं दाऊद ने भजन-संहिता में कहा है, ४२

"प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा,
जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों के तले न लाऊं ४३
तू मेरे दाहिने हाथ बैठ।"

इस प्रकार दाऊद उसे प्रभु कहते हैं तो वह उनका पुत्र कैसे हुआ? ४४

शास्त्रियों के विरुद्ध चेतावनी

उन्होंने सब लोगों को सुना कर अपने शिष्यों से कहा, 'शास्त्रियों से ४५ सावधान रहो जिन्हें लम्बे चोगे पहिनकर घूमना अच्छा लगता है, और ४६ जिन्हें बाजारों में प्रणाम, सभागृहों में प्रमुख आसन, और भोजों में सम्मानित स्थान प्रिय हैं। वे विधवाओं के घर निगल जाते हैं और दिखावे ४७ के लिए लंबी-लंबी प्रार्थनाएं करते हैं। वे कठोर दंड के भागी होंगे।'

दरिद्र विधवा की दमड़ी

21 यीशु ने देखा कि धनवान अपनी-अपनी भेंट मंदिर के कोष में १ डाल रहे हैं : वहां एक दरिद्र विधवा ने भी दो मुद्राएं अर्पण २ कीं। उन्होंने यह देखकर कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि इस दीन ३ विधवा ने सबसे अधिक अर्पण किया है, क्योंकि अन्य सबने अपनी समृद्धि ४ से भेंट दी, परंतु इसने अपनी दरिद्रता में से जो कुछ इसके पास था, अर्थात् अपनी सारी जीविका अर्पण कर दी।'

मंदिर-विनाश और युगांत के संबंध में भविष्यवाणी

कुछ लोग मंदिर के विषय में कह रहे थे कि वह सुंदर पत्थरों और ५ समर्पित वस्तुओं से सुसज्जित है। इस पर यीशु ने उनसे कहा, 'ये वस्तुएं ६

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम देख रहे हो। ऐसे दिन आएंगे जब यहां पत्थर पर पत्थर तक नहीं
७ बचेगा; सब ध्वस्त हो जाएगा।' उन्होंने पूछा, 'गुरुजी, ये घटनाएं कब होंगी? ये बातें होने को हैं, इसका क्या चिह्न होगा?'

८ उन्होंने कहा, 'सावधान! पथभ्रष्ट न होना। अनेक मेरे नाम से आएंगे और कहेंगे, "मैं वही हूं!" और "समय निकट आ पहुंचा है!"
९ परंतु तुम उनके पीछे न जाना। जब युद्धों और विद्रोहों की चर्चा सुनो तो भयाकुल न होना। पहिले इन बातों का होना अनिवार्य है, पर अंत शीघ्र न होगा।'

१० तब वह उनसे कहने लगे, 'जाति के विरुद्ध जाति और राज्य के विरुद्ध
११ राज्य उठ खड़े होंगे; बड़े बड़े भूकंप होंगे, अनेक स्थलों पर अकाल पड़ेंगे और महामारियां होंगी; भयंकर दृश्य और आकाश में बड़े-बड़े चिह्न
१२ दीख पड़ेंगे, परंतु यह होने से पूर्व लोग मेरे नाम के कारण तुम पर अत्याचार करेंगे, तुम्हें सभागृहों में सौंपेंगे, कारागारों में डलवाएंगे, एवं
१३ राजाओं और राज्यपालों के संमुख उपस्थित करेंगे। यह तुम्हारे लिए
१४ साक्षी देने का अवसर होगा। इसलिए मन में निश्चय कर लो कि प्रति-
१५ वाद के विषय में पहले से न सोचोगे; क्योंकि मैं तुम्हें ऐसे शब्द और बुद्धि प्रदान करूंगा कि कोई विरोधी न तुम्हारा सामना कर सकेगा और
१६ न खंडन। माता-पिता, भाई, संबंधी और मित्र भी तुमको पकड़वाएंगे
१७ और तुममें से कुछ को मरवा डालेंगे। और मेरे नाम के कारण सब तुमसे
१८ द्वेष करेंगे। पर तुम्हारे सिर का बाल बांका न होगा। अपनी धीरता
१९ द्वारा तुम अपने प्राण सुरक्षित रखोगे।

२० 'जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा देखो तो जान लेना कि
२१ उसका विनाश निकट है। उस समय जो यहूदिया में हों, वे पर्वत पर भाग जाएं, जो नगर में हों, वे बाहर निकल जाएं, और जो गांवों में हों, वे नगर
२२ में न जाएं, क्योंकि वे प्रतिशोध के दिन होंगे जिनमें शास्त्र में लिखी सब
२३ बातें पूरी हो जाएंगी। शोक उनके लिए जो उन दिनों गर्भिणी होंगी अथवा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूध पिलाती होंगी ; क्योंकि पृथ्वी पर घोर संकट आएगा और इस प्रजा
पर प्रकोप होगा। लोग तलवार की घाट उतारे जाएंगे, और बंदी बना २४
कर सब जातियों में ले जाए जाएंगे ; और जब तक अन्यजाति का समय
पूरा न हो जाए, वे यरूशलेम को रौंदतीं रहेंगी। सूर्य, चन्द्रमा और २५
तारागण में चिह्न दिखाई देंगे, पृथ्वी की जातियों पर संकट पड़ेगा और
वे समुद्र तथा लहरों के गर्जन से व्याकुल हो उठेंगी। लोग विश्व पर आने २६
वाले संकटों और भय के कारण अपनी चेतना खो बैठेंगे एवं अंतरिक्ष की
शक्तियां हिल जाएंगी। तब वे मानव-पुत्र को अपार सामर्थ्य और तेज २७
के साथ मेघों पर आता हुआ देखेंगे। जब ये बातें होने लगें तो सीधे खड़े २८
होकर अपना सिर ऊंचा करना, क्योंकि तुम्हारी मुक्ति निकट होगी।'

जागरूकता की आवश्यकता

उन्होंने एक दृष्टांत कहा: 'अंजीर के वृक्ष अथवा किसी अन्य वृक्ष २९
को देखो ; ज्योंही उनमें पल्लव निकले, तुम देखकर अपने आप जान लेते ३०
हो कि ग्रीष्म ऋतु निकट है। इसी प्रकार जब तुम ये घटनाएं होती ३१
देखो तो जान लेना कि परमेश्वर का राज्य निकट है। मैं तुमसे सच ३२
कहता हूं कि जब तक ये सब बातें न हो जाएं, इस पीढ़ी का अंत न होगा।
आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, पर मेरे वचन नहीं टलेंगे। ३३

'अपने विषय सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारा मन दुराचार, ३४
मतवालेपन और जीवन की चिंताओं से शिथिल हो जाए और वह दिन
एकाएक तुम पर फंदे के सदृश आ पड़े; क्योंकि वह संपूर्ण पृथ्वी के सब ३५
निवासियों पर आएगा। इसलिए सदा जागते रहो और प्रार्थना करो ३६
कि तुम इन सब आनेवाली बातों से बचने में और मानव-पुत्र के समक्ष खड़े
होने में समर्थ हो सको।'

वह दिन को मंदिर में उपदेश देते और रात्रि को बाहर जाकर ३७
जैतून नामक पर्वत पर रहते थे। सब लोग उषाकाल में उठ जाते ३८
थे कि सुनने के लिए मंदिर में उनके पास जाएं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहूदा का विश्वासघात

22 अखमीरी रोटी का पर्व जो फसह कहलाता है, निकट आ रहा था, और महापुरोहित एवं शास्त्री इस प्रयत्न में थे कि किस प्रकार उनको मार डालें, पर उन्हें
३ जनता से भय था। तब शैतान ने यहूदा में, जो इस्करियोती कहलाता था और जिसकी गणना 'बारह' में होती थी, प्रवेश किया।
४ उसने जाकर महापुरोहितों और सेनापतियों से बातचीत की कि
५ यीशु को किस प्रकार उनके हाथ पकड़वाए। वे बहुत प्रसन्न हुए और उसे
६ धन देने को सहमत हो गए! उसने भी वचन दिया और अवसर ढूंढ़ने लगा कि भीड़ की अनुपस्थिति में यीशु को उनके हाथ पकड़वाए।

प्रभु-भोज की तैयारी

७ अब अखमीरी रोटी का दिन आ पहुंचा, जब कि फसह का बलिदान
८ देना होता है। यीशु ने पतरस और यूहन्ना को यह कहकर भेजा, 'जाओ
९ और हमारे खाने के लिए फसह का भोजन तैयार करो।' उन्होंने पूछा,
१० 'आप उसे किस स्थान पर तैयार करवाना चाहते हैं?' वह बोले, 'नगर में प्रवेश करते ही तुम्हें एक मनुष्य मिलेगा जो जल भरा घड़ा लिए जा रहा होगा। जिस घर में वह प्रवेश करे, उसमें तुम उसके पीछे पीछे जाना
११ और गृह-स्वामी से कहना, "गुरुजी ने आपसे कहा है कि वह अतिथि-
१२ शाला कहां है जहां मैं अपने शिष्यों के साथ फसह खाऊं?" और वह तुम्हें घर के ऊपरी भाग में एक बड़ा और सुसज्जित कक्ष दिखा देगा। वहीं
१३ तुम तैयारी करना।' जैसा यीशु ने उनसे कहा था, उन्होंने जाकर वैसा ही पाया और फसह तैयार किया।

प्रभु-भोज

१४ जब समय हुआ तो वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठे। उन्होंने
१५ कहा, 'मेरी प्रबल अभिलाषा थी कि दुःखभोग से पूर्व तुम्हारे साथ
CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
१६ फसह खाऊं; क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि जब तक परमेश्वर के राज्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में यह पूर्ण न हो जाए, मैं इसे फिर न खाऊंगा।' तब उन्होंने कटोरा लेकर १७
धन्यवाद दिया और कहा, 'इसे लो और आपस में बांट लो ; क्योंकि मैं १८
तुमसे कहता हूं कि आज से लेकर जब तक परमेश्वर का राज्य नहीं आ
जाता, मैं दाख का रस न पीऊंगा।' तब उन्होंने रोटी ली, धन्यवाद १९
देकर तोड़ी और उनको यह कहते हुए दी, 'यह मेरी देह है जो तुम्हारे
लिए दी जाती है। मेरी स्मृति में यह किया करो।' इसी प्रकार भोजन २०
के पश्चात् उन्होंने कटोरा भी यह कहते हुए दिया, 'यह कटोरा मेरे रक्त
में, जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है, नया व्यवस्थान है। फिर भी देखो, २१
मुझे पकड़वानेवाले का हाथ मेरे साथ मेज पर है। मानव-पुत्र तो २२
जैसा उसके लिए निश्चित किया गया, जाता है, परंतु शोक उस मनुष्य पर
जो उसे पकड़वा रहा है।' इस पर वे एक दूसरे से पूछने लगे कि हममें ऐसा २३
कौन है जो यह काम करेगा।

बड़ा कौन है

उनमें विवाद उठ खड़ा हुआ कि उनमें बड़ा कौन समझा जाए। २४
यीशु ने उनसे कहा, 'अन्यजाति के राजा उन पर प्रभुता करते हैं, और २५
उनके अधिकारी, उपकारी कहलाते हैं। परंतु तुम ऐसा न करना ; वरन् २६
जो तुममें बड़ा हो वह सबसे छोटा बने और जो नेता हो, वह सेवक।
कौन बड़ा है? वह जो भोजन करने बैठा है, अथवा वह जो सेवा कर रहा २७
है? क्या भोजन करने वाला बड़ा नहीं? पर मैं तुम्हारे बीच एक सेवक
के सदृश हूं। तुम ही हो जो मेरे संकटों में मेरा साथ देते रहे हो ; जैसे २८
मेरे पिता ने मेरे लिए राज्य निर्दिष्ट किया है, वैसे ही मैं तुम्हारे लिए २९
निर्दिष्ट करता हूं, कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पिओ और ३०
सिंहासनों पर बैठ कर इस्राएल के बारह वंशों का न्याय करो।

पतरस के अस्वीकरण के विषय में भविष्यवाणी

शमौन, शमौन, शैतान ने तुम सब की मांग की है कि तुम्हें गेहूं की ३१
तरह फटके ; पर मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना की है कि तुम्हारा विश्वास ३२

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनष्ट न हो। समय आने पर जब तुम फिरो तो अपने भाइयों को स्थिर
३३ करना।' उन्होंने कहा, 'प्रभुजी, मैं आपके साथ कारागार में जाने वरन्
३४ मरने के लिए भी तैयार हूं।' यीशु ने कहा, 'पतरस, मैं तुमसे कहता हूं, कि आज, मुर्गे के बांग देने से पहले, तुम तीन बार अस्वीकार कर दोगे
३५ कि मुझे जानते हो।' फिर उन्होंने सबसे कहा, 'जब मैंने तुमको बटुए, झोली और जूतों के बिना भेजा तो क्या तुम्हें किसी वस्तु का अभाव रहा?'
३६ उन्होंने उत्तर दिया, 'नहीं।' उन्होंने कहा, 'परंतु अब जिसके पास बटुआ है, वह उसे ले ले, इसी प्रकार झोली भी : और जिसके पास तलवार नहीं
३७ है, वह अपना वस्त्र बेच कर मोल ले। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं, यह अनिवार्य है कि शास्त्र का यह लेख मुझमें पूर्ण हो : "और वह अपराधियों के साथ गिना गया।" जो कुछ मेरे विषय में लिखा है, वह पूरा होना
३८ है।' वे बोले, 'प्रभु, देखिए, यहां दो तलवारें हैं।' उन्होंने कहा, 'पर्याप्त है।'

गतसमने में

३९ वह वहां से निकलकर अपने अभ्यास के अनुसार जैतून पर्वत पर चले
४० गए और शिष्य उनके पीछे हो लिए। उस स्थान पर पहुंचकर उन्होंने
४१ कहा, 'प्रार्थना करते रहो, जिससे परीक्षा में न पड़ो।' फिर वह उनसे
४२ ढेला फेंकने की दूरी तक गए और घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगे, 'पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मुझसे हटा ले; परंतु मेरी नहीं, तेरी इच्छा
४३ पूरी हो।' तब स्वर्ग से एक दूत उनको दिखाई दिया जो उन्हें बल
४४ प्रदान कर रहा था; और वेदना में वह और भी आग्रह पूर्वक प्रार्थना करने लगे; उनका पसीना रक्त की बूंदों के सदृश पृथ्वी पर गिर रहा था।
४५ जब प्रार्थना से उठकर वह शिष्यों के पास आए तो उन्हें शोक के कारण
४६ थके और सोते हुए पाया, और उनसे कहा, 'सोते क्यों हो? उठो, प्रार्थना करो कि परीक्षा में न पड़ो।'

यीशु का बंदी होना

४७ वह बोल ही रहे थे कि एक भीड़ आ पहुंची; और बारह में से एक, जिसका नाम यहूदा था, उनके आगे था। वह यीशु के समीप आया कि

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उनका चुंबन करे। यीशु ने उससे कहा, 'यहूदा, क्या तुम चुंबन द्वारा ४८
मानव-पुत्र को पकड़वा रहे हो ?' पास खड़े लोगों ने जब देखा कि क्या ४९
होनेवाला है तो पूछा, 'प्रभु, क्या हम तलवार चलाएं ?' और उनमें से ५०
एक ने महापुरोहित के दास पर प्रहार कर उसका दाहिना कान उड़ा दिया।
इस पर यीशु ने कहा, 'बस, बहुत हुआ' और उसका कान छूकर उसे स्वस्थ ५१
कर दिया। फिर यीशु ने महापुरोहितों, मंदिर के सेना-नायकों और ५२
धर्मवृद्धों से, जो उन पर चढ़ आए थे, कहा, 'क्या तुम मुझे, डाकू समझकर
तलवार और लाठियों सहित निकले हो ? जब मैं मंदिर में प्रतिदिन ५३
तुम्हारे साथ था तब तुमने मुझ पर हाथ नहीं डाला। अस्तु, यह तुम्हारा
समय है, और अंधकार का अधिकार।'

पतरस का अस्वीकरण

वे लोग उन्हें बंदी बना कर ले चले और महापुरोहित के भवन में ५४
लाए। पतरस दूर ही दूर पीछे चल रहे थे। जब लोग आंगन में आग ५५
जलाकर उसके चारों ओर बैठे, तो पतरस भी उनके बीच बैठ गए। एक ५६
दासी ने प्रकाश में उन्हें बैठे देखा और उनकी ओर एकटक देखती हुई बोली,
'यह भी उसके साथ था।' परंतु उन्होंने यह कहकर अस्वीकार किया, ५७
'हे नारी, मैं उसे नहीं जानता।' थोड़ी देर पश्चात् कोई दूसरा उन्हें देख- ५८
कर बोला, 'तू भी तो उन्हीं में से है।' पतरस ने कहा, 'भले मनुष्य, मैं
नहीं हूं।' लगभग एक घंटे के अनन्तर किसी दूसरे ने दृढ़तापूर्वक कहा, ५९
'निश्चय ही यह मनुष्य उसके साथ था, क्योंकि यह भी गलील निवासी
है।' पतरस बोले, 'भले मानुस, मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या ६०
कह रहे हो।' और तत्काल—जबकि वह बोल ही रहे थे—मुर्गे ने बांग
दी। प्रभु ने मुड़कर पतरस की ओर देखा। तब पतरस को प्रभु के कहे ६१
हुए शब्द स्मरण हुए जो उन्होंने कहे थे, 'आज मुर्गे के बांग देने से पूर्व तुम
मुझे तीन बार अस्वीकार करोगे।' और वह बाहर जाकर फूट-फूट कर ६२
रोने लगे।
CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
६३ अब प्रहरी यीशु का उपहास करने और उन्हें पीटने लगे।
६४ वे उनकी आंखें ढककर पूछते थे, 'नबूवत कर, तुझे किसने मारा ?'
६५ वे उनके विरुद्ध ऐसी ही अन्य अनेक अपमान पूर्ण बातें कह रहे थे।

महापुरोहित के संमुख यीशु का विचार

६६ जब दिन हुआ तो जनता के धर्मवृद्ध, महापुरोहित और शास्त्री
६७ एकत्रित हुए और उनको अपनी परिषद् में लाकर कहने लगे, 'यदि तू
६८ ख्रिस्त है तो हमसे कह।' उन्होंने कहा, 'यदि मैं तुमसे कहूं तो भी तुम विश्वास नहीं करोगे; और यदि मैं तुमसे कुछ पूछूं तो तुम उत्तर नहीं
६९ दोगे। परंतु अब से मानव-पुत्र सर्वशक्तिमान् परमेश्वर* की दाहिनी
७० ओर बैठेगा।' इस पर सब बोल उठे, 'तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र
७१ है?' उन्होंने उनसे कहा, 'तुम कहते हो कि मैं हूं।' इस पर वे बोले, 'क्या हमें अब भी साक्षी की आवश्यकता है? हम स्वयं इसी के मुंह से सुन चुके हैं।'

पिलातुस के संमुख यीशु

23 तब सारी सभा उठी और उन्हें पिलातुस के पास ले गई। वे उन पर यह कहकर अभियोग लगाने लगे, 'हमने इसे हमारी जाति को पथभ्रष्ट करते, कैसर को कर देने से मना करते और अपने आपको ख्रिस्त,
३ एवं राजा कहते सुना है।' पिलातुस ने उनसे पूछा, 'क्या तुम यहूदियों
४ के राजा हो?' उन्होंने उत्तर दिया, 'आप स्वयं कह रहे हैं।' तब पिलातुस ने महापुरोहितों और लोगों से कहा, 'मैं इस व्यक्ति में कोई दोष
५ नहीं पाता!' वे लोग और भी दृढ़तापूर्वक बोले, 'यह गलील से लेकर इस स्थान तक—समस्त यहूदिया में—जनता को व्याख्यानों द्वारा और उत्तेजित करता है।'

यीशु हेरोदेस के दरबार में

६ यह सुनकर पिलातुस ने पूछा, 'क्या यह गलील निवासी है?
७ और यह जानकर कि वह हेरोदेस के क्षेत्र से हैं, उन्हें हेरोदेस के पास भेज

*अक्षरशः परमेश्वर की सामर्थ्य
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया जो उन दिनों यरूशलेम में ही था। हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत ८
प्रसन्न हुआ। वह उन्हें बहुत दिनों से देखना चाहता था, क्योंकि उसने उनके
विषय में सुन रखा था और उनसे कुछ चमत्कार देखने की आशा करता
था। वह उनसे बहुत सी बातें पूछता रहा, पर उन्होंने उसे कुछ भी उत्तर ९
न दिया। इस बीच महापुरोहित और शास्त्री वहां खड़े हुए उन पर १०
उग्रतापूर्वक अभियोग लगा रहे थे। तब अपने सैन्य-दल के साथ हेरोदेस ११
ने उनका निरादर तथा उपहास किया और भड़कीला वस्त्र पहनाकर उन्हें
पिलातुस के पास फिर भेज दिया। उस दिन से हेरोदेस और पिलातुस १२
परस्पर मित्र बन गए; इससे पूर्व उनमें शत्रुता थी।

पिलातुस, बरअब्बा और यीशु

तब पिलातुस ने महापुरोहितों, शासकों और जनता को बुला कर १३
कहा, 'तुमने मेरे संमुख इस मनुष्य पर जनता को उत्तेजित करने का १४
अभियोग लगाया। मैंने तुम्हारे सामने इसकी जांच की है, और इस मनुष्य
पर जो अभियोग तुमने लगाए हैं, उनके विषय इसे दोषी नहीं पाया। न १५
हेरोदेस ने ही इसे दोषी पाया, क्योंकि उन्होंने इसे हमारे पास लौटा दिया
है। इसने मृत्युदंड के योग्य कोई काम नहीं किया है, इसलिए मैं इसे कोड़े १६
लगाकर छोड़ देता हूं।'*

इस पर वे सब एक साथ चिल्ला उठे,' इसे हटाओ, और हमारे लिए १८
बरअब्बा को छोड़ दो'—यह बरअब्बा नगर में हुए किसी विद्रोह तथा हत्या १९
के कारण कारागार में पड़ा था। पिलातुस ने यीशु को मुक्त करने की २०
इच्छा से लोगों को फिर समझाया; पर वे चिल्ला उठे, 'क्रूस पर २१
चढ़ाओ, उसे क्रूस पर चढ़ाओ।' उसने उनसे तीसरी बार कहा, 'क्यों, २२
इसने क्या अपराध किया है? मैं इसमें मृत्युदंड के योग्य कोई दोष नहीं

---

*कुछ प्रतियों में निम्नलिखित एक और पद भी पाया जाता है। १७:पर्व
के समय उसे किसी को उनके लिए मुक्त करना पड़ता था।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३ पाता। इसलिए मैं इसे कोड़े लगवाकर छोड़ देता हूं।' परंतु वे चिल्ला-चिल्ला कर पीछे पड़ गए,' उसे क्रूस पर चढ़ाओ।' और उनका चिल्लाना
२४ प्रबल सिद्ध हुआ। पिलातुस ने निर्णय दिया कि उनकी मांग पूरी की जाए।
२५ उसने उस मनुष्य को तो मुक्त कर दिया जो विद्रोह तथा हत्या के कारण कारागार में बंद था और जिसे लोग मांग रहे थे, और यीशु को लोगों की इच्छा पर छोड़ दिया।

क्रूस

२६ जब वे लोग यीशु को लिए जा रहे थे, तो उन्होंने ग्राम से आते हुए शमौन नामक एक कुरैन निवासी को पकड़ा और उस पर क्रूस लाद दिया
२७ कि यीशु के पीछे ले चले। जनता और स्त्रियों की भारी भीड़ उनके पीछे हो ली। स्त्रियां उनके लिए छाती पीटतीं और विलाप करती थीं।
२८ यीशु ने उनकी ओर मुड़कर कहा, 'यरूशलेम की पुत्रियो, मेरे लिए मत
२९ रोओ पर अपने लिए और अपने बच्चों के लिए रोओ; क्योंकि देखो, वे दिन आते हैं जब लोग कहेंगे, "धन्य हैं वे जो बाँझ हैं, धन्य हैं वे गर्भ जिन्होंने जन्म नहीं दिया और वे स्तन जिन्होंने दूध नहीं पिलाया।"
३० तब लोग पर्वतों से कहेंगे, "हम पर गिर पड़ो" और पहाड़ियों से "हमें ढक
३१ लो।" जब हरे वृक्ष के साथ ऐसा होता है तो सूखे के साथ क्या होगा?'
३२ वे अन्य दो मनुष्यों को भी, जो कुकर्मी थे, उनके साथ मृत्युदंड के लिए ले चले।

३३ जब वे उस स्थान पर आए जो 'कपाल' कहलाता है तो उन्होंने वहां यीशु को क्रूस पर चढ़ाया और उन कुकर्मियों को भी, एक को दाहिनी ओर
३४ और दूसरे को बाईं ओर। यीशु ने कहा, 'पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।'

३५ तब उन्होंने चिट्ठियां डालकर यीशु के वस्त्र बांट लिए। लोग खड़े-खड़े यह देख रहे थे। अधिकारी भी उपहास करते हुए कह रहे थे, 'इसने दूसरों को बचाया; यदि यह परमेश्वर का ख्रिस्त और मनोनीत है तो

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने को बचाए।' सैनिकों ने भी उनका उपहास किया। वे उनके ३६
पास आए, उन्हें अम्लरस पीने को दिया और बोले, 'यदि तू यहूदियों का ३७
राजा है तो स्वयं को बचा।' उनके ऊपर यह अभियोग-पत्र भी लगा ३८
था 'यह यहूदियों का राजा है।'

क्रूस पर टंगा एक अपराधी उनकी निंदा करने लगा, 'क्या तू ३९
ख्रिस्त नहीं है? तो फिर हमें और अपने को बचा।' पर दूसरे ने उसे ४०
रोक कर कहा, 'क्या तुझे परमेश्वर का भय नहीं; क्योंकि तू भी तो वही
दंड पा रहा है? और हमारा दंड तो न्याय-संगत है, क्योंकि हम अपनी ४१
करनी का फल भोग रहे हैं, पर इन्होंने कोई अनुचित काम नहीं किया।'
तब वह बोला, 'हे यीशु, जब आप अपने राज्य में आएं तो मुझे स्मरण ४२
कीजिए।' यीशु ने उससे कहा, 'मैं तुझसे सच कहता हूं कि आज ही तू ४३
मेरे साथ स्वर्ग-धाम* में होगा।

मृत्यु

लगभग दोपहर का समय था, और उस समय से तीसरे पहर तक ४४
सारे देश में अंधकार छाया रहा। सूर्य का प्रकाश जाता रहा और मंदिर ४५
का पट बीच से फट गया। तब यीशु ने उच्च स्वर से कहा, 'पिता, मैं ४६
अपनी आत्मा तेरे हाथ सौंपता हूं; और यह कहकर प्राण त्याग दिए।
यह घटना देखकर शतपति ने परमेश्वर की स्तुति की और कहा, ४७
'निश्चय, यह मनुष्य धर्मात्मा था।' सब लोग जो यह दृश्य देखने को ४८
एकत्रित हो गए थे, इन घटनाओं को देखकर छाती पीटते हुए लौट गए।
यीशु के सब परिचित व्यक्ति और स्त्रियां, जो गलील से उनके पीछे ४९
आई थीं, दूर खड़ी यह सब देख रही थीं।

कबर में रखना

यूसुफ नामक एक व्यक्ति महासभा के सदस्य थे। वह सज्जन और ५०
धार्मिक पुरुष थे—उन्होंने लोगों की योजना और कार्य में मत नहीं दिया ५१

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*मूल में 'परादेस'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था।—वह यहूदिया के नगर अरिमतिया के निवासी थे और परमेश्वर के
५२ राज्य की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने पिलातुस के पास जाकर यीशु का
५३ शव मांग लिया, उसे उतार कर मलमल की चादर में लपेटा और चट्टान
में खुदी एक कबर में रख दिया, जिसमें कभी कोई नहीं रखा गया था।

५४ यह 'परास्केव'* का दिन था और सबत प्रारम्भ हो रहा था।
५५ जो स्त्रियां गलील से यीशु के साथ आई थीं, उन्होंने पीछे-पीछे जाकर कबर
५६ को देखा और यह भी कि उनका शव किस प्रकार रखा गया है। तब
उन्होंने लौटकर सुगंधित द्रव्य और गंधरस तैयार किया और ईश्वरीय
आज्ञा के अनुसार सबत के दिन विश्राम किया।

प्रभु यीशु का पुनरुत्थान

24 सप्ताह के पहले दिन उषाकाल में वे उन सुगंधित द्रव्यों को,
जो उन्होंने तैयार किया थे, लेकर कबर पर आईं।
२ उन्होंने पत्थर को कबर से लुढ़का हुआ पाया, किंतु भीतर
आने पर उन्हें प्रभु यीशु का शव नहीं मिला। जब वे
४ इस बात से घबरा रही थीं, तो देखो, चमचमाते वस्त्र पहिने दो
५ पुरुष उनके समीप आ खड़े हुए। वे डर गईं और पृथ्वी की ओर
देखने लगीं। पुरुषों ने उनसे कहा, 'तुम जीवित को मृतकों में क्यों ढूंढ
६ रही हो? वह यहां नहीं हैं। परंतु जीवित हो उठे हैं। स्मरण करो
७ कि उन्होंने गलील में रहते हुए तुमसे कहा था कि मानव-पुत्र का पापियों
के हाथ सौंपा जाना, क्रूस पर चढ़ाया जाना, और तीसरे दिन जी उठना
८-९ अनिवार्य है।' अब उन्हें यीशु के वचन स्मरण हुए और वे कबर से लौट
१० पड़ीं तथा ग्यारह को तथा अन्य सबको ये सारी बातें कह सुनाईं। जिन्होंने
प्रेरितों से ये बातें कहीं, वे मरियम मगदलीनी, योअन्ना, याकूब की माता
११ मरियम तथा उनके साथ की अन्य स्त्रियां थीं, परंतु उन लोगों को ये

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*देखिए, मरकुस १५ : ४२

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शब्द प्रलाप मात्र प्रतीत हुए और उन्होंने उन स्त्रियों का विश्वास नहीं किया। फिर भी पतरस उठे और कबर तक दौड़ गए। जब उन्होंनें झुक १२ कर देखा तो केवल कफन दिखाई दिया, और वह इस घटना पर आश्चर्य करते हुए लौट आए।*

इम्माऊस के मार्ग में शिष्यों को दर्शन

उसी दिन उनमें से दो व्यक्ति इम्माऊस नामक गांव को जा रहे थे, १३ जो यरूशलेम से लगभग चार कोस‡ दूर है, और इन सब बीती घटनाओं १४ के संबंध में आपस में बातचीत कर रहे थे। जब वे बातचीत और विचार १५ विमर्श कर रहे थे, तो स्वयं यीशु उनके समीप आए और साथ-साथ चलने लगे, परंतु उन लोगों की आंखें उन्हें पहिचानने में असमर्थ रहीं। उन्होंने १६ पूछा, 'तुम चलते-चलते आपस में किस विषय पर बातचीत कर रहे हो?' १७ इस पर वे उदास खड़े रह गए। तब उनमें से एक, जिसका नाम १८ क्लियुपास था, बोला, 'क्या यरूशलेम में आप केवल प्रवासी हैं? क्या आपको नहीं ज्ञात कि इन दिनों वहां क्या हुआ है?' उन्होंने पूछा, 'क्या १९ हुआ है?' वे बोले, 'नासरत निवासी यीशु के विषय में जो परमेश्वर और समस्त जनता की दृष्टि में कर्म एवं वचन से समर्थ नबी थे; किस प्रकार २० हमारे महापुरोहितों और अधिकारियों ने उन्हें प्राणदंड के लिए सौंपा और क्रूस पर चढ़ा दिया। हमें तो आशा थी कि यही हैं जो इस्राएल की २१ मुक्ति करेंगे। इन सब बातों के अतिरिक्त एक बात और : इस घटना को हुए तीसरा दिन है और अब हम लोगों में से कुछ स्त्रियों ने हमें आश्चर्य में २२ डाल दिया है। वे उषाकाल में कबर पर गईं और वहां उनका शव नहीं २३ पाया; वे आकर बोलीं कि हमें स्वर्गदूत दिखाई दिए जो कहते थे कि वह जीवित हैं। इस पर हमारे कुछ साथी कबर पर गए, और जैसा स्त्रियों २४ ने कहा था वैसा ही पाया; परंतु यीशु को नहीं देखा।'

---

*कुछ प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता।

‡मूल में, स्तादियन

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५ तब यीशु ने दोनों से कहा, 'हे निर्बुद्धियो! नबियों के सब वचनों
२६ पर विश्वास करने में मंदमतियो! क्या यह अनिवार्य नहीं था कि ख्रिस्त
२७ ये दुःख उठाए और अपनी महिमा में प्रविष्ट हो?' तब उन्होंने मूसा एवं समस्त नबियों से आरंभ कर, संपूर्ण धर्मशास्त्र में अपने विषय लिखी
२८ बातों की व्याख्या उनसे की। इतने में वे उस गांव के निकट पहुंचे जहां उन्हें
२९ जाना था और ऐसा प्रतीत हुआ कि यीशु आगे जाना चाहते हैं। इस पर उन्होंने आग्रह किया, 'हमारे साथ रहिए क्योंकि संध्या हो रही है और दिन अब ढल चुका है।' अस्तु, वह उनके साथ ठहरने के लिए भीतर गए।

३० जब यीशु उनके साथ भोजन करने बैठे तो उन्होंने रोटी लेकर आशिष
३१ मांगी और उसे तोड़कर उन्हें देने लगे। तब उनकी आंखें खुल गईं और उन्होंने यीशु को पहिचान लिया। पर वह उनकी दृष्टि से ओझल हो गए।
३२ इस पर वे आपस में कहने लगे, 'जब वह मार्ग में हमारे साथ बातचीत कर रहे थे और हमें शास्त्र समझा रहे थे तो क्या हमारे हृदय उल्लसित
३३ नहीं थे?' और वे उसी समय उठे और यरूशलेम को लौट पड़े। उन्होंने
३४ ग्यारह एवं उनके साथियों को एकत्र पाया; वे कह रहे थे, 'प्रभु सचमुच
३५ जीवित हो उठे हैं और शमौन को दिखाई दिए हैं।' तब उन्होंने भी मार्ग में हुई घटनाएं बतलाईं और कहा, 'हमने उन्हें रोटी को तोड़ते समय पहिचाना।'

यीशु का प्रेरितों को दर्शन देना

३६ वे लोग ये बातें कर ही रहे थे कि स्वयं यीशु उनके बीच आ खड़े
३७ हुए और उनसे कहा, 'तुम्हें शांति मिले।' वे सहम गए और भयभीत
३८ होकर सोचने लगे कि हम कोई भूत देख रहे हैं। यीशु ने उनसे कहा, 'तुम
३९ क्यों घबराते हो? तुम्हारे मन में संदेह क्यों उठते हैं? मेरे हाथ और मेरे पांव देखो, कि मैं ही हूं। मुझे टटोल कर देखो; क्योंकि भूत के मांस
४० और हड्डियां नहीं होती जैसी तुम मुझमें देख रहे हो।' यह कहकर उन्होंने
४१ उनको अपने हाथ-पांव दिखाए।* शिष्यों को जब आनंद के मारे विश्वास

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*कुछ प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हुआ और आश्चर्य में पड़े रहे तो उन्होंने कहा, 'क्या तुम्हारे पास यहां कुछ भोजन है ?' उन्होंने उनको भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया। ४२ यीशु ने उसे लेकर उनके संमुख खाया। ४३

फिर उन्होंने कहा, 'जब मैं तुम्हारे साथ था तो मैंने तुमसे कहा था कि मूसा की व्यवस्था, नबियों की पुस्तकों और भजन-संहिता में जो कुछ ४४ मेरे संबंध में लिखा है, वह सब पूरा होना अनिवार्य है।' तब उन्होंने ४५ शिष्यों की बुद्धि खोल दी कि वे धर्मशास्त्र को समझ सकें, और उनसे ४६ कहा 'धर्मशास्त्र का लेख है कि ख्रिस्त दुःख उठाएगा, तीसरे दिन मृतकों में से जीवित हो उठेगा, और यरूशलेम से आरम्भ कर सभी जातियों ४७ में उसके नाम से हृदय-परिवर्तन और पाप-क्षमा का प्रचार किया जाएगा। तुम इन बातों के साक्षी हो। देखो, मेरे पिता ने जिसकी प्रतिज्ञा की है, ४८-४९ उसे मैं तुम पर भेजूंगा; पर जब तक तुम ऊपर के सामर्थ्य से विभूषित न हो जाओ, नगर में ठहरे रहो।'

स्वर्गारोहण

फिर वह उन्हें बैतनिय्याह तक ले गए और अपने हाथ उठाकर ५० उन्हें आशीर्वाद दिया। आशीर्वाद देते हुए वह उनसे पृथक् हो गए, और ५१ स्वर्ग में उठा लिए गए। वे लोग अत्यन्त आनंदपूर्वक यरूशलेम लौट आए ५२ और सदा मंदिर में उपस्थित रहकर परमेश्वर की स्तुति करने लगे। ५३

—o—

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूहन्ना रचित सुसमाचार

प्रस्तावना

1 आदि में शब्द* था; शब्द परमेश्वर के साथ था और शब्द परमेश्वर था। वह आदि में परमेश्वर के साथ था। उसके द्वारा
३ सब वस्तुओं की उत्पत्ति हुई, †और जो कुछ भी उत्पन्न हुआ, उसमें से एक
४ भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। उसमें जीवन था† और यह जीवन
५ मनुष्यों की ज्योति थी। ज्योति अंधकार में प्रकाश करती रही है, परन्तु अंधकार उस पर कभी विजयी नहीं हुआ।

६ परमेश्वर द्वारा भेजे हुए एक व्यक्ति थे, जिनका नाम यूहन्ना था।
७ वह साक्षी के लिए आए कि ज्योति की साक्षी दें कि सब उनके द्वारा
८ विश्वास करें। वह स्वयं ज्योति नहीं थे, किंतु ज्योति के संबंध में साक्षी देने आए थे।

९ सच्ची ज्योति, जो प्रत्येक मनुष्य को प्रकाशित करती है, संसार में
१० आने को थी। वह संसार में थे, और संसार उनके द्वारा उत्पन्न हुआ, किंतु
११ संसार ने उनको न जाना। वह अपने स्थान पर आए और उनके अपनों
१२ ने ही उनको ग्रहण नहीं किया; किंतु जितनों ने उनको ग्रहण किया और उनके नाम पर विश्वास किया, उनको उन्होंने परमेश्वर की संतान बनने
१३ का अधिकार दिया। उनकी उत्पत्ति न तो रक्त से‡ न शारीरिक इच्छा
१४ से और न किसी पुरुष के संकल्प से हुई, वरन् परमेश्वर से हुई। अस्तु, शब्द देहधारी हुआ और उसने अनुग्रह एवं सत्य से परिपूर्ण होकर हमारे मध्य

---

*अथवा, 'वचन'।

†अथवा, 'उसके बिना एक भी वस्तु उत्पन्न नहीं हुई ४जो कुछ भी उत्पन्न हुआ है, उसमें वह जीवन था।'

‡अक्षरशः 'रक्तों से'।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवास किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते पुत्र की महिमा।

यूहन्ना की साक्षी

उनके संबंध में यूहन्ना की साक्षी है; वह उच्च स्वर से कह चुके हैं, 'यह वही हैं जिनके संबंध में मैंने कहा था, कि मेरे पीछे आनेवाला मुझसे श्रेष्ठ है क्योंकि वह मुझसे पहिले था।' हम सबको उनकी परिपूर्णता में से अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त हुआ है; क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा प्रदान की गई, परंतु अनुग्रह और सत्य यीशु ख्रिस्त के द्वारा आए। परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा, स्वयं एकलौते-पुत्र परमेश्वर ने, जो पिता के अंक में हैं, उनका प्रकाशन किया है। १५ १६ १७ १८

यूहन्ना की साक्षी यह है: जब यरूशलेम से यहूदियों ने पुरोहित और लेवी भेजे कि उनसे पूछें, 'आप कौन हैं,' तो उन्होंने मुक्त कंठ से स्वीकार किया—अस्वीकार नहीं किया वरन् स्वीकार किया, 'मैं ख्रिस्त नहीं हूं।' उन लोगों ने पूछा, 'तो फिर आप कौन हैं? क्या आप एलिय्याह हैं?' उन्होंने कहा, 'नहीं।' 'तो क्या नबी हैं?' उन्होंने उत्तर दिया, नहीं।' इस पर वे बोले, कौन हैं आप? हमें बताइए कि हम अपने भेजने वालों को उत्तर दे सकें। आपको अपने विषय में क्या कहना है?' उन्होंने कहा, 'यशायाह नबी के लेखानुसार मैं निर्जन प्रदेश में पुकारने-वाले की वाणी हूं कि प्रभु का मार्ग सीधा बनाओ।' १९ २० २१ २२ २३

ये लोग फरीसियों में से भेजे गए थे। उन्होंने पूछा, 'यदि आप ख्रिस्त नहीं हैं, एलिय्याह नहीं हैं और न वह नबी हैं, तो फिर आप बपतिस्मा क्यों देते हैं?' यूहन्ना ने उत्तर दिया, 'मैं जल से* बपतिस्मा देता हूं परंतु तुम्हारे बीच एक व्यक्ति खड़ा है, जिसे तुम नहीं पहिचानते, और जो मेरे पीछे आनेवाला है। मैं उसके जूतों के बंध तक खोलने योग्य नहीं हूं।' ये बातें यरदन के पार बैतनिय्याह में हुई, जहां यूहन्ना बपतिस्मा दे रहे थे। २४-२५ २६ २७ २८

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अथवा 'जल में'।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९ दूसरे दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी ओर आते देखा तो बोले, 'देखो, परमेश्वर का मेम्ना! संसार के पापों का वहनकर्ता!
३० यह वही है जिसके विषय में मैंने कहा था, "मेरे पीछे एक पुरुष आ रहा
३१ है जो मुझ से श्रेष्ठ है क्योंकि वह मुझसे पहले था।" मैं स्वयं उसे नहीं पहिचानता था, परंतु मैं इस कारण जल से* बपतिस्मा देता हुआ आया कि
३२ वह इस्राएल पर प्रकट हो जाए।' यूहन्ना ने यह साक्षी दी, 'मैंने आत्मा को स्वर्ग से कपोत के सदृश उतरते देखा और वह उन पर ठहर गया।
३३ मैं उनको नहीं पहिचानता था, पर जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने भेजा था, उसने मुझे बताया, "जिस पर तुम आत्मा उतरते और ठहरते
३४ देखो, वही है जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने वाला है।" मैंने स्वयं देखा और मेरी साक्षी है कि यह परमेश्वर के पुत्र हैं।'

यूहन्ना के शिष्य और यीशु

३५ दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उनके दो शिष्य खड़े हुए थे। उन्होंने†
३६ यीशु को जाते देखा और कहा, 'देखो! परमेश्वर का मेम्ना!' उन
३७ दोनों शिष्यों ने उन्हें यह कहते सुना और यीशु के पीछे हो लिए। जब यीशु
३८ मुड़े, और उनको अपने पीछे आते देखा तो उनसे पूछा, 'तुम क्या चाहते हो?' उन्होंने कहा, 'हे रब्बी (अर्थात् गुरु) आप कहां रहते हैं?'
३९ उन्होंने उत्तर दिया, 'आओ और देखो।' तब उन्होंने जाकर उनका निवास स्थान देखा और उस दिन उनके साथ रहे। उस समय लगभग
४० दसवां घंटा था। उन दोनों में से एक, जो यूहन्ना की बात सुनकर उनके
४१ पीछे हो लिये थे, शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास थे। वह पहिले अपने भाई शमौन से मिले और उनसे कहा, 'हमने मसीह अर्थात् ख्रिस्त को पा
४२ लिया है,' और वह उनको यीशु के पास लाए। यीशु ने उन्हें ध्यानपूर्वक

* अथवा, 'जल में'।

† अर्थात्, यूहन्ना ने।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा और कहा, 'तुम यूहन्ना के पुत्र शमौन हो ; तुम कैफ़ा अर्थात् पतरस कहलाओगे।'

दूसरे दिन उन्होंने गलील जाने का निश्चय किया। वह फ़िलिप्पुस ४३
से मिले। यीशु ने उनसे कहा, 'मेरा अनुसरण करो।' फ़िलिप्पुस, ४४
बैतसैदा के, अन्द्रियास और पतरस के नगर के, निवासी थे। फ़िलिप्पुस ४५
नतनएल से मिले और बोले, 'जिनके विषय मूसा ने व्यवस्था में, तथा
नबियों ने लिखा है, वह यूसुफ़ के पुत्र, नासरत-निवासी यीशु, हमें मिल
गए।' नतनएल बोल उठे, 'क्या नासरत से कोई अच्छी वस्तु निकल सकती ४६
है?' फ़िलिप्पुस ने कहा, 'आओ और देखो।' यीशु ने नतनएल को ४७
अपनी ओर आते देखा तो उनके संबंध में कहा, 'देखो, यह वास्तव में
इस्राएली है, इसमें कोई कपट नहीं!' नतनएल ने उनसे पूछा, 'आप मुझे ४८
कैसे जानते हैं?' यीशु ने उत्तर दिया, 'इससे पहले कि फ़िलिप्पुस तुम्हें
बुलाएं, मैंने तुम्हें अंजीर के वृक्ष के नीचे देखा।' नतनएल बोले, 'रब्बी, ४९
आप परमेश्वर के पुत्र हैं, आप इस्राएल के राजा हैं।' यीशु ने उत्तर ५०
दिया, 'क्या तुम यह इसलिए कहते हो कि मैंने तुमसे कहा, "तुमको मैंने
अंजीर-वृक्ष के नीचे देखा!" तुम इनसे भी महान कार्य देखोगे।'
उन्होंने यह भी कहा, 'मैं तुम लोगों से सच कहता हू कि तुम स्वर्ग को ५१
अनावृत और परमेश्वर के दूतों को मानव-पुत्र पर आरोहण और
अवरोहण करते देखोगे।'

काना में विवाहोत्सव

2 तीसरे दिन गलील के काना में विवाह था। यीशु की माता १
वहां थीं, और यीशु एवं उनके शिष्य भी विवाह में निमंत्रित २
थे। दाखरस कम पड़ने पर यीशु की माता ने कहा, 'उनके पास दाखरस ३
नहीं है।' यीशु ने उत्तर दिया 'हे महिला, मुझे आपसे क्या काम! मेरे ४
लिये अभी समय नहीं आया है।' माता सेवकों से बोलीं, 'जो कुछ वह ५
तुमसे कहें, वही करना।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ वहां यहूदियों के शुद्धिकरण के लिए पत्थर के छः पात्र रखे थे जिनमें
७ दो-दो, तीन-तीन मन जल आता था। यीशु ने उनसे कहा, 'पात्रों में जल
८ भर दो।' उन्होंने उनको मुंह तक भर दिया। तब वह बोले, 'अब
९ निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।' वे ले गए प्रधान ने वह जल चखा, जो दाखरस बन गया था, और नहीं जाना कि यह कहां से आया है (किंतु सेवक, जिन्होंने जल निकाला था, जानते थे)। तब भोज के प्रधान
१० ने दूलह को बुलाया और कहा, 'प्रत्येक मनुष्य पहले उत्तम दाखरस देता है, और लोगों के तृप्त हो जाने पर मध्यम; पर तुमने उत्तम दाखरस
११ अब तक रख छोड़ा है!' इस प्रकार गलील के काना में यीशु ने अपने चिह्नों का आरंभ कर अपनी महिमा प्रकट की; एवं उनके शिष्यों ने उन पर विश्वास किया।

मंदिर का परिष्कार करना

१२ इसके अनंतर वह, उनकी माता और उनके भाई एवं शिष्य कफरन-
१३ हूम गए और वहां कुछ दिन निवास किया। यहूदियों का फसह समीप
१४ आने पर यीशु यरूशलेम गए। वहाँ उन्होंने मंदिर में बैल, भेड़ और कपोत
१५ बेचनेवालों और सर्राफों को बैठे पाया। रस्सियों का कोड़ा बनाकर उन्होंने भेड़ों और बैलों सहित सबको मंदिर से बाहर कर दिया, मुद्रा विनिमय करनेवालों की मुद्राएं बिखेर दीं और उनकी गद्दियां उलट दीं।
१६ वह कपोत बेचनेवालों से बोले, 'इन्हें यहां से ले जाओ; मेरे पिता के
१७ भवन को व्यापार का घर मत बनाओ।' तब उनके शिष्यों को स्मरण हुआ कि शास्त्र में लिखा है, 'तेरे भवन की धुन मुझे खा जाएगी।'
१८ यहूदियों ने उनसे पूछा, 'यह जो आप कर रहे हैं, इसके लिये आप
१९ हमें क्या चिह्न दिखाते हैं?' यीशु ने उत्तर दिया, 'इस मंदिर को नष्ट
२० कर दो और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।' यहूदी बोले, 'इस मंदिर के निर्माण में छियालीस वर्ष लगे और क्या आप इसे तीन दिन में
२१ खड़ा कर देंगे?' परंतु वह तो अपने देह रूपी मंदिर के विषय में कह रहे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। जब वह मृतकों में से जीवित हो उठे तो उनके शिष्यों को स्मरण हुआ कि उन्होंने ऐसा कहा था, और उन्होंने शास्त्र के लेख पर एवं उन शब्दों पर जो यीशु ने कहे थे, विश्वास किया। २२

जब वह यरूशलेम में फसह के समय पर उत्सव में थे तो बहुत लोगों ने उन चिह्नों को, जिन्हें वह दिखाते थे, देखकर उनके नाम पर विश्वास किया; २३ परंतु यीशु ने अपने आपको उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा; क्योंकि २४ वह सबको जानते थे, और उनको यह आवश्यकता नहीं थी कि कोई २५ व्यक्ति मनुष्य के विषय में साक्षी दे; कारण, उन्हें पता था कि मनुष्य के मन में क्या है।

निकोदिमुस को उपदेश

3 फरीसियों में निकोदिमुस नामक एक व्यक्ति यहूदियों में १ अधिकारी पुरुष थे। वह रात्रि में उनके पास आए और बोले २ 'रब्बी, हम जानते हैं कि आप गुरु हैं और परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आए हैं; क्योंकि यदि परमेश्वर साथ न हों तो जो चिह्न आप दिखाते हैं, कोई नहीं दिखा सकता।' यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं आप से सच सच ३ कहता हूं कि जब तक कोई नया* जन्म न ले, परमेश्वर के राज्य के दर्शन नहीं कर सकता।' निकोदिमुस ने पूछा, 'मनुष्य वृद्ध होकर जन्म कैसे ४ ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश कर जन्म ले सकता है?' यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं आपसे सच सच कहता हूं कि ५ जब तक कोई जल और आत्मा द्वारा जन्म न ले, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। जो शरीर से जन्म लेता है, वह शरीर है; ६ पर जो आत्मा से जन्म लेता है, वह आत्मा है। जब मैं कहता हूं कि ७ आपको नया जन्म लेने की आवश्यकता है तो चकित न होइए। वायु† ८

---

* अथवा, 'ऊपर से'।

†मूल यूनानी शब्द में श्लेष है। उसके अर्थ वायु और आत्मा दोनों हैं।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिधर चाहती है, चलती है; आप उसका शब्द सुनते हैं, पर नहीं जानते कि वह कहां से आ रही है और किधर जा रही है। जो कोई आत्मा से जन्म लेता है, वह ऐसा ही है।'

९ निकोदिमुस ने कहा, 'यह कैसे हो सकता है?' यीशु ने उत्तर १० दिया, 'आप इस्राएल के गुरु हैं! फिर भी यह नहीं समझते। मैं आप से ११ सच सच कहता हूं कि जिसको हम जानते हैं, उसे बताते हैं और जिसका हमने दर्शन किया है, उसकी साक्षी देते हैं; पर आप सब हमारी साक्षी १२ स्वीकार नहीं करते। जब मैंने आपसे पृथ्वी की बातें कहीं और आप उन पर विश्वास नहीं कर रहे हैं, फिर यदि मैं स्वर्ग की बातें कहूं तो कैसे विश्वास १३ करेंगे? केवल एक अर्थात् मानव-पुत्र को छोड़कर, जो स्वर्ग से उतरा, १४ और कोई व्यक्ति स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; और जैसे मूसा ने निर्जन प्रदेश में सर्प को ऊंचा उठाया, उसी प्रकार मानव-पुत्र का ऊंचा उठाया जाना १५ अनिवार्य है कि जो कोई उस पर विश्वास करे, शाश्वत जीवन प्राप्त करे।'

१६ क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम रखा कि अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे, नष्ट न हो, परंतु शाश्वत १७ जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि संसार को दंड की आज्ञा दे, वरन् इसलिए कि उसके द्वारा संसार का १८ उद्धार हो। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं, परंतु जो उस पर विश्वास नहीं करता, उस पर दंड की आज्ञा हो चुकी है, क्योंकि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर विश्वास नहीं किया। १९ दंड की आज्ञा का कारण यह है: ज्योति संसार में आई है, परंतु मनुष्यों ने ज्योति की अपेक्षा अंधकार से अधिक प्रेम किया, क्योंकि उनके कार्य २० बुरे थे। प्रत्येक दुराचारी ज्योति से बैर रखता है, वह ज्योति के समीप २१ नहीं आता कि कहीं उसके कार्यों के दोष प्रकट न हो जाएं। परंतु सत्य पर आचरण करनेवाला ज्योति के समीप आता है, जिससे उसके कार्य प्रकट हो जाएं कि वे परमेश्वर में किए गए हैं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अनंतर यीशु अपने शिष्यों के साथ यहूदिया प्रदेश में आए २२
और वहां उनके साथ रहकर बपतिस्मा देने लगे। यूहन्ना भी शालेम २३
के समीप एनोन में बपतिस्मा दे रहे थे, क्योंकि वहां जल अधिक था और
लोग आकर बपतिस्मा ले रहे थे। यूहन्ना अभी कारागार में नहीं डाले २४
गए थे।

यूहन्ना की अन्तिम साक्षी

यूहन्ना के शिष्यों का किसी यहूदी के साथ शुद्धिकरण के विषय में २५
विवाद उठ खड़ा हुआ। उन्होंने यूहन्ना के पास जाकर कहा, 'रब्बी २६
देखिए, यरदन पार जो आपके साथ थे, जिनके संबंध में आपने साक्षी दी
थी, वह बपतिस्मा देने लगे हैं और सब उनके पास जा रहे हैं।' यूहन्ना ने २७
उत्तर दिया, 'जबतक स्वर्ग से न दिया जाए, मनुष्य कुछ भी प्राप्त नहीं कर
सकता। तुम स्वयं साक्षी हो कि मैंने कहा था, "मैं ख्रिस्त नहीं, किंतु २८
उनसे पहले भेजा गया हूं"। जिसकी दुलहिन, वह दूलह। दूलह का २९
मित्र, जो उसके पास खड़ा हुआ उसकी सुनता है, और दूलह की वाणी से
आनन्दित होता है। अस्तु, मेरा यह आनन्द पूर्ण हुआ है। यह अनिवार्य ३०
है कि वह बढ़े और मैं घटूं।'

जो ऊपर से आता है, वह सर्वोपरि है। जो पृथ्वी से है, वह पृथ्वी का ३१
है, और वह पृथ्वी की ही कहता है; पर जो स्वर्ग से आता है, वह सर्वोपरि
है। जो कुछ उसने देखा और सुना है, उसकी वह साक्षी देता है, तो भी ३२
कोई उसकी साक्षी ग्रहण नहीं करता। जो उसकी साक्षी ग्रहण करता ३३
है, वह इस बात पर छाप लगा चुका कि परमेश्वर सत्य हैं। जिसे ३४
परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है, क्योंकि परमेश्वर
नाप तोल कर पवित्र आत्मा नहीं देते। पिता पुत्र से प्रेम करते हैं, और ३५
उनके हाथ में उन्होंने सब कुछ दे दिया है। जो पुत्र पर विश्वास करता ३६
है, शाश्वत जीवन उसका है; और जो पुत्र को नहीं मानता, वह जीवन
का दर्शन नहीं करेगा, परंतु परमेश्वर का कोप उस पर रहता है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामरी स्त्री

4 जब प्रभु को विदित हुआ कि फरीसियों ने सुन लिया है कि यूहन्ना की अपेक्षा यीशु अधिक शिष्य बनाते और बपतिस्मा
२ देते हैं—यद्यपि स्वयं यीशु नहीं, उनके शिष्य बपतिस्मा देते थे—तो उन्होंने
३ यहूदिया को छोड़ दिया और पुनः गलील को प्रस्थान किया। उन्हें
४ सामरिया में होकर जाना ही था। अतः वह सामरिया के सूखार नगर में
५ उस भूमि के समीप आए जो याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दी थी। यहां
६ याकूब का कुआ था। यीशु यात्रा से थक कर, जैसे थे वैसे ही, कुए पर बैठ गए। यह लगभग छठे घंटे का समय था।

७ इतने में सामरिया की एक स्त्री जल भरने आई। यीशु ने उससे
८ कहा, 'मुझे पीने को जल दो,' क्योंकि उनके शिष्य भोजन मोल लेने के
९ लिए नगर में गए हुए थे। सामरी स्त्री ने उनसे कहा, 'आप यहूदी होकर मुझसे, जो सामरिया की स्त्री हूं, जल कैसे मांगते हैं?' (कारण यह कि यहूदी
१० सामरियों के पात्रों का प्रयोग नहीं करते।) यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि तुम परमेश्वर के वरदान को जानतीं और यह जानतीं कि वह कौन है जो तुमसे कह रहा है, "मुझे पीने को जल दो," तो तुम उससे मांगतीं, और वह तुम्हें
११ जीवन-जल देता।' स्त्री ने कहा, 'महोदय, आपके पास जल भरने को कुछ नहीं है, और कुआ गहरा है; जीवन-जल आपके पास कहां से
१२ आया? आप हमारे पिता याकूब से महान् तो हैं नहीं! उन्होंने हमको यह कुआ प्रदान किया और उसमें से स्वयं उन्होंने, उनके पुत्रों ने एवं
१३ उनके पशुओं ने भी पिया।' यीशु ने उत्तर दिया, 'जो इस जल में से
१४ पिएगा, वह फिर प्यासा होगा, किंतु जो कोई उस जल में से पिएगा जिसे मैं दूंगा, वह कदापि प्यासा न होगा; वरन् वह जल जो मैं पीने को दूंगा, उसमें शाश्वत जीवन तक उमड़ने वाला जल स्रोत बन जाएगा।'
१५ स्त्री ने कहा, 'महोदय, मुझे वह जल दीजिए कि मैं फिर प्यासी न होऊं और न यहां जल भरने आऊं।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यीशु बोले, 'जाओ, अपने पति को बुला लाओ।' स्त्री ने उत्तर १६ दिया, 'मेरे पति नहीं हैं।' यीशु ने कहा, 'तुमने सत्य कहा, "मेरे पति १७ नहीं हैं", क्योंकि तुम पांच पति कर चुकी हो, और अब जो तुम्हारे पास १८ है, वह तुम्हारा पति नहीं; यह तुमने सत्य कहा है।' स्त्री बोली, १९ 'महोदय, अब मैं समझी आप कोई नबी हैं। हमारे पूर्वजों ने इस पर्वत पर २० आराधना की, और आप लोग कहते है कि यरूशलेम में ही वह स्थान है जहां आराधना करनी चाहिए।' यीशु ने कहा, 'महिला, मेरा विश्वास २१ करो। वह समय आ रहा है जब तुम लोग न तो इस पर्वत पर और न यरूशलेम में पिता की आराधना करोगे। तुम उसकी आराधना करते २२ हो जिसे नहीं जानते; हम उसकी आराधना करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। फिर भी वह समय आ रहा है, वरन् वर्तमान २३ है, जब सच्चे आराधक पिता की आराधना आत्मा और सत्य में करेंगे, क्योंकि पिता ऐसे ही आराधक चाहता है। परमेश्वर आत्मा है; और २४ यह आवश्यक है कि उसके आराधक आत्मा और सत्य से उसकी आराधना करें।' स्त्री ने कहा, 'मैं जानती हूं कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, २५ आने वाला है। जब वह आएगा, हमें सब बातें स्पष्ट कर देगा।' यीशु २६ बोले, 'मैं जो तुम से बात कर रहा हूं, वही हूं।'

इस समय उनके शिष्य आ गए और आश्चर्य करने लगे कि वह २७ एक स्त्री से बात कर रहे हैं; पर तो भी किसी ने नहीं पूछा, 'आप क्या चाहते हैं' अथवा 'आप इस स्त्री से क्यों बात कर रहे हैं?' उस स्त्री ने २८ अपना घड़ा वहीं छोड़ा और नगर में जाकर लोगों से कहा, 'आओ तो, २९ एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया, मुझे बता दिया। कहीं यह ख्रिस्त तो नहीं!' वे नगर से निकले और उनकी ओर आने लगे। ३०

इसी बीच में उनके शिष्यों ने निवेदन किया, 'रब्बी, भोजन कर ३१ लीजिए', पर यीशु ने उत्तर दिया, 'मेरे पास खाने को वह भोजन है, ३२

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३३ जिसे तुम नहीं जानते।' शिष्य आपस में कहने लगे, 'कोई इनके लिए
३४ भोजन तो नहीं लाया?' यीशु ने उनसे कहा, 'मेरा भोजन यह है कि अपने
३५ भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका कार्य पूर्ण करूं। क्या तुम नहीं कहते, "चार महीने और हैं कि कटनी आई"? मैं कहता हूं कि आंखें उठाओ, और खेतों पर दृष्टि करो; वे कटनी के लिए पक चुके हैं।
३६ काटने वाला पारिश्रमिक प्राप्त कर शाश्वत जीवन के लिए फल संग्रह कर रहा है, जिससे कि बोनेवाले और काटने वाले दोनों आनंद मनाएं।
३७ अस्तु यहां यह कहावत सच्ची उतरती है, "बोनेवाला और है, काटने-
३८ वाला और"। जिसके लिए तुमने कोई परिश्रम नहीं किया, उसे काटने के लिए मैंने तुम्हें भेजा; दूसरों ने परिश्रम किया और उनके परिश्रम का फल तुम्हें प्राप्त है।'

३९ उस नगर के अनेक सामरियों ने उन पर विश्वास किया, क्योंकि उस स्त्री का, जिसने साक्षी दी थी, कथन था, 'जो कुछ मैंने किया, वह सब
४० उन्होंने मुझे बता दिया।' इन सामरिया निवासियों ने आकर उनसे निवेदन किया कि हमारे साथ रहिए; और वह उनके साथ दो दिन रहे।
४१ उनके उपदेशों के कारण और बहुतों ने उन पर विश्वास किया। वे
४२ उस स्त्री से बोले, 'हम अब तुम्हारे कथन के कारण विश्वास नहीं करते; हमने स्वयं उनको सुना हैं और हम जानते हैं कि वह वास्तव में संसार के उद्धारकर्ता हैं।'

राज्य कर्मचारी के पुत्र को स्वस्थ करना

४३ दो दिन के उपरांत यीशु वहां से निकल कर गलील को गए।
४४ क्योंकि उन्होंने स्वयं साक्षी दी थी कि नबी का अपनी मातृभूमि में
४५ आदर नहीं होता। जब वह गलील पहुंचे तो गलील निवासियों ने उनका स्वागत किया, क्योंकि वे उन सब कामों को देख चुके थे जो यीशु ने पर्व के अवसर पर यरूशलेम में किए थे, क्योंकि वे स्वयं भी पर्व पर गए थे।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब वह पुनः गलील के काना में आए जहां उन्होंने जल को दाखरस बनाया था। वहां एक राज्याधिकारी था जिसका पुत्र कफरनहूम में रोगी था। जब उसने सुना कि यीशु यहूदिया से गलील में आए हुए हैं तो उनके निकट आकर निवेदन किया कि चलकर उसके पुत्र को स्वस्थ करें, क्योंकि वह मरने पर था। यीशु ने उससे कहा, 'जब तक तुम चिह्न और चमत्कार न देखोगे, विश्वास नहीं करोगे।' अधिकारी ने कहा, 'प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने से पूर्व आइए।' यीशु ने उससे कहा, 'जाओ, तुम्हारा पुत्र जीवित है।' मनुष्य ने यीशु के कथन पर विश्वास किया और चला गया। वह मार्ग में ही था कि उसे दास मिले जिन्होंने उससे कहा, 'आप का बालक जीवित है।' उसने उनसे पूछा, 'किस समय से उसकी दशा सुधरने लगी?' वे बोले, 'कल सातवें घंटे से उसका ज्वर दूर हो गया।' तब पिता ने जाना कि उसी समय यीशु ने कहा था, 'तुम्हारा पुत्र जीवित है'; और उसने तथा उसके परिवार ने विश्वास किया। यह दूसरा चिह्न था जो यीशु ने यहूदिया से आकर गलील में दिखाया। ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४

बेतसहदा के कुंड पर पंगु पुरुष

5 इसके अनंतर यहूदियों के एक पर्व पर यीशु यरूशलेम गए। यरूशलेम में भेपकुंड* है जो इब्रानी में बेतसहदा कहलाता है। उसमें पांच मंडप हैं। इनमें अनेक रोगी—अंधे, लंगड़े और अर्द्धांगी—(जल के हिलने की प्रतीक्षा में) पड़े रहते थे। (क्योंकि समय समय पर एक स्वर्गदूत कुंड में उतरता और जल को हिलाता था। जल हिलते ही जो व्यक्ति पहले डुबकी लगाता, वह चाहे किसी रोग से ग्रस्त क्यों न हो, स्वस्थ हो जाता था।)† वहां एक मनुष्य था जो अड़तीस वर्ष से रोगी था। यीशु ने उसे पड़े देखकर और यह जानकर कि वह बहुत काल से १ २ ३ ४ ५

*पाठांतर: 'भेपद्वार के समीप एक कुंड है।'
†कुछ प्राचीन प्रामाणिक प्रतियों में कोष्टांकित शब्द नहीं पाए जाते।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ रोगी है, उससे कहा, 'क्या तुम स्वस्थ होना चाहते हो ?' रोगी ने उत्तर
७ दिया, 'महोदय, मेरा कोई ऐसा नहीं है जो जल के हिलने पर मुझे कुंड
में उतारे ; मेरे जाते-जाते मुझ से पहले कोई अन्य व्यक्ति उतर जाता
८ है।' यीशु ने कहा, 'उठो, अपना बिस्तर उठाओ और चलो।' वह
९ मनुष्य तुरंत स्वस्थ हो गया और बिस्तर उठाकर चलने फिरने लगा।

१० उस दिन सबत था इसलिए यहूदियों ने स्वस्थ हुए व्यक्ति से कहा,
११ 'आज सबत है, बिस्तर उठाना तुम्हारे लिए विहित नहीं।' उसने उत्तर
दिया 'जिसने मुझे स्वस्थ किया, उसने मुझसे कहा, "अपना बिस्तर उठाओ
१२ और चलो"।' उन्होंने पूछा, 'वह कौन मनुष्य है जिसने तुमसे कहा कि
१३ बिस्तर उठाओ और चलो ?' स्वस्थ हुआ व्यक्ति नहीं जानता था
कि वह कौन हैं, क्योंकि उस स्थान पर भीड़ होने के कारण यीशु वहां
१४ से चले गए थे। कुछ समय पश्चात् यीशु उसे मंदिर में मिले और
उससे बोले, 'देखो तुम स्वस्थ हो गए हो, आगे पाप न करना। कहीं ऐसा न
१५ हो कि तुम्हारा अधिक अनिष्ट हो जाए।' उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों
१६ से कहा, 'वह जिन्होंने मुझे स्वस्थ किया, यीशु हैं।' इस कारण यहूदी
१७ यीशु को सताने लगे कि वह सबत के दिन ऐसे कार्य करते थे। यीशु
ने उनसे कहा, 'मेरा पिता अब तक कार्य कर रहा है, और मैं भी कर
१८ रहा हूं।' अब यहूदी उनको मार डालने का और भी प्रयत्न करने लगे;
क्योंकि वह सबत का ही उल्लंघन नहीं करते थे, परंतु परमेश्वर को अपना
पिता कह कर अपने आपको परमेश्वर के तुल्य भी बताते थे।

पिता के प्रति यीशु की अधीनता

१९ यीशु ने उनसे कहा, 'मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि पुत्र
स्वतंत्र रूप से कुछ नहीं कर सकता ; जैसे पिता को करते देखता है, करता
२० है ; जैसा पिता करता है ठीक वैसा ही पुत्र भी करता है। पिता पुत्र से
प्रीति करता है, और जो कुछ करता है, वह सब उसे दिखाता है ; और
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
२१ इनसे भी बड़े कार्य उसे दिखाएगा कि तुम्हें आश्चर्य हो। क्योंकि जिस प्रकार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता मृतकों को उठाता और उन्हें जीवन देता है, उसी प्रकार पुत्र भी जिसे चाहे जीवन देता है। सच तो यह है कि पिता किसी का न्याय नहीं करता, (२२) उसने न्याय करने का सब अधिकार पुत्र को दे दिया है कि सब जैसे पिता का आदर करते हैं, पुत्र का भी आदर करें। जो पुत्र का आदर नहीं करता (२३) वह पिता का भी, जिसने उसे भेजा है, आदर नहीं करता। मैं तुमसे सच (२४) सच कहता हूं कि जो मेरे वचन सुनता और मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, वह शाश्वत जीवन प्राप्त करता है ; वह दंड का भागी नहीं होता वरन् मृत्यु को पार कर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

'मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि वह समय आ रहा है, वरन् वर्तमान (२५) है, जब मृतक परमेश्वर के पुत्र की वाणी सुनेंगे, और जो सुनेंगे, वे जीवन प्राप्त करेंगें। क्योंकि जैसे पिता स्वयं में जीवन धारण किए हुए है, (२६) वैसे ही उसने पुत्र को भी स्वयं जीवन धारण करने का अधिकार दिया है ; और उसे मानव पुत्र होने के कारण दंड देने का अधिकार भी दिया है। (२७) इस बात पर तुम्हें चकित नहीं होना चाहिए, क्योंकि समय आ रहा है कि (२८) सब जो कबरों में हैं, उसकी वाणी सुनकर निकल आएंगें—सुकर्म करने (२९) वालों का जीवन के लिए पुनरुत्थान होगा और कुकर्मियों का दंड के लिए।

यीशु के संबंध में साक्षी

"मैं अपने आप कुछ नहीं कर सकता, जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता (३०) हूं ; और मेरा न्याय ठीक होता है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करना चाहता हूं। यदि मैं स्वयं अपने संबंध (३१) में साक्षी दूं तो मेरी साक्षी सत्य नहीं ; एक और है जो मेरे संबंध में (३२) साक्षी देता है, और मैं जानता हूं कि मेरे संबंध में उसकी साक्षी सत्य है। तुमने यूहन्ना से पुछवाया, और सत्य के संबंध में उन्होंने साक्षी दी है। (३३) यह नहीं कि मुझे मनुष्य की साक्षी की आवश्यकता है, किंतु मैं यह (३४) इसलिए कहता हूं कि तुम्हारा उद्धार हो। यूहन्ना जलते और चमकते (३५) हुए दीपक थे। उनके प्रकाश में कुछ काल तक आनंद मना लेना तुम्हें अच्छा

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३६ लगा। परंतु जो साक्षी मुझे प्राप्त है, वह उनकी साक्षी से महान् है। ये कार्य जो पिता ने मुझे पूर्ण करने के लिए दिए हैं—ये कार्य जो मैं कर
३७ रहा हूं—मेरे संबंध में साक्षी हैं कि पिता ने मुझे भेजा है। पिता ने भी
३८ -जिसने मुझे भेजा है- मेरे संबंध में साक्षी दी है। तुमने कभी उसकी वाणी नहीं सुनी, न उसका स्वरूप देखा है और न उसका वचन तुममें रहता
३९ है, क्योंकि जिसे उसने भेजा है, उस पर तुम विश्वास नहीं करते। शास्त्रों का तुम अध्ययन करते हो; क्योंकि तुम्हारी धारणा है कि उनमें तुम्हें
४० शाश्वत जीवन मिलता है, और वह मेरे संबंध में साक्षी देते हैं; फिर भी तुम जीवन प्राप्त करने के लिए मेरे पास नहीं आना चाहते।

४१ 'मुझे मनुष्यों का सन्मान नहीं चाहिए। पर मैं तुम्हें जानता हूं कि तुममें परमेश्वर का प्रेम नहीं है। मैं अपने पिता के नाम में आया हूं, परंतु तुम मुझे स्वीकार नहीं करते; यदि कोई अन्य अपने नाम से आए तो
४४ उसको तुम स्वीकार करोगे। तुम्हें विश्वास कैसे हो सकता है जब कि तुम आपस में एक दूसरे से सन्मान चाहते हो और उस सन्मान की खोज नहीं
४५ करते जो केवल एक अद्वैत परमेश्वर से प्राप्त होता है। यह मत सोचो कि पिता के संमुख मैं तुम पर अभियोग लगाऊंगा। तुम पर अभियोग लगाने
४६ वाले तो मूसा हैं जिन पर तुमने आशा बांध रखी है। यदि तुम मूसा पर विश्वास करते तो मुझ पर भी विश्वास करते क्योंकि उन्होंने मेरे संबंध
४७ में लिखा है; परंतु यदि तुम उनके लेख पर विश्वास नहीं करते तो मेरे कथन पर कैसे विश्वास करोगे?'

पांच सहस्र को भोजन कराना

6 इसके अनंतर यीशु गलील अर्थात् तिबिरियास सागर के पास चले गए। विशाल जनसमूह ने उनका अनुसरण किया, क्योंकि
३ उसने वे चिह्न देखे थे जो उन्होंने रोगियों पर दिखाए थे। यीशु पर्वत पर
४ गए और वहां शिष्यों के साथ बैठ गए। यहूदियों के फसह का पर्व निकट
५ था। यीशु ने आंखें उठाईं और एक विशाल जनसमूह को अपनी ओर आते

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख कर फिलिप्पुस से कहा, 'हम इनको खिलाने के लिए कहां से भोजन मोल लाएं?' उन्होंने यह उनकी परीक्षा करने के लिये कहा, क्योंकि ६ वह जानते थे कि क्या करने को थे। फिलिप्पुस ने उन्हें उत्तर दिया, 'दो ७ सौ दीनार की रोटियां भी उनके लिए पर्याप्त न होंगी कि प्रत्येक को थोड़ी थोड़ी मिल जाए।' शमौन पतरस के ८ भाई अन्द्रियास, जो उनके शिष्य थे, बोले, 'यहां एक ९ बालक है जिसके पास जौ की पांच रोटियां और दो मछलियां हैं; पर इनसे इतनों के लिए क्या होता है!' यीशु ने कहा, 'लोगों को १० बैठाओ।' उस स्थान पर बहुत घास थी। अतः पुरुष जिनकी संख्या लगभग पांच सहस्र थी, बैठ गए। तब यीशु ने रोटियां लीं और धन्यवाद ११ देकर बैठे हुओं में वितरित कीं और इसी प्रकार, जितनी वे चाहते थे, मछलियां भी। जब लोग तृप्त हो गए तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, १२ 'बचे हुए टुकड़ों को एकत्रित करो कि कुछ भी व्यर्थ न जाए।' उन्होंने १३ एकत्रित किए और जौ की पांच रोटियों के टुकड़ों से, जो भोजन करनेवालों से बचे थे, बारह टोकरियां भरीं। लोग उनके द्वारा प्रदर्शित १४ चिह्न को देखकर कहने लगे, 'यह वास्तव में वह नबी हैं जो संसार में आनेवाले हैं।' तब, यह जानकर कि लोग उन्हें राजा बनाने के लिए आकर १५ पकड़ना चाहते हैं, यीशु फिर पर्वत पर एकान्त में चले गए।

सागर पर चलना

जब संध्या हुई तो उनके शिष्य सागर तट पर आए, और नौका १६ पर चढ़कर सागर की दूसरी ओर कफरनहूम को जाने लगे। अंधेरा हो १७ चुका था, और यीशु अभी तक उनके पास नहीं आए थे। उधर आंधी १८ चलने लगी और सागर में लहरें उठने लगीं। जब वे एक-दो *कोस खे १९ चुके तो उन्होंने यीशु को सागर पर चलते और नौका के समीप आते देखा। वे डर गए, किंतु यीशु ने उनसे कहा, 'मैं हूं, डरो मत।' तब वे लोग २०-२१

*मूल में 'स्तदियन' जो ६०६ फुट का होता था।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें नौका में लेने को उद्यत हुए, और नौका तुरंत उस स्थल पर आ लगी जहां वे जा रहे थे ।

चिह्न की मांग

२२ दूसरे दिन सागर पार खड़े हुए जनसमूह ने देखा कि यहां तो एक को छोड़कर कोई दूसरी नौका नहीं थी, और यीशु अपने शिष्यों के साथ
२३ नौका पर नहीं चढ़े थे, केवल उनके शिष्य ही विदा हुए थे । अब तिबिरियास से अन्य नौकाएं उस स्थान के समीप आ गईं, जहां लोगों ने प्रभु के
२४ धन्यवाद देने के पश्चात् भोजन किया था । जब जनसमूह ने देखा कि न तो यीशु वहां हैं और न उनके शिष्य, तो वे नौकाओं पर चढ़कर यीशु की खोज में कफरनहूम गए ।

जीवन की रोटी

२५ जनसमूह ने सागर की दूसरी ओर उनको पाकर पूछा, 'रब्बी, आप
२६ यहां कब से हैं ? ' यीशु ने उत्तर दिया, ' मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि तुम मुझे इसलिए नहीं खोज रहे कि तुमने चिह्न देखे, वरन् इसलिए कि
२७ तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए । नाशवान् भोजन के लिए श्रम न करो, वरन् उस भोजन के लिए, जो शाश्वत जीवन तक रहता है, जिसे मानव-पुत्र तुम्हें
२८ देगा; क्योंकि पिता परमेश्वर ने उस पर अपनी छाप लगाई है । ' उन्होंने
२९ पूछा, ' परमेश्वर के कार्य करने के लिए हम क्या करें ? ' यीशु ने उत्तर दिया, ' परमेश्वर का कार्य यह है कि जिसे उसने भेजा हैं, उस पर विश्वास
३० करो । ' तब उन्होंने कहा, 'तो आप कौन सा चिह्न दिखाते हैं जिसे देख
३१ कर हम आप पर विश्वास करें ? आप कौन सा कार्य करते हैं ? हमारे पूर्वजों ने तो मरुभूमि में मन्ना खाया था ; जैसा कि शास्त्र में लिखा है,
३२ "उसने उनके खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी" ।' यीशु ने उत्तर दिया, ' मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम्हें स्वर्ग से रोटी मूसा ने नहीं दी ;
३३ मेरा पिता तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी दे रहा है । परमेश्वर की रोटी वह
३४ है, जो स्वर्ग से उतर कर संसार को जीवन देता है ।' उन्होंने कहा,

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हे प्रभु, हमको यह रोटी सदैव दीजिए।' यीशु ने कहा, 'जीवन की रोटी मैं हूं; जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी प्यासा न होगा। पर मैं तुम से कह चुका हूं कि तुमने मुझे देख लिया है फिर भी मुझ पर विश्वास नहीं करते। जो मेरा पिता मुझे देता है, वह सब मेरे पास आएगा; और जो कोई मेरे पास आएगा, उसको मैं कभी बाहर नहीं निकालूंगा। क्योंकि मैं अपनी नहीं वरन् अपने भेजने वाले की इच्छा पूर्ण करने स्वर्ग से उतरा हूं; और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो उसने मुझे दिया है, उस सब में से कुछ भी न खोऊं वरन् अंतिम दिन उसे उठाऊं। मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, वह शाश्वत जीवन पाए; और अंतिम दिन मैं उसे पुनःजीवित उठाऊंगा।' ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०

उन्होंने कहा था, 'स्वर्ग से उतरी हुई रोटी मैं हूं,' इसलिए यहूदी आपस में बुड़बुड़ाने लगे। वे बोले, 'क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं है, जिसके माता-पिता को हम जानते हैं? तो यह कैसे कहता है कि मैं स्वर्ग से उतर आया हूं?' यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, 'आपस में मत बुड़बुड़ाओ। जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, आकर्षित न करें, कोई मेरे पास नहीं आ सकता; और मैं उसे अंतिम दिन फिर उठाऊंगा। नबियों की पुस्तकों में लिखा है: "वे सब परमेश्वर द्वारा शिक्षित होंगे।" जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है वह मेरे पास आता है। यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है; केवल उसी ने, जो परमेश्वर की ओर से है, पिता को देखा है। मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो विश्वास करता है, उसे शाश्वत जीवन प्राप्त है। जीवन की रोटी मैं हूं। तुम्हारे पूर्वजों ने मरुभूमि में मन्ना खाया और मर गए। यह रोटी वह है, जो स्वर्ग से उतरी है; जो इसमें से खाए वह मरने का नहीं। स्वर्ग से उतरी हुई जीवित रोटी मैं हूं: यदि कोई इस रोटी में से खाएगा, वह सदैव जीवित रहेगा; और जो रोटी संसार के जीवन के लिए मैं दूंगा, वह मेरी देह है।' ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९-५० ५१

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५२ इस पर यहूदी आपस में वाद विवाद करने लगे, 'वह हमें खाने के
५३ लिए अपनी देह कैसे दे सकते हैं ?' यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे सच सच
कहता हूं, कि जब तक तुम मानव-पुत्र की देह न खाओ और उसका रक्त
५४ न पिओ तुम में जीवन नहीं। जो मेरी देह खाता और मेरा रक्त पीता
५५ है, शाश्वत जीवन उसका है ; और उसे मैं अंतिम दिन उठाऊंगा। मेरी
५६ देह सच्चा भोजन है और मेरा रक्त सच्चा पेय है। जो मेरी देह खाता
५७ और रक्त पीता है, वह मुझमें रहता है और मैं उसमें। जैसे जीवंत पिता
ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवंत हूं, इसी प्रकार जो मुझे
५८ खाता है, वह मेरे कारण जीवित रहेगा। स्वर्ग से उतरी हुई यह रोटी
ऐसी नहीं जैसी पूर्वजों ने खाई और मर गए : जो यह रोटी खाएगा वह
सदैव जीवित रहेगा।'

अल्प विश्वासी शिष्य

५९ उन्होंने कफरनहूम के सभागृह में शिक्षा देते हुए यह कहा।
६० यह सुनकर उनके बहुत से शिष्य बोले, 'ये वचन कठोर हैं। इनको
६१ कौन सुन सकता है ?' यीशु ने मन में जाना कि मेरे शिष्य मेरे संबंध में
बुड़बुड़ा रहे हैं, और कहा, 'क्या इतने से ही तुम्हारा पतन होता है !
६२ और यदि तुम मानव-पुत्र को, जहां वह पहले था, वहां आरोहण करते
६३ देखो तो क्या होगा ! आत्मा जीवन-दाता है, शरीर से कुछ लाभ नहीं ;
६४ जो वचन मैंने तुमसे कहे हैं, वे आत्मा और जीवन है। फिर भी तुम में से
अनेक हैं जिनको विश्वास नहीं।' क्योंकि यीशु को आरंभ से पता था कि
वे कौन हैं, जो उन पर विश्वास नहीं करते, और वह कौन है, जो उनको
६५ पकड़वाएगा। और वह बोले, 'इसी कारण मैंने तुमसे कहा था कि जब
तक पिता वरदान न दे, कोई मेरे समीप नहीं आ सकता।'

पतरस का यीश को ख्रिस्त स्वीकार करना

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
६६ इसके पश्चात् उनके बहुत से शिष्य पीछे हट गए और फिर
६७ उनका साथ न दिया। तब यीशु ने बारह से पूछा, 'क्या तुम तो मुझे नहीं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ना चाहते ?' शमौन पतरस ने उत्तर दिया, 'प्रभु, हम किसके ६८
पास जाएं ? आपके पास शाश्वत जीवन के वचन हैं। हमने विश्वास ६९
किया है, और हम जान चुके हैं कि आप परमेश्वर के पवित्र
व्यक्ति हैं। *"

यीशु ने कहा, 'क्या मैंने तुमको नहीं चुना है ? फिर भी तुममें से एक इबलीस ७०
है।' यह उन्होंने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के संबंध में कहा था, ७१
जो बारह में एक था, क्योंकि वह उन्हें पकड़वाने को था।

यीशु और उनके भाई

7 इसके अनंतर यीशु गलील में भ्रमण करने लगे। वह यहूदिया में १
भ्रमण नहीं करना चाहते थे, क्योंकि यहूदी उन्हें मार डालने के
उपाय सोचरहे थे। यहूदियों का मंडप-पर्व निकट था, अतः उनके भाइयों २
ने यीशु से कहा, 'यहां से निकलकर यहूदिया चले जाइए कि जो कार्य ३
आप करते हैं, उन्हें आपके शिष्य देखें, क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो ४
प्रसिद्ध होना चाहे और गुप्त रहकर कार्य करे। यदि आप ऐसे कार्य करते
हैं तो अपने आपको संसार के समक्ष प्रकट कीजिए।' कारण, उनके ५
भाई भी उन पर विश्वास नहीं करते थे। यीशु ने उनसे कहा, 'अभी ६
तक मेरा समय नहीं आया है, पर तुम्हारा समय सदा है। संसार तुमसे ७
बैर नहीं रख सकता, परन्तु मुझसे रखता है, क्योंकि मैं उसके संबंध में
साक्षी देता हूं कि उसके कार्य बुरे हैं। तुम पर्व पर जाओ। मैं इस पर्व ८
पर अभी नहीं जा रहा, क्योंकि मेरा समय अभी पूरा नहीं हुआ।' यह ९
कहकर वह गलील में रह गए।

जब उनके भाई पर्व पर चले गए तब वह भी, प्रकाश्यरूप से नहीं, १०
गुप्त रूप से वहां गए। पर्व पर यहूदी उनको ढूंढ रहे थे और कह रहे थे ११
कि वह कहां है ? और जनता में भी उनके संबंध में बड़ी चर्चा थी। १२

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* पाठांतर: आप जीवंत परमेश्वर के पुत्र ख्रीस्त हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ कहते थे, 'वह भला मनुष्य है ; ' और कुछ कहते थे, 'नहीं, वह
१३ जनता को पथभ्रष्ट करता है।' तो भी यहूदियों से भयभीत होने के
कारण कोई उनके सम्बन्ध में खुल कर नहीं बोलता था।

यीशु परमेश्वर की ओर से हैं

१४ जब पर्व आधा समाप्त हो चुका तो यीशु मंदिर में गए और
१५ शिक्षा देने लगे। यहूदियों ने आश्चर्य चकित होकर कहा, 'इसको शिक्षण
१६ के बिना शास्त्र का ज्ञान कहां से मिला?' यीशु ने उत्तर दिया, 'मेरी
१७ शिक्षा मेरी नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले की है। यदि कोई उसकी इच्छा
पूर्ण करने का संकल्प करे तो वह इस शिक्षा के संबंध में जान जाएगा
१८ कि यह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से बोल रहा हूं। जो
अपनी ओर से बोलता है, वह अपना संमान चाहता है, पर जो अपने भेजने-
१९ वाले का संमान चाहता है, वह सच्चा है, उसमें कोई छल नहीं। क्या मूसा
ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी है? पर तुममें से कोई व्यवस्था पर आचरण
नहीं करता। तुम मुझे मार डालने के उपाय क्यों कर रहे हो?'
२० जनसमूह ने उत्तर दिया, 'तुम में भूत है ; तुमको कौन मार डालना
२१ चाहता है?' यीशु ने उनको उत्तर दिया, 'मैंने एक कार्य किया है और
२२ इस पर तुम चकित हो। सुनो, निश्चय मूसा ने तुम्हारे लिए खतने का
विधान किया—यद्यपि इसका आरंभ मूसा से नहीं वरन् पूर्वजों से
२३ हुआ—और सबत के दिन तुम मनुष्य का खतना करते हो। यदि सबत के
दिन मनुष्य का खतना होता है कि मूसा का नियम न टूटे, तो तुम मुझसे
रुष्ट क्यों हो कि मैंने सबत के दिन एक मनुष्य को सर्वांग स्वस्थ कर
२४ दिया? ऊपरी दृष्टि से निर्णय करना छोड़ो। न्यायोचित निर्णय
करो।'

२५ इस पर यरूशलेम के कुछ व्यक्ति कहने लगे, 'क्या यह वही नहीं,
२६ जिनको वे लोग मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं? परंतु देखो, यह तो यहां
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
खुलकर बोल रहे हैं, फिर भी कोई इनसे कुछ नहीं कहता। कहीं ऐसा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो नहीं कि अधिकारियों ने सचमुच मान लिया है कि यह ख्रिस्त हैं ? पर २७
इनको तो हम जानते हैं कि यह कहां से हैं। किंतु जब ख्रिस्त आएंगे
तो किसी को ज्ञात नहीं होगा कि वह कहां से हैं।' तब यीशु ने मंदिर में २८
शिक्षा देते हुए ऊंचे स्वर से कहा, 'तुम मुझे जानते हो। क्या तुम जानते
हो कि मैं कहां से आया हूं ? मैं अपनी ओर से नहीं आया ; जिसने मुझे
भेजा है वह सच्चा है, और तुम उसको नहीं जानते। मैं उसको जानता २९
हूं, क्योंकि मैं उसकी ओर से हूं, और उसने मुझे भेजा है।' इस पर वे यीशु ३०
को पकड़ने का प्रयत्न करने लगे, परंतु किसी ने उन्हें हाथ नहीं लगाया,
क्योंकि उनका समय अभी नहीं आया था। तो भी जनता में से बहुत ३१
से लोगों ने उन पर विश्वास किया। उन्होंने कहा, 'जब ख्रिस्त आएंगे,
तो क्या वह इस व्यक्ति की अपेक्षा अधिक चिह्न दिखाएंगे ?'

फरीसियों ने उनके विषय में जनता को चर्चा करते सुना ; और ३२
महापुरोहितों और फरीसियों ने प्रहरियों को भेजा कि उन्हें पकड़ें। इस ३३
पर यीशु बोले, 'थोड़ी देर के लिए मैं तुम्हारे साथ हूं, फिर मैं उसके पास
जाता हूं, जिसने मुझे भेजा है! तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे; जहां ३४
मैं हूं, वहां तुम नहीं आ सकते।' यहूदियों ने आपस में कहा, 'यह कहां जाने ३५
को है कि हम इसे नहीं पाएंगे ? क्या यह यूनानियों में प्रवासी-यहूदियों
के पास जाने को है, और यूनानियों को भी शिक्षा देगा? यह क्या बात है ३६
जो उसने कही कि "तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे; तथा जहां मैं हूं, वहां
तुम नहीं आ सकते ? "'

जीवन-जल

पर्व के अंतिम और प्रधान दिन यीशु ने खड़े होकर उच्च स्वर से ३७
कहा, 'यदि कोई प्यासा है तो मेरे पास आए और पिए। जैसा शास्त्र ३८
का कथन है "जो मुझ पर विश्वास करे, उसके अंतस् से जीवन-जल की
सरितायें प्रवाहित होंगी।"' यह उन्होंने आत्मा के संबंध में कहा, जिसे ३९
उन पर विश्वास करने वाले पाने को थे ; कारण कि आत्मा अभी तक

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रदान नहीं किया गया था, क्योंकि यीशु अभी तक महिमान्वित नहीं हुए
४० थे। ये वचन सुनकर जनता में से कुछ लोगों ने कहा, 'यह सचमुच नबी
४१ हैं।' दूसरे कहने लगे 'यह ख्रिस्त हैं।' परंतु कुछ ने कहा, 'ख्रिस्त का
४२ आगमन गलील से तो होगा नहीं? क्या शास्त्र नहीं कहता कि दाऊद के
४३ वंश से और दाऊद के ग्राम बैतलहम से ख्रिस्त का आगमन होगा?' इस
४४ प्रकार उनके कारण जनसमूह में मतभेद हो गया। कुछ लोग उन्हें पकड़ना
चाहते थे, पर किसी ने उन्हें हाथ न लगाया।

४५ तब मंदिर के कर्मचारी फरीसियों और महापुरोहितों के पास लौट
४६ गए। उन्होंने पूछा, 'उसे तुम क्यों नहीं लाए?' कर्मचारियों ने उत्तर
दिया, 'जैसे यह मनुष्य बोलता है, उस प्रकार कोई कभी नहीं बोला।'
४७ फरीसियों ने प्रत्युत्तर में कहा, 'कहीं तुम भी तो भ्रम में नहीं पड़ गए!
४८ क्या हमारे अधिकारियों अथवा फरीसियों में से किसी ने उस पर विश्वास
४९ किया है? रही यह व्यवस्था से अनभिज्ञ जनता-यह शापित है।' उनमें
५० से एक व्यक्ति, निकोदिमुस जो पहले एक बार यीशु के पास आ चुके थे,
५१ उनसे बोले, 'क्या हमारी व्यवस्था किसी मनुष्य को, जब तक पहिले उसकी
सुन न ले और जान न ले कि वह क्या करता है, उसे दोषी ठहराती है?'
५२ उन्होंने उत्तर दिया, 'तुम गलील से तो नहीं हो! शास्त्रों का अध्ययन
५३ कर देखो कि गलील में कोई नबी उत्पन्न नहीं होता।' तब प्रत्येक
मनुष्य अपने घर चला गया।

व्यभिचारिणी का उद्धार

8 परंतु यीशु जैतून पर्वत को गए। प्रातःकाल वह फिर
मंदिर में आए। सारी जनता उनके पास आई और वह
३ बैठकर उनको शिक्षा देने लगे। तब शास्त्री और फरीसी एक
स्त्री को लाए जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उसे बीच
में खड़ा करके बोले 'गुरुजी, यह स्त्री व्यभिचार कर्म में पकड़ी
४ गई है। व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पत्थरों से प्रहार कर मार डाला जाए। पर आप क्या कहते हैं?' उन्होंने ५
यह यीशु की परीक्षा करने के लिये कहा कि उन पर अभियोग लगा सकें। ६
यीशु नीचे झुककर अंगुली से भूमि पर लिखनें लगे। पर जब वे लोग ७
उनसे पूछते ही रहे, तो उन्होंने अपना सिर उठाकर कहा, 'तुममें जो निष्पाप
हो, वह पहले उस पर पत्थर फेंके, और फिर नीचे झुककर भूमि पर लिखने ८
लग। यह सुनकर वे बड़ों से लेकर* एक एक करके बाहर चले गए, और ९
केवल यीशु और वह स्त्री, जो बीच में थी, रह गए। यीशु ने सिर उठा १०
कर उस स्त्री से पूछा, 'नारी, वे कहां हैं? क्या किसी ने तुझे दोषी नहीं
ठहराया?' उसने कहा, 'प्रभु, किसी ने नहीं।' यीशु बोले, 'मैं भी ११
तुझे दोषी नहीं ठहराता। जा, अब से फिर पाप न करना।'‡

संसार की ज्योति

फिर यीशु ने उनसे कहा, 'मैं संसार की ज्योति हूं। मेरा अनुयायी १२
अंधकार में विचरण नहीं करेगा, वरन् जीवन की ज्योति प्राप्त करेगा।'
फरीसी बोले, 'आप अपने विषय में साक्षी देते हैं, आपकी साक्षी सत्य १३
नहीं।' यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं अपने विषय में आप साक्षी दे रहा हूं, तो १४
भी मेरी साक्षी सत्य है, क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कहां से आया और कहां
जा रहा हूं। किन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहां से आता हूं और कहां जा
रहा हूं। तुम ऊपरी दृष्टि से आलोचना करते हो; परंतु मैं किसी पर निर्णय १५
नहीं देता। और यदि मैं निर्णय दूं तो भी मेरा न्याय सच्चा होगा; क्योंकि १६
न्याय मैं अकेला नहीं करता, वरन् मैं और मेरा भेजनेवाला करता है।
तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है कि दो मनुष्यों की साक्षी सत्य होती है। १७
मैं अपने विषय में साक्षी हूं, और मेरा भेजने वाला पिता भी मेरे विषय में १८
साक्षी है।' तब उन्होंने पूछा, 'आपका पिता कहां है?' यीशु ने उत्तर १९

---

* कुछ प्रतियों के अनुसार यहां जोड़िये 'छोटों तक', अन्य के अनुसार 'सब'

‡ कुछ प्राचीन प्रतियों में ७:५३ से ८:११ तक के पद नहीं पाये जाते।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिया, 'तुम न तो मुझे जानते हो और न मेरे पिता को ; यदि तुम मुझे
२० जानते तो मेरे पिता को भी जानते।' ये वचन यीशु ने मंदिर में शिक्षा देते समय कोषागार में कहे ; परन्तु किसी ने उनको पकड़ा नहीं क्योंकि उनका समय अभी नहीं आया था।

आनेवाले दंड के संबंध में चेतावनी

२१ यीशु ने फिर उनसे कहा, 'मैं जा रहा हूं, तुम मुझे ढूंढ़ोगे और अपने
२२ पाप में मरोगे। जहां मैं जा रहा हूं, वहां तुम नहीं आ सकते।' तब यहूदियों ने कहा, 'वह आत्महत्या तो नहीं कर लेंगे, क्योंकि कह रहे हैं,
२३ "जहां मैं जा रहा हूं, तुम नहीं आ सकते"!' यीशु ने उनसे कहा, 'तुम नीचे के हो और मैं ऊपर का हूं ; तुम इस संसार के हो पर मैं इस संसार का नहीं।
२४ मैंने कहा था कि 'तुम अपने पापों में मरोगे।' क्योंकि यदि तुम विश्वास नहीं करते कि "मैं हूं"* तो तुम अपने पापों में मरोगे।'
२५ लोगों ने पूछा, 'आप कौन हैं?' यीशु ने उत्तर दिया, 'वही, जो मैंने आरम्भ
२६ से तुमसे कहा है।‡ तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है ; परंतु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, और जो कुछ मैंने उससे सुना
२७ है, वही संसार से कहता हूं।' लोग नहीं जानते थे कि वह उनसे पिता
२८ के विषय में कह रहे हैं। तब यीशु ने कहा, 'जब तुम मानव-पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे तब जानोगे कि 'मैं हूं' और अपने आप कुछ नहीं करता,
२९ परंतु जैसा पिता ने मुझे सिखाया है, बोलता हूं। जिसने मुझे भेजा है, वह मेरे साथ है ; और उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं सदा वही
३० करता हूं जिससे वह प्रसन्न होता है।' वह जब ये बातें कह रहे थे तो बहुतों ने उन पर विश्वास किया।

---

* अथवा, 'मैं ख्रिस्त हूं।'

‡ अथवा, 'मैं तुमसे क्यों बोलूं?'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहूदियों से वादविवाद

तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उन पर विश्वास किया था, कहा, ३१
'यदि तुम मेरे वचन में रहो, तो तुम वास्तव में मेरे शिष्य हो ; तुम सत्य ३२
को जानोगे और सत्य तुमको स्वतंत्र करेगा।' उन्होंने उत्तर दिया, 'हम ३३
अब्रहाम के वंशज हैं ; हमने कभी किसी की दासता नहीं की। आप कैसे
कहते हैं कि "तुम स्वतंत्र होगे ?' यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे सच सच ३४
कहता हूं, कि प्रत्येक पाप करनेवाला पाप का दास है। दास सदैव घर में ३५
नहीं रहता, पर पुत्र सदा रहता है। यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे, तो ३६
वास्तव में तुम स्वतंत्र होगे। मैं जानता हूं कि तुम अब्रहाम के वंशज ३७
हो, पर तुम मुझे मार डालने के उपाय कर रहे हो, क्योंकि मेरे वचन के
लिए तुम्हारे हृदय में कोई स्थान नहीं है। जो कुछ मैंने अपने पिता के ३८
यहां देखा है, वही कहता हूं ; उसी प्रकार तुमने जो कुछ अपने पिता से
सुना, वही करते हो।' उन्होंने कहा, 'हमारे पिता अब्रहाम हैं।' यीशु ३९
ने उत्तर दिया, 'यदि तुम अब्रहाम की संतान हो तो अब्रहाम के सदृश कार्य
करो। परंतु तुम तो मुझे, ऐसे मनुष्य को जिसने परमेश्वर से सुना हुआ ४०
सत्य तुम्हें बता दिया, मार डालने के प्रयत्न में हो। अब्रहाम ने ऐसा नहीं
किया। तुम अपने पिता के कार्य कर रहे हो।' वे बोले, 'हम जारज- ४१
संतान नहीं, हमारा पिता एक है, अर्थात् परमेश्वर।'

यीशु ने कहा, 'यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझसे ४२
प्रेम करते क्योंकि मैं परमेश्वर से निकला और आया हूं। मैं स्वयं नहीं
आया। वरन् उसने मुझे भेजा है। तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते ? ४३
इसलिए कि तुम्हें मेरे वचन सहनीय नहीं हैं। तुम अपने पिता इब्लीस ४४
से हो और अपने पिता की अभिलाषाएं पूरी करना चाहते हो। वह आरंभ
से ही हत्यारा था ; वह सत्य पर स्थिर नहीं, क्योंकि सत्य उसमें है ही
नहीं। जब वह झूठ बोलता है तो अपने स्वभाव के अनुसार ही बोलता
है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है। परंतु मैं सत्य बोलता हूं, ४५

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४६ इसलिए तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। तुममें से कौन मुझ पर पाप का दोष लगाता है? यदि मैं सत्य कहता हूं तो तुम मुझपर विश्वास क्यों नहीं
४७ करते? जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर के वचन सुनता है; तुम परमेश्वर के नहीं हो, अतएव उसकी नहीं सुनते।'

४८ यहूदियों ने कहा, 'क्या हमारा यह कहना ठीक नहीं कि तुम सामरी
४९ हो और तुममें भूत हैं?' यीशु ने उत्तर दिया, 'मुझ में भूत नहीं है।
५० मैं अपने पिता का आदर करता हूं, पर तुम मेरा अनादर कर रहे हो। मैं अपना सन्मान नहीं चाहता; एक है जो चाहता है और न्याय करता है।
५१ मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि यदि कोई मेरे वचन का पालन करे तो वह कभी मृत्यु न देखेगा।' यहूदी बोले, 'अब हम जान गए कि तुममें भूत हैं! अब्रहाम मृत्यु को प्राप्त हुए और नबी भी; और आप कहते हैं कि यदि कोई मेरे वचन का पालन करे तो वह कभी मृत्यु का स्वाद
५३ नहीं चखेगा। आप हमारे मृत पूर्वज अब्रहाम से महान् तो हैं नहीं! अन्य नबी भी मृत्यु को प्राप्त हुए! आप अपने को समझते क्या हैं?'
५४ यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि मैं स्वयं अपना संमान करूं तो वह कुछ नहीं। मुझे संमानित करनेवाला मेरा पिता है जिसे तुम कहते हो कि वह हमारा
५५ परमेश्वर है। तुम उसे नहीं जानते पर मैं उसे जानता हूं। यदि मैं कहूं कि मैं उसे नहीं जानता, तो तुम्हारे समान झूठा ठहरूंगा; पर मैं उसे
५६ जानता हूं और उसके वचन का पालन करता हूं। तुम्हारे पूर्वज अब्रहाम मेरे दिन का दर्शन कर उल्लसित हुए। उन्होंने दर्शन किया
५७ और आनंदित हुए।' यहूदी बोले, 'अभी आप पचास वर्ष के भी नहीं,
५८ और आप अब्रहाम को देख चुके?' यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे सच सच
५९ कहता हूं, अब्रहाम के उत्पन्न होने से पूर्व मैं हूं।' तब लोगों ने उन पर प्रहार करने के लिए पत्थर उठाए, परंतु यीशु छिपकर मंदिर से निकल गए।

जन्मांध को दृष्टि दान

मार्ग में यीशु ने एक मनुष्य को देखा जो जन्म से अंधा था। उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, 'रब्बी, किसने पाप किया, इसने अथवा इसके

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता-पिता ने कि यह अंधा हुआ ? ' यीशु ने उत्तर दिया, ' न तो इसने पाप ३
किया और न इसके माता-पिता ने; परंतु यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के
कार्य इसमें प्रकट हों। दिन रहते हमें उसके कार्य करने में लगा रहना ४
चाहिए जिसने मुझे भेजा है। रात आ रही है, जब कोई व्यक्ति कार्य नहीं
कर सकता। जब तक मैं संसार में हूं, मैं संसार की ज्योति हूं।' यह कह- ५
कर उन्होंने भूमि पर थूका, थूक से मिट्टी का लेप बनाया और यह लेप ६
उसकी आंखों पर लगाकर कहा, 'जाओ और शीलोह (अर्थात् ७
' प्रेषित ") के कुण्ड में धो लो।' उसने जाकर धोया और देखता हुआ
लौटा। तब उसके पड़ोसी और वे लोग जो पहिले उसे भीख मांगते देखा ८
करते थे, बोले, ' क्या यह वही मनुष्य नहीं जो बैठा भीख मांगा करता
था ? ' कुछ ने कहा, ' हां, वही है।' अन्य बोले, ' नहीं, उस जैसा है।' ९
उसने कहा, ' मैं वही हूं।' उन्होंने पूछा, 'तुम्हारी आंखें कैसे खुलीं ?' १०
उसने उत्तर दिया, 'यीशु नामक मनुष्य ने मिट्टी का लेप बनाकर मेरी ११
आंखों पर लगाया और कहा, "शीलोह जाओ और धोलो।" अस्तु, मैं
गया और धोनेके पश्चात् देखने लगा।' उन्होंने उससे पूछा, ' वह १२
कहां है ? ' उसने उत्तर दिया, ' मैं नहीं जानता।'

लोग उसे, जो पहिले अंधा था, फरीसीयों के पास लाए। यीशु १३-१४
ने सबत के दिन मिट्टी का लेप बनाकर उसकी आंखें खोलीं थीं, अतः फरी- १५
सियों नें उससे फिर पूछा कि वह कैसे देखने लगा। उसने उनसे कहा,
' उन्होंने मिट्टी का लेप मेरी आंखों पर लगाया, मैंने उसे धो डाला, और
मैं देख रहा हूं।' कुछ फरीसी बोले, 'यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से १६
नहीं, क्योंकि यह सबत को नहीं मानता।' पर दूसरों ने कहा, ' ऐसे चिह्न
एक पापी मनुष्य कैसे कर सकता है ? ' फलतः उनमें मतभेद हो गया।
उन्होंने अंधे से फिर पूछा, ' तुम उनके विषय में क्या कहते हो ? तुम्हारी १७
तो आंखें उन्होंने खोलीं ! ' उसने कहा, ' वह नबी हैं।' परंतु यहूदियों १८
को विश्वास नहीं हुआ कि वह अन्धा था और अब देखने लगा है
जब तक उन्होंने उसके-जो देखने लगा था-माता-पिता को बुला कर पूछ १९

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न लिया कि क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम कहते हो कि अंधा उत्पन्न
२० हुआ था ? फिर यह कैसे देख रहा है ? उसके माता-पिता ने उत्तर
दिया, 'हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और यह अंधा उत्पन्न हुआ था ;
२१ पर अब कैसे देख रहा है, हम नहीं जानते ; और न हम यह जानते हैं कि
किसने इसकी आंखें खोलीं। उससे पूछिए, वह वयस्क है, वह अपने
२२ विषय में स्वयं बताएगा।' उसके माता-पिता ने यह बात इसलिए
कही कि वे यहूदियों से डरते थे, कारण, यहूदियों ने एका कर लिया था
कि यदि कोई उनको ख्रिस्त स्वीकार करे तो उसका सभागृह से बहिष्कार
२३ किया जाए। इस कारण उसके माता-पिता ने कहा था, 'वह वयस्क है,
उससे पूछिए।'

२४ अतः उन्होंने उसे जो अंधा था, दूसरी बार बुला भेजा और उससे
कहा, 'परमेश्वर की स्तुति करो, हम जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है।'
२५ उसने उत्तर दिया, 'वह पापी है या नहीं, मैं नहीं जानता ; एक बात
२६ जानता हूं : मैं अंधा था और अब देख रहा हूं।' उन्होंने पूछा, 'उसने
२७ तुम्हारे साथ क्या किया ? कैसे तुम्हारी आंखें खोलीं ?' उसने उत्तर
दिया, 'मैंने आपको बता तो दिया, पर आपने सुना ही नहीं, आप
पुन: क्यों सुनना चाहते हो ? क्या आप भी तो उनके शिष्य नहीं बनना
२८ चाहते ?' इस पर वे उसे अपशब्द कहकर बोले, 'तू उसका शिष्य होगा ;
२९ हम तो मूसा के शिष्य हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर मूसा से बोले, पर
३० हम नहीं जानते कि यह कहां से है।' उस मनुष्य ने उत्तर दिया,
'आश्चर्य है कि आप नहीं जानते कि वह कहां से है, फिर भी उन्होंने
३१ मेरी आंखें खोलीं। हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनते,
परंतु यदि कोई उनका उपासक हो और उनकी इच्छा के अनुसार चले
३२ तो वह उसकी सुनते हैं। आदिकाल से अब तक यह सुनने में नहीं आया
३३ कि किसी ने जन्मांध की आंखें खोली हों। यदि वह परमेश्वर की
३४ ओर से नहीं होते तो कुछ भी नहीं कर पाते।' उन्होंने उत्तर दिया,
'तुम पूर्णतः पाप में उत्पन्न हुए हो और हमें सिखाते चले हो!' और
उसे बहिष्कृत कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यीशु ने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया है तो उससे ३५ मिलकर कहा, 'क्या तुम मानव-पुत्र पर विश्वास करते हो?' उसने ३६ पूछा, 'महोदय, वह कौन है कि उन पर विश्वास करूं?' यीशु ने उससे ३७ कहा, 'तुमने उसे देखा है, और जो तुमसे वार्तालाप कर रहा है, वही है।' उसने कहा, 'मैं विश्वास करता हूं, प्रभु,' और घुटने टेके। यीशु ने कहा, ३८ 'मैं संसार में न्याय के निमित्त आया हूं कि जिससे जो नहीं देखते, वे ३९ देखें, और जो देखते हैं, वे अंधे हो जाएं।' उनके साथ कुछ फरीसी थे। ४० वे यह सुनकर बोले, 'क्या हम भी अंधे हैं?' यीशु ने कहा, 'यदि तुम ४१ अंधे होते तो पाप के भागी नहीं होते। पर तुम कहते हो कि तुम्हें दिखाई पड़ता है, इसलिए तुम्हारा पाप बना रहता है।

उत्तम मेषपाल

10 'मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो द्वार से भेड़शाला में प्रवेश १ नहीं करता, किंतु दूसरी ओर से चढ़ आता है, वह चोर और डाकू है। जो द्वार से प्रवेश करता है, वह भेड़ों का मेषपाल है। उसके २ लिए द्वारपाल द्वार खोल देता है, भेड़ें उसका स्वर पहिचानती हैं, वह ३ अपनी भेड़ों को नाम ले-लेकर पुकारता है और बाहर ले आता है। ४ अपनी सब भेड़ों को निकाल लेने पर वह उनके आगे-आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे-पीछे चलती हैं क्योंकि वे उसका स्वर पहिचानती हैं! वे किसी अपरिचित के पीछे नहीं जाएंगी, किंतु उससे दूर भागेंगी ५ क्योंकि वे अपरिचित मनुष्यों का स्वर नहीं पहिचानतीं।'

यीशु ने यह दृष्टान्त उनसे कहा, परंतु उन्होंने नहीं समझा कि वह ६ क्या कह रहे हैं। इसलिए यीशु ने फिर कहा, 'मैं तुमसे सच सच कहता ७ हूं कि भेड़ों का द्वार मैं हूं। जो मुझसे पहले आए, वे सब चोर और डाकू ८ हैं; भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी। द्वार मैं हूं; जो मेरे द्वारा प्रवेश करेगा, ९ वह उद्धार पाएगा। वह भीतर-बाहर आया-जाया करेगा और चारा पाएगा।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
१० चोर केवल चुराने, हत्या करने और नष्ट करने आता है ; मैं इसलिए
११ आया हूं कि वे जीवन प्राप्त करें और प्रचुरता से प्राप्त करें। अच्छा
१२ मेषपाल मैं हूं। अच्छा मेषपाल भेड़ों के लिए अपने प्राण देता है। मज-
दूर, जो न मेषपाल है और न भेड़ों का मालिक, भेड़िए को आते
देख भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उनको पकड़ता और
१३ तितर बितर कर देता है। वह इस कारण भाग जाता है कि वह मजदूर
है, और उसे भेड़ों की कोई चिन्ता नहीं।

१४-१५ अच्छा मेषपाल मैं हूं। जैसे पिता मुझे जानता है, और मैं पिता
को; वैसे ही मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और मेरी भेड़ें मुझे जानती
१६ हैं—और मैं भेड़ों के लिए अपने प्राण देता हूं। मेरी और भेड़ें भी हैं जो
इस भेड़शाला की नहीं, मुझे उनको भी लाना है ; वे मेरी वाणी सुनेंगी,
१७ तब एक ही समूह और एक ही मेषपाल होगा। पिता मुझे प्रेम करता है;
१८ क्योंकि मैं अपने प्राण देता हूं कि उन्हें फिर प्राप्त करूं। कोई उन्हें मुझसे नहीं
छीन रहा, वरन् मैं स्वयं दे रहा हूं। मुझे उनको देने का अधिकार है और
उन्हें पुनः लेने का भी अधिकार है ; यह आज्ञा मुझे अपने पिता से मिली
है।'

१९ इन वचनों के कारण यहूदियों में फिर मतभेद हो गया। अनेक
२० कहने लगे, 'उसमें भूत है, वह पागल है ; उसकी क्यों सुनते हो?'
२१ अन्य बोले, 'ये बातें भूतग्रसित की सी नहीं हैं। क्या भूत अंधों की आंख
खोल सकता है?'

प्रतिष्ठान पर्व पर यरूशलेम में

२२ शीत ऋतु थी, और यरूशलेम में प्रतिष्ठान-पर्व मनाया जा रहा था।
२३ यीशु मंदिर में सुलैमान के मंडप में टहल रहे थे। यहूदी उनके चारों
२४ ओर एकत्रित हो गए और पूछने लगे, 'आप कब तक हमें दुविधा में डाले
२५ रहेंगे? यदि आप ख्रिस्त हैं तो हमसे स्पष्ट कह दीजिए।' यीशु ने
उत्तर दिया, 'मैं तुमसे कह चुका हूं, पर तुम विश्वास करते ही
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं। जो कार्य मैं पिता के नाम से करता हूं, वे मेरे साक्षी हैं; पर तुम २६
विश्वास नहीं करते क्योंकि मेरी भेड़ों में से नहीं हो। मेरी भेड़ें मेरी वाणी २७
सुनती हैं; मैं उन्हें पहिचानता हूं, और वे मेरा अनुसरण करती हैं, मैं उन्हें २८
शाश्वत जीवन प्रदान करता हूं। वे कभी नष्ट नहीं होंगी। उन्हें मेरे
हाथ से कोई कभी छीन नहीं सकता। मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझको २९
दिया है, सबसे महान है; और उनको मेरे पिता के हाथ से कोई नहीं
छीन सकता। मैं और मेरे पिता एक हैं।' ३०

यहूदियों द्वारा विरोध

यहूदियों ने पुनः पत्थर उठाए कि उन पर प्रहार करें। इस पर यीशु ३१
ने उन्हें उत्तर दिया, 'पिता की ओर से मैंने अनेक अच्छे कार्य तुम्हें ३२
दिखाए; उनमें से किस कार्य के लिए तुम मुझ पर पत्थरों से प्रहार कर
रहे हो?' यहूदियों ने कहा, 'अच्छे कार्य के लिए हम तुझ पर पत्थरों से ३३
प्रहार नहीं करते वरन् परमेश्वर की निन्दा के लिए, क्योंकि तू मनुष्य होकर
अपने आपको परमेश्वर बनाता है।' यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या तुम्हारी ३४
व्यवस्था में नहीं लिखा है, "मैंने कहा कि तुम ईश्वर हो"। यदि ३५
उसने उनको ईश्वर कहा जिनके लिए परमेश्वर का वचन कहा गया (और
शास्त्र-वचन टल नहीं सकता) तो जिसे पिता ने पवित्र ठहरा कर संसार ३६
में भेजा, उसे तुम कैसे कहते हो कि "तू परमेश्वर की निन्दा करता है,"
क्योंकि मैंने कहा, "मैं परमेश्वर का पुत्र हूं"? यदि मैं अपने पिता ३७
के कार्य नहीं कर रहा तो मुझ पर विश्वास मत करो, परंतु यदि कर ३८
रहा हूं, तो चाहे तुम मुझ पर विश्वास मत करो पर मेरे कार्यों पर
विश्वास करो, जिससे तुम जान सको और समझ सको कि पिता मुझ में
हैं और मैं पिता में।' इस पर उन्होंने पुनः यीशु को पकड़ने का प्रयत्न ३९
किया, परंतु वह उनके हाथ से निकल गए।

यीशु फिर यरदन पार उस स्थान पर चले गए, जहां यूहन्ना पहले ४०
बपतिस्मा दिया करते थे, और वहीं रहे। बहुत लोग उनके पास आने ४१
CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे। वे कहते थे, 'यूहन्ना ने कोई चिह्न नहीं दिखाया, परंतु जो कुछ यूहन्ना
४२ ने उनके विषय में कहा था, वह सब सत्य था।' वहां बहुतों ने उन पर
विश्वास किया।

मृत लाजर को जीवन-दान

11 लाजर नामक एक व्यक्ति रोगी था। वह मरियम और उसकी
बहिन मार्था के गांव बैतनिय्याह का था। यह वही मरियम
थी जिसने प्रभु पर गंधरस लगाया और उनके चरणों को अपने केशों से
३ पोंछा था; इसी का भाई लाजर रोगी था। बहिनों ने उनको संदेश भेजा,
४ 'प्रभु, देखिए जिससे आप प्रीति करते हैं, वह रुग्ण है।' जब यीशु ने सुना
तो बोले, 'इस का अंत मृत्य नहीं; यह परमेश्वर की महिमा के लिए
५ है कि इसके द्वारा परमेश्वर का पुत्र महिमान्वित हो।' यद्यपि वह मार्था,
६ उसकी बहिन और लाजर से प्रेम करते थे, फिर भी जब उन्होंने सुना कि
७ वह रोगी है तो जहाँ थे, वहीं दो दिन और ठहर गए। इसके अनंतर उन्होंने
८ अपने शिष्यों से कहा, 'आओ, हम फिर यहूदिया चलें।' शिष्य बोले,
'रब्बी, कुछ समय हुआ यहूदी आप पर पत्थरों से प्रहार करना चाहते थे।
९ इस पर भी आप वहीं जा रहे हैं?' यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या दिन में
बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन में चले तो ठोकर नहीं खाता, क्योंकि
१० वह इस संसार के प्रकाश को देखता है; परंतु यदि कोई रात्रि में चले
११ तो ठोकर खाता है, क्योंकि उसमें प्रकाश नहीं होता।' उन्होंने ये बातें
कहीं और इसके उपरान्त उनसे बोले, 'हमारा मित्र लाजर सो गया है। मैं
१२ उसे जगाने जाता हूं।' शिष्यों ने कहा, 'प्रभु, यदि वह सो गया है तो स्वस्थ
१३ हो जाएगा।' यह यीशु ने उसकी मृत्यु के संबंध में कहा था, परंतु वे
१४ समझे कि निद्रा-विश्राम के संबंध में कह रहे हैं। तब यीशु ने उनसे स्पष्ट
१५ कहा, 'लाजर मर गया है, और तुम्हारे कारण मुझे प्रसन्नता है कि मैं वहां
नहीं था, जिससे तुम विश्वास करो। परंतु अब आओ, हम उसके पास
१६ चलें।' थोमा ने, जो दिदुमुस कहलाते हैं, अपने साथी शिष्यों से कहा
'आओ, हम भी इन के साथ मरने को चलें।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यीशु को वहां पहुंचने पर ज्ञात हुआ कि लाजर को कबर में रखे चार दिन हो चुके हैं। बैतनिय्याह यरूशलेम के समीप लगभग पन्द्रह* स्तदियन दूर था, और अनेक यहूदी मार्था और मरियम के पास उनके भाई की मृत्यु पर समवेदना प्रकट करने आए थे। ज्योंही मार्था ने सुना कि यीशु आ रहे हैं, वह उनसे भेंट करने गई। किंतु मरियम घर में ही बैठी रही। १७ १८ १९ २०

मार्था ने यीशु से कहा, 'प्रभु, यदि आप यहां होते तो मेरा भाई न मरता, और अब भी मैं जानती हूं कि आप जो कुछ परमेश्वर से मांगेंगे, परमेश्वर आपको देंगे।' यीशु ने उससे कहा, 'तेरा भाई फिर उठेगा!' मार्था ने कहा, 'मैं जानती हूं कि अंतिम दिन पुनरुत्थान के समय वह पुनः उठेगा।' यीशु ने उससे कहा, 'पुनरुत्थान और जीवन मैं हूं : जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह मर भी जाए तो भी जीएगा; और जो जीवित है तथा मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा-क्या तू यह विश्वास करती है?' उसने कहा, 'हां प्रभु, मैंने विश्वास किया है कि आप ही ख्रिस्त, अर्थात् परमेश्वर-पुत्र हैं, जो संसार में आनेवाले हैं।' इतना कहकर वह चली गई और अपनी बहिन मरियम को बुलाकर चुप-चाप बोली, 'गुरुजी यहीं हैं, और तुझे बुलाते हैं।' सुनते ही वह तत्काल उठी और उनके पास आई। यीशु अभी गांव में नहीं पहुंचे थे, परन्तु उसी स्थान पर थे जहां मार्था ने उनसे भेंट की थी। जब यहूदियों ने, जो घर पर मरियम के साथ समवेदना प्रकट कर रहे थे, देखा कि वह एकाएक उठी और बाहर निकली, तो वे उसके पीछे पीछे गए, क्योंकि वे समझे कि वह कबर पर रोने जा रही है। २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१

मरियम वहां आई, जहां यीशु थे। उनको देखते ही वह उनके चरणों पर गिर पड़ी और बोली, 'प्रभु यदि आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता।' जब यीशु ने उसे और उसके साथ आए यहूदियों को रोते देखा ३२ ३३

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*देखिए अध्याय ६, पद १९ की टिप्पणी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उनका हृदय द्रवित हो उठा, और वह गहरी सांस लेकर बोले, 'तुमने
३४-३५ उसको कहां रखा है?' उन्होंने कहा, 'प्रभु, चलिए और देखिए।' यीशु
३६ रोए। इस पर यहूदियों ने कहा, 'देखो, यह उससे कितनी प्रीति करते
३७ थे।' परंतु उनमें से कुछ बोले, 'क्या यह, जिन्होंने अंधे की आंखें खोलीं,
३८ इतना नहीं कर सके कि यह मनुष्य नहीं मरता?' यीशु ने फिर गहरी
सांस ली और कबर पर आए; वह एक गुफा थी जिस पर पत्थर रखा
३९ था। यीशु ने कहा, 'पत्थर हटाओ।' मृतक की बहिन मार्था बोली,
'प्रभु, अब उसमें से दुर्गन्ध निकल रही होगी क्योंकि उसे मरे चार दिन
४० हो चुके हैं।' यीशु ने उससे कहा, 'क्या मैंने तुझसे नहीं कहा था कि यदि
तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा देखेगी?' अस्तु, उन्होंने
४१ पत्थर हटा दिया। यीशु ने आंखें ऊपर उठाईं और कहा, 'हे पिता, मैं तुझे
४२ धन्यवाद देता हूं कि तूने मेरी सुन ली है। मैं जानता हूं कि तू सदैव मेरी
सुनता है, पर चारों ओर खड़े जनसमूह के कारण मैंने यह कहा कि वे
४३ विश्वास करें कि तूने मुझे भेजा है।' यह कहकर उन्होंने ऊंचे स्वर से
४४ पुकारा, 'लाजर, बाहर निकल आ।' वह मृतक बाहर निकल आया।
उसके हाथ पैर पट्टियों से बंधे थे और उसका मुंह अंगोछे में लिपटा था।
यीशु ने उनसे कहा, 'उसे खोल दो और जाने दो।'

४५ तब उन यहूदियों में से, जो मरियम के पास आए थे, और जिन्होंने
४६ यह कार्य देखा था, बहुतों ने उन पर विश्वास किया, पर कितनों ने
फरीसियों के पास जाकर बताया कि यीशु ने क्या किया था।

महापुरोहितों का षड्यंत्र

४७ इस पर महापुरोहितों और फरीसियों ने परिषद् एकत्र कर कहा,
४८ 'हम क्या कर रहे हैं? यह तो बहुत चिह्न दिखा रहा है। यदि हम
इसको यों ही छोड़ दें तो सब लोग इस पर विश्वास करेंगे और रूमी आकर
४९ हमारे स्थान व जाति दोनों को नष्ट कर देंगे।' तब उनमें से एक
५० व्यक्ति, काइफा, जो उस वर्ष महापुरोहित था, बोला, 'आप कुछ जानते

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो हैं नहीं, और न आप सोचते हैं कि आपकी भलाई इसमें है कि एक व्यक्ति जनता के लिए मरे और समस्त जाति नष्ट न हो।' यह बात ५१ उसने अपनी ओर से नहीं कही, परंतु उस वर्ष का महापुरोहित होते हुए भविष्यवाणी की कि यीशु जाति के लिए मरेंगे, और न केवल जाति के ५२ लिए, वरन् इसलिए कि परमेश्वर की बिखरी हुई संतान को एकत्र कर एक करें। अस्तु, वे उस दिन से उन्हें मार डालने का परामर्श ५३ करने लगे। इस कारण उस समय से यीशु ने यहूदियों के बीच खुले ५४ रूप में विचरण न किया; पर वहां से उस क्षेत्र को, जो निर्जन प्रदेश के निकट था, अर्थात् इफ्राईम नामक नगर को, चले गए और अपने शिष्यों सहित वहीं रहने लगे।

यहूदियों का फसह समीप था और देहात से बहुत लोग फसह से पूर्व ५५ यरूशलेम गए हुए थे कि अपने आपको शुद्ध करें। वे यीशु की खोज ५६ में थे, और मंदिर में खड़े हुए आपस में पूछ रहे थे, 'तुम्हारा क्या विचार है? क्या वह पर्व में नहीं आएंगे?' उधर महापुरोहितों और ५७ फरीसियों ने आज्ञा दे रखी थी कि यदि किसी को ज्ञात हो जाए कि वह कहां है तो बताए, जिससे वे उन्हें पकड़ लें।

बैतनिय्याह का अभ्यंजन

12 फसह के छह दिन पूर्व यीशु बैतनिय्याह में आए, जहां लाजर था, १ जिसे यीशु ने मृतकों में से जीवित उठाया था। वहां उन्हें भोज २ दिया गया; मार्था सेवा कार्य कर रही थी और लाजर उनके साथ भोजन करने वालों में था। तब मरियम ने जटामांसी का आधा सेर बहुमूल्य और ३ विशुद्ध सुगंधित द्रव्य लेकर यीशु के चरणों पर डाला और उनके चरण अपने केशों से पोंछने लगी। उस द्रव्य की सुगंध से सारा घर सुगंधित हो उठा। इस पर उनका एक शिष्य, यहूदा इस्करियोती, जो उन्हें पकड़वाने ४ को था, बोला, 'यह द्रव्य तीन सौ दीनार में बेचकर दरिद्रों को क्यों नहीं ५ दिया गया?' उसने यह बात इसलिए नहीं कही कि उसे दरिद्रों की ६

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चिन्ता थी, पर इसलिए कि वह चोर था, और उसके पास थैली होने के
७ कारण जो कुछ उसमें डाला जाता था चुरा लेता था। यीशु ने कहा, 'उसे रहने दो ; उसे यह मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये करने दो।
८ दरिद्र तो सदा तुम्हारे साथ हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूंगा।'

९ यहूदियों की एक बड़ी भीड़ को ज्ञात हुआ कि यीशु वहां हैं तो लोग केवल यीशु के कारण ही नहीं, वरन् लाजर को भी देखने आए, जिसे
१० उन्होंने* मृतकों में से उठाया था। इस पर महापुरोहित लाजर की भी
११ हत्या करने का परामर्श करने लगे, क्योंकि उसके कारण अनेक यहूदी चले गए और यीशु पर विश्वास करने लगे।

विजयोल्लास सहित यरूशलेम में प्रवेश

१२ दूसरे दिन बड़ी भीड़ ने, जो पर्व पर आई थी, सुना कि यीशु यरूशलेम
१३ आ रहे हैं। लोगों ने खजूर की शाखाएं लीं और यीशु से भेंट करने निकले। वे उच्च स्वर से कह रहे थे :

'होशाना !
प्रभु के नाम में आनेवाले
इस्राएल के राजा की स्तुति हो।'

१४ यीशु को एक गर्दभ-शावक मिला। वह उस पर बैठ गए, जैसा शास्त्र का लेख है—

१५ 'सिय्योन की पुत्री, भयभीत न हो।
देख, तेरा राजा
गर्दभ-शावक पर बैठा आ रहा है।'

१६ उनके शिष्य पहिले तो यह नहीं समझे, परंतु यीशु के महिमान्वित होने के पश्चात् उन्हें स्मरण हुआ कि यीशु के संबंध में यह शास्त्र में लिखा
१७ हुआ था और लोगों ने उनके साथ ऐसा ही किया। तब उन लोगों

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
* अर्थात् यीशु ने।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने साक्षी दी, जो उस समय उनके साथ थे, जब कि उन्होंने लाजर को कब्र से बाहर बुलाकर मृतकों में से जीवित उठाया था। (१८) जनसमूह उनसे इस कारण भेंट करने गया कि उसने सुना था कि उन्होंने यह चिह्न दिखाया था। (१९) इस पर फरीसियों ने एक दूसरे से कहा, 'देखो, तुम से कुछ नहीं बन पड़ता : देखो, सारा संसार उसके पीछे हो लिया है।'

यूनानियों का निवेदन

(२०) जो लोग पर्व पर आराधना करने आए थे उनमें कुछ यूनानी थे। (२१) वे फिलिप्पुस के पास गए-जो गलील के बैतसैदा के थे—और उनसे निवेदन किया, 'महोदय, हम यीशु को देखना चाहते हैं।' (२२) फिलिप्पुस ने जाकर अन्द्रियास से कहा, और अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने जाकर यीशु से। (२३) यीशु ने उत्तर दिया, 'मानव-पुत्र के महिमान्वित होने का समय आ पहुंचा है। (२४) मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में गिरकर मर न जाए अकेला रहता है, परंतु यदि मर जाए तो बहुत फलता है। (२५) जो अपने प्राणों से प्रीति करता है वह उन्हें नष्ट करता है, पर जो इस संसार में अपने प्राणों से बैर करता है वह उन्हें शाश्वत जीवन के लिए सुरक्षित रखेगा। (२६) यदि कोई मेरी सेवा करना चाहे तो मेरा अनुसरण करे; जहां मैं हूं, वहां मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरा पिता उसका संमान करेगा।

(२७) 'अब मेरी आत्मा व्याकुल है। मैं क्या कहूं? "हे पिता, इस घड़ी से मुझे बचा!" (२८) परंतु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं। हे पिता, अपने नाम को महिमान्वित कर।' इस पर आकाशवाणी हुई, 'मैंने उसे महिमान्वित किया है और पुनः महिमान्वित करूंगा।' (२९) पास खड़े हुए जनसमूह ने सुना और कहा, 'मेघ गरजा'। दूसरों ने कहा, 'स्वर्ग-दूत उनसे बोला है।' (३०) इस पर यीशु ने उत्तर दिया, 'यह वाणी मेरे लिए नहीं, तुम्हारे लिए हुई है। (३१) अब इस संसार का न्याय होता है; अब इस संसार का अधिपति निकाला जाएगा। (३२) मैं, यदि पृथ्वी से ऊंचा उठाया

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३३ जाऊं तो सबको अपनी ओर आकर्षित करूंगा।' उन्होंने ऐसा यह संकेत
३४ करने के लिए कहा कि वह किस प्रकार की मृत्यु से मरने को थे। जनसमूह बोला, 'हमने व्यवस्था में सुना है कि ख्रिस्त सदा सर्वदा रहते हैं ; फिर आप कैसे कहते हैं कि मानव-पुत्र का ऊंचा उठाया जाना अनिवार्य है?
३५ यह मानव-पुत्र कौन है?' यीशु ने उत्तर दिया, 'ज्योति थोड़ी देर और तुम्हारे बीच में है। जब तक ज्योति है, चले चलो, ऐसा न हो कि अंधकार तुम्हें आ घेरे। जो अंधकार में चलता है, वह नहीं जानता कि किधर
३६ जाता है। जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो कि तुम ज्योति की संतान बनो।' ये शब्द कहकर यीशु चले गए और उनसे छिपे रहे।

यहूदियों ने विश्वास नहीं किया

३७ यद्यपि यीशु ने उनके सामने इतने चिह्न दिखाए तो भी उन्होंने
३८ विश्वास नहीं किया, कि यशायाह नबी का वचन पूरा हो ;

'हे प्रभु, हमारे संवाद पर किसने विश्वास किया है?
प्रभु का बाहुबल किस पर प्रकट हुआ है?'

३९ वे विश्वास नहीं कर सके, क्योंकि यशायाह ने यह भी कहा है :
४० 'उसने उनकी आंखें अंधी कर दी हैं
और उनका मन जड़ किया है,
कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, मन में समझें,
और फिरें कि मैं उनको स्वस्थ करूं।'
४१ यशायाह ने यह कहा क्योंकि उनकी महिमा देखी और उनके विषय में बोले।

४२ फिर भी अधिकारियों में से अनेक ने उन पर विश्वास किया, परंतु फरीसियों के कारण स्वीकार न किया, जिससे कहीं ऐसा न हो कि
४३ सभागृह से निकाल दिए जाएं। उन्हें परमेश्वर के सम्मान की अपेक्षा मनुष्यों का संमान अधिक प्रिय लगा।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वजनिक शिक्षा का सारांश

यीशु ने उच्च स्वर से कहा, 'जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है; जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है। मैं संसार में ज्योतिस्वरूप होकर आया हूं कि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अंधकार में न रहे। यदि कोई मेरे वचन सुने और उनका पालन न करे तो मैं उस पर अपराध नहीं लगाता, क्योंकि मैं संसार पर अपराध लगाने नहीं, वरन् संसार का उद्धार करने आया हूं। जो मेरा तिरस्कार करता है, और मेरे वचन ग्रहण नहीं करता, उस पर अपराध लगानेवाला एक है : जो वचन मैंने कहा है, वही अंतिम दिन उसे अपराधी ठहराएगा। मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा, वरन् पिता ने, जिसने मुझे भेजा है, आज्ञा दी है कि क्या कहूं और क्या बोलूं। मैं जानता हूं कि उसकी आज्ञा शाश्वत जीवन है; इसलिए जो कुछ मैं कहता हूं, उसे जैसा पिता ने मुझसे कहा है, वैसा ही कहता हूं।' ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०

प्रेरितों का पद-प्रक्षालन

13 फसह के पर्व से पूर्व यीशु ने, यह जानकर कि वह घड़ी आ पहुंची है जब उन्हें इस संसार को छोड़कर पिता के पास जाना है, अपनों से जो संसार में थे और जिन्हें वह प्रेम करते आए थे, अंतिम सीमा तक प्रेम किया। इबलीस, शमौन के पुत्र, यहूदा इस्किरियोती के मन में विचार डाल चुका था कि उन्हें पकड़वाए; तब भोजन करते समय यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ उनके हाथ में दे दिया है, और यह कि वह परमेश्वर से आए हैं और परमेश्वर के पास जा रहे हैं, भोजन से उठकर अपने बाह्य वस्त्र उतारे, और अपनी कमर में अंगोछा बांध लिया। तब एक पात्र में जल उड़ेल कर, वह अपने शिष्यों के पैर धोने और कमर में बंधे अंगोछे से पोंछने लगे। १ २ ३ ४ ५

वह पतरस के समीप आए तो पतरस बोले, 'हे प्रभु आप! और मेरे पांव धोते हैं?' यीशु ने उत्तर दिया, 'जो मैं करता हूं, उसे तुम अभी नहीं जानते; पर पीछे समझोगे।' पतरस बोले, 'आप मेरे पांव कदापि ६ ७ ८

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न धोने पाएंगे।' यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि मैं तुम्हें न धोऊं तो मेरे साथ
९ तुम्हारा कुछ भाग नहीं।' शमौन पतरस बोले, 'तब तो प्रभु, मेरे पांव
१० ही नहीं, वरन् हाथ और सिर भी धोइए।' यीशु ने कहा, 'जो स्नान कर चुका है, उसे पांव के अतिरिक्त और कुछ धोने की आवश्यकता नहीं,
११ वह पूर्णतया शुद्ध है। तुम शुद्ध हो, परंतु सबके सब नहीं।' वह अपने पकड़वाने वाले को जानते थे, इस कारण उन्होंने कहा, तुम सबके सब शुद्ध नहीं हो।'

१२ जब वह उन सबके पांव धो चुके और अपने वस्त्र पहिनकर पुनः बैठ
१३ गए तो बोले, 'क्या तुम समझे कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया? तुम मुझे "गुरु" और "प्रभु" कहते हो, और ठीक कहते हो, क्योंकि मैं हूं।
१४ अतः यदि मैंने गुरु और प्रभु होकर तुम्हारे पांव धोए तो तुमको भी एक
१५ दूसरे के पांव धोने चाहिए। मैंने तुम्हारे सामने एक आदर्श रखा है कि
१६ जैसा मैंने किया है, वैसा ही तुम भी करो। मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, और न भेजा हुआ अपने भेजने-
१७ वाले से। यदि तुम यह जानते हो और इसके अनुसार चलते हो तो धन्य हो।
१८ मैं तुम सबके विषय में नहीं बोल रहा; मैं जानता हूं कि किनको मैंने चुना है, किंतु शास्त्र-वचन पूरा होना है, "जो मेरी रोटी खाता है उसी ने
१९ मुझ पर लात उठाई है"। इसके घटित होने से पूर्व मैं तुम्हें बताए देता हूं,
२० जिससे जब यह हो तो विश्वास करो कि मैं हूं। मैं तुमसे सच सच कहता हूं, जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।'

विश्वासघाती की ओर संकेत

२१ जब यीशु यह कह चुके तो आत्मा में व्याकुल हो उठे और यह साक्षी दी, 'मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि तुममें से एक मुझे पकड़वाएगा।'
२२ इस पर शिष्य संशय में पड़ कर एक दूसरे की ओर देखने लगे कि उन्होंने
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
२३ यह किस के विषय में कहा है। एक शिष्य, जिसे यीशु प्रेम करते थे,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यीशु के वक्षस्थल के समीप झुका हुआ बैठा था। शमौन पतरस ने संकेत करके उससे कहा, 'बताओ तो यह किस के विषय में कह रहे हैं।' उसने वैसे ही यीशु के वक्षस्थल पर झुक कर पूछा, 'प्रभु, वह कौन है ?' यीशु ने उत्तर दिया, 'जिसे मैं ग्रास डुबोकर दूंगा, वही है' ; और उन्होंने ग्रास डुबोया और लेकर शमौन के पुत्र यहूदा इस्किरियोती को दिया। ग्रास लेते ही शैतान उसमें समा गया। तब यीशु उससे बोले, 'जो कुछ तुझे करना है, शीघ्र कर।' भोजन करनेवालों में से किसी ने न जाना कि उन्होंने किस अभिप्राय से यह कहा। कुछ ने समझा कि यहूदा के पास थैली रहती थी इसलिए यीशु कह रहे हैं कि जो कुछ हमें पर्व के लिए चाहिए, मोल ले, अथवा, दरिद्रों को कुछ दे। वह ग्रास को लेकर तत्काल बाहर चला गया ; और रात्रि थी। २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०

नवीन आज्ञा

जब वह बाहर चला गया तो यीशु बोले, 'अब मानव-पुत्र महिमान्वित हुआ है, और उसमें परमेश्वर महिमान्वित हुआ है ; यदि उसमें परमेश्वर महिमान्वित हुआ है तो परमेश्वर भी अपने में उसे महिमान्वित करेगा और शीघ्र महिमान्वित करेगा। बालको, थोड़ी देर के लिए मैं तुम्हारे साथ हूं ; तुम मुझे ढूंढ़ोगे, और जैसे मैंने यहूदियों से कहा वैसे ही तुमसे कहता हूं, "जहां मैं जा रहा हूं वहां तुम नहीं आ सकते।" मैं तुम्हें एक नवीन आज्ञा देता हूं : एक दूसरे से प्रेम करो-जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है वैसा ही तुम एक दूसरे से प्रेम करो। यदि तुम एक दूसरे से प्रेम रखोगे तो इसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।' ३१ ३२ ३३ ३४ ३५

पतरस का भावी अस्वीकरण

शमौन पतरस ने उनसे पूछा, 'प्रभु, आप कहां जा रहे ?' यीशु ने उत्तर दिया, 'जहां मैं जाता हूं वहां अभी तुम मेरा अनुसरण नहीं कर सकते पर आगे अनुसरण करोगे। पतरस ने कहा, 'प्रभु, अभी मैं आपका अनुसरण ३६ ३७

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३८ क्यों नहीं कर सकता ? मैं आपके लिए अपने प्राण दे दूंगा। यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या तुम मेरे लिए अपने प्राण दोगे ! मैं तुमसे सच सच कहता हूं : मुरगे के बांग देने के पहले तुम तीन बार मुझे अस्वीकार करोगे।

अन्तिम वार्त्ता का आरम्भ

14 'तुम्हारा मन व्याकुल न हो, परमेश्वर पर विश्वास रखो* और मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत निवासस्थान हैं ; यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता ; क्योंकि मैं तुम्हारे
३ लिए एक स्थान तैयार करने जा रहा हूं।† और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए स्थान तैयार करूं तो पुनः आऊंगा, और तुमको अपने समीप ग्रहण
४ करूंगा, जिससे जहां मैं हूं वहां तुम भी रहो। तुम जानते हो कि मैं कहां जा रहा हूं, और वह मार्ग भी जानते हो।'

५ थोमा उनसे बोले, 'हे प्रभु, हम नहीं जानते कि आप कहां जा रहे हैं ;
६ तो फिर मार्ग कैसे जाने ?' यीशु ने कहा, 'मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूं।
७ मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं आता। यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते। अब से तुम उसे जानते हो और तुमने उसका
८ दर्शन किया है।' फिलिपुस ने कहा, 'प्रभु, हमें पिता के दर्शन कराइए,
९ यह हमारे लिए पर्याप्त होगा।' यीशु ने कहा, 'फिलिप्पुस ! मैं इतने समय तुम्हारे साथ रहा, तो भी तुमने मुझको न जाना ? जिसने मुझे देखा, उसने पिता को देख लिया। फिर तुम कैसे कहते हो "हमें पिता के दर्शन
१० कराइए।" क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में ? जो वचन मैं तुमसे कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परंतु
११ मुझमें वास करनेवाला पिता अपने कार्य कर रहा है। मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूं और पिता मुझमें : और नहीं तो कार्यों के कारण

*अथवा, 'रखते हो'।

†अथवा, 'यदि न होते तो क्या मैं तुमसे कहता कि मैं तुम्हारे लिए स्थान तैयार करने जा रहा हूं।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही विश्वास करो। मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि मुझ पर विश्वास १२ करनेवाला वे कार्य करेगा जो मैं कर रहा हूं, वरन् इनसे भी महान् कार्य करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूं। जो कुछ तुम मेरे नाम से १३ मांगोगे, मैं उसे करूंगा, जिससे मुझमें पिता महिमान्वित हो। यदि तुम मेरे १४ नाम से मुझसे कुछ भी मांगोगे तो मैं उसे करूंगा।

यीशु सहायक भेजेंगे

'यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे, १५ और मैं पिता से निवेदन करूंगा तथा वह तुम्हें दूसरा सहायक* १६ देगा कि वह सदा तुम्हारे साथ रहे—अर्थात् सत्य का आत्मा। संसार १७ उसको ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि न तो वह उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और तुममें होगा। मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं। १८ थोड़ी देर और; फिर संसार मुझे नहीं देखेगा, पर तुम मुझे देखोगे; १९ मैं जीवित हूं इसलिए तुम भी जीवित रहोगे। उस दिन तुम जानोगे कि २० मैं अपने पिता में हूं, तुम मुझमें हो और मैं तुममें। जो मेरी आज्ञाएं २१ स्वीकार करता और उनका पालन करता है, वही मुझसे प्रेम करता है; जो मुझसे प्रेम करता है, वह मेरे पिता का प्रेमपात्र होगा; और मैं उसे प्रेम करूंगा तथा अपना दर्शन दूंगा।' यहूदा ने जो इस्करियोती नहीं था, २२ पूछा, 'प्रभु, यह क्या कि आप हमें दर्शन देंगे और संसार को नहीं?' यीशु ने उत्तर दिया, यदि कोई मुझसे प्रेम करे तो मेरा वचन मानेगा: २३ तब मेरा पिता उसे प्रेम करेगा और हम उसके पास आएंगे तथा उसके साथ निवास करेंगे। परंतु जो मुझे प्रेम नहीं करता, वह मेरे वचन नहीं २४ मानता। यह वचन जो तुम सुनते हो मेरा नहीं, वरन् पिता का है जिसने मुझे भेजा है।

---

*मूल भाषा में, 'पराक्लेत' जिसके अर्थ हैं अभिभावक (एडवोकेट), शांतिदाता, परामर्शदाता।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५ 'तुम्हारे साथ रहते हुए ही मैंने तुमसे ये बातें कह दी हैं परंतु
२६ सहायक* अर्थात् पवित्र आत्मा, जिसे परमेश्वर मेरे नाम में भेजेगा, तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और सब कुछ जो मैंने तुमसे कहा है, तुमको स्मरण
२७ कराएगा। शान्ति मैं तुमको दिए जाता हूं, अपनी शान्ति मैं तुम्हें प्रदान करता हूं—मैं ऐसे देता हूं जैसे संसार नहीं देता। तुम्हारा मन व्याकुल
२८ और भयभीत न हो। तुमने सुना कि मैंने तुमसे क्या कहा, "मैं जा रहा हूं और फिर तुम्हारे पास आ रहा हूं।" यदि तुम मुझे प्रेम करते तो आनंद मनाते कि मैं पिता के पास जा रहा हूं; क्योंकि पिता मुझसे
२९ महान् है। अभी, यह होने से पहिले, मैंने तुमसे कह दिया है कि जब
३० हो तो विश्वास करो। अब मैं तुमसे अधिक न बोलूंगा, क्योंकि इस संसार का अधिकारी आ रहा है। वह मेरा कुछ नहीं कर सकता। पर
३१ जैसी पिता ने मुझे आज्ञा दी है, मैं उसका पालन करता हूं कि संसार जान ले कि मैं पिता से प्रेम करता हूं। उठो, यहां से चलें।

द्राक्षलता और शाखाएं

15 'सच्ची दाखलता मैं हूं और मेरा पिता कृषक है। प्रत्येक शाखा जो मुझमें है, और फलती नहीं, वह काट डालता है: और प्रत्येक शाखा जो फलती है, उसे वह छांटता है कि
३ अधिक फले। उस वचन के कारण, जो मैंने तुमसे कहा
४ है, तुम शुद्ध हो चुके हो। मुझमें रहो, जैसे मैं तुममें। जिस प्रकार शाखा, यदि दाखलता में न रहे तो अपने आप नहीं फल सकती,
५ उसी प्रकार तुम भी यदि मुझमें न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूं और तुम शाखाएं हो। जो मुझमें रहता है और मैं उसमें, वह बहुत
६ फलता है, क्योंकि मुझसे वियुक्त रहकर तुम कुछ नहीं कर सकते। यदि कोई मुझमें नहीं रहता तो वह शाखा के सदृश फेंक दिया जाता है, और

---

*मूल भाषा में, 'परावलेत' जिसके अर्थ हैं अभिभावक (एडवोकेट), सांत्वनादाता, परामर्शदाता।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूख जाता है। लोग सूखी शाखाओं को एकत्रित कर आग में झोंकते और ७
जला देते हैं। यदि तुम मुझमें रहो और मेरे वचन तुममें, तो जो चाहो,
मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी में ८
है कि तुम बहुत फलवान् हो, तभी तुम मेरे शिष्य होगे। जैसे मेरे पिता ९
ने मुझसे प्रेम रखा उसी प्रकार मैंने तुमसे प्रेम रखा : मेरे प्रेम में रहो।
यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानो तो मेरे प्रेम में रहोगे; जैसे मैं ने अपने पिता १०
की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में रहता हूं। मैंने ये बातें तुमसे ११
इसलिए कहीं हैं कि मेरा अनंद तुममें हो और तुम्हारा आनंद पूर्ण हो जाए।
मेरी आज्ञा यह है कि जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है, वैसा ही तुम भी एक १२
दूसरे से प्रेम करो। इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों १३
के निमित्त अपने प्राण दे। जो आज्ञा मैं देता हूं, उसका यदि तुम पालन १४
करो तो तुम मेरे मित्र हो। अब से मैं तुम्हें दास नहीं कहता, क्योंकि १५
दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है; परंतु मैंने तुमको
मित्र कहा है, क्योंकि जो कुछ मैंने अपने पिता से सुना, वह सब तुमको बता
दिया है। तुमने मुझे नहीं चुना, पर मैंने तुमको चुना और नियुक्त किया १६
कि तुम जाओ और फलवान् हो, तथा तुम्हारा फल स्थायी रहे; जिससे
जो कुछ तुम मेरे नाम से पिता से मांगो, वह तुमको दे। ये आज्ञाएं मैंने १७
इसलिए दीं हैं कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो।

सत्य का आत्मा तथा संसार

'यदि संसार तुमसे बैर रखता है तो ध्यान रखो कि उसने तुमसे पहिले १८
मुझसे बैर रखा है। यदि तुम संसार के होते तो संसार अपनों से १९
प्रीति करता; तुम संसार के नहीं हो, वरन् मैंने तुमको संसार से चुन लिया
है, इस कारण संसार तुमसे बैर रखता है। जो वचन मैंने तुमसे कहा २०
उसे स्मरण करो : "दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता।" यदि
उन्होंने मुझे सताया तो तुम्हें भी सताएंगे। यदि उन्होंने मेरी बात मानी
है तो तुम्हारी भी मानेंगे। परंतु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे २१

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२ साथ करेंगे, क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते। यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता तो उन्हें पाप न लगता, परंतु अब उनके पास अपने
२३ पाप के लिए कोई बहाना नहीं है। जो मुझसे बैर रखता है, वह मेरे पिता
२४ से बैर रखता है। यदि मैं उनके बीच वे कार्य नहीं करता, जो और किसी ने नहीं किए, तो उन्हें पाप न लगता परंतु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे
२५ पिता दोनों को देख लिया है और फिर भी बैर किया है। यह इसलिए हुआ है कि उनकी व्यवस्था में लिखा यह वचन पूरा हो, "उन्होंने मुझसे व्यर्थ बैर रखा।'

२६ 'परंतु जब सहायक आएगा जिसे मैं पिता के पास से तुम्हारे पास भेजूंगा—अर्थात सत्य का आत्मा, जो पिता से निकलता है—तो वह तुम्हें
२७ मेरे विषय में साक्षी देगा, और तुम भी मेरे साक्षी हो, क्योंकि आरंभ से मेरे साथ रहे हो।'

16 'मैंने तुमसे यह सब इसलिए कहा है कि तुम्हारा पतन न हो। वे तुम्हें सभागृह से बहिष्कृत करेंगे ; वरन् समय आ रहा है जब कि तुम्हारी हत्या करने वाला समझेगा कि वह परमेश्वर को सेवा अर्पण
३ कर रहा है। और ये कार्य वे इसलिए करेंगे कि उन्होंने न तो पिता को
४ जाना है और न मुझे। मैंने तुमसे ये बातें इसलिए कहीं हैं कि जब इनका समय आए तो तुम्हें स्मरण हो कि मैंने तुमको बता दिया था।

५ 'मैंने तुमको आरम्भ से ये बातें नहीं बताईं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। परंतु अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जा रहा हूं, और तुममें से कोई
६ नहीं पूछता कि आप कहां जा रहे हैं। मैंने तुम्हें ये बातें बताईं हैं,
७ इसलिए तुम्हारा हृदय शोकपूर्ण है। तुमसे मैं सच कहता हूं कि यह तुम्हारे लिये लाभप्रद है कि मैं जा रहा हूं ; क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा, परंतु यदि जाऊं तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा।
८ वह आकर पाप के विषय में, धार्मिकता के विषय में और न्याय के विषय
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
९ में संसार को दोषी सिद्ध करेगा : पाप के विषय में, क्योंकि वे मुझ पर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास नहीं करते ; धार्मिकता के विषय में, क्योंकि मैं तुम्हारे पिता १०
के पास जा रहा हूं, और तुम मुझे फिर न देखोगे ; न्याय के विषय में, ११
क्योंकि संसार का अधिपति दोषी ठहरा है।

'मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है, परंतु अभी तुम उसे सहन नहीं कर १२
सकते। जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो संपूर्ण सत्य में तुम्हारा १३
मार्गदर्शन करेगा ; क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ न कहेगा, वरन् जो
कुछ सुनेगा, कहेगा और होनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मुझे महिमा- १४
न्वित करेगा क्योंकि जो मेरा है, उसे लेगा और तुम्हें बताएगा। सब जो १५
पिता का है मेरा है। इस कारण मैंने कहा कि वह जो मेरा है, उसे लेगा
और तुम्हें बताएगा।

वियोग कालीन उद्गार

'थोड़ी देर में तुम मुझे नहीं देखोगे ; और फिर थोड़ी देर में तुम १६
मुझे देखोगे।' इस पर उनके कुछ शिष्य आपस में कहने लगे, 'यह क्या १७
है जो यह हमसे कह रहे हैं, "थोड़ी देर में तुम मुझे नहीं देखोगे : फिर थोड़ी
देर में तुम मुझे देखोगे :" और "क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं"?'
वे कहते गए, 'यह "थोड़ी देर" क्या है जिसके विषय में यह कह रहे १८
हैं? हम नहीं जानते कि यह क्या बोल रहे हैं?' यीशु ने जाना कि वे १९
उनसे कुछ पूछना चाहते हैं, और उनसे कहा, 'क्या तुम आपस में इस
पर विचार कर रहे हो कि मैंने कहा, "थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे :
फिर कुछ देर में तुम मुझे देखोगे?" मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि तुम २०
रोओगे और विलाप करोगे, परंतु संसार आनंद मनाएगा ; तुम शोकित
होगे, किंतु तुम्हारा शोक आनंद में परिणत हो जाएगा। जब स्त्री प्रसव- २१
पीड़ा में होती है तो उसे दुःख होता है, क्योंकि उसका समय आ पहुंचा है :
पर जब वह बालक को जन्म दे चुकती है तो इस आनंद के कारण कि
एक शिशु* संसार में उत्पन्न हुआ है, फिर पीड़ा का स्मरण नहीं करती।
इसी प्रकार तुम अब शोक में हो, परन्तु तुम मुझे पुनः देखोगे और तुम्हारा २२

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अथवा (१) "मनुष्य", (२) "जन"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन आनंदित होगा और तुमसे तुम्हारा आनंद कोई नहीं छीन सकेगा।
२३ उस दिन तुम मुझसे कुछ प्रश्न न करोगे। मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि
२४ यदि तुम पिता से कुछ मांगोगे तो वह मेरे नाम में तुम्हें देंगे। अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा: मांगो, और तुम पाओगे कि तुम्हारा आनंद पूरा हो।

२५ 'मैंने तुमसे रूपकों में यह कहा है; परंतु समय आ रहा है जब मैं
२६ तुमसे रूपकों में न बोलूंगा, वरन् पिता के विषय में स्पष्ट कहूंगा। उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे; मैं यह नहीं कहता कि तुम्हारे विषय में
२७ पिता से निवेदन करूंगा; पिता स्वयं तुमसे प्रीति करता है, क्योंकि तुमने
२८ मुझ से प्रीति की है, तथा विश्वास किया है कि मैं पिता से आया हूं। मैं पिता से निकल कर संसार में आया हूं; मैं फिर संसार को छोड़कर पिता के पास जा रहा हूं।'

२९ उनके शिष्यों ने कहा, 'अब आप स्पष्ट बोल रहे हैं, रूपकों में नहीं।
३० अब हम जान गए हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और आपको आवश्यकता नहीं कि कोई आपसे प्रश्न करे; इस कारण हम विश्वास करते हैं कि
३१ आप परमेश्वर से निकले हैं।' यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या अब मुझ पर
३२ विश्वास करते हो? देखो समय आ रहा है, वरन् आ गया है, जब तुम तितर-बितर किए जाओगे और प्रत्येक अपने अपने स्थान को चला जाएगा और मुझे अकेला छोड़ देगा। फिर भी मैं अकेला नहीं हूं क्योंकि
३३ पिता मेरे साथ है। ये बातें मैंने तुमसे इसलिए कहीं कि तुम मुझमें शान्ति पाओ। संसार में तुम कष्ट पाओगे; पर धैर्य रखो, मैं संसार पर विजयी हुआ हूं।'

यीशु की महायाजकीय प्रार्थना

17 यीशु ने यह कहा और अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाकर बोले, 'पिता, समय आ गया है; अपने पुत्र को महिमान्वित
२ कर कि पुत्र तुझे महिमान्वित करे, क्योंकि तूने उसे सब प्राणियों पर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार दिया है कि वह उन सबको, जिन्हें तूने उसको दिया है, शाश्वत-जीवन प्रदान करे। और शाश्वत-जीवन यह है कि वे तुझे, एक मात्र सच्चे ३ परमेश्वर को, और यीशु ख्रिस्त को, जिसे तूने भेजा है, जानें। जो कार्य ४ तूने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा कर मैंने तुझे पृथ्वी पर महिमान्वित ५ किया है। अब, हे पिता, अपनी उपस्थिति में मुझे उस महिमा से महिमान्वित कर, जो संसार की उत्पत्ति से पहिले मेरी थी और तेरे साथ थी। मैंने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रकट किया है जिन्हें तूने ६ संसार में मुझे दिया; वे तेरे थे, तूने उन्हें मुझे दिया, और उन्होंने तेरे वचन का पालन किया है। अब वे जानते हैं कि जो कुछ तूने मुझे दिया ७ है, वह तुझसे है, क्योंकि जो वचन तूने मुझे दिए थे, मैंने उनको दिए; ८ उन्होंने उनको ग्रहण किया और सचमुच जानते हैं कि मैं तुझसे आया हूं; और उन्होंने विश्वास किया है कि तूने मुझे भेजा है। मैं उनके ९ लिए प्रार्थना कर रहा हूं; संसार के लिए प्रार्थना नहीं कर रहा, वरन् उनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं। मेरा सब १० तेरा है, और तेरा मेरा है; और मैं उनमें महिमान्वित हुआ हूं। मैं अब ११ संसार में नहीं रहूंगा, पर वे संसार में होंगे, और मैं तेरे पास आ रहा हूं। पवित्र पिता, उस नाम में जो तूने मुझे दिया है, उनको सुरक्षित रख कि वे एक हों, जैसे हम एक हैं। जब तक मैं उनके साथ रहा, तेरे उस १२ नाम में, जो तूने मुझे दिया था, मैंने उनकी चौकसी की; और विनाश के पुत्र को छोड़ कर उनमें से कोई नष्ट नहीं हुआ कि शास्त्र का लेख पूरा हो। परंतु अब मैं तेरे पास आ रहा हूं। मैं संसार में ये बातें कह रहा १३ हूं कि वे मेरे आनंद से परिपूर्ण हों। मैंने उनको तेरा वचन दिया है, पर १४ संसार उनसे बैर करता है, क्योंकि जिस प्रकार मैं संसार का नहीं हूं, वे भी संसार के नहीं हैं। मैं यह प्रार्थना नहीं करता कि तू उन्हें संसार से उठा १५ ले, वरन् यह कि उनको दुष्ट* से सुरक्षित रख। जिस प्रकार मैं १६

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अर्थात् 'शैतान'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७ संसार का नहीं हूं, वे भी संसार के नहीं हैं। सत्य से उनको पवित्र कर-
१८ तेरा वचन सत्य है। जैसे तूने मुझे संसार में भेजा उसी प्रकार मैंने उन्हें
१९ संसार में भेजा है। उनके लिए मैं अपने को पवित्र† करता हूं कि वे भी सत्य द्वारा पवित्र† किए जाएं।

२० 'मैं केवल इनके लिए ही नहीं वरन् उन सबके लिए प्रार्थना करता
२१ हूं जो इनके वचन द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे कि वे सब एक हों ; जैसे हे पिता, मैं तुझमें हूं और तू मुझमें, उसी प्रकार वे हममें हों, जिससे
२२ संसार विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है। जो महिमा तूने मुझे दी है,
२३ वह मैंने उन्हें दी है कि जैसे हम एक हैं, वे भी एक हों : मैं उनमें और तू मुझमें, कि एक होने के लिए वे पूर्ण हो जाएं, जिससे संसार जाने कि तूने मुझे भेजा है, और जैसे तूने मुझसे प्रेम किया है, वैसे ही उनसे भी
२४ प्रेम किया है। हे पिता, मैं चाहता हूं कि जिनको तूने मुझे दिया है, वे भी जहां मैं हूं मेरे साथ हों, जिससे उस महिमा को देख सकें जो तूने मुझे
२५ दी है, क्योंकि तूने संसार के शिलान्यास के पूर्व ही मुझे प्रेम किया है। हे धर्मपरायण पिता, संसार ने तुझको नहीं जाना, परंतु मैंने तुझे जाना है ;
२६ और ये जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है। मैंने तेरा नाम इन्हें बताया और बताता रहूंगा कि वह प्रेम, जो तूने मुझे दिया है, उनमें भी हो और मैं उनमें होऊं।'

यीशु की गिरफ्तारी

18 ये शब्द कहने के उपरांत यीशु अपने शिष्यों के साथ किद्रोन नाले के पार गए। वहां एक उद्यान था जिसमें उन्होंने शिष्यों
२ के साथ प्रवेश किया। उनका पकड़नेवाला यहूदा उस स्थान को जानता
३ था, क्योंकि यीशु बहुधा अपने शिष्यों के साथ वहां जाया करते थे। अस्तु, यहूदा सैन्य-दल को और महापुरोहितों एवं फरीसियों के कुछ कर्मचा-

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

† अथवा, 'अर्पित'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रियों को लेकर दीपकों, मशालों और अस्त्र-शस्त्रों के साथ वहां आया। तब ४
यीशु, जो कुछ उन पर बीतने को था उसे जानकर, आगे बढ़े और पूछा 'तुम
किसे ढूंढ़ते हो ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'नासरत-वासी यीशु को।' यीशु ५
ने उनसे कहा, 'वह मैं हूं'। उनका पकड़वाने वाला यहूदा वहां साथ
खड़ा था। ज्योंही उन्होंने कहा, 'वह मैं हूं', वे लोग पीछे हटे और भूमि ६
पर गिर पड़े। उन्होंने फिर पूछा, 'तुम किसे ढूंढ़ते हो ?' वे बोले, ७
'नासरतवासी यीशु को।' यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे कह चुका ८
कि वह मैं ही हूं ; इसलिए यदि तुम मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्हें जाने दो'
(जिससे उनका कहा हुआ यह वचन पूरा हो 'तूने जिन्हें मुझे दिया मैंने ९
उनमें से एक भी नष्ट नहीं होने दिया।') शमौन पतरस के पास एक १०
तलवार थी। उन्होंने वह खींची और महापुरोहित के एक दास पर चलाई,
जिससे उसका दाहिना कान कट गया। उस दास का नाम मलकुस था।
यीशु ने पतरस से कहा, 'तलवार म्यान में करो। क्या मैं वह कटोरा न ११
पिऊं जो पिता ने मुझे दिया है ?'

तब सैन्य-दल, सेनापति और यहूदियों के कर्मचारियों ने यीशु को १२
पकड़ा और बांध लिया। पहले वे उन्हें हन्ना के पास ले गए क्योंकि वह १३
उस वर्ष के महापुरोहित काइफ़ा का श्वसुर था। काइफा ने ही यहूदियों १४
को परामर्श दिया था कि जाति के लिए एक का मरना लाभप्रद है।

पतरस का अस्वीकरण

शमौन पतरस तथा एक और शिष्य यीशु के पीछे पीछे गए। यह १५
शिष्य महापुरोहित की जान पहिचान का था। वह यीशु के साथ महा-
पुरोहित के आंगन में चला गया, जब कि पतरस द्वार के बाहर ही खड़े रहे। १६
तब वह शिष्य, जो महापुरोहित से परिचित था, बाहर आया और द्वार-
रक्षिका से कह कर पतरस को भीतर ले आया। द्वार-रक्षिका ने पतरस से १७
कहा, 'कहीं तू उस मनुष्य का शिष्य तो नहीं है ?' उन्होंने उत्तर दिया,
'मैं नहीं हूं।' शीत के कारण दासों और कर्मचारियों ने कोयले की आग १८

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जला रखी थी और खड़े होकर ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़े हुए तापने लगे।

१६ महापुरोहित ने यीशु से उनके शिष्यों और शिक्षाओं के विषय में
२० पूछा। यीशु ने उत्तर दिया, 'मैंने संसार से खुले रूप में बातें की हैं। मैंने सदा सभागृह तथा मंदिर में, जहां सब यहूदी एकत्रित होते हैं, शिक्षा दी है और गुप्त रूप से कुछ नहीं कहा। आप मुझसे क्यों पूछते हैं?
२१ सुननेवालों से पूछ लीजिए कि मैंने उनसे क्या कहा। वे जानते हैं कि
२२ मैंने क्या कहा था।' उनके यह कहने पर एक कर्मचारी ने जो पास खड़ा था यीशु को थप्पड़ मारा और कहा, 'तू महापुरोहित को इस प्रकार उत्तर
२३ देता है।' यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि मैंने अनुचित कहा है तो अनौचित्य के संबंध में साक्षी दो, परंतु ठीक कहा है तो फिर मुझ पर प्रहार क्यों करते
२४ हो?' तब हन्ना ने यीशु को महापुरोहित काइफा के पास भेज दिया।

२५ शमौन पतरस खड़े हुए ताप रहे थे। लोगों ने उससे पूछा, 'कहीं तू भी तो उनके शिष्यों में से नहीं?' उन्होंने अस्वीकार किया और कहा,
२६ मैं नहीं हूं।' महापुरोहित के दासों में से एक ने, जो उस व्यक्ति का संबंधी था जिसका पतरस ने कान उड़ा दिया था, उनसे पूछा, 'क्या मैंने तुझे
२७ उसके साथ उपवन में नहीं देखा था?' परतस ने फिर अस्वीकार किया, और तुरंत मुर्ग ने बांग दी।

रोमन राज्यपाल पिलातुस के संमुख यीशु

२८ तब वे यीशु को काइफा के पास से प्राइतोरियम* में ले गए। अब प्रातःकाल था। वे लोग स्वयं प्राइतोरियम में नहीं गए कि अशुद्ध
२९ न हो जाएं वरन् फसह खा सकें। पिलातुस बाहर उनके पास आया और
३० बोला, 'इस मनुष्य पर तुम क्या अभियोग लगाते हो?' उन्होंने उत्तर दिया, 'यदि यह मनुष्य दुष्कर्मी न होता तो हम इसे आपके हाथ नहीं

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* राज्यपाल का भवन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंपते।' पिलातुस ने उनसे कहा, 'तुम्हीं इसे ले जाओ और अपनी व्यवस्था ३१
के अनुसार इसका न्याय करो।' यहूदी बोले, 'किसी को प्राणदंड देना
हमारे लिये विहित नहीं है।' यह इसलिए हुआ कि यीशु के वे वचन पूर्ण ३२
हों जिनसे उन्होंने संकेत किया था कि उनकी मृत्यु कैसे होनेवाली है।

पिलातुस फिर प्राइतोरियम में गया और यीशु को बुलाकर उनसे ३३
पूछा, 'क्या तुम यहूदियों के राजा हो?' यीशु ने कहा, 'आप स्वयं ३४
यह कह रहे हैं, या दूसरों ने आपसे मेरे विषय में यह कहा है?' पिलातुस ३५
ने उत्तर दिया, 'क्या मैं यहूदी हूं?, तुम्हारे ही लोगों ने और महा-
पुरोहितों ने तुम्हें मेरे हाथ सौंप दिया है। तुमने क्या किया है?' यीशु ने ३६
उत्तर दिया, 'मेरा राजत्व इस संसार का नहीं है। यदि मेरा राजत्व इस
संसार का होता, तो मेरे कर्मचारी मेरी ओर से लड़ते और मैं यहूदियों के
हाथ न पड़ता। पर मेरा राजत्व यहां का नहीं है।' तब पिलातुस बोला, ३७
'तो तुम राजा हो?' यीशु ने उत्तर दिया, 'आप ही कह रहे हैं कि मैं
राजा हूं। मैंने इस कारण जन्म लिया और इसी कारण संसार में आया
हूं कि सत्य की साक्षी दूं। प्रत्येक जो सत्य का है मेरी वाणी सुनता है।'
पिलातुस ने उनसे कहा 'सत्य क्या है?' ३८

यह कहकर वह फिर बाहर यहूदियों के पास गया और उनसे बोला,
'मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता। पर तुम्हारी एक परम्परा है कि फसह ३९
पर मैं तुम्हारे लिए एक व्यक्ति को छोड़ता हूं। तो क्या तुम चाहते
हो कि मैं तुम्हारे लिए "यहूदियों के राजा" को छोड़ दूं?' वे पुन: ४०
चिल्लाकर बोले, 'इसे नहीं, बरअब्बा को'। और बरअब्बा डाकू था।

पिलातुस का यहूदियों से भयभीत होना

19 तब पिलातुस ने यीशु को कोड़े लगवाए। सैनिकों ने कांटों १
का मुकुट गूंथकर उनके सिर पर रखा और उन्हें बैंजनी वस्त्र २
पहिनाया। फिर वे उनके पास आकर कहने लगे, 'यहूदियों के राजा ३
प्रणाम' और उनके थप्पड़ मारे।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४ पिलातुस फिर बाहर गया और लोगों से बोला, 'देखो, मैं उसे बाहर ५ ला रहा हूं जिससे तुम जान लो कि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।' तब यीशु बैंजनी वस्त्र और कांटों का मुकुट धारण किए बाहर आए। उसने ६ कहा, 'देखो, यह मनुष्य!' जब महापुरोहितों और कर्मचारियों ने उनको देखा तो चिल्ला कर बोले, 'क्रूस पर चढ़ाओ, क्रूस पर चढ़ाओ।' पिलातुस ने उनसे कहा, 'तुम्हीं उसे ले जाओ और क्रूस पर चढ़ाओ, क्योंकि मैं उसे ७ दोषी नहीं पाता।' यहूदियों ने उत्तर दिया, 'हमारी एक व्यवस्था है; उस व्यवस्था से इसे मृत्यु दंड मिलना चाहिये, क्योंकि यह अपने को ८ परमेश्वर का पुत्र कहता है।' जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो और भी ९ डर गया; उसने फिर प्राइतोरियम में जाकर, यीशु से पूछा, 'तुम कहां १० से हो?' परंतु यीशु ने कुछ उत्तर न दिया। तब पिलातुस ने कहा, 'तुम मुझसे भी नहीं बोलते! क्या तुम नहीं जानते कि मुझे तुमको छोड़ देने ११ का अधिकार है, और क्रूस पर चढ़ाने का भी अधिकार है?' यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि आपको ऊपर से अधिकार न दिया जाता तो आपको मुझ पर तनिक भी अधिकार नहीं होता। इस कारण जिन्होंने मुझे आपके हाथ १२ सौंपा है, उनका पाप अधिक है।' इस पर पिलातुस उनको छोड़ देने का और भी प्रयत्न करने लगा, पर यहूदियों ने चिल्लाकर कहा, 'यदि आपने इसको छोड़ा तो आप कैसर के मित्र नहीं। जो अपने को राजा बताता है, वह कैसर का विरोधी है।'

१३ पिलातुस ये सब वचन सुनकर यीशु को बाहर लाया और उस स्थान पर, जो 'चबूतरा' और इब्रानी में गब्बथा कहलाता है, न्याय-सिंहासन १४ पर बैठ गया। यह फसह की तैयारी का दिन था और लगभग छठा घंटा १५ था। उसने यहूदियों से कहा, 'देखो तुम्हारा राजा,। वे चिल्ला कर बोले, 'इसे ले जाओ, इसे ले जाओ, इसे क्रूस पर चढ़ाओ।' पिलातुस ने उनसे कहा, 'क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं!' महापुरोहितों ने उत्तर दिया, 'कैसर के अतिरिक्त कोई हमारा राजा नहीं।'
१६ तब उसने यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए उनके हाथ सौंप दिया।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रूस

वे यीशु को ले चले। वह अपना क्रूस उठाए बाहर निकले और उस स्थान को गए जो 'कपाल-स्थल, कहलाता है, और इब्रानी में गलगथा। यहां उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया; और उनके साथ दो और को भी, एक को इधर, दूसरे को उधर, और बीच में यीशु को। पिलातुस ने एक शीर्षक लिखकर क्रूस पर लगवा दिया; इसमें लिखा हुआ था 'नासरतवासी यीशु, यहूदियों का राजा'। अनेक यहूदियों ने इस शीर्षक को पढ़ा, क्योंकि वह स्थान जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाए गए नगर के समीप ही था, और शीर्षक इब्रानी, लातीनी और यूनानी भाषाओं में लिखा था। इस पर यहूदियों के महापुरोहितों ने पिलातुस से कहा, "यहूदियों का राजा" ऐसा न लिखिए परंतु यह कि 'उसने कहा था "मैं यहूदियों का राजा हूं"।' पिलातुस ने उत्तर दिया, 'मैंने जो लिख दिया, वह लिख दिया।' १७ १८ १९ २० २१ २२

यीशु ने क्रूस पर चढ़ाने के उपरांत सैनिकों ने उनके वस्त्रों को लेकर चार भाग किए; प्रत्येक सैनिक ने अपना भाग लिया। इसी प्रकार कुरता भी लिया। यह कुरता सीवन रहित संपूर्ण बुना हुआ था, इसलिए उन्होंने आपस में कहा, 'इसे फाड़ें नहीं, वरन् इस पर चिट्ठी डालें कि यह किसका हो।' यह इसलिए हुआ कि शास्त्र का वचन पूरा हो: २३ २४

'उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बांट लिए,
और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली।'

अस्तु, सैनिकों ने ऐसा ही किया। यीशु के क्रूस के समीप उनकी माता, माता की बहिन मरियम, जो क्लोपास की पत्नी थी, तथा मरियम मगदलीनी खड़ीं थीं। यीशु ने अपनी माता और उस शिष्य को, जिसे वह प्रेम करते थे, पास खड़े देखा तो माता से बोले, 'महिला, देखो, तुम्हारा पुत्र!' तब शिष्य से बोले, 'देखो, तुम्हारी माता!' उसी समय से वह उन्हें अपने घर ले गया। २५ २६ २७

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८ इसके अनंतर यीशु ने, यह जानकर कि सब कुछ पूर्ण हो चुका, शास्त्र का लेख पूरा करने के निमित्त कहा, 'मैं प्यासा हूं।' वहां अम्लरस २९ से भरा हुआ एक पात्र रखा था। लोगों ने अम्लरस में भिगोए स्पंज को ३० जूफे* पर रखकर उनके मुख पर लगाया। जब यीशु ने आम्लरस ग्रहण कर लिया तो कहा, 'पूर्ण हुआ' और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।

भाले से बेधा जाना

३१ यह परास्केव‡ का दिन था। इसलिए यहूदियों ने पिलातुस से निवेदन किया, 'उन लोगों की टांगें तोड़ दी जाएं और वे उतार लिए जाएं' जिससे सबत के दिन शरीर क्रूस पर न रहें, क्योंकि वह सबत का दिन एक प्रमुख ३२ दिन था। इसलिए सैनिक गए और उनके साथ क्रूसित पहले व्यक्ति की ३३ टांगें तोड़ीं और फिर दूसरे की; किंतु जब यीशु के पास आकर देखा कि ३४ वह पहिले ही प्राण त्याग चुके तो उनकी टांगें नहीं तोड़ीं। पर एक सैनिक न उनके पार्श्व में भाला मारा, और तत्काल उसमें से रक्त तथा जल ३५ प्रवाहित हुआ। जिसने यह देखा, उसने साक्षी दी है – उसकी साक्षी सच्ची है–वह जानता है कि सत्य बोल रहा है जिससे तुम भी विश्वास ३६ करो। यह इसलिए हुआ कि शास्त्र का वचन पूरा हो, 'उसकी कोई ३७ हड्डी न तोड़ी जाएगी'। पुन: शास्त्र का कथन है, 'जिसे उन्होंने बेधा है, उसे वे देखेंगे।'

यीशु का अभ्यंजन् और दफ़न

३८ इसके अनंतर अरमतियाह के यूसुफ ने, जो यहूदियों के भय के कारण यीशु के गुप्त शिष्य थे, पिलातुस से यीशु के शरीर को उतार लेने की आज्ञा मांगी। पिलातुस ने अनुमति दे दी। अस्तु वह आकर उनके शव ३९ को ले गए। निकोदिमुस भी जो पहले रात्रि के समय यीशु के पास आए

---

*पाठान्तर 'भाले'

‡ अर्थात् सबत से पूर्व तैयारी का दिन।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे, पचास सेर के लगभग गंध-रस एवं अगरु का मिश्रण लेकर आए। इन ४० लोगों ने यीशु का शव लिया, यहूदियों की गाड़ने की प्रथा के अनुसार उसे सुगंध लगाई और कफन में लपेटा। जहां यीशु क्रूसित किए गए थे, ४१ उस स्थान पर एक उद्यान था और उद्यान में एक नई कबर थी जिसमें कभी कोई शव नहीं रखा गया था। यहूदियों की तैयारी का दिन होने के ४२ कारण, और इसलिए कि वह कबर निकट थी, उन्होंने यीशु को वहां रखा।

समाधि रिक्त मिली

20 सप्ताह के प्रथम दिन, प्रातःकाल जब कि अंधेरा ही था, मरियम १ मगदलीनी कबर पर आईं और देखा कि कबर से पत्थर हटा हुआ है। इस पर वह दौड़ती हुई, शमौन पतरस और दूसरे शिष्य के पास २ गईं, जिसे यीशु प्रीति करते थे और कहा, 'वे कबर से प्रभु को उठा ले गए हैं और हम नहीं जानतीं कि उन्हें कहां रखा है।' तब पतरस और दूसरा ३ शिष्य दोनों निकले और कबर की ओर चले। वे दोनों साथ साथ दौड़े, ४ पर दूसरा शिष्य दौड़कर पतरस से आगे निकल गया और कबर पर पहिले पहुंचा। उसने झुककर देखा कि कफन पड़ा हुआ है, पर वह भीतर नहीं ५ गया। शमौन पतरस उसके पीछे पीछे पहुंचे, कबर में प्रविष्ट हुए और ६ वस्त्रों को पड़े देखा : परंतु वह अंगोछा जो उनके सिर पर बंधा था, वस्त्रों ७ के साथ नहीं था, वरन् पृथक् वैसा ही लिपटा रखा था। दूसरे शिष्य ने, ८ जो कबर पर पहिले पहुंचा था, भीतर जाकर देखा और विश्वास किया। क्योंकि तब तक वे शास्त्र का वचन नहीं समझे थे कि यीशु का मृतकों में से ९ जी उठना अनिवार्य है।

अस्तु, वे शिष्य अपने घर लौट गए। १०

मरियम मगदलीनी को दर्शन

पर मरियम कबर के पास बाहर रोती हुई खड़ी रहीं। रोते हुए ११ उन्होंने कबर में झांका तो दो स्वर्ग-दूतों को श्वेत वस्त्र पहने, और उस १२

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान पर, जहां पहले यीशु का शव रखा था, बैठे देखा—एक सिरहाने और
१३ दूसरा पैताने। वे बोले, 'महिला, तुम क्यों रोती हो?' उन्होंने उत्तर
दिया, 'वे मेरे प्रभु को उठाकर ले गए और मैं नहीं जानती कि उन्हें कहां
१४ रखा है।' यह कहकर वह पीछे मुड़ीं और यीशु को खड़ा देखा, पर न
१५ जाना कि वह यीशु हैं। यीशु ने उनसे कहा, 'हे महिला, तुम क्यों रो
रही हो? तुम किसे ढूंढ़ रही हो?' वह उनको माली समझ कर बोली,
'महोदय, यदि आप उन्हें ले गए हों तो बता दीजिए कि उन्हें कहां रखा
१६ है कि मैं उनको उठा ले जाऊं।' यीशु ने उनसे कहा, 'मरियम!' वह
१७ मुड़ीं और इब्रानी में बोलो, 'रब्बूनी' (अर्थात् हे गुरु)! यीशु ने कहा,
'मुझे स्पर्श मत करो क्योंकि मैंने अभी पिता के पास आरोहण नहीं किया
है, परंतु मेरे भाइयों के पास जाओ और उनसे कहो, कि मैं अपने पिता और
तुम्हारे पिता, अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा
१८ रहा हूं।' मरियम मगदलीनी ने जाकर शिष्यों से कहा, 'मैं ने प्रभु को
देखा है' और उन्हें प्रभु का संदेश दिया।

प्रेरितों को दर्शन

१९ सप्ताह के प्रथम दिन, सायंकाल को जब शिष्यों के द्वार, यहूदियों
के भय के कारण बंद थे, यीशु आए और उनके बीच खड़े होकर बोले,
'तुम्हें शांति मिले'; तथा यह कहकर अपने हाथ और पार्श्व उन्हें
२० दिखाए।' शिष्य प्रभु को देखकर आनंद विभोर हो गए। यीशु ने
२१ उनसे फिर कहा, 'तुम्हें शांति मिले। जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही
२२ मैं तुमको भेजता हूं।' यह कहकर उन्होंने उन पर श्वास फूंका और
२३ कहा, 'पवित्र आत्मा लो। जिनके पाप तुम क्षमा करो, वे क्षमा किए गए
और जिनके तुम रखो, वे रखो गए हैं।'

थोमा को दर्शन

२४ जब यीशु आए तो बारह में से एक अर्थात् थोमा, जो दिदुमुस भी
२५ कहलाते हैं, शिष्यों के साथ नहीं थे। अन्य शिष्यों ने उनसे कहा,

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हमने प्रभु को देखा है,' तो वह बोले, 'जब तक मैं उनके हाथों में कीलों के चिह्न न देखूं, और कीलों के स्थान में अपनी अंगुली न डालूं और उनके पार्श्व में अपना हाथ न डालूं, तब तक विश्वास नहीं करूंगा।'

आठ दिन के पश्चात् उनके शिष्य फिर घर में थे, और थोमा उनके साथ थे। द्वार बंद थे फिर भी यीशु आए और उनके बीच खड़े होकर बोले, 'तुमको शांति मिले।' तब उन्होंने थोमा से कहा, 'अपनी अंगुली यहां लाओ और मेरे हाथों को देखो, अपना हाथ लाओ और मेरे पार्श्व में डालो, और अविश्वासी नहीं वरन् विश्वासी बनो।' थोमा बोल उठे, 'मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर!' यीशु ने उनसे कहा, 'क्या तुमने इसलिए विश्वास किया है कि मुझे देखा है? धन्य हैं वे जिन्होंने मुझे कभी नहीं देखा और तो भी विश्वास किया है।' २६ २७ २८ २९

सुसमाचार लिखने का प्रयोजन

यीशु ने अन्य अनेक चिह्न अपने शिष्यों के संमुख दिखाए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। परंतु ये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर के पुत्र ख्रिस्त हैं, और विश्वास के द्वारा उनके नाम से जीवन प्राप्त करो। ३० ३१

समुद्र तट पर शिष्यों को दर्शन

21 इसके पश्चात् यीशु ने तिबिरियास सागर के तट पर पुनः अपने आपको शिष्यों पर प्रकट किया, और इस प्रकार प्रकट किया। शमौन पतरस, थोमा, जो दिदुमुस कहलाते हैं, नतनएल, जो गलील के काना के निवासी थे, जबदी के दो पुत्र, तथा अन्य शिष्य एकत्र थे। शमौन पतरस ने उनसे कहा, 'मैं मछली पकड़ने जाता हूं।' वे बोले, 'हम भी तुम्हारे साथ चलते हैं।' वे चल पड़े और नौका पर चढ़े, पर रात कुछ न पकड़ सके। प्रातः काल हो ही रहा था कि यीशु सागर तट पर खड़े थे, परंतु शिष्यों ने नहीं पहिचाना कि यीशु हैं। यीशु ने उनसे कहा, 'बालको, १ २ ३ ४ ५

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ क्या तुम्हारे पास खाने को कुछ है ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'नहीं।' वह बोले, 'नौका की दाहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे।' उन्होंने जाल
७ डाला और मछलियों की अधिकता के कारण उसे खींच न सके। तब वह शिष्य, जिसे यीशु प्रेम करते थे, पतरस से बोला, 'यह तो प्रभु हैं।' जब शमौन ने सुना कि प्रभु हैं तो उन्होंने अपना अंगरखा कस लिया, क्योंकि
८ वह वस्त्र नहीं पहने थे, और सागर में कूद पड़े। परंतु अन्य शिष्य नाव पर मछलियों से भरे जाल को खींचते आए, क्योंकि वे तट से अधिक दूर नहीं केवल दो सौ हाथ दूर थे।

९ जब वे भूमि पर आए तो उन्होंने कोयले की आग पर रखी हुई
१० मछली और रोटी देखी। यीशु ने उनसे कहा, 'जो मछलियां तुमने अभी
११ पकड़ी हैं उनमें से कुछ लाओ।' शमौन पतरस ने नौका पर चढ़कर एक सौ तिरपन बड़ी बड़ी मछलियों से भरा जाल तट पर खींचा; और
१२ इतनी मछलियां होने पर भी जाल न फटा। यीशु ने कहा, 'आओ, भोजन करो।' शिष्यों में से किसी को साहस न हुआ कि उनसे पूछे, 'आप कौन
१३ हैं ?' क्योंकि वे जानते थे कि वह प्रभु हैं। यीशु आए और रोटी लेकर
१४ उन्हें दीं और वैसे ही मछली भी। मृतकों में से जी उठने के पश्चात् यह तीसरी बार यीशु ने शिष्यों को दर्शन दिए।

पतरस को अन्तिम आदेश

१५ भोजन के उपरांत यीशु ने शमौन से कहा, 'शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तुम मुझे इनसे अधिक प्रेम करते हो ?' वह बोले, 'हां प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रीति करता हूं।' उन्होंने कहा, 'मेरे मेम्नों को
१६ चराओ।' उन्होंने दूसरी बार फिर कहा, 'शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तुम मुझ से प्रेम करते हो ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'हां प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रीति करता हूं।' वह बोले, 'मेरी भेड़ों की रखवाली
१७ करो।' उन्होंने तीसरी बार कहा, 'शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तुम मुझ से प्रीति करते हो ?' पतरस दुखी हुए कि उन्होंने तीसरी बार पूछा कि

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क्या तुम मुझसे प्रीति करते हो, और बोले, 'प्रभु आप सब कुछ जानते हैं। आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रीति करता हूं।' यीशु ने कहा, 'मेरी भेड़ों को चराओ। मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जब तुम युवा थे तो कमर १८ बांध कर जहां चाहते जाते थे; पर जब तुम वृद्ध होगे तो अपने हाथ फैलाओगे और कोई दूसरा, तुम्हारी कमर बांध कर, जहां तुम न चाहोगे, वहां तुम्हें ले जाएगा।' (ऐसा उन्होंने यह सूचित करने के लिए कहा १९ कि पतरस किस प्रकार की मृत्यु से परमेश्वर को महिमान्वित करेंगे।) इतना कह कर वह बोले, 'तुम मेरा अनुसरण करो।' पतरस ने मुड़कर २० उस शिष्य को अनुसरण करते देखा, जिसे यीशु प्रेम करते थे, और जिसने भोजन करते समय यीशु के वक्षस्थल पर झुक कर पूछा था, 'प्रभु, वह कौन है जो आपको पकड़वाएगा।' उसको आते देख कर पतरस यीशु से बोले, २१ 'प्रभु इसका क्या होगा?' यीशु ने कहा, 'यदि मेरी इच्छा हो कि वह मेरे २२ आने तक रहे, तो इससे तुम्हें क्या? तुम मेरा अनुसरण करो।' यह २३ बात भाइयों में फैल गई कि वह शिष्य कभी नहीं मरेगा, परंतु यीशु ने यह नहीं कहा था कि वह नहीं मरेगा वरन् यह कि 'यदि मेरी इच्छा हो कि वह मेरे आने तक बना रहे, तो तुम्हें क्या?'

उपसंहार

यही वह शिष्य है, जो उन बातों के विषय में साक्षी दे रहा है, और २४ जिसने इन बातों को लिखा है; और हम जानते हैं कि उसकी साक्षी सत्य है।

और भी अनेक कार्य हैं जो यीशु ने किए; यदि उनमें से प्रत्येक २५ लिखा जाता तो मैं मानता हूं कि जो पुस्तकें लिखी जातीं, वे संसार भर में नहीं समातीं।

———o———

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरितों के कार्य कलाप

प्रस्तावना

1 हे थियुफिलुस, मैंने अपने ग्रंथ के प्रथम भाग में उन सब बातों का वर्णन किया जो यीशु उस दिन तक करते और सिखाते रहे २ जब तक कि वह, अपने निर्वाचित शिष्यों को पवित्र आत्मा द्वारा आज्ञा ३ देने के पश्चात्, ऊपर न उठा लिए गए। उन्होंने अपने दु:ख-भोग के पश्चात् अनेक अकाट्य प्रमाणों से अपने आपको जीवित प्रदर्शित किया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दर्शन देते तथा परमेश्वर के राज्य के विषय में ४ वार्तालाप करते रहे। प्रेरितों के साथ भोजन करते समय* यीशु ने उन्हें आदेश दिया, 'यरूशलेम से बाहर न जाना, वरन् पिता की उस प्रतिज्ञा ५ के पूर्ण होने की प्रतीक्षा करना, जिसकी चर्चा तुमने मुझसे सुनी है; क्योंकि यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परंतु थोड़े ही दिन पश्चात् तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।'

स्वर्गारोहण

६ जब शिष्य एकत्रित हुए तो पूछने लगे, 'प्रभु, क्या आप इस समय ७ इस्राएल के लिए राज्य पुन:स्थापित करेंगे?' उन्होंने कहा, 'यह तुम्हारा काम नहीं कि उन निश्चित समय अथवा कालों को जानो जिन्हें पिता ने ८ अपने अधिकार में रखा है। परंतु जब पवित्र आत्मा तुमपर आएगा तो तुम सामर्थ्य प्राप्त करोगे और यरूशलेम में, समस्त यहूदिया में, ९ सामरिया में और पृथ्वी के सीमांत तक मेरे साक्षी होगे!' इतना कहने के पश्चात् वह उनके देखते देखते ऊपर उठा लिए गए और बादल ने उन्हें १० उनकी आंखों से ओझल कर दिया। जब यीशु के आरोहण के समय वे लोग आकाश की ओर टकटकी लगाकर देख रहे थे तो एकाएक उज्ज्वल

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*पाठांतर 'से मिलकर'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्त्रधारी दो पुरुष उनके पास आ खड़े हुए और बोले, 'गलीली पुरुषो, ११
तुम खड़े-खड़े आकाश की ओर क्यों देख रहे हो? यही यीशु जो तुम्हारे
पास से आकाश में उठा लिए गए हैं, इसी प्रकार आएंगे, जैसे तुमने
उनको आकाश में जाते देखा है।'

बारहवें प्रेरित की नियुक्ति

तब वे जैतून-कुंज नामक पर्वत से, जो यरुशलेम के समीप एक १२
सबत की यात्रा की दूरी पर है, यरूशलेम लौट आए। वहां पहुंचकर १३
वे उस ऊपरी कक्ष में गए जहां पतरस, यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास,
फ़िलिप्पुस, थोमा, बरतुल्मय, मत्ती, हलफई-पुत्र याकूब, शमौन जेलोतेस
और याकूब-पुत्र यहूदा ठहरे हुए थे। ये सब, कई स्त्रियों, यीशु की माता १४
मरियम तथा उनके भाइयों सहित, एक-चित्त प्रार्थना में लगे रहे।

इन्हीं दिनों पतरस ने भाइयों के बीच, अर्थात् कोई एक सौ बीस १५
व्यक्तियों के समुदाय में खड़े होकर कहा, 'भाइयो, यह अनिवार्य था कि १६
शास्त्र की भविष्यवाणी पूरी हो जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुंह से
यहूदा के विषय में कही थी, जो यीशु को पकड़वाने वालों का मार्ग-दर्शक
था। उसकी हमारे साथ गणना होती थी और वह इस सेवा में हमारा १७
साथी था। (किंतु उसने अपने अधर्म के धन से एक खेत मोल लिया, वह १८
मुंह के बल गिरा, उसका पेट फट गया और उसकी आंतें बाहर निकल
पड़ीं। यरुशलेम के सब निवासी यह जान गए; इस कारण उनकी १९
भाषा में उस खेत का नाम "हकलदमा" अर्थात् रक्त का खेत पड़ २०
गया है)। भजन संहिता का लेख भी है:

"उसका निवास निर्जन हो जाए,
उसमें बसने वाला कोई न बचे";
और
"उसका पद कोई दूसरा ग्रहण करे।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१-२२ इसलिए यह उचित है कि एक मनुष्य हमारे साथ पुनरुत्थान का साक्षी हो ; और वह उन मनुष्यों में से हो जो—यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर यीशु के स्वर्गारोहण के दिन तक जिन दिनों प्रभु यीशु हमारे बीच
२३ आते जाते रहे—सदा हमारे साथ रहे हैं।' इस पर उन्होंने दो व्यक्तियों को खड़ा किया, एक यूसुफ़, जो बरसबा कहलाते थे और जिनका उपनाम
२४ यूसतुस था, और दूसरे मतिय्याह। और उन्होंने प्रार्थना की, 'हे अंतर्यामी प्रभु, यह प्रकट कीजिए कि इन दोनों में से आपने किसे चुना है कि उस सेवा
२५ एवं प्रेरित—पद को ग्रहण करे, जिस से च्युत होकर यहूदा अपने स्थान
२६ को चला गया।' तब उन्होंने चिट्ठियां डालीं। चिट्ठी मतिय्याह के नाम पर निकली और वह ग्यारह प्रेरितों के साथ सम्मिलित किए गए।

पवित्र आत्मा का अवतरण

2 जब पिंतेकुस्त का दिन आया तो वे सब एक स्थान पर एकत्रित थे। एकाएक आकाश से एक बड़ी आंधी की सी सनसनाहट
३ का शब्द हुआ ; और उससे सारा घर, जहां वे बैठे थे, गूंज गया। उन्हें आग के सदृश जीभें विभाजित होती हुई दीख पड़ीं जो उनमें से प्रत्येक पर
४ आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, एवं आत्मा ने जैसी उन्हें वाणी दी, विभिन्न भाषाएं बोलने लगे।

५ आकाश के नीचे स्थित प्रत्येक देश के श्रद्धालु यहूदी यरुशलेम में रहते
६ थे। जब यह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई ; लोग घबरा गए क्योंकि प्रत्येक
७ ने उनको अपनी ही भाषा में बोलते सुना। वे सब चकित रह गए और विस्मित हो कहने लगे, 'देखो, ये जो बोल रहे हैं, क्या सब गलीली नहीं
८ हैं? तो फिर हममें से प्रत्येक अपनी अपनी भाषा कैसे सुन रहा है, पारथी,
९ मेदी, एलामी और मेसोपोतामिया, यहूदिया, कप्पदूकिया, पोंतुस, आसिया,
१० फ्रूगिया, पंफूलिया, मिस्र, कुरेने के निकटवर्ती लिबिया प्रांत के निवासी,
११ रोम के प्रवासी यहूदी तथा नवयहूदी, क्रेत और अरब के निवासी-हम अपनी अपनी भाषा में इनसे परमेश्वर के महान् कार्यों की चर्चा सुन रहे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं।' वे सब चकित रह गए और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे, 'इसके १२ क्या अर्थ?' परंतु दूसरों ने उपहास करते हुए कहा, 'ये तो नई मदिरा १३ पीकर मत्त हो रहे हैं।'

पिंतेकुस्त के दिन पतरस का भाषण

तब पतरस ने 'ग्यारह, के साथ खड़े होकर तथा लोगों को उच्च १४ स्वर में संबोधित कर इस प्रकार कहा, 'यहूदी भाइयो और सब यरुशलेम निवासियो, मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो। यह जान लो, कि जैसा तुम १५ मान रहे हो, ये लोग नशे में नहीं हैं; क्योंकि अभी तो पहर भर दिन ही चढ़ा है। परंतु यह वह बात है जो योएल नबी द्वारा कही गई: १६

"परमेश्वर का वचन है, अंतिम दिनों ऐसा होगा कि मैं अपना १७
आत्मा सब मनुष्यों पर उड़ेलूंगा,
तब तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियां नबूवत करेंगी,
तुम्हारे नवयुवक दिव्यदर्शन पाएंगे,
और तुम्हारे वृद्धजन स्वप्न-द्रष्टा होंगे।
मैं अपने दास और अपनी दासियों पर, १८
उन दिनों अपना आत्मा उड़ेलूंगा,
और वे नबूवत करेंगे।
मैं ऊपर आकाश में अद्‌भुत कार्य १९
और नीचे पृथ्वी पर चिह्न दिखाऊंगा–
अर्थात् रक्त, अग्नि एवं धूम्रमेघ।
प्रभु का महान् और महत्वपूर्ण दिवस आने से पूर्व २०
सूर्य अंधकारमय हो जाएगा
और चंद्रमा रक्तमय।
और जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार प्राप्त करेगा।" २१

'इस्राएली भाइयो, यह बात सुनो: परमेश्वर ने नासरत-निवासी २२ यीशु नामक पुरुष को सामर्थ्य के कार्यों, चमत्कारों और चिह्नों

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३ द्वारा तुम्हारे समक्ष प्रमाणित किया—जैसा कि तुम्हें ज्ञात है। वह परमेश्वर की निश्चित योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार पकड़वाए गए और तुमने
२४ विधर्मियों के हाथों उन्हें क्रूस पर चढ़ाया एवं मार डाला। परंतु परमेश्वर ने उनको मृत्यु की यंत्रणा से मुक्त कर जीवित कर दिया; यह असम्भव था कि वह मृत्यु के वश में रहें। दाऊद उनके विषय में कहते हैं,

"मैं प्रभु को सदा अपने संमुख देखता रहा,
क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर हैं
जिससे मैं विचलित न होऊं;
२६ इस कारण मेरा मन मुदित हुआ, एवं मेरी जिह्वा उल्लसित।
अब मेरा शरीर आशा में विश्राम प्राप्त करेगा,
२७ क्योंकि आप मेरे प्राण पाताल में नहीं छोड़ेंगे,
और न अपने पवित्र जन को विकृति का अनुभव होने देंगे।
२८ आपने मुझे जीवन का पथ बताया है,
आप अपने दर्शन द्वारा मुझे आनंद—विभोर करेंगे।"

२९ 'भाइयो, मैं तुमसे कुलपति दाऊद के विषय में निस्संकोच कह सकता हूं कि वह मर गए, गाड़े गए और उनकी कबर आज तक हमारे
३० यहां विद्यमान है। नबी होने के कारण वह जानते थे कि परमेश्वर ने उनसे शपथ खाई है कि तुम्हारे वंश में से एक व्यक्ति को तुम्हारे सिंहासन
३१ पर बैठाऊंगा। उन्होंने ख्रिस्त के पुनरुत्थान के विषय में पहले से ही जानकर कहा कि न तो वह पाताल में छोड़े गए और न उनका शरीर विकृति को
३२ प्राप्त हुआ। इन्हीं यीशु को परमेश्वर ने जीवित उठाया है; हम सब
३३ इसके साक्षी हैं। इस प्रकार उन्होंने परमेश्वर के दाहिने हाथ से उच्च* पद पाया और पिता से पवित्र आत्मा को, जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी,
३४ प्राप्त कर उसे उड़ेल दिया है जो तुम देख और सुन रहे हो। दाऊद स्वर्ग पर नहीं चढ़े क्योंकि उन्होंने तो स्वयं कहा है,

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*कुछ प्रतियों में 'दाहिनी ओर'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ,
जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न बनादूं।" ३५

इसलिए समस्त इस्राएल वंश निश्चित रूप से जान ले कि जिन यीशु को ३६ तुमने क्रूसित किया उन्हीं को परमेश्वर ने प्रभु और ख्रिस्त दोनों बना दिया है।'

यह सुन कर उनके हृदय विंध गए, और उन्होंने पतरस तथा अन्य ३७ प्रेरितों से पूछा, 'भाइयो, हम क्या करें?' पतरस ने उनसे कहा, 'हृदय- ३८ परिवर्तन करो और तुममें से प्रत्येक अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु ख्रिस्त के नाम से बपतिस्मा ले ; तो तुमको पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त होगा; क्योंकि यह प्रातिज्ञा तुम्हारे और तुम्हारी संतान के लिए ३९ है, और उन सब के लिए भी जो दूर हैं, और जिनको हमारे प्रभु परमेश्वर बुलाते हैं।' वह और भी बहुत सी बातों से साक्षी दे देकर उन्हें ४० प्रोत्साहित करते रहे कि वे अपने आपको उस भ्रष्ट पीढ़ी से बचाएं। जिन लोगों ने उनका उपदेश ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया और ४१ उस दिन लगभग तीन सहस्र व्यक्ति उनमें सम्मिलित हुए। वे ४२ प्रेरितों की शिक्षा, संगीत, रोटी को तोड़ने* एंव प्रार्थना में लवलीन रहने लगे।

ख्रिस्तीय समाज का धार्मिक जीवन

सब लोगों पर भय छाया हुआ था, और प्रेरितों द्वारा बहुत चमत्कार ४३ और चिह्न हुआ करते थे। सब विश्वासी एक साथ रहते थे और उनकी सब ४४ वस्तुएं साझे में थीं। वे अपनी चल और अचल संपत्ति बेच देते और जिसको ४५ जैसी आवश्यकता होती थी सब को बांट देते थे। प्रतिदिन वे मंदिर में एक ४६ भाव से उपस्थित होते, गृहों में रोटी को तोड़ते और आनंदमय, सरल हृदय से भोजन करते थे। वे परमेश्वर की स्तुति करते और जनता के प्रेमपात्र ४७ थे। प्रभु उद्धार प्राप्तकरने वालों को प्रतिदिन उनमें सम्मिलित करते थे।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*देखिए मत्ति २६ : २६

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंगड़े का स्वस्थ किया जाना

3 पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मंदिर में जा रहे थे, और इधर लोग जन्म के एक लंगड़े को ले जा रहे थे, जिसे वे प्रतिदिन मंदिर के 'सुंदर' नामक द्वार पर बैठा देते थे कि वह मंदिर
३ में जानेवालों से भिक्षा मांगे। जब उसने पतरस और यूहन्ना को देखा
४ कि मंदिर में प्रवेश करने को हैं तो उनसे भिक्षा मांगी। इस पर पतरस ने, और यूहन्ना ने भी एकटक दृष्टि से उसे देखा और कहा, 'हमारी ओर
५ देख।' वह उनसे कुछ पाने की आशा से उनकी ओर ताकने लगा।
६ पतरस ने कहा, 'मेरे पास चांदी और सोना तो हैं नहीं, परंतु जो कुछ मेरे पास हैं वह तुझे देता हूं; नासरत निवासी यीशु ख्रिस्त के नाम से
७ चल फिर। और उन्होंने दाहिना हाथ पकड़ कर उसको उठाया। तत्क्षण
८ उसके पावों और टखनों में बल आ गया। वह उछलकर खड़ा हो गया, चलने फिरने लगा, और चलता, उछलता एवं परमेश्वर की स्तुति
९ करता हुआ मंदिर में गया। सब लोगों ने उसे चलते फिरते और स्तुति
१० करते देखा तो पहिचान लिया कि यह वही है जो 'सुंदर' फाटक पर बैठकर भिक्षा मांगा करता था। उसमें घटित चमत्कार को देखकर वे चकित और स्तंभित रह गए।

मंदिर में पतरस का उपदेश

११ वह पतरस और यूहन्ना के साथ लगा था, इसलिए सारी विस्मित
१२ जनता सुलेमान नाम मंडप में उनकी ओर दौड़ पड़ी। यह देखकर पतरस ने जनता को संबोधित कर कहा, 'इस्राएली भाइयो, इस मनुष्य पर क्यों आश्चर्य करते हो, और क्यों हमारी ओर दृष्टि लगाए हो, मानो हमने
१३ अपनी सामर्थ्य और भक्ति से इसे चलता-फिरता कर दिया है? अब्राहाम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु को महिमान्वित किया है। उन्हें तुमने शत्रुओं के हाथ पकड़वा
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
दिया और पिलातुस के सामने अस्वीकार किया यद्यपि उसने उन्हें छोड़

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने का निश्चय कर लिया था। तुमने उस पवित्र और धर्मात्मा को १४ अस्वीकार किया ; एक हत्यारे को छोड़ने की मांग की, और जीवन १५ के अधिनायक की हत्या कर डाली। पर परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से जीवित कर दिया ; इसके हम साक्षी हैं। उन्हीं के नाम ने-उस विश्वास १६ के द्वारा जो उनके नाम पर है—इस व्यक्ति को, जिसे तुम देखते और जानते हो, बल प्रदान किया है; जो विश्वास यीशु* के द्वारा प्राप्त होता है, उसने तुम सबके सामने इसे पूर्ण स्वस्थ कर दिया है।

'अस्तु, भाइयो मैं जानता हूं कि तुमने और तुम्हारे नेताओं ने यह १७ काम अज्ञानता से किया। परमेश्वर ने सब नबियों के मुख से पहले ही १८ बता दिया था "मेरा खिस्त दुःख उठाएगा"; यह उन्होंने इस रीति से पूरा किया। अतः हृदय—परिवर्तन करो और लौट आओ कि तुम्हारे पाप १९ मिट जाएं, जिससे प्रभु की ओर से विश्रांति का समय प्राप्त हो और वह २० तुम्हारे लिए यीशु को, अर्थात् पूर्व निर्धारित खिस्त को, भेजें। यह आवश्यक २१ है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहें जब तक कि समस्त वस्तुओं की पुनः स्थापना न हो जाए, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने सदा अपने नबियों के मुख से की है। मूसा का कथन है, "जैसे प्रभु परमेश्वर ने मुझे उठाया वैसे ही २२ तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए एक नबी उठाएंगे। वह जो कुछ तुमसे कहे उस पर ध्यान देना। जो मनुष्य उस नबी की बातों पर ध्यान नहीं देगा, २३ वह इस प्रजा के बीच से नष्ट हो जाएगा।" सामुएल से लेकर उनके २४ पश्चात् आनेवालों तक सभी नबियों ने इन दिनों की घोषणा की है। तुम २५ नबियों की और उस व्यवस्थान की संतान हो जिसकी परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों के साथ अब्रहाम से यह कह कर स्थापना की कि, "तुम्हारे वंश द्वारा संसार की समस्त जातियां आशिष पाएंगी" परमेश्वर ने अपने २६ सेवक को जीवंत कर तुम्हारे पास भेजा कि तुम सबको दुष्कर्मों से विमुख करे और आशिष दे।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*अथवा, 'उस नाम'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिषद् में पतरस और यूहन्ना

4 जब वह लोगों से बोल ही रहे थे तो पुरोहित, मंदिर का नायक और सदूकी उनके पास आए। और झुंझलाने लगे कि वे लोगों को उपदेश दे रहे थे और यीशु का उदाहरण देकर मृतकों के पुनरुत्थान ३ का प्रचार कर रहे थे। उन्होंने प्रेरितों को पकड़ा और दूसरे दिन तक ४ के लिए कारागार में डाल दिया क्योंकि संध्या हो चली थी; परंतु जो लोग वचन सुन रहे थे, उनमें से बहुतों ने विश्वास किया और उन पुरुषों की संख्या लगभग पांच सहस्र हो गई।

५ दूसरे दिन प्रातःकाल उनके शासक, धर्मवृद्ध, शास्त्री, महापुरोहित ६ हन्ना, कैफा, यूहन्ना, सिकंदर और पुरोहित वंश के सब लोग यरूशलेम ७ में एकत्रित हुए, और उन्हें बीच में खड़ा कर पूछने लगे, 'तुम लोगों ने ८ किस सामर्थ्य से अथवा किस नाम से यह काम किया?' इस पर पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर कहा, 'प्रजा के शासको और धर्मवृद्धो, ९ यदि आज हमसे एक दुर्बल मनुष्य का उपकार करने के विषय में प्रश्न किया १० जाता है कि वह किस प्रकार स्वस्थ हुआ, तो आप सबको और इस्राएल की समस्त जनता को विदित हो कि जिनको आपने क्रूसित किया परंतु परमेश्वर ने मृतकों में से जीवित किया, उन नासरत निवासी यीशु के नाम ११ से यह मनुष्य आपके सामने स्वस्थ खड़ा है। यह "वही पत्थर है जिसे तुम भवन निर्माताओं ने निकृष्ट समझा, परंतु वह मेहराब की केन्द्रशिला १२ बना है।" किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि आकाश के नीचे मनुष्यों को कोई दूसरा नाम नहीं मिला जिसके द्वारा हम उद्धार प्राप्त कर सकें।'

१३ वे लोग पतरस और यूहन्ना की निर्भयता देखकर और यह जानकर कि वे अशिक्षित और साधारण मनुष्य हैं, चकित रह गए; फिर उनको १४ पहिचाना कि ये यीशु के साथ रहे हैं। पर उनके साथ उस स्वस्थ हुए मनुष्य १५ को देखकर वे विरोध में कुछ न कह सके। वे उनको परिषद् से बाहर जाने

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की आज्ञा देकर आपस में विचार करने लगे, 'हम इन मनुष्यों का क्या १६ करें? इनके द्वारा एक प्रत्यक्ष चमत्कार हुआ है-यह सब यरूशलेम निवासियों पर प्रकाशित है, और हम इसे अस्वीकार नहीं कर सकते। फिर भी १७ यह बात जनता में अधिक न फैले, इसलिए हम इन्हें धमकाएं कि ये यह नाम लेकर फिर किसी मनुष्य से चर्चा न करें?' तब उन लोगों को बुला- १८ कर उन्होंने चेतावनी दी कि यीशु का नाम लेकर न कोई चर्चा करें और न शिक्षा दें। इस पर पतरस और यूहन्ना ने उन्हें उत्तर दिया, 'आप ही १९ न्याय करें; परमेश्वर की दृष्टि में क्या यह उचित होगा कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर आप की बात मानें। यह तो हमसे नहीं हो २० सकता कि जो कुछ हमने देखा और सुना है, उसे न कहें।' तब उन्होंने २१ प्रेरितों को पुनः धमका कर छोड़ दिया क्योंकि जनता के कारण उन्हें दंड देने का कोई दांव नहीं मिला। सब लोग इस घटना के कारण परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे। इस चमत्कार द्वारा जिस व्यक्ति को स्वास्थ्य २२ लाभ हुआ था उसकी आयु चालीस वर्ष से अधिक थी।

पतरस और यूहन्ना का अपने साथियों के पास लौटना

वहाँ से छूटकर वे स्वजनों के पास आए और जो कुछ महापुरोहितों २३ और धर्मवृद्धों ने उनसे कहा था, कह सुनाया। उन्होंने यह सुनकर २४ समवेत स्वर में परमेश्वर की स्तुति की, 'हे स्वामी, आप ही आकाश, पृथ्वी और समुद्र तथा इनमें जो कुछ है, सबके सृष्टिकर्ता हैं। आपने पवित्र २५ आत्मा के द्वारा हमारे पूर्वज अपने सेवक दाऊद के मुख से कहा है,

"अन्य जातियां क्यों उद्धत बनीं?
और राष्ट्रों ने क्यों व्यर्थ बातों की कल्पना की?
प्रभु के विरोध में और उनके ख्रिस्त के विरोध में २६
पृथ्वी के राजा उठ खड़े हुए
और शासकगण एक स्थान पर एकत्रित हुए।"

'क्योंकि निस्संदेह आपके पवित्र सेवक यीशु के विरुद्ध, जिनका २७ अभिषेक आपने किया था, इस नगर में हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस,
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८ विजातियों और इस्राएल की जनता के साथ एकत्रित हुए, कि आपकी योजना एवं सामर्थ्य ने पहिले से जो कुछ निर्धारित किया था, उसे करें।
२९ अब, हे प्रभु, उनकी धमकियों को देखिए और अपने दासों को वरदान
३० दीजिए कि आपका वचन पूरी निर्भयता से सुनाएं; और स्वस्थ करने के लिए अपने हाथ बढ़ाइए कि आपके पवित्र सेवक यीशु के नाम द्वारा
३१ चिह्न एवं चमत्कार हों।' जब उन्होंने प्रार्थना की तो वह स्थान जहां वे एकत्र हुए थे हिल गया; वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए और परमेश्वर का वचन निर्भयता से सुनाने लगे।

शिष्यों का संयुक्त कोष

३२ विश्वासियों का वह समुदाय एक मन और एक प्राण था : उनमें कोई भी अपनी संपत्ति को अपना नहीं समझता था, वरन् उन की सब
३३ वस्तुएं साझे में थीं। प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से यीशु ख्रिस्त के पुनरुत्थान के संबंध में अपनी साक्षी देते थे और उन सब पर महान् अनुग्रह था।
३४ उनमें कोई भी दरिद्र नहीं था क्योंकि जिनके पास भूमि या घर थे, वे
३५ उनको बेच बेच कर बिकी हुई वस्तुओं का मूल्य लाते और उसे प्रेरितों के चरणों में रख देते थे, एवं वे प्रत्येक मनुष्य को उसकी आवश्यकतानुसार
३६ बांट देते थे। उदाहरण के लिए, कुप्रुस निवासी यूसुफ नामक एक लेवी के पास, जिसे प्रेरितों ने बरनबास अर्थात् सान्त्वना का पुत्र उपनाम
३७ दिया था, कुछ भूमि थी। उसे उसने बेचा, और मूल्य लाकर प्रेरितों के चरणों में रख दिया।

हनन्याह और सफ़ीरा

5 परंतु हनन्याह नामक एक पुरुष और उसकी पत्नी सफ़ीरा ने भी कुछ भूमि बेची। उसने अपनी पत्नी की सम्मति से मूल्य का कुछ अंश रख लिया और शेष भाग लाकर प्रेरितों के चरणों में
३ रखा। इस पर पतरस ने कहा, 'हनन्याह, शैतान ने तुम्हारे मन में यह बात क्यों डाली कि तुम पवित्र आत्मा से झूठ बोलो और भूमि के मूल्य का

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ अंश रख लो? जब वह भूमि तुम्हारे पास रही तो क्या तुम्हारी नहीं ४
थी? और जब वह बिक गई तो क्या उसका मूल्य तुम्हारे अधिकार में
नहीं था? तुम ने इस विचार को अपने मन में क्यों स्थान दिया? तुम
मनुष्य से नहीं, परमेश्वर से झूठ बोले हो।' ये शब्द सुनते ही हनन्याह ५
गिर पड़ा और उसके प्राण निकल गए। और सब सुनने वालों पर बड़ा
भय छा गया। कुछ नवयुवकों ने उठकर उसकी अर्थी बनाई और बाहर ६
ले जाकर उसे गाड़ दिया।

लगभग तीन घंटे पश्चात् उसकी पत्नी, जो इस घटना से अनभिज्ञ ७
थी, भीतर आई। पतरस ने उससे पूछा, 'मुझे बताओ, क्या तुम ने वह ८
भूमि इतने में ही वेची?' उसने कहा, 'हां इतने में ही।' पतरस ने ९
उससे कहा, 'यह क्या बात है कि तुम प्रभु के आत्मा की परीक्षा करने के
लिए एकमत हो गए? देखो तुम्हारे पति को गाड़नेवाले द्वार पर हैं, और
तुम्हें भी ले जाएंगे।' वह उसी क्षण उनके चरणों पर गिर पड़ी और प्राण १०
छोड़ दिए। नवयुवकों ने भीतर आकर उसे मृत पाया और बाहर ले जाकर
उसके पति के समीप गाड़ दिया। इससे सारी कलीसिया पर, और जितनों ११
ने सुना उन सब पर, बड़ा भय छा गया।

चिह्न और चमत्कार

प्रेरितों के द्वारा जनता में बहुत से चिह्न और चमत्कार हो रहे १२
थे। वे सब एक साथ सुलैमान के मंडप में एकत्र हुआ करते थे। दूसरे १३
लोगों में से किसी को उनमें मिलने का साहस नहीं होता था, फिर भी
जनता उनकी प्रशंसा करती थी। अस्तु, प्रभु पर विश्वास करनेवाले १४
स्त्री-पुरुषों की संख्या बढ़ती गई। सच तो यह है कि लोग रोगियों १५
को सार्वजनिक स्थानों पर लाकर खाटों और खटोलियों पर लिटा देते थे
कि जब पतरस आएं तो उनकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए।
यरूशलेम के आसपास के नगरों से भी बहुत लोग एकत्र हो रोगियों और १६
दुष्टात्माओं से पीड़ित व्यक्तियों को लाते, और वे सब स्वस्थ हो जाते थे।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिषद् में प्रेरित

१७ इस पर महापुरोहित और उनके सब साथी-अर्थात् स्थानीय सदूकी
१८ लोग-ईर्ष्यालु हो उठे। उन्होंने प्रेरितों को पकड़कर सार्वजनिक कारागार
१९ में डाल दिया। परंतु प्रभु के एक दूत ने रात को कारागार का द्वार खोला
२० और उन्हें बाहर लाकर कहा, 'जाओ, मंदिर में खड़े होकर जनता
२१ को इस जीवन के विषय में सब बातें सुनाओ।' यह सुनकर वे प्रभात होते ही मंदिर में गए और उपदेश देने लगे।

महापुरोहित और उनके साथी आए तो उन्होंने परिषद् एवं इस्राएल के सब धर्मवृद्धों को बुलवाया, और बंदीगृह में कहला भेजा कि प्रेरितों को
२२ लाया जाए। पर जब सेवक वहां पहुंचे तो कारागार में उनको नहीं पाया।
२३ उन्होंनेलौटकर समाचार दिया, 'हमने बंदीगृह को बड़ी सावधानी से बंद पाया और पहरेवालों को द्वारों पर खड़े देखा, परंतु खोलने पर भीतर कोई
२४ न मिला।' जब मंदिर के नायक और महापुरोहितों ने यह समाचार सुना
२५ तो वे चिंता में पड़ गए कि उनका क्या हुआ। इतने में किसी ने आकर उन्हें समाचार दिया, 'देखिए, जिन लोगों को आपने कारागार में डाल
२६ दिया था, वे मंदिर में खड़े जनता को उपदेश दे रहे हैं।' तब नायक कुछ सेवकों के साथ जाकर उन्हें ले आया, परंतु बलपूर्वक नहीं, क्योंकि वे जनता से डरते थे कि कहीं उन पर पत्थरों से प्रहार न करे।

२७ वे उनको ले आए और परिषद् के सामने खड़ा कर दिया।
२८ महापुरोहित ने उनसे पूछा, 'क्या हमने तुम्हें कड़ा आदेश नहीं दिया था कि इस नाम से शिक्षा न देना? पर तुमने सारा यरूशलेम अपनी शिक्षा से भर दिया है, और इस व्यक्ति की हत्या का दोष हमारे सिर पर मढ़ना
२९ चाहते हो।' इस पर पतरस और प्रेरितों ने उत्तर दिया, 'यह अनिवार्य
३० है कि हम मनुष्यों की अपेक्षा परमेश्वर की आज्ञा मानें। जिन यीशु को तुम लोगों ने क्रूस* पर लटका कर मार डाला, उनको हमारे पूर्वजों

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*अक्षरशः, 'काठ'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के परमेश्वर ने जीवित कर दिया है। परमेश्वर ने उनको अपने दाहिने ३१ हाथ से अधिनायक और उद्धारकर्त्ता का उच्च पद दिया कि वह इस्राएल को हृदयपरिवर्तन एवं पाप-क्षमा प्रदान करें। इन बातों के साक्षी हम ३२ हैं और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने अपनी आज्ञा मानने वालों को दिया है।'

यह सुनकर वे आग बबूला हो गए और उनको मार डालना चाहा ; ३३ परंतु गमलीएल नामक एक फ़रीसी ने, जो नियमशास्त्र के आचार्य और ३४ सारी जनता की श्रद्धा के पात्र थे, परिषद् में खड़े होकर प्रेरितों को थोड़ी देर के लिए बाहर कर देने की आज्ञा दी, और उन लोगों से कहा, 'हे ३५ इस्राएलियो, सावधान रहो कि तुम इन लोगों के साथ क्या करना चाहते हो। कुछ दिन पूर्व थियूदास ने सिर उठाया था। वह कहता था कि मैं भी ३६ कुछ हूं। कोई चार सौ मनुष्य उसके साथ हो लिए ; परंतु वह मारा गया और उसके माननेवाले सब लोग बिखर कर नष्ट हो गए। इसके ३७ अनंतर जनगणना के दिनों में गलील निवासी यहूदा ने सिर उठाया और अपने नेतृत्व में जनता को उत्तेजित किया; वह भी नष्ट हो गया और उसके माननेवाले बिखर गए। अतएव इस विषय में मेरा तुमसे कहना ३८ है कि इन लोगों से दूर ही रहो और इन्हें छोड़ो। यदि यह योजना या कार्य मनुष्यों की ओर से है तो नष्ट हो जाएगा, परंतु यदि परमेश्वर ३९ की ओर से है तो तुम इन्हें नष्ट नहीं कर सकोगे। यह भी सम्भव है कि तुम अपने आपको परमेश्वर का विरोधी पाओ।'

उन्होंने यह बात मान ली, प्रेरितों को बुलाकर पिटवाया, और ४० यह आदेश देकर छोड़ दिया कि वे यीशु के नाम से कुछ न कहें। वे परिषद् ४१ से आनंद मनाते हुए बाहर निकले कि उन्हें इस नाम के लिए अपमानित होने का गौरव मिला। वे प्रतिदिन मंदिर में और घर-घर जाकर निरंतर ४२ शिक्षा देते और प्रचार करते रहे कि यीशु ही खि्रस्त हैं।

सात सेवकों का निर्वाचन

6 उन दिनों जब शिष्यों की संख्या बढ़ रही थी, यूनानी- १ भाषी इब्रानी-भाषा-भाषियों पर कुड़कुड़ाने लगे कि दैनिक

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दान-वितरण के समय हमारी विधवाओं की उपेक्षा की जाती
२ है। इस पर बारह ने शिष्य-मंडली को बुलाकर कहा, 'यह शोभा नहीं देता कि हम परमेश्वर का वचनत्याग कर
३ खिलाने-पिलाने की सेवा में लगें। अतः भाइयो, अपने में से सात सच्चरित्र पुरुषों को ढूंढ़ निकालो जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण
४ हों। उन्हें हम इस कार्य पर नियुक्त कर देंगे, और स्वयं प्रार्थना में और
५ वचन की सेवा में लवलीन रहेंगे।' यह बात समस्त मंडली को अच्छी लगी और उन्होंने स्तिफनुस नामक व्यक्ति को, जो विश्वास तथा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे, तथा फिलिप्पुस, प्रुखुरुस, नीकानोर, तीमोन, पर-
६ मिनास और अंताकिया-निवासी नवयहूदी नीकुलाउस को चुनकर प्रेरितों के सामने उपस्थित किया; और उन्होंने प्रार्थना कर उन पर हाथ रखे।

७ परमेश्वर का वचन फैलता गया, शिष्यों की संख्या यरूशलेम में बढ़ती गई और बहुत से पुरोहितों ने इस विश्वास को स्वीकार कर लिया।

स्तिफनुस का विरोध

८ स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण हो जनता में
९ चमत्कार और बड़े बड़े चिह्न प्रदर्शित करने लगे। तब उस सभागृह के जो 'लिबर्तीन दल' का कहलाता है, और कुरेनिया, सिकंदरिया, किलकिया और आसिया के कुछ लोग उठ खड़े हुए और
१० स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे; किन्तु जिस बुद्धि और आत्मा
११ द्वारा वह बोल रहे थे उसका विरोध करने में वे असमर्थ रहे। तब उन लोगों ने कुछ व्यक्तियों को उत्तेजित किया जो कहने लगे, 'हमने इसे मूसा और परमेश्वर के लिए निंदापूर्ण शब्द कहते सुना
१२ है।' इस प्रकार जनता को, धर्मवृद्धों को एवं शास्त्रियों को भड़का कर वे चढ़ आए और आकर स्तिफनुस को पकड़ कर
१३ परिषद् में ले गए। वहां उन्होंने झूठे साक्षी खड़े किए, जो

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोले, 'यह मनुष्य निरंतर इस पवित्र स्थान एवं नियमशास्त्र के विरुद्ध बोलता है। हमने इसको कहते सुना है कि नासरत निवासी यीशु इस स्थान को ध्वस्थ, और मूसा प्रदत्त प्रथाओं को परिवर्तित कर देगा।' परिषद् में बैठे लोगों ने अपनी दृष्टि स्तिफनुस पर गड़ा दी; उस समय उनका मुख उन्हें स्वर्गदूत के सदृश दीख पड़ा। १४ १५

स्तिफनुस का भाषण

7 महापुरोहित ने पूछा, 'क्या ये बातें सच हैं?' स्तिफनुस ने कहा, 'बंधुओ और पितृगण, सुनिए। हमारे पूर्वज अब्रहाम हारान में निवास करने से पूर्व मिसुपुतामिया में थे। तेजोमय परमेश्वर ने उन्हें दर्शन दिए और कहा, "तुम अपने देश से और कुटुम्ब से निकलो और उस देश में चलो जो मैं तुमको दिखाऊंगा।" तब वह कसदियों के देश से निकल कर हारान में जा बसे। उनके पिता की मृत्यु के अनंतर परमेश्वर उनको हटाकर इस देश में लाए जहाँ तुम अब रहते हो। यहां उनको परमेश्वर ने भूमि पर अधिकार तो क्या, पैर रखने को स्थान तक न दिया, किंतु तो भी उनसे प्रतिज्ञा की कि मैं यह देश तुम्हारे, और तुम्हारे पश्चात् तुम्हारे वंश के, अधिकार में कर दूंगा—यद्यपि उस समय अब्रहाम के कोई पुत्र नहीं था। परमेश्वर ने उनसे इस प्रकार कहा, "तुम्हारे वंशज अन्य देश में प्रवास करेंगे, जहां के लोग उन्हें दास बनाएंगे और चार सौ वर्ष तक उन पर अत्याचार करेंगे।" फिर परमेश्वर ने कहा, "जिस जाति के वे दास होंगे उसे मैं दंड दूंगा। इसके पश्चात् वे बाहर निकल आएंगे और इस स्थान पर मेरी उपासना करेंगे।" उनके साथ परमेश्वर ने खतने का व्यवस्थान भी स्थापित किया। इस प्रकार अब्रहाम इसहाक के जन्मदाता बने और उनका आठवें दिन खतना किया। इसहाक से याकूब और याकूब से बारह कुलपति उत्पन्न हुए। १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

'इन कुलपतियों ने द्वेष के कारण यूसुफ को मिस्र में बेच दिया। ९
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
किंतु परमेश्वर उनके साथ थे, और सब विपत्तियों से उनका उद्धार करते १०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे, तथा उन्हें मिस्र के राजा फ़िरौन के समक्ष कृपापात्र और ज्ञानवान् बना दिया। फिरौन ने उन्हें मिस्र का और अपने संपूर्ण राजभवन का
११ अधिकारी नियुक्त किया। जब समस्त मिस्र और कनान देश में अकाल
१२ तथा संकट पड़ा और हमारे पूर्वजों को अन्न नहीं मिला तो याकूब ने यह
१३ सुनकर कि मिस्र में अन्न है, हमारे पूर्वजों को पहली बार वहां भेजा। दूसरी यात्रा में यूसुफ के भाइयों ने उन्हें पहिचान लिया, और फिरौन को भी यूसुफ
१४ के कुल का पता चल गया। तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब और अपने
१५ समस्त परिवार, अर्थात् पचहत्तर व्यक्तियों को बुला भेजा। याकूब मिस्र
१६ को गए। वहीं उनका देहांत हुआ और हमारे पूर्वजों का भी। वे शिकिम में लाए गए और उस कबर में रखे गए जिसे अब्रहाम ने धन देकर शिकिम के निवासी हमोरे की संतान से मोल लिया था।

१७ 'अस्तु, ज्यों ज्यों उस प्रतिज्ञा के पूर्ण होने का समय आता गया जिसकी घोषणा परमेश्वर ने अब्रहाम से की थी, मिस्र में लोग बढ़ते गए
१८ और उनकी संख्या बहुत हो गई। अंततः मिस्र में एक ऐसा राजा हुआ
१९ जो यूसुफ को नहीं जानता था। उसने हमारी जाति के साथ धूर्तता की एवं हमारे पूर्वजों पर अत्याचार कर उन्हें विवश किया कि अपने
२० बच्चे फेंक दिया करें जिससे वे जीवित न बचें। ऐसे समय मूसा का जन्म हुआ। वह परमेश्वर की दृष्टि में सुंदर थे। तीन महीने तक उनका
२१ पालन पोषण अपने पिता के घर हुआ; वहां से फेंके जाने पर फिरौन की पुत्री ने उन्हें गोद लिया और पुत्र समझकर उनका पालन
२२ किया। इस प्रकार मूसा को मिस्रियों की समस्त विद्या प्राप्त हुई, और वह बड़े वाक्पटु और कर्मठ निकले।

२३ 'जब वह चालीस वर्ष के हुए तो उनके मन में आया कि अपने
२४ इस्राएली भाइयों से भेंट करें। उनमें किसी व्यक्ति के साथ दुर्व्यवहार होते देखकर उन्होंने उसकी रक्षा की और मिस्रनिवासी को मार कर
२५ पीड़ित का प्रतिशोध लिया। उनका विचार था कि मेरे भाई समझ जाएंगे कि परमेश्वर मेरे हाथों उनका उद्धार करेगा, परंतु वे लोग न समझे।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन जब वे आपस में लड़ रहे थे तो मूसा वहां आ निकले और २६ उनमें शांति स्थापना का यत्न करते हुए कहा, "सज्जनो, आप लोग भाई-भाई हैं, एक दूसरे के साथ दुर्व्यवहार क्यों करते हैं ?" इस पर उसने २७ जो पड़ोसी पर अन्याय कर रहा था उनको एक ओर ढकेल दिया और बोला, "तुझे किसने हमारे ऊपर शासक और न्यायकर्त्ता नियुक्त किया हैं ? जिस तरह कल तूने उस मिस्री की हत्या कर डाली क्या उसी २८ तरह मेरी भी हत्या करना चाहता है ?" यह बात सुनकर मूसा वहां २९ से भाग निकले और मिद्यान देश में प्रवासी हुए। वहां उनके दो पुत्र हुए।

'जब पूरे चालीस वर्ष बीत गए तो सीना पर्वत के निर्जन प्रदेश ३० में प्रज्वलित झाड़ी की ज्वाला में, एक स्वर्गदूत ने उन्हें दर्शन दिए। यह ३१ दर्शन पाकर मूसा विस्मित हो गए और जब निरीक्षण के लिए निकट गए तो उन्हें प्रभु की वाणी सुनाई दी, "मैं तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर हूं— ३२ अब्रहाम का, इसहाक का और याकूब का परमेश्वर।" मूसा कांप उठे ; वह उस ओर देखने का साहस न कर सके। प्रभु ने उनसे कहा, "अपने ३३ पैरों के जूते उतार दो क्योंकि जिस भूमि पर तुम खड़े हो वह पवित्र भूमि है। मैंने मिस्र में अपनी प्रजा की दुर्दशा भली भांति देखी है, मैंने उनका ३४ क्रंदन सुना है और उनका उद्धार करने के निमित्त उतर आया हूं। अब तैयार हो, मैं तुम्हें मिस्र भेजूंगा।"

'जिन मूसा को उन्होंने यह कहकर अमान्य किया था कि तुझे किसने ३५ शासक और न्यायकर्त्ता नियुक्त किया, उन्हींको परमेश्वर ने—उस स्वर्गदूत के द्वारा जो उन्हें झाड़ी में दिखाई दिया था—शासक और उद्धारक बना कर भेजा। वह मिस्र देश में, लालसागर में एवं चालीस वर्ष तक निर्जन ३६ प्रदेश में चिह्न और चमत्कार दिखाकर उनको निकाल लाए। यह वही ३७ मूसा हैं जिन्होंने इस्राएलियों से कहा था, "परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए एक नबी उठाएंगे जैसे उन्होंने मुझे उठाया है।" यह ३८ वही हैं जो निर्जन प्रदेश की कलीसिया में उस स्वर्गदूत के साथ थे, जिसने सीना पर्वत पर उनसे वार्तालाप किया था, और हमारे पूर्वजों के साथ

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३९ भी थे। उन्हें जीवित दिव्यवाणी प्राप्त हुई कि तुमको प्रदान करें। परंतु हमारे पूर्वज उनकी बात नहीं सुनना चाहते थे, इसलिए उनको अमान्य
४० कर दिया, और अपना मन पुनः मिस्र की ओर गलाया। वे हारून से बोले, "हमारे लिए ऐसे देवता बनाओ जो हमारे आगे चलें ; क्योंकि उस मूसा का जो हमें मिस्र से निकाल कर लाया था, न जाने क्या हुआ ! "
४१ उन दिनों उन्होंने एक बछड़ा बनाया, उसकी मूर्त्ति के आगे बलिदान
४२ चढ़ाया, और अपने हाथों की कृति के लिए उत्सव मनाने लगे। इस पर परमेश्वर भी उनसे विमुख हो गए और उन्हें आकाश के तारागण पूजने को छोड़ दिया ; जैसा कि नबियों की पुस्तक में लेख है :

"हे इस्राएल वंश, क्या तूने चालीस वर्ष तक
मुझे पशु-बली और उपहार अर्पित किए !
४३ नहीं, तुम लोग तो मोलक के शिविर को,
और रिफ़ान देवता के तारे को
अर्थात् प्रतिमाओं को जो तुमने पूजने के लिए बनाई थीं,
अपने साथ लिए फिरे।
तुमको मैं बाबुल पार निर्वासित करूंगा। "

४४ 'साक्षी का शिविर निर्जन प्रदेश में हमारे पूर्वजों के साथ था—यह उस आदेश के अनुसार था जो वक्ता ने मूसा को दिया था, "जैसी आकृति
४५ तुमने देखी है उसी के अनुसार बनाना ! " जिस समय हमारे पूर्वजों ने अन्य जातियों पर अधिकार जमाया—जिनके पांव परमेश्वर ने उनके सामने उखाड़ दिए थे—उस समय वे यहोशू के नेतृत्व में, परंपरा से प्राप्त
४६ इस शिविर को लाए ; और दाऊद के दिनों तक ऐसा ही रहा। दाऊद पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया तो उन्होंने याकूब के वंश के लिए*
४७ मंदिर बनाने की स्वीकृती चाहि ; पर सुलेमान ही इस भवन का निर्माण
४८ कर सके। किंतु सर्वोच्च परमेश्वर मानव निर्मित भवनों में नहीं रहते, जैसा कि नबी ने कहा है,

---

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*कुछ प्रतियों में, 'याकब के परमेश्वर के लिए'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"स्वर्ग मेरा सिंहासन है, ४९
और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी।
प्रभु कहते हैं, तुम मेरे लिए कैसा घर बनाओगे?
मेरा विश्राम-स्थल कहां होगा?
क्या ये सब मेरे ही हाथ की कृतियां नहीं हैं?" ५०

'हठधर्मियो तथा मन और कान से खतना विहीन लोगो, तुमने ५१ सदा पवित्र आत्मा का विरोध किया है; जैसे तुम्हारे पूर्वज थे, वैसे ही ५२ तुम हो। तुम्हारे पूर्वजों ने किस नबी को नहीं सताया? उन्होंने धर्म-पुरुष के आगमन का संदेश देनेवालों की हत्या की थी; और अब तुम—जिन्हें ५३ स्वर्गदूतों की मध्यस्थता से नियम प्राप्त हुए, जिनका तुमने पालन नहीं किया—तुमने उन धर्म-पुरुष को पकड़वाया और उनकी हत्या के भागी बने।'

स्तिफनुस की मृत्यु

यह कथन सुनकर लोग आगबबूला हो उठे और उन पर दांत किट- ५४ किटाने लगे। पर स्तिफनुस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो स्वर्ग की ओर ५५ अपलक दृष्टि की और परमेश्वर की महिमा को, एवं यीशु को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़े देखा। वह बोल उठे, 'मैं स्वर्ग को अनावृत और ५६ मानवपुत्र को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़े देख रहा हूं।' इस पर ५७ लोग ऊंचे स्वर से चिल्लाए कान बंद कर एक साथ स्तिफनुस पर टूट पड़े और उनको नगर के बाहर निकाल कर पत्थर मारने लगे। साक्षियों ५८ ने अपने वस्त्र शाऊल नामक युवक के पैरों के पास रख दिए थे। लोग ५९ स्तिफनुस को पत्थर मारते रहे किंतु उन्होंने प्रार्थना की, 'प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कीजिए।' तब उन्होंने घुटने टेककर उच्च स्वर से कहा, ६० 'प्रभु यह पाप इन पर मत लगाइए।' और यह कहकर चिरनिद्रा में मग्न हो गए।

कलीसिया पर अत्याचार

८ शाऊल उनकी हत्या में सहमत था। उस दिन से यरुशलेम की १ कलीसिया पर घोर अत्याचार आरम्भ हुआ और प्रेरितों को

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़कर सब के सब यहूदिया और सामरिया प्रदेशों में बिखर गए।
२ श्रद्धालु लोगों ने स्तिफनुस को कबर में रखा और उनके लिए बहुत
३ विलाप किया। उधर शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था। वह घर घर में प्रवेश कर तथा पुरुष और स्त्रियों को खींचकर कारागार में डाल रहा था।

सामरिया में फिलिप्पुस का प्रचार कार्य

४ जो लोग बिखर गए थे, वे घूम घूमकर वचन का प्रचार करने लगे;
५ अस्तु, फिलिप्पुस ने सामरिया नगर में आकर ख्रिस्त का प्रचार आरंभ
६ किया। जब जनता ने फिलिप्पुस के वचन सुने और उनके द्वारा किए
७ गए चमत्कार देखे तो एक चित्त हो उनके कथन पर ध्यान दिया, क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं चिल्लाती हुई निकलीं और अनेक अर्धांगी तथा
८ लंगड़े स्वस्थ हो गए। इस प्रकार उस नगर में आनंद ही आनंद हो गया।

शमौन जादूगर

९ उस नगर में शमौन नामक एक व्यक्ति पहले से ही पहुंचा हुआ था। वह जादू के काम दिखाकर सामरिया की जनता को आश्चर्य-
१० चकित रखता था और अपने आपको कोई महान् पुरुष बताता था। सब लोग छोटे से बड़े तक उसका सम्मान करते थे और कहते थे कि यह मनुष्य
११ परमेश्वर की शक्ति है जो महाशक्ति कहलाती है। वे उसे बहुत मानते थ क्योंकि उसने बहुत दिनों से उन्हें जादू के काम दिखा-दिखा कर
१२ विस्मित कर रखा था। परंतु जब लोगों को फिलिप्पुस की बातों पर विश्वास हुआ, जो परमेश्वर के राज्य और यीशु ख्रिस्त के नाम के
१३ संबंध में प्रचार कर रहे थे, तो स्त्री-पुरुष बपतिस्मा लेने लगे; स्वयं शमौन को भी विश्वास हुआ और वह बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा। वह चमत्कार और महान् सामर्थ्य के कार्य होते देखकर चकित था।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामरिया में पतरस और यूहन्ना

जब यरूशलेम में प्रेरितों ने सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन स्वीकार कर लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। वे वहां गए और सामरियों के लिए प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं; क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर अवतरित नहीं हुआ था— उन्होंने तो ख्रिस्त यीशु के नाम पर केवल बपतिस्मा ही पाया था। अतः प्रेरितों ने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया। शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र* आत्मा मिलता है तो उनके पास रुपए लाकर बोला, 'मुझे भी यह शक्ति दीजिए कि जिस पर हाथ रखूं उसे पवित्र आत्मा प्राप्त हो।' पतरस ने उससे कहा, 'नाश हो तेरा, और तेरे रुपयों का कि तूने परमेश्वर का वरदान रुपयों से मोल लेना चाहा। इस विषय में न तेरा कुछ भाग है और न अधिकार‡ क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में तेरा हृदय शुद्ध नहीं है। अब अपनी इस नीचता पर पश्चात्ताप कर, और प्रभु से प्रार्थना कर कि यदि हो सके तो तेरे मन का दुर्विचार क्षमा किया जाए। मैं देख रहा हूं कि तू विष की गांठ† है और अधर्म के बंधन में जकड़ा हुआ है।' इस पर शमौन ने कहा, 'आप ही मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना कीजिए कि आपने जो कुछ कहा, वह मुझ पर घटित न हो।' १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४

जब वे साक्षी देकर प्रभु का वचन सुना चुके तो सामरिया के अनेक ग्रामों में सुसमाचार सुनाते हुए यरूशलेम लौट गए। २५

फिलिप्पुस और ईथियोपी कंचुकी

प्रभु के एक दूत ने फिलिप्पुस से कहा, 'उठो और दक्षिण की ओर यरूशलेम से गाजा जानेवाले मार्ग पर जाओ।' यह निर्जन प्रदेश में २६

---

* कुछ प्राचीन प्रतियों के यह शब्द नहीं पाया जाता

‡ अथवा, 'उत्तराधिकार'

† अक्षरशः, 'पित्त की कड़वाहट'

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७ हैं। वह उठकर चल पड़े। अब देखिए, ईथियोपिया-निवासी एक कंचुकी जो ईथियोपिया की रानी कंदाके का उच्च अधिकारी और कोपाध्यक्ष था,
२८ आराधना के लिए यरुशलेम आया था, और अब लौट रहा था। वह अपने रथ पर बैठा हुआ यशायाह नबी की पुस्तक का पाठ कर रहा था।
२९ पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, 'आगे बढ़ो और इस रथ के साथ
३० हो लो।' फिलिप्पुस उस ओर दौड़े और उसे यशायाह नबी का पाठ
३१ करते सुना। उन्होंने पूछा, 'जो पढ़ रहे हो उसे समझते भी हो?' उसने कहा, 'जब तक कोई मेरा पथ-प्रदर्शन न करे, मैं कैसे समझूं?' तब उसने
३२ फिलिप्पुस से अनुरोध किया कि ऊपर आकर उसके साथ बैठें। शास्त्र का अंश जिसे वह पढ़ रहा था यह है–

'जैसे भेड़ वध-स्थान को जाते समय,
और मेमना ऊन कतरनेवाले के संमुख
निःशब्द रहते हैं, वैसे ही उसने अपना मुंह नहीं खोला।
३३ उसकी दशा दीन थी, उसके साथ न्याय नहीं हुआ।
उसकी वंशावली का वर्णन कौन करेगा?
क्योंकि उसका जीवन पृथ्वी पर समाप्त किया जा रहा है।'

३४ कंचुकी ने फिलिप्पुस से पूछा, 'कृपाकर बताइए कि नबी ने यह किसके विषय में कहा है? अपने विषय में या किसी अन्य के विषय में?'
३५ तब फिलिप्पुस ने कहना आरम्भ किया, और शास्त्र के इसी पाठ से आरंभ
३६ कर यीशु का सुसमाचार सुनाया। चलते चलते मार्ग में वे ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां जल था। कंचुकी बोला, 'देखिए जल! अब मेरे
३७ बपतिस्मा लेने में क्या बाधा है?' फिलिप्पुस ने कहा, 'यदि तुम संपूर्ण हृदय से विश्वास करते हो तो अनुमति है।' उसने उत्तर दिया,
३८ 'मैं विश्वास करता हूं कि यीशु ख्रिस्त परमेश्वर के पुत्र हैं'* और आज्ञा दी कि रथ रोका जाए। फिलिप्पुस और कंचुकी दोनों जल में उतर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*कुछ प्राचीन प्रतियों में यह पद नहीं मिलता

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पड़े और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल से निकल कर ३६ ऊपर आए तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया। कंचुकी ने उन्हें फिर न देखा और आनंदमग्न हो अपना मार्ग लिया। उधर ४० फिलिप्पुस अशदोद में दीख पड़े तथा कैसरिया पहुंचने तक नगर-नगर में सुसमाचार सुनाते रहे।

शाऊल का हृदय-परिवर्तन

9 शाऊल अब तक प्रभु के शिष्यों को धमकाने और उनकी हत्या १ करने की धुन में था। वह महापुरोहित के समीप गया, और २ उससे दमिश्क के सभागृहों के नाम इस आशय के पत्र मांगे कि यदि इस पंथ के मानने वालों को पाए तो वे पुरुष हों या स्त्री, उन्हें बंदी कर यरूशलेम ले आए।

यात्रा करते हुए जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा तो आकाश से ३ एक ज्योति उसके चारों ओर सहसा चमक उठी। वह भूमि पर गिर पड़ा ४ और एक वाणी को अपने से यह कहते सुना, 'शाऊल, शाऊल, तुम मुझे क्यों सताते हो?' उसने कहा, 'प्रभु, आप कौन हैं?' उत्तर मिला, ५ 'मैं यीशु हूं, जिसे तुम सता रहे हो। फिर भी उठो और नगर में प्रवेश ६ करो। वहां तुम्हें बताया जाएगा कि तुम्हें क्या करना है।' उसके ७ सहयात्री अवाक् खड़े थे, क्योंकि उन्हें वाणी तो सुनाई दी, पर उन्होंने देखा किसी को नहीं। शाऊल भूमि से उठा, परंतु नेत्र खोलने पर उसे कुछ ८ दिखाई न दिया। तब लोग हाथ पकड़कर उसे दमिश्क को ले गए। तीन ६ दिन तक वह दृष्टिहीन रहा; और उसने कुछ खाया पिया नहीं।

दमिश्क नगर में शाऊल

दमिश्क में हनन्याह नामक एक शिष्य थे। प्रभु ने उन्हें दर्शन १० देकर कहा, 'हनन्याह!' उन्होंने उत्तर दिया, 'आज्ञा दीजिए, प्रभु!' प्रभु ने उनसे कहा, 'उठो, और 'सरला' नामक गली में जाकर यहूदा के ११ घर पर तरसुस निवासी शाऊल का पता लगाओ। वह प्रार्थना कर रहा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२ है, और उसे दर्शन हुआ है कि हनन्याह नामक एक व्यक्ति ने प्रविष्ट
१३ हो उस पर हाथ रखा है कि उसे पुनः दृष्टि प्राप्त हो जाए।' हनन्याह ने उत्तर दिया, 'प्रभु, मैं इस व्यक्ति के विषय में बहुतों से सुन चुका हूं कि
१४ उसने यरूशलेम में आपके संतों को कैसे कैसे कष्ट दिए हैं। उसको महापुरोहितों से अधिकार मिला है कि यहां जितने आपका नाम लेते हैं
१५ उन सबको बंदी बना ले।' प्रभु ने उनसे कहा, 'जाओ, वह मेरा निर्वाचित पात्र है। वह विजातियों, राजाओं और इस्राएलियों के सम्मुख मेरे नाम
१६ की घोषणा करेगा और मैं उसे बताऊंगा कि उसे मेरे नाम के लिए कितना
१७ कष्ट सहना है।' तब हनन्याह गए : और उन्होंने घर में प्रवेश कर तथा उन पर अपने हाथ रख कर कहा, 'भाई शाऊल, प्रभु ने, अर्थात् जिन्होंने मार्ग में आते समय तुमको दर्शन दिए थे उन यीशु ने, मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि तुम फिर दृष्टि प्राप्त करो और पवित्र आत्मा से
१८ परिपूर्ण हो जाओ।' तत्क्षण उनके नेत्रों से छिलके से गिरे और उन्हें पुनः
१९ दृष्टि प्राप्त हो गई। वह उठे और बपतिस्मा लिया। भोजन करने से उन्हें बल प्राप्त हुआ।

२० वह दमिश्क में शिष्यों के साथ कुछ दिन रहे, और शीघ्र ही
२१ सभागृहों में यीशु का प्रचार करने लगे कि वह परमेश्वर के पुत्र हैं। इससे सब सुननेवाले चकित हो गए और बोले, 'क्या यह वही व्यक्ति नहीं जो यरूशलेम में इस नाम की दुहाई देनेवालों को विनष्ट कर रहा था, और यहां भी इस अभिप्राय से आया था कि इनको बंदी बना कर महापुरोहितों
२२ के पास ले जाए?' पर इससे शाऊल को और भी बल मिला, और इस बात का प्रमाण देकर कि ख्रिस्त यही हैं, उन्होंने दमिश्क निवासी यहूदियों को निरुत्तर कर दिया।

२३ इस प्रकार अनेक दिन बीत गए। अब यहूदियों ने उनकी हत्या करने के लिए षड्यंत्र रचा, पर शाऊल को उनके षड्यंत्र का पता चल गया।
२४ लोग उनको मार डालने के लिए दिन-रात फाटकों पर पहरा देते रहे, और
२५ उधर शाऊल के शिष्यों ने उन्हें टोकरे में बैठा कर रात को चहार दीवारी से नीचे उतार दिया।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यरूशलेम और तरसुस में शाऊल

यरूशलेम पहुंचने पर उन्होंने शिष्यों में सम्मिलित हो जाने का प्रयत्न किया ; परंतु सब लोग उनसे डरते थे क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं होता था कि वह भी शिष्य बन गए हैं। तब बरनबास उनको प्रेरितों के पास ले गए और बताया कि पौलुस ने किस प्रकार मार्ग में प्रभु के दर्शन किए और प्रभु ने उनसे वार्तालाप किया, एवं किस प्रकार उन्होंने दमिश्क में निर्भयतापूर्वक यीशु के नाम का प्रचार किया। अब वह प्रेरितों के साथ यरूशलेम में आने-जाने और निर्भयतापूर्वक प्रभु के नाम का प्रचार करने लगे। वह यूनानी-भाषी यहूदियों से वार्तालाप और वाद-विवाद किया करते थे। वे लोग उनके प्राणों के ग्राहक हो गए : । जब भाइयों को इसका पता चला, तो वे उन्हें कैसरिया ले गए और तरसुस को भेज दिया। २६ २७ २८ २९ ३०

अस्तु, समस्त यहूदिया, गलील और सामरिया में कलीसिया को शांति प्राप्त थी। प्रभु के भय से उसका एवं उसके आचरण का निर्माण हो रहा था और पवित्र आत्मा की सहायता से उसकी वृद्धि हो रही थी। ३१

पतरस द्वारा लुद्दा में एक रोगी को स्वास्थ्यलाभ

पतरस सब स्थानों का पर्यटन करते हुए लुद्दा निवासी संतों के यहां पहुंचे। वहां उन्हें एनियास नामक व्यक्ति मिला जो अर्द्धांग रोग से पीड़ित था और आठ वर्ष से रोग शय्या पर पड़ा था। पतरस ने उससे कहा, 'एनियास, यीशु ख्रिस्त तुमको स्वस्थ कर रहे हैं। उठो और अपनी शय्या उठाओ।' वह उसी क्षण उठ बैठा। लुद्दा और शारोन के निवासियों ने यह देखा और उन्होंने प्रभु को स्वीकार किया। ३२ ३३ ३४ ३५

दोरकास

याफ़ा में तबीता अर्थात् दोरकास* नामक एक शिष्या रहती थी। वह पुण्य-कर्म और दान-धर्म में लगी रहती थी। उन दिनों वह रुग्ण हुई ३६ ३७

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अर्थात् हरिणी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मर गई ; लोगों ने उसे स्नान करा के अटारी में लिटा दिया।
३८ लुद्दा याफा के समीप है, अतएव जब शिष्यों ने सुना कि पतरस वहां हैं, तो दो आदमियों को भेजकर उनसे अनुरोध किया कि कृपाकर
३९ हमारे यहां आइए। पतरस उठे और उनके साथ चल पड़े। जब वहां पहुंचे तो लोग उन्हें उस अटारी पर ले गए। वहां सब विधवाएं रोती हुई उनके समीप आ खड़ी हुईं, और दोरकास ने उनके साथ रहते समय,
४० जो जो कुरते और कपड़े बनाए थे, उनको दिखाने लगीं। पतरस ने सबको बाहर निकाल दिया और घुटने टेक कर प्रार्थना की, एवं शव की ओर देखकर कहा, 'तबीता, उठो।' उसने आंखें खोल दीं और पतरस को
४१ देखकर उठ बैठी ! पतरस ने हाथ के सहारे उसे उठाया और संतों तथा विधवाओं को बुलाकर उसे जीती जागती उनके सामने उपस्थित कर दिया। यह बात समस्त याफा में फैल गई, और बहुतों ने प्रभु पर विश्वास किया।
४२ पतरस ने याफ़ा में शमौन नामक चर्मकार के यहां बहुत दिनों तक निवास किया।

पतरस और करनेलियुस

10 कैसरिया में करनेलियुस नामक एक व्यक्ति इतालियानी नाम सैन्यदल का शतपति था। वह धर्मपरायण था और समस्त परिवार सहित परमेश्वर का भय मानता था। वह प्रजा को बहुत दान
३ देता था और निरंतर परमेश्वर से प्रार्थना किया करता था। उसे दिन में लगभग तीसरे पहर* के समय स्पष्ट दर्शन हुआ कि
४ परमेश्वर का दूत उसके पास आकर कह रहा है ? 'करनेलियुस'। उसने उस पर दृष्टि गढ़ा दी और भयभीत होकर बोला, 'प्रभु, क्या है'? उसने कहा, 'तुम्हारी प्रार्थनाओं और दान का
५ स्मरण परमेश्वर के समक्ष हुआ है। अब, कुछ मनुष्यों को याफ़ा
६ भेज दो और शमौन ,उपनाम पतरस, को आमंत्रित करो। वह शमौन

---

* अक्षरशः, 'नवें घंटे'

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामक चर्मकार के यहां अतिथि हैं, जिसका घर समुद्र-तट पर है।' जब ७ वह स्वर्गदूत जिसने उससे बातें की थीं चला गया तो उसने दो सेवकों को ८ और अपने अनुचरों में से एक धर्मपरायण सैनिक को बुलाया, और उन्हें सब बातें समझाकर याफ़ा भेजा।

दूसरे दिन जब वे लोग यात्रा करते करते नगर के पास पहुंच रहे थे, ९ तो लगभग दोपहर* के समय, पतरस प्रार्थना करने के लिए कोठे पर गए। उन्हें भूख लगी और कुछ खाने की इच्छा हुई। लोगों के भोजन बनाते १० समय पतरस ध्यान-मग्न हो गए। उन्होंने देखा कि आकाश खुल गया है ११ और चारों कोनों से लटकती हुई लम्बी-चौड़ी चादर जैसी कोई वस्तु पृथ्वी पर उतर रही है, और उसमें सब प्रकार के पशु, रेंगनेवाले जीवजंतु १२ और आकाश के पक्षी विद्यमान हैं। उन्हें यह वाणी भी सुनाई पड़ी, १३ 'पतरस, उठो, मारो और खाओ।' पतरस ने कहा, 'नहीं, प्रभु, कदापि १४ नहीं, क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र और अशुद्ध वस्तु नहीं खाई।' इस १५ पर उन्हें दूसरी बार फिर वाणी सुनाई दी, 'जिसे परमेश्वर ने शुद्ध कहा है, उसे तुम अपवित्र मत कहो।' तीन बार ऐसा ही हुआ और तब वह वस्तु १६ तुरंत आकाश में उठा ली गई।

पतरस के हृदय में अभी असमंजस था कि जो दर्शन मुझे हुआ है १७ उसका क्या तात्पर्य हो सकता है कि उधर करनेलियुस के भेजे हुए मनुष्य शमौन का घर पूछते पूछते द्वार पर आ खड़े हुए, और उच्च स्वर में पूछने १८ लगे, 'क्या शमौन, उपनाम पतरस, यहीं ठहरे हैं?' पतरस अभी १९ उस दर्शन के विषय में विचार कर रहे थे कि आत्मा ने उनसे कहा, 'देखो, तीन मनुष्य तुम्हें ढूंढ़ रहे हैं। उठो, नीचे उतरो और निस्संशय उनके साथ २० चले जाओ क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा है।' तब पतरस उन लोगों २१ के पास नीचे जाकर बोले, 'जिसको तुम पूछ रहे हो, वह मैं ही हूं। तुम किस निमित्त यहां आए हो?' उन्होंने कहा, 'शतपति करनेलियुस एक २२

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*अक्षरशः 'छटे घंटे'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म परायण और परमेश्वर का भय मानने वाले व्यक्ति हैं ; समस्त यहूदी जाति उनका सम्मान करती है। उनको एक पवित्र दूत, से आज्ञा मिली २३ है कि आपको अपने घर आमंत्रित कर आपका उपदेश सुने।' तब पतरस उन लोगों को भीतर ले गए और उनका अतिथि-सत्कार किया।

दूसरे दिन वह उनके साथ चले तो याफ़ा से कुछ बंधु भी उनके २४ साथ हो लिए। अगले दिन वे कैसरिया पहुंच गए, जहां करनेलियुस अपने संबंधियों और अपने इष्ट मित्रों के साथ उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। २५ जब पतरस भीतर गए तो करनेलियुस उनसे मिला और उनके चरणों पर २६ गिरकर उन्हें प्रणाम किया। पतरस ने उसे उठाते हुए कहा, 'उठो, मैं २७ भी तो मनुष्य हूं।' वह वार्तालाप करते हुए भीतर गए और वहां बहुत २८ लोगों को एकत्रित देखकर उनसे कहा, 'तुम स्वयं जानते हो कि किसी यहूदी के लिए अन्य जाति के व्यक्ति से संपर्क रखना अथवा उसके घर जाना वर्जित है। परंतु परमेश्वर ने मुझ पर प्रकट किया कि किसी व्यक्ति को २९ अपवित्र या अशुद्ध न मानूं। अतः आमंत्रित किए जाने पर मैं बिना कुछ कहे चला आया हूं। अब मैं पूछता हूं कि तुमने मुझे किस कारण बुलाया ३० है?' करनेलियुस ने उत्तर दिया, 'चार दिन हुए, ठीक इसी समय जब मैं अपने घर में तीसरे पहर की प्रार्थना कर रहा था तोउज्ज्वल वस्त्र पहिने ३१ हुए एक मनुष्य मेरे संमुख आ खड़ा हुआ और बोला, "करनेलियुस, तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है और तुम्हारे दान का स्मरण परमेश्वर के समक्ष ३२ हुआ है। अतः किसी को याफा भेजकर शमौन उपनाम पतरस को आमंत्रित करो। वह समुद्र तट पर शमौन चर्मकार के घर अतिथि हैं।" ३३ मैंने उसी क्षण आपके पास आदमी भेजे और आपने बड़ी कृपा की कि आ गए। अब हम सब परमेश्वर के संमुख उपस्थित हैं कि जो कुछ परमेश्वर ने आपसे कहा है उसे सुनें।'

पतरस का भाषण

३४ पतरस ने इन शब्दों में उन्हें उपदेश दिया, 'अब मुझे स्पष्ट समझ
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
३५ में आया कि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करते, वरन् प्रत्येक जाति

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जो कोई उनसे भय मानता है और धर्म पर चलता है, उसे वह प्रिय जानते हैं। उन्होंने इस्राएलियों के पास वचन भेजा और उन्हें यीशु ख्रिस्त के ३६ द्वारा—वही सब के प्रभु हैं—शांति का सुसमाचार सुनाया ; तुमको वह ३७ कथा विदित ही है कि यूहन्ना के बपतिस्मा-प्रचार के पश्चात् गलील से लेकर समस्त यहूदिया में क्या-क्या हुआ : किस प्रकार नासरत निवासी यीशु को परमेश्वर ने पवित्र आत्मा एवं सामर्थ्य से अभिषिक्त किया, और ३८ किस प्रकार वह पर्यटन करते हुए शुभ कार्य करते और इबलीस के वशवर्ती सब लोगों को स्वस्थ करते रहे, क्योंकि परमेश्वर उनके साथ थे। उन्होंने ३९ जो कार्य यहूदिया देश और यरूशलेम में किए, उन सबके हम साक्षी हैं। लोगों ने उनको क्रूस* पर चढ़ा कर मार डाला; परंतु परमेश्वर ने ४० तीसरे दिन उनको जीवित किया और प्रकट दिखाया—सब को नहीं वरन् ४१ साक्षियों को जिनको परमेश्वर ने पहले से निर्वाचित कर लिया था, अर्थात् हम को, जिन्होंने उनके मृतकों में से जीवित होने के पश्चात् उनके साथ खाया पिया—और हमें आज्ञा दी कि जनता में प्रचार करो और स्पष्ट ४२ साक्षी दो कि यह वही हैं जिन्हें परमेश्वर ने जीवित एवं मृतकों का न्यायकर्त्ता नियुक्त किया है। इन्हीं के विषय में सब नबी साक्षी देते हैं ४३ कि जो कोई इन पर विश्वास करेगा उसे इनके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।'

विजातियों पर पवित्र आत्मा का अवतरण

पतरस अभी बोल ही रहे थे कि उन सब पर जो वचन सुन रहे ४४ थे, पवित्र आत्मा उतर आया। खतनेवाले विश्वासी, जो पतरस के साथ ४५ आए हुए थे, चकित रह गए कि पवित्र आत्मा की वर्षा विजातियों पर भी हुई। वे उन्हें भाषाएं बोलते और परमेश्वर की स्तुति करते सुन रहे ४६ थे! इस पर पतरस ने पूछा, 'जिन लोगों ने हमारे समान ही पवित्र ४७ आत्मा प्राप्त किया है, क्या उनके लिए कोई बपतिस्मा का जल रोक

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*अक्षरशः, 'काष्ठ'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४८ सकता हूं ?' और उन्होंने आदेश दिया कि वे यीशु ख्रिस्त के नाम से बपतिस्मा लें। इसके पश्चात् उन लोगों ने पतरस से निवेदन किया कि कुछ दिन उनके साथ निवास करें।

पतरस द्वारा अपने कार्य का स्पष्टीकरण

11 प्रेरितों ने और यहूदा निवासी बंधुओं से सुन लिया था कि विजातियों ने परमेश्वर का वचन स्वीकार कर लिया है। २ अतः जब पतरस यरूशलेम आए तो खतनेवालों ने उनकी आलोचना की ३ और कहा, 'तुम खतना विहीन व्यक्तियों के घर क्यों गए और उनके ४ साथ भोजन क्यों किया ?' इस पर पतरस क्रमपूर्वक सब घटनाएं उनके ५ संमुख वर्णन करने लगे : 'मैं याफा नगर में था और प्रार्थना कर रहा था। ध्यान-मग्न अवस्था में मैंने देखा कि चारों कोनों से लटकती हुई, लंबी-चौड़ी चादर जैसी कोई वस्तु आकाश से उतर रही है। वह मुझ तक आई। ६ जब मैंने ध्यान से देखा तो मुझे उसमें पृथ्वी के चौपाए, वन-पशु, रेंगनेवाले ७ जीवजंतु और आकाश के पक्षी दीख पड़े। मुझे यह वाणी भी सुनाई दी, ८ "पतरस, उठो, मारो और खाओ।" किंतु मैंने कहा, "नहीं प्रभु, मेरे मुंह में आज तक कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं गई है।" आकाश ९ वाणी ने दूसरी बार कहा, "जिसे परमेश्वर ने शुद्ध कहा है, उसे १० तुम अशुद्ध मत कहो।" तीन बार यही हुआ और तब सब कुछ आकाश ११ में उठ गया। ठीक उसी क्षण कैसरिया से मेरे पास भेजे गए तीन व्यक्ति १२ उस घर के सामने आ खड़े हुए जहां हम थे। आत्मा ने मुझे आदेश दिया कि निस्संशय होकर उनके साथ जाऊं। ये छह बंधु भी मेरे साथ गए और १३ हमने उस मनुष्य के घर में प्रवेश किया। उसने हमें बताया कि किस प्रकार उसने अपने घर में एक स्वर्गदूत खड़ा देखा जिसने कहा, "किसी को याफा १४ भेजकर शमौन उपनाम पतरस को आमंत्रित करो। वह तुम्हें उपदेश १५ देंगे जिससे तुमको सपरिवार उद्धार प्राप्त होगा।" मैंने बोलना आरंभ ही किया था कि पवित्र आत्मा, जैसे प्रारंभ में हम पर उतरा था, वैसे ही १६ उन पर उतर आया। उस समय मुझे प्रभु के वचन स्मरण हुए, "यूहन्ना

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परंतु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।" अस्तु, यदि परमेश्वर ने उनको भी वही वरदान दिया जो १७ हमें, जब हमने प्रभु यीशु ख्रिस्त पर विश्वास किया था, तो मैं कौन था, और मेरी क्या सामर्थ्य थी कि परमेश्वर को रोकता?' यह सुनकर वे १८ शांत हो गए और परमेश्वर की स्तुति करने लगे कि परमेश्वर ने विजातियों को भी हृदय परिवर्तन का वरदान दिया है कि वे जीवन प्राप्त करें।

विजातियों की प्रथम कलीसिया

स्तिफनुस को लेकर जो अत्याचार आरम्भ हुआ था उसके कारण १९ लोग बिखर गए और फीनीके, कुप्रुस तथा अंताकिया तक पहुंचे; परंतु वे यहूदियों के अतिरिक्त और किसी को सुसमाचार* नहीं सुनाया करते थे। किंतु उनमें से कुछ, कुप्रुस और कुरेन के निवासी, जब अंताकिया २० पहुंचे तो उन्होंने यूनानियों† को भी प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाया। प्रभु का हाथ उन पर था, अतः बहुत से लोग विश्वास कर प्रभु की ओर २१ फिरे। जब इनके विषय में यरूशलेम की कलीसिया के कानों तक समा- २२ चार पहुंचा, तो उन्होंने बरनबास को अंताकिया भेजा। वहां पहुच कर २३ उन्होंने परमेश्वर का अनुग्रह देखा तो अत्यंत प्रसन्न हुए, और सबको प्रोत्साहित किया कि तन-मन से प्रभु से संयुक्त रहें; क्योंकि वह सज्जन २४ थे और पवित्र आत्मा एवं विश्वास से परिपूर्ण थे। इसलिए बहुत से लोग प्रभु में आ मिले।' तब बरनबास शाऊल की खोज में तरसुस गए २५ और भेंट होने पर उन्हें अंताकिया ले आए। वे दोनों पूरे एक वर्ष २६ कलीसिया के साथ रहे और बहुत से लोगों को उपदेश दिया। अंताकिया में ही शिष्य पहिली बार ख्रिस्ती कहलाए।

यरूशलेम की कलीसिया को सहायता

उन दिनों यरूशलेम से कुछ नबी अंताकिया आए। उनमें से २७ अगबुस नामक नबी ने उठ कर पवित्र आत्मा की प्रेरणा से भविष्यवाणी २८

---

*अक्षरशः 'वचन'

†१ कुछ प्राचीन प्रतियों में, 'यूनानी भाषा भाषियों'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की कि समस्त संसार में भयंकर अकाल पड़ने वाला है। यह अकाल क्लौ-
२९ दियुस के शासनकाल में पड़ा। तब शिष्यों ने निश्चय किया कि प्रत्येक
अपनी सामर्थ्य के अनुसार यहूदिया निवासी भाइयों की सहायता के लिए
३० कुछ भेजे। उन्होंने ऐसा ही किया और बरनबास और शाऊल के हाथ
धर्मवृद्धों के पास सहायता भेजी।

हेरोदेस का अत्याचार : पतरस की कारागार से मुक्ति

12 इन्हीं दिनों राजा हेरोदेस ने कलीसिया के कई व्यक्तियों पर
अत्याचार करने के लिए हाथ उठाया। उसने यूहन्ना के भाई
३ याकूब को खड्ग से मरवा डाला, और यह देखकर कि इससे यहूदी प्रसन्न
हुए हैं, उसने पतरस को भी बंदी कर लिया। यह अखमीरी रोटियों के
४ समय हुआ। उनको पकड़कर उसने कारागार में डाल दिया और उनकी
रखवाली के लिए चार-चार सैनिकों के चार दल रख दिए। उसकी इच्छा
५ थी कि फसह के पश्चात् उन्हें जनता के समक्ष उपस्थित करे। पतरस
कारागार में बंद थे और इधर कलीसिया उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना
६ करने में लगी हुई थी। जब हेरोदेस उनको जनता के समक्ष लाने को था,
उस रात को पतरस दो हथकड़ियों से बंधे, दो सैनिकों के बीच सो रहे थे,
७ और प्रहरी कारागार के द्वार की रक्षा कर रहे थे। सहसा प्रभु का दूत
आ खड़ा हुआ और कोठरी प्रकाश से भर गई। उसने पतरस के पार्श्व को
थपथपा कर उन्हें जगाया और कहा, 'शीघ्र उठो।' इस पर उनकी
८ हथकड़ियां खुल कर गिर पड़ीं। तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'कमर बांधो
और अपनी चप्पल पहन लो।' पतरस ने वैसा ही किया। फिर वह उनसे
९ बोला, 'अपना वस्त्र पहन कर मेरे पीछे चले आओ।' वह उसके पीछे पीछे
बाहर आए; पर उन्हें निश्चय नहीं हो रहा था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर
रहा है, वह वास्तविक है। उन्होंने सोचा कि संभवतः वह कोई स्वप्न देख
१० रहे हैं। अस्तु, वह पहले और दूसरे प्रहरी को पार कर उस लौह-द्वार पर
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
पहुंचे जहां से नगर की ओर मार्ग जाता है। यह द्वार उनके लिए स्वतः

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खुल गया। वे बाहर निकल कर गली के छोर तक ही गए थे कि सहसा स्वर्गदूत उन्हें छोड़ कर चला गया। तब पतरस सचेत हुए और बोले, ११ 'अब मैंने सचमुच जान लिया कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के पंजे से छुड़ाया और यहूदियों कि सारी योजनाएं निष्फल कर दीं।'

वह परिस्थिति समझ कर यूहन्ना उपनाम मरकुस की माता के घर १२ आए। वहां बहुत से लोग एकत्रित होकर प्रार्थना कर रहे थे। जब १३ उन्होंने प्रवेश द्वार खटखटाया तो रुदे नाम की दासी देखने आई। पर १४ पतरस की वाणी सुन कर, उसने प्रसन्नता के मारे द्वार न खोला, वरन् दौड़ कर भीतर गई और कहने लगी कि पतरस द्वार पर हैं। लोगों १५ ने कहा, 'तू पगली है।' जब उसने दृढ़ता से कहा कि वह ठीक कह रही है तो वे बोले, 'उनका स्वर्गदूत होगा।' उधर पतरस खटखटाए ही जा १६ रहे थे। अतः लोगों ने द्वार खोला और उनको देखकर चकित रह गए। पतरस ने उन्हें हाथ से संकेत किया कि चुप रहें और बताया कि किस प्रकार १७ प्रभु उनको कारागार से बाहर ले आए। तब कहा, 'याकूब और भाइयों से ये बातें कह देना', और वहां से निकल कर किसी अन्य स्थान को चले गए।

प्रातःकाल हुआ तो सैनिकों में बड़ी खलबली मची कि पतरस का १८ क्या हुआ। हेरोदेस ने उनकी बहुत खोज की पर कोई पता न चला। १९ अस्तु, उसने प्रहरियों की जांच कर उन्हें प्राणदंड की आज्ञा दी। इसके अनंतर वह यहूदिया से कैसरिया जाकर रहने लगा।

हेरोदेस की मृत्यु

वह सूर और सैदा के निवासियों से अत्यन्त क्रुद्ध था। अतः वे २० सब एकमत हो उसके पास आए और राज-कंचुकी ब्लास्तुस को मिलाकर उससे संधि का प्रस्ताव किया, क्योंकि उनके देश का पालन-पोषण राजा के देश पर निर्भर था। नियत दिन आने पर हेरोदेस ने राजसी वस्त्र २१

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२ पहने और सिंहासन पर बैठकर उनके संमुख भाषण देने लगा। इस पर जनता पुकार उठी कि यह मनुष्य की वाणी नहीं, देवता की वाणी है।
२३ उसी क्षण प्रभु के दूत ने उस पर प्रहार किया क्योंकि उसने प्रभु को महिमान्वित नहीं किया था; और वह कीड़े पड़कर मरा।

२५ परंतु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया।

२५ उधर बरनबास और शाऊल अपना सेवाकार्य पूरा कर यरूशलेम से* लौटे और अपने साथ यूहन्ना उपनाम मरकुस को भी लेते आए।

अंताकिया की कलीसिया

13 अंताकिया की स्थानीय कलीसिया में कई नबी और उपदेशक थे : जैसे बरनबास, शमौन जो नीगर कहलाते थे, कुरेन निवासी
२ लूकियुस, राजा† हेरोदेस के साथ पालित मनाहेन और शाऊल। जब वे प्रभु की उपासना में लगे हुए थे और उपवास कर रहे थे तो पवित्र आत्मा ने कहा, 'मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस कार्य के
३ लिए पृथक् कर दो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।' तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना कर उन पर हाथ रखे और उन्हें विदा किया।

पौलुस की प्रथम प्रैरितिक यात्रा

४ पवित्र आत्मा द्वारा भेजे जाने पर वे सिलूकिया गए। वहां से उन्होंने
५ जलयान पर चढ़ कुप्रुस की यात्रा की और सलमीस पहुंच कर यहूदियों के सभागृहों में परमेश्वर का वचन सुनाया। यूहन्ना उनके अनुचर थे।
६ पूरे द्वीप की यात्रा कर वे पाफुस पहुंचे तो वहां उनकी भेंट बारयीशु
७ नामक जादूगर‡ से हुई जो यहूदी था और झूठा नबी था। वह प्रान्तपति सिरगियुस पौलुस के साथ रहता था जो एक विचारशील व्यक्ति थे

---

*कुछ प्राचीन प्रतियों में 'को'
†मूल में 'तित्रअर्खेस'
‡अक्षरशः 'मागस'। मत्ती २:१ पर टिप्पणी द्रष्टव्य है।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जिन्होंने बरनबास एवं शाऊल को बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनने की अभिलाषा प्रकट की थी ! पर इलीमास, जादूगर, ने—क्योंकि ८ यही उसके नाम का अर्थ है—इन लोगों का विरोध किया और प्रान्तपति को विश्वास करने से रोकना चाहा। तब शाऊल ने जो पौलुस भी कहलाते ९ हैं, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो और उसकी ओर टकटकी लगाकर कहा, 'हे सब कपट व धूर्तता की खान, शैतान की संतान, समस्त धार्मिकता के १० शत्रु, क्या तू परमेश्वर के सरल मार्गों को जटिल बनाना नहीं छोड़ेगा ? अच्छा तो देख, अब प्रभु का हाथ तेरे विरुद्ध उठा है, तू अंधा हो जाएगा ११ और कुछ काल तक सूर्य का प्रकाश नहीं देख सकेगा।' तत्क्षण उसकी दृष्टि के सामने धुंधलापन और अंधकार छा गया, और वह इधर उधर टटोलने लगा कि कोई उसका हाथ पकड़कर ले चले। प्रांतपति ने जब १२ यह घटना देखी तो प्रभु की शिक्षाओं पर चकित हो विश्वास किया।

पिसीदिया के यहूदियों के मध्य पौलुस का उपदेश

पौलुस और उनके साथी जलमार्ग द्वारा पाफुस से पंफुलिया १३ के पिरगा आए ; यूहन्ना उनको वहां छोड़कर यरुशलेम लौट गए। ये १४ पिरगा से चलकर पिसीदिया के अंताकिया में आए और सबत के दिन सभागृह में जाकर बैठ गए। नियमशास्त्र और नबियों की पुस्तकों से पाठ १५ पढ़े जाने के पश्चात् सभागृह के अधिकारियों ने उनको कहलाया, 'बंधुओ यदि आप जनता के प्रोत्साहन के लिए कुछ कहना चाहते हैं तो कहिए।' इस पर पौलुस उठे और हाथ से उन्हें चुप रहने का संकेत १६ कर कहने लगे, 'इस्राएली भाइयो और परमेश्वर का भय माननेवाले सज्जनो, सुनो। इस्राएली प्रजा के परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को चुना १७ और मिस्र के प्रवास में इस प्रजा की उन्नति की। "वह अपने भुजबल के द्वारा उनको वहां से निकाल लाए" तथा चालीस वर्ष तक मरुभूमि १८ में उनका व्यवहार सहन किया* तब उन्होंने कनान देश में सात जातियों १९

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*कुछ प्राचीन प्रतियों में. 'उनकी देखभाल की'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विनाश कर कोई चार सौ पचास वर्ष तक वह भूमि उनके अधिकार
२० में रहने दी। इसके पश्चात् उन्होंने सामुएल नबी के समय तक उन्हें
२१ न्यायकर्त्ता प्रदान किए। तब लोगों ने राजा की मांग की। और परमेश्वर
ने बिनयामीन-गोत्र-उत्पन्न, कीश-पुत्र शाऊल को नियुक्त किया जो
२२ चालीस वर्ष तक उनके राजा रहे। फिर उन्हें हटाकर दाऊद को उन लोगों
का राजा बनाया तथा उनके विषय में साक्षी दी, "मुझे एक मनुष्य, यिशै
का पुत्र दाऊद, मिल गया वह मेरे मन के अनुकूल हैं, वह मेरी सब
२३ इच्छाएं पूरी करेगा।" उन्हीं के वंश में परमेश्वर ने प्रतिज्ञानुसार इस्राएल
२४ के लिए एक उद्धारकर्त्ता को अर्थात् यीशु को नियुक्त किया है। इनके
आगमन से यूहन्ना ने इस्राएल की समस्त प्रजा के निमित्त हृदय-परिवर्तन
२५ के बपतिस्मा का प्रचार किया। जब यूहन्ना अपना जीवन-कार्य समाप्त
करने को थे तो उन्होंने कहा था, "जो तुम मुझे समझ रहे हो, वह मैं नहीं
हूं। जो मेरे पीछे आ रहे हैं, मैं उनके पैरों के जूते तक खोलने के योग्य
नहीं हूं।"

२६ बंधुओ, अब्रहाम के वंशजो, एवं तुम जो परमेश्वर का भय मानते हो,
सुनो, उद्धार का यह संदेश हम लोगों के लिए भेजा गया है।
२७ यरूशलेम के निवासियों और उनके नेताओं ने यीशु को नहीं पहिचाना
और उन्हें दंडाज्ञा देकर नबियों की वह वाणी पूर्ण की जिसका पाठ
२८ प्रत्येक सबत के दिन किया जाता है। उन्होंने प्राणदंड के योग्य कोई
दोष उनमें नहीं पाया, तो भी पिलातुस से मांग की कि वह मारडाले
२९ जाएं। जब उनके विषय में शास्त्र के लेखानुसार सब बातें उन्होंने पूरी
३० कर दीं तो उन्हें क्रूस से उतार कर कबर में रखा। परंतु परमेश्वर ने
३१ उनको मृतकों में से जीवित कर दिया और वह* बहुत दिनों तक
उन लोगों को, जो उनके साथ गलील से यरूशलेम आए थे, दर्शन देते रहे।
३२ यही लोग अब जनता के सामने उनके साक्षी हैं। हम लोग यह

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*अर्थात् यीशु

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सुसमाचार तुमको सुनाते हैं कि परमेश्वर ने यीशु को जीवित किया है
और इस प्रकार हमारे पूर्वजों से की गई प्रतिज्ञा को हमारी संतानों ३३
के लिए* पूरा किया है। जैसा कि द्वितीय भजन में उल्लेख है,

"तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे जन्म दिया है।"

इस बात के प्रमाण में कि परमेश्वर ने उनको मृतकों में से उठाया कि ३४
उनकी विकृति कभी न हो, उनका कथन है,

"मैं दाऊद की पवित्र और अटल आशिष तुमको दूंगा।"

इसी कारण उन्होंने अन्यत्र कहा है, ३५

"तुम अपने पवित्र जन को विकृति का अनुभव नहीं होने दोगे।"

दाऊद तो अपने युग में परमेश्वर का उद्देश्य पूरा कर चिरनिद्रा में ३६
मग्न हो गए, अपने पूर्वजों के साथ गाड़े गए और विकृति को प्राप्त हुए;
परन्तु जिन्हें परमेश्वर ने जीवित किया, उन्होंने विकृति का अनुभव नहीं ३७
किया ; इसलिए बंधुओ, तुम्हें विदित हो कि इन्हीं के द्वारा पापों की ३८
क्षमा का संदेश सुनाया जा रहा है। मूसा का नियमशास्त्र जिन बातों ३९
से तुम्हें विमुक्त न कर सका, उनसे यीशु के द्वारा प्रत्येक विश्वासी को
विमुक्ति प्राप्त है। इसलिए सावधान, कहीं नबियों का यह कथन तुम पर ४०
चरितार्थ न हो :

"हे निंदकवृन्द देखो, चकित हो, और विनष्ट हो जाओ ; ४१
क्योंकि मैं तुम्हारे समय में वह कार्य कर रहा हूं
जिसे यदि कोई तुम्हें बताए, तो तुम उस पर विश्वास नहीं
करोगे।"

उनके विदा होते समय लोगों ने उनसे अनुरोध किया कि अगले ४२
सबत को ये बातें उन्हें फिर सुनाएं। जब सभा विसर्जित हो गई तो ४३
बहुत से यहूदियों और धर्मपरायण नवयहूदियों ने पौलुस और बरनबास
का अनुसरण किया, जो उनसे बातें करने और उन्हें समझाने लगे कि
परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहें।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*कुछ प्राचीन प्रतियों में, 'उनकी संतान, अर्थात् हमारे लिए'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजातियों में पौलुस द्वारा प्रचार का आरम्भ

४४ आगामी सबत को परमेश्वर का वचन सुनने के लिए लगभग ४५ सारा नगर उमड़ पड़ा। इस भीड़ को देखकर यहूदियों को बड़ी ईर्ष्या हुई और वे पौलुस की तीव्र निंदा और उनके कथन का विरोध करने ४६ लगे। इस पर पौलुस और बरनवास ने निर्भय होकर कहा, 'यह अनिवार्य था कि परमेश्वर का वचन प्रथम तुम्हें सुनाया जाए; परंतु जब तुम उसकी अवहेलना करते और अपने आपको शाश्वत जीवन के अयोग्य ४७ मानते हो, तो हम विजातियों की ओर फिरते हैं; क्योंकि प्रभु ने हमे ऐसी ही आज्ञा दी है :

"मैंने तुमको विजातियों के लिए प्रकाश नियुक्त किया है
कि तुम पृथ्वी की अंतिम सीमा तक उद्धार का संदेश दो।"

४८ यह सुनकर विजातीय लोग आनंदित हुए और प्रभु के वचन की प्रशंसा करने लगे, एवं जो शाश्वत जीवन के लिए नियुक्त हुए थे, उन्होंने ४९ विश्वास किया! प्रभु का वचन सारे देश में फैल गया। परंतु ५० यहूदियों ने प्रतिष्ठित धर्मपरायण महिलाओं को और नगर के नेताओं को उकसाया और पौलुस और बरनवास के विरुद्ध उपद्रव खड़ा कर उनको ५१ अपनी सीमा से निकाल दिया। वे भी उनके विरोध में पैरों की धूल ५२ झाड़कर इकुनियुम चले गए। और शिष्यगण आनंद एवं पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे।

इकुनियुम में पौलुस और बरनवास

14 इसी प्रकार इकुनियुम में उन्होंने यहूदियों के सभागृह में प्रवेश किया और इस प्रकार बोले कि यहूदियों और यूनानियों के एक बड़े समुदाय ने विश्वास किया। किन्तु २ जिन यहूदियों ने विश्वास नहीं किया था, उन्होंने विजातियों को उकसाया और भाइयों के विरुद्ध उनका मन बिगाड़ दिया। ३ बहुत दिनों तक वे वहीं रहे और निर्भयता पूर्वक प्रभु का प्रचार

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते रहे। प्रभु ने भी उनके हाथों चिह्न और चमत्कार दिखाकर अपने अनुग्रहमय वचन को प्रमाणित किया। अब नगर की जनता में फूट पड़ ४ गई—कुछ लोग यहूदियों के साथ हो गए और कुछ प्रेरितों के। जब ५ विजातियों और यहूदियों ने अपने नेताओं के साथ मिलकर उन्हें अपमानित करने और पत्थरों से मार डालने का प्रयत्न किया, तो वे ६ परिस्थिति समझ कर लुकाउनियां के नगरों लुस्त्रा और दिरबे, एवं उनके आसपास के प्रदेश की ओर भाग गए "और वहां सुसमाचार सुनाने ७ लगे।

लुस्त्रा में

लुस्त्रा में एक मनुष्य पैरों से असमर्थ होने के कारण बैठा था; ८ वह जन्म से लंगड़ा था और कभी नहीं चला था। वह पौलुस के वचन ९ सुन रहा था। उन्होंने उसकी ओर एकटक दृष्टि की और यह देखकर कि उसे स्वस्थ होने का विश्वास है, उच्च स्वर से कहा, 'अपने पैरों पर १० सीधा खड़ा हो।' वह उछल पड़ा और चलने लगा। पौलुस का यह ११ कार्य देखकर जनसमूह लुकाउनियां की भाषा में कोलाहल करने लगा, 'देवतागण मनुष्यों का रूप धारण कर हमारे बीच उतर आए हैं!' उन्होंने बरनबास को ज्यूस कहा, और पौलुस को हिरमेस क्योंकि वह १२ प्रमुख वक्ता थे। ज्यूस का पुजारी भी, जिसका मंदिर नगर के सामने था, १३ भारी जनसमूह के साथ बलिदान चढ़ाने के लिए बैलों और पुष्पमालाओं को लेकर फाटक पर आ पहुंचा। परंतु जब प्रेरितों ने, अर्थात् बरनबास १४ और पौलुस ने, यह सुना तो अपने वस्त्र फाड़े, भीड़ में कूद पड़े और उच्च स्वर में कहने लगे, 'तुम लोग यह क्या कर रहे हो? हम भी तो तुम्हारे १५ सदृश दुख-सुख भोगनेवाले मनुष्य हैं। हम तुम्हें सुसमाचार देते हैं कि इन निस्सार वस्तुओं* से विमुख होकर जीवंत परमेश्वर पर विश्वास करो जो आकाश, पृथ्वी, समुद्र एवं जो कुछ उनमें है, सबके रचयिता हैं। उन्होंने १६

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*अथवा, 'मूर्तियों'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीते युगों में सब जातियों को अपने अपने पंथ के अनुसार चलने दिया
१७ और फिर भी अपने को साक्षी-विहीन नहीं छोड़ा, क्योंकि वह आकाश से वृष्टि एवं फलवती ऋतुएं प्रदान कर और तुमको भोजन एवं मानसिक
१८ आनंद से तृप्त कर, तुम्हारा उपकार करते रहे।' यह कहकर उन्होंने जनसमूह को बड़ी कठिनाई से रोका कि उनके लिए बलिदान न चढ़ाए।

१९ पर अंताकिया और इकुनियुम से यहूदी आ पहुंचे। उन्होंने जनता को अपने पक्ष में कर पौलुस पर पत्थरों से प्रहार किया तथा उन्हें मृतक
२० समझकर नगर के बाहर खींच ले गए। जब शिष्य उनके चारों ओर एकत्रित हुए तो पौलुस उठे नगर में गए और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे चल दिए।

अंताकिया को लौटना

२१ उन्होंने उस नगर में सुसमाचार सुनाया और अनेक शिष्य बनाकर
२२ लुस्त्र, इकुनियुम और अंताकिया की ओर लौटे। वे शिष्यों के मन सुदृढ़ करते और उन्हें विश्वास में स्थिर रहने को प्रोत्साहित करते थे, और कहते थे कि हमको बहुत संकटों में होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश
२३ करना है। उन्होंने प्रत्येक कलीसिया में धर्मवृद्ध नियुक्त किए और प्रार्थना एवं उपवास कर उन्हें प्रभु को, जिन पर उन्होंने विश्वास किया था, समर्पित किया।

२४ तब वे पिसिदिया से होते हुए पंफूलिया पहुंचे, और पिरगा में
२५ सुसमाचार सुनाकर अत्तालिया में आए। वहां से वे जलमार्ग द्वारा
२६ अंताकिया पहुंचे, जहां उन्हें उस कार्य के लिए परमेश्वर के अनुग्रह को
२७ अर्पण किया गया था जो उन्होंने अब पूरा कर दिया था। वहां पहुंच कर उन्होंने कलीसिया को एकत्रित किया और बताया कि परमेश्वर ने उनका साथ देकर कैसे कैसे महान् कार्य किए और किस प्रकार विजातियों
२८ के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया। वहां वे शिष्यों के साथ बहुत दिन तक रहे।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजातीय ख्रिस्ती और मूसा की व्यवस्था

15 अब कुछ लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे कि यदि मूसा की प्रथा के अनुसार तुम्हारा खतना नहीं होता तो तुम्हारा उद्धार भी नहीं हो सकता। उनका पौलुस और बरनबास के साथ बहुत झगड़ा और वाद विवाद हुआ तो यह निश्चय हुआ कि पौलुस, बरनबास और उनमें से कई व्यक्ति इस प्रश्न के निर्णय के लिए यरूशलेम में प्रेरितों और धर्मवृद्धों के पास जाएं। कलीसिया उन्हें कुछ दूर तक पहुंचाने गई। उन्होंने फीनीके और सामरिया में होकर यात्रा की और वहां सब बंधुगण को विजातियों के धर्म-परिवर्तन का विवरण देकर आनंदित किया। जब वे यरूशलेम पहुंचे तो कलीसिया ने, प्रेरितों ने और धर्मवृद्धों ने उनका स्वागत किया। इन्होंने बताया कि परमेश्वर ने इनका साथ देकर कैसे कैसे महान् कार्य किए थे। इस पर फरीसी दल के कुछ लोग, जो विश्वासी हो गए थे, उठकर कहने लगे, 'उनका खतना होना चाहिए और उन्हें आज्ञा दी जानी चाहिए कि वे मूसा के नियमशास्त्र का पालन करें।' १ २ ३ ४ ५

यरूशलेम की परिषद्

इस विषय पर विचार करने के लिए प्रेरित और धर्मवृद्ध एकत्रित हुए। बहुत वाद विवाद के अनंतर पतरस ने उठकर कहा, 'भाइयो, तुम्हें ज्ञात है कि प्रारंभ में परमेश्वर ने तुममें से मुझे चुना कि विजातीय लोग मेरे मुख से सुसमाचार का वचन सुनें और विश्वास करें। अंतर्यामी परमेश्वर ने हमारे समान ही उनको पवित्र आत्मा देकर उनके पक्ष में साक्षी दी, तथा विश्वास के द्वारा उनका हृदय विशुद्ध कर हमारे और उनके बीच कोई भेद नहीं रखा। तो तुम अब परमेश्वर की परीक्षा क्यों करते हो, और शिष्यों के कंधों पर वह जुआ क्यों लादते हो जिसे न हम और न हमारे पूर्वज वहन कर सके? हमारा विश्वास है कि प्रभु यीशु के अनुग्रह द्वारा जैसे हमारा उद्धार है वैसे ही उनका भी।' ६ ७ ८ ९ १० ११

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२ इस पर सब सभा चुप हो गई और बरनबास एवं पौलुस का विवरण सुनने लगी कि परमेश्वर ने उनके द्वारा विजातियों में कैसे १३ महान् चिह्न और चमत्कार किए। जब वे चुप हुए तो याकूब ने कहा, १४ 'भाइयो, मेरी बात सुनो। शमौन बता चुके हैं कि किस प्रकार प्रारम्भ परमेश्वर ने अपने नाम के निमित्त विजातियों में से प्रजा चुनने की कृपा १५ की। इस बात का समर्थन नबियों की वाणी से होता है, जैसा कि लेख है :

१६ "इसके पश्चात् मैं लौटूंगा,
और दाऊद के गिरे हुए निवास-स्थान को बनाऊंगा,
उसके खंडहरों का पुनः निर्माण करूंगा,
और उसे फिर सीधा करूंगा ;
१७ जिससे शेष मानव जाति भी प्रभु की खोज करे,
अर्थात् वे सब विजातियां जिन्हें मेरा नाम प्रदान किया गया है।
१८ यह उन्हीं प्रभु का कथन है जो सृष्टि के आरंभ से यह प्रकट करते आए हैं।"

१९ इस कारण मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि जो विजातियों में से २० परमेश्वर की ओर फिरें उन्हें हम उलझन में न डालें, वरन् उन्हें लिख भेजें कि मूर्तियों की अशुद्धताओं से, व्यभिचार से, (गला घोंटे पशुओं के २१ मांस से)* और रक्त से पृथक् रहें। क्योंकि प्राचीन काल से नगर-नगर में मूसा के नियमशास्त्र के प्रचारक विद्यमान हैं जो प्रत्येक सबत को सभागृहों में उसका पाठ करते हैं।'

परिषद् का निर्णय

२२ तब समस्त कलीसिया, प्रेरितों और धर्मवृद्धों ने निश्चय किया कि अपने बीच से कुछ लोगों को चुन कर पौलुस एवं बरनबास के साथ

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*कुछ प्राचीन प्रतियों में कोष्टांकित शब्द नहीं पाए जाते।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अंताकिया भेजें। उन्होंने यहूदा उपनाम बरसब्बा और सीलास के हाथ, जो भाइयों में प्रमुख थे, यह लिख भेजा : 'अंताकिया, सूरिया और किलकिया निवासी विजातीय भाइयों को, तुम्हारे भाई प्रेरितों और धर्मवृद्धों की ओर से नमस्कार। हमने सुना है कि हमारे यहां के कुछ लोगों ने अपनी बातों से तुमको व्याकुल कर दिया है और तुम्हारे मन को अशांत। हमने उनको कोई ऐसा आदेश नहीं दिया था। अत: हमने सर्वसम्मति से निर्णय किया है कि कुछ व्यक्तियों को चुनें और उन्हें प्रिय बरनबास एवं पौलुस के साथ, जिन्होंने अपना जीवन हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्त के नाम पर अर्पित कर दिया है, तुम्हारे पास भेजें। हम यहूदा और सीलास को भेज रहे हैं। वे स्वयं अपने मुख से इन बातों का वर्णन करेंगे। पवित्र आत्मा का और हमारा विचार है कि निम्नलिखित आवश्यक बातों को छोड़कर तुम पर और अधिक बोझ न लादा जाए: मूर्तियों पर चढ़े प्रसाद से, रक्त से, गला घोंटे हुए पशुओं के मांस से और व्यभिचार से बचो। इनसे पृथक् रहने में तुम्हारी भलाई है। इति शुभम।' २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९

तब वे विदा होकर अंताकिया पहुंचे और सभा को एकत्रित कर पत्र दिया। उसे पढ़कर वे लोग आश्वासन के संदेश से प्रसन्न हुए। यहूदा और सीलास स्वयं नबी थे। उन्होंने भी अनेक वचनों द्वारा भाइयों को प्रोत्साहित और दृढ़ किया। कुछ दिन रहने के पश्चात् वे शांति पूर्वक भाइयों से विदा हुए कि अपने भेजने वालों के पास लौटें* पर सीलास ने वहीं रहने का निश्चय किया इसलिए यहूदा ही लौटे। पौलुस और बरनबास भी अंताकिया में रह गए और अन्य बहुत लोगों के साथ प्रभु के वचन की शिक्षा देते और प्रचार करते रहे। ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५

पौलुस और बरनबास का वियुक्त होना

कुछ दिन पश्चात् पौलुस ने बरनबास से कहा, 'आओ, जिन जिन नगरों में हमने प्रभु का वचन सुनाया था, वहां लौट कर चलें और भाइयों ३६

*अनेक प्राचीन प्रतियों मे पद ३४ नहीं मिलता।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३७ को देखें कि वे कैसे हैं।' बरनबास की इच्छा थी कि यूहन्ना उपनाम
३८ मरकुस को भी ले चलें परंतु पौलुस ने यह उपयुक्त नहीं समझा कि जिस व्यक्ति ने उन्हें पंफूलिया में छोड़ दिया था और जो उनके साथ काम
३९ पर नहीं गया था, उसे अपने साथ ले जाएं। इस पर उनमें तीव्र मतभेद हो गया, यहां तक कि वे एक दूसरे से पृथक् हो गए। बरनबास मरकुस को
४० लेकर जलमार्ग से कुप्रुस चले गए। इधर पौलुस ने सीलास को चुना
४१ और जब भाइयों ने उन्हें प्रभु के अनुग्रह के अर्पण कर दिया, तो वे वहां से चल पड़े और सूरिया एवं किलकिया का भ्रमण कर कलीसियाओं को सुदृढ़ करने लगे।

पौलुस का तिमुथियुस को साथ लेना

16 वह दिरबे और लुस्त्रा पहुंचे। वहां तिमुथियुस नामक शिष्य थे जो विश्वास करनेवाली किसी यहूदी महिला के पुत्र थे,
२ पर उनके पिता यूनानी थे। उनका लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों में
३ बड़ा मान था। पौलुस की इच्छा थी कि उन्हें अपने साथ ले लें ; इसलिए उन स्थानों के यहूदियों के कारण उनका खतना कराया, क्योंकि सब जानते
४ थे कि उनके पिता यूनानी हैं। तब उन्होंने नगर नगर भ्रमण कर लोगों तक उस निर्णय को पहुंचाया जो यरूशलेम में प्रेरितों और धर्मवृद्धों ने
५ किया था, कि वे लोग उसका पालन करें। इस प्रकार कलीसिया विश्वास में सुदृढ़ होती और संख्या में प्रतिदिन बढ़ती गई।

फ्रूगिया, गलातिया और त्रोआस में

६ पवित्र आत्मा ने उन्हें आसिया में वचन सुनाने का निषेध किया
७ इसलिए वे फ्रूगिया और गलातिया में होकर निकले। जब वे मूसिया की सीमा पर पहुंचे तो उन्होंने बितूनिया में प्रवेश करने का प्रयत्न किया
८ पर यीशु के आत्मा ने अनुमति नहीं दी। अतः वे मूसिया से होकर
९ त्रोआस आए। वहां पौलुस ने रात्रि में दर्शन पाया कि कोई मकिदुनिया निवासी खड़ा हुआ उनसे निवेदन कर रहा है, 'पार उतरकर मकिदुनिया

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आइए और हमारी सहायता कीजिए।' ज्योंही उन्होंने यह दर्शन पाया, हम लोग मकिदूनिया पहुंचने का प्रयत्न करने लगे क्योंकि हमने जान लिया कि परमेश्वर उन लोगों में सुसमाचार सुनाने के लिए हमें बुला रहे हैं। १०

यूरोप में : फिलिप्पी

त्रोआस से हमने समुद्र-यात्रा आरंभ की तो सीधे सुमात्रा तक गए, और दूसरे दिन नियापुलिस। फिर वहां से फिलिप्पी पहुंचे जो मकिदूनिया प्रांत का एक प्रमुख नगर एवं रोमी उपनिवेश है। हम उस नगर में कुछ दिन रहे। सबत के दिन हम नगर-द्वार के बाहर नदी तट पर गए, क्योंकि हमारा अनुमान था कि वहां कोई प्रार्थना करने का स्थान होगा, और बैठकर वहां एकत्रित हुई स्त्रियों से वार्तालाप करने लगे। उनमें लुदिया नाम की, थुआथीरा नगर की रहनेवाली और बैंजनी वस्त्र बेचनेवाली एक धर्मपरायण महिला थी जो सब बातें सुन रही थी। प्रभु ने उसका मन खोला कि वह पौलुस के वचनों पर ध्यान दे। वह सपरिवार बपतिस्मा ले चुकी तो उनसे अनुरोध करने लगी 'यदि आप मानते हैं कि मैं प्रभु की विश्वासिनी हूं तो चलकर मेरे घर रहिए।' हम जाने के लिए विवश हो गए। ११ १२ १३ १४ १५

जब हम प्रार्थना-स्थान को जा रहे थे तो हमें एक नव-वयस्क दासी मिली जिसमें भविष्य कहने वाली आत्मा थी, और जो भविष्य-वाणी द्वारा अपने स्वामियों के लिए बहुत कुछ कमा लाती थी। वह पौलुस के और हमारे पीछे लग गई और चिल्लाने लगी, 'ये लोग सर्वोच्च परमेश्वर के सेवक हैं; ये तुम लोगों को उद्धार के मार्ग का संदेश देते हैं।' वह बहुत दिनों तक ऐसा ही करती रही। अंत में पौलुस तंग आकर उसकी ओर मुड़े और उस आत्मा से बोले, 'यीशु ख्रिस्त के नाम से मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि उसमें से निकल जा।' उसी क्षण वह उसमें से निकल गई। १६ १७ १८

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौलुस और सीलास की बंदी-गृह से मुक्ति

१९ जब उसके स्वामियों ने देखा कि उनके लाभ की आशा जाती रही तो उन्होंने पौलुस और सीलास को पकड़ा और उन्हें शासकों के पास चौक २० में घसीट कर ले गए; दंडाधिकारियों के संमुख ले जाकर कहा, २१ 'ये यहूदी है और नगर में उत्पात मचा रहे हैं। ये ऐसी रीतियों का प्रचार करते हैं, जिनको मानना या करना हम रोमियों के लिए विहित २२ नहीं।' उनके विरुद्ध भीड़ एकत्रित हो गई। इस पर दंडाधिकारियों २३ ने बंधियों के वस्त्र फाड़ डाले और उनके बेंत लगाने की आज्ञा दी। उन्होंने उन्हें बेंतों से बहुत पीटा और बंदीगृह में डाल दिया तथा बंदीगृह के २४ अधीक्षक को आज्ञा दी कि सावधानी से उनकी रखवाली करे। उसने यह आदेश पाकर उन्हें बंदीगृह के भीतरी भाग में रखा और उनके पैर काठ में जकड़ दिए।

२५ लगभग आधी रात के समय, पौलुस और सीलास प्रार्थना कर रहे २६ थे और परमेश्वर की स्तुति गा रहे थे, और बंदीगण सुन रहे थे। इतने में एकाएक भारी भूकंप आया जिससे कारागार की नींव हिल गई, क्षण भर में सब द्वार खुल गए और सबके सब बंधन-मुक्त हो गए। २७ बंदीगृह-अधीक्षक नींद से जाग उठा। उसने बंदीगृह के द्वारों को खुला देखा तो यह सोचकर कि बंदी भाग गए, खड्ग खींच लिया और आत्म-२८ हत्या करनी चाही। इस पर पौलुस ने उच्च स्वर से चिल्ला कर कहा, २९ 'अपने आपको कोई हानि न पहुंचाओ, क्योंकि हम सब यहां हैं।' तब वह दीपक मंगाकर भीतर दौड़ा आया और कांपता हुआ पौलुस एवं सीलास ३० के आगे गिरा। वह उन्हें बाहर ले गया और बोला, 'सज्जनों, मुझे उद्धार ३१ प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए?' उन्होंने उत्तर दिया, 'प्रभु यीशु पर ३२ विश्वास करो तो तुम एवं तुम्हारा परिवार उद्धार पाएगा।' और उन्होंने ३३ उसको और उसके सब परिवार को प्रभु का संदेश सुनाया। वह

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

रात को उसी घड़ी उनको ले गया, उनके घाव धोए और अपने समस्त

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिजनों सहित तत्काल बपतिस्मा लिया। अब उसने उन्हें अपने घर ३४ ले जाकर भोजन कराया और सपरिवार आनंदित् हुआ कि उसने परमेश्वर पर विश्वास किया।

दिन होने पर दंडाधिकारियों ने दो आरक्षियों के हाथ कहला ३५ भेजा कि वे व्यक्ति छोड़ दिए जाएं। बंदीगृह के अधीक्षक ने पौलुस को ३६ बताया, 'दंडाधिकारियों ने आपको छोड़ देने के लिए कहला भेजा है। अब बाहर चलिए और शांति से जाइए।' पर पौलुस ने उन लोगों से ३७ कहा, 'उन्होंने हम पर लगाए गए अभियोगों पर विचार किए बिना ही, हम रोमी नागरिकों को लोगों के सामने पीटा और बंदीगृह में डाला; और अब हमें चुपके से निकाल ले रहे हैं? ऐसा नहीं होगा। वे स्वयं आकर हमें बाहर ले जाएं।' आरक्षियों ने दंडाधिकारियों को ये वचन ३८ जा सुनाए। जब उन्होंने सुना कि ये लोग रोमी नागरिक हैं तो डर गए और आकर उन्हें मनाने लगे। वे उन्हें बाहर ले आए और प्रार्थना की कि ३९ नगर से विदा हो जाएं। वे बंदीगृह से निकल कर लुदिया के घर गए, ४० भाइयों से मिले और उन्हें प्रोत्साहित कर वहां से विदा हो गए।

थिस्सलुनीके में

17 वे अंफिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके आए १ जहां यहूदियों का सभागृह था। पौलुस अपनी प्रथा के अनुसार २ उनकी सभाओं में गए और तीन सबत तक शास्त्रों पर वाद-विवाद करते रहे, और उनका अर्थ स्पष्ट कर इस बात का प्रमाण देते रहे कि ३ ख्रिस्त का कष्ट भोगना और मृतकों में से जी उठना अनिवार्य था, एवं 'यीशु ही, जिनकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूं, ख्रिस्त हैं।' उनमें से अनेक ४ व्यक्तियों ने—धर्म परायण यूनानियों और बहुत सी प्रतिष्ठित स्त्रियों ने भी—विश्वास किया और पौलुस एवं सीलास के साथ सम्मिलित हो गए। इस पर यहूदी ईर्ष्या से जल उठे और कुछ बाजारू गुंडों को लेकर एवं भीड़ ५

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकत्र कर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे। व यासोन के घर पर चढ़ आए
६ और प्रेरितों को नगर-सभा के संमुख ले जाने का प्रयत्न किया। उन्हें न
पाकर वे यासोन और कई भाइयों को नगर के अधिकारियों के पास खींच
लाए और लगे चिल्लाने, 'संसार में उलट पलट करने वाले ये लोग यहां
७ भी आ पहुंचे हैं, और यासोन के अतिथि हैं। ये सब कैसर के आदेशों का
विरोध करते हैं और कहते हैं कि कोई दूसरा व्यक्ति, यीशु–राजा है।'
८ जनता और नगर-अधिकारी ये बातें सुनकर विचलित हो उठे। इस लिए
९ अधिकारियों ने यासोन एवं शेष व्यक्तियों मे मुचलका लिया और उन्हें
जाने दिया।

बिरीया में

१० भाइयों ने पौलुस और सीलास को शीघ्र ही रातोंरात बिरीया
११ भेज दिया। वे वहां पहुंचने पर यहूदियों के सभागृह में गए। ये लोग
थिस्सलुनीके के यहूदियों की अपेक्षा अधिक उदार–हृदय थे, क्योंकि
इन्होंने बड़ी उत्सुकता से वचन को ग्रहण किया और प्रतिदिन शास्त्रों में
१२ ढूंढ़ते रहे कि ये बातें ऐसे ही हैं अथवा नहीं। इनमें से बहुतों ने–प्रतिष्ठित
यूनानी महिलाओं ने और पुरुषों की बड़ी संख्या ने–विश्वास किया।
१३ किंतु जब थिस्सलुनीके के यहूदियों को पता चला कि पौलुस बिरीया में
परमेश्वर का वचन सुना रहे हैं तो वहां भी आकर हलचल मचाने और
१४ जनता को उत्तेजित करने लगे। तब भाइयों ने पौलुस को तुरंत विदा
कर दिया कि समुद्र-तट पर चले जाएं। पर सीलास और तिमुथियुस वहीं
१५ रह गए। पौलुस को पहुंचाने वाले उन्हें अथेने तक ले गए और सीलास
एवं तिमुथियुस के लिए यह आदेश लेकर कि वे तुरंत चले आएं, लौट आए।

अथेने में

१६ पौलुस अथेने में उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, तो नगर में देवीदेवताओं
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
१७ की भरमार देखकर उन्हें बहुत क्षोभ हुआ। इस कारण वह प्रतिदिन
सभागृह में यहूदियों और धर्मपरायण व्यक्तियों से, तथा चौक में सब

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आने-जाने वालों से वाद-विवाद करने लगे। कुछ इपिकूरी और स्तोइकी दार्शनिकों से भी उनका वार्तालाप हुआ। कई बोले, 'यह बकवादी कहना क्या चाहता है ?' दूसरों ने कहा, 'विदेशी देवताओं का प्रचारक प्रतीत होता है'—क्योंकि वह यीशु का और पुनरुत्थान का प्रचार किया करते थे। १८

इसलिए वे लोग उनको अपने साथ अरियोपगुस ले गए और पूछने लगे, १९ 'क्या हम जान सकते हैं कि आप यह कौनसी नई शिक्षा दे रहे हैं ? आप २० कुछ ऐसी बातें कहते हैं जो हमारे कानों को अनोखी लगती हैं ; हम जानना चाहते हैं कि उनका क्या अर्थ है।' क्योंकि सब अथेने निवासी एवं २१ परदेशी जो वहाँ रहते थे नई नई बातें कहने और सुनने के अतिरिक्त और किसी कार्य में समय नहीं बिताते थे।

अरियोपगुस में पौलुस का भाषण

तब पौलुस अरियोपगुस के बीच खड़े होकर कहने लगे, 'अथेने २२ निवासी सज्जनो, मैं देखता हूं कि तुम बड़े धर्मप्रेमी हो। जब मैं घूमता- २३ फिरता तुम्हारी आराध्य वस्तुओं को देख रहा था तो मुझे एक वेदी मिली जिस पर लिखा था, "अज्ञात देवता के लिए।" जिसे तुम अनजाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसी का संदेश देता हूं। जो परमेश्वर जगत् २४ एवं उसमें स्थित प्रत्येक वस्तु के रचयिता हैं, जो आकाश और पृथ्वी के अधिपति हैं, वह हाथ के बनाए मंदिरों में निवास नहीं करते और २५ न उन्हें किसी वस्तु का अभाव है कि मनुष्य के हाथों से सेवा ग्रहण करें ; क्योंकि वह तो स्वयं सबको जीवन, श्वास और समस्त वस्तुएं प्रदान करते हैं। उन्होंने एकही मूल से मनुष्य की प्रत्येक जाति का २६ निर्माण किया कि वे सारी पृथ्वी पर निवास करें। उन्होंने इतिहास की अवधि और निवास की सीमाएं निर्धारित कर दीं कि लोग परमेश्वर को २७ ढूंढ़ें और खोजते हुए कदाचित् उन्हें प्राप्त करें। फिर भी वह हम में से किसी से दूर नहीं हैं, क्योंकि "उन्हीं में हम जीवित रहते, चलते-फिरते २८ और अस्तित्व रखते हैं"; तुम्हारे ही कुछ कवियों ने कहा है, "निश्चय ही हम उनके वंशज हैं।"

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९ 'अब यदि हम उन के वंशज हैं, तो हमें समझना चाहिए कि परमेश्वर-तत्व, सोने, चांदी अथवा पत्थर की प्रतिमा के सदृश नहीं है
३० जो मनुष्य की कला और कल्पना की उपज है। परमेश्वर ने अज्ञानता के युगों पर ध्यान नहीं दिया, परंतु अब उनकी आज्ञा है कि सर्वत्र सब
३१ मनुष्य हृदय-परिवर्तन करें। क्योंकि उन्होंने एक दिन निश्चित कर दिया है जब वह पूर्व-निर्धारित मानव के द्वारा संसार का धर्मपूर्वक न्याय करेंगे, और उन्होंने इस व्यक्ति को मृतकों में से जीवित कर सब को इस बात का प्रमाण दे दिया है।'

३२ मृतकों के पुनरुत्थान की बात सुनकर कुछ व्यक्ति उनका उपहास करने लगे; परंतु कुछ बोले, 'हम इस विषय में आप से फिर कभी सुनेंगे।'
३३ इस प्रकार पौलुस उनके बीच से चले गए। फिर भी कुछ मनुष्यों ने
३४ पौलुस का साथ दिया और विश्वास किया। इन में अरियोपगुस के सदस्य दियुनुसियुस, दमरिस नाम की एक महिला एवं अन्य कई व्यक्ति थे।

कुरिंथुस में

18 इसके अनंतर पौलुस अथेने से विदा होकर कुरिंथुस आए। वहां उनकी भेंट अक्विला नामक एक यहूदी से हुई जो जन्मतः पुंतुस के थे। वह अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ कुछ समय पूर्व ही में इतालिया से आए थे, क्योंकि क्लौदियुस ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने का
३ आदेश दिया था। पौलुस उनके यहां गए और एक ही व्यवसाय के होने के कारण उनके साथ रहने और काम करने लगे—उनका व्यवसाय
४ तंबू बनाना था। वह प्रत्येक सबत को वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों दोनों को समझाने का प्रयत्न करते थे।

५ जब सीलास और तिमुथियुस मकिदूनिया से आए तो पौलुस वचन सुनाने में लवलीन हो गए और यहूदियों के समक्ष साक्षी देने लगे कि
६ यीशु ही ख्रिस्त हैं। परंतु जब ये लोग पौलुस का विरोध करने और निंदा करने लगे तो उन्होंने अपने वस्त्र झाड़ कर कहा, 'तुम्हारा रक्त

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे सिर। मैं निर्दोष हूं। अब से मैं विजातियों के पास जाऊंगा।' वहां से वह तितुस युस्तुस नामक एक धर्मपरायण व्यक्ति के यहाँ आ ७ गए जिसका घर सभागृह के समीप था। अब सभागृह के अध्यक्ष क्रिसपुस ८ ने सपरिवार प्रभु पर विश्वास किया, और कुरिंथुस के अनेक निवासियों ने भी विश्वास कर बपतिस्मा लिया। तब प्रभु ने एक रात पौलुस को ९ दर्शन देकर कहा, 'डरो मत, बोलते जाओ और चुप मत रहो, क्योंकि मैं १० तुम्हारे साथ हूं। कोई मनुष्य तुम पर आक्रमण कर तुम्हें हानि न पहुंचा सकेगा क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।' वह परमेश्वर का ११ वचन सुनाते हुए उनके बीच डेढ़ वर्ष रहे।

गल्लियो और पौलुस

जिस समय गल्लियो अखाया देश का प्रांतपति था, यहूदियों ने १२ एका कर पौलुस पर आक्रमण किया, उन्हें न्यायासन के संमुख खींच लाए और कहने लगे, 'यह लोगों को परमेश्वर की उपासना की ऐसी पद्धति १३ सिखाता है जो नियम—विरुद्ध है।' पौलुस बोलने के लिए मुंह खोल १४ ही रहे थे कि गल्लियो ने यहूदियों से कहा, 'हे यहूदियो, यदि यह कोई अन्याय अथवा छल-कपट का प्रकरण होता तो मेरे लिए तुम्हारा अभियोग सुनना बुद्धिसंगत होता। किंतु यदि यह वाद-विवाद शब्दों और नामों १५ और तुम्हारे नियमशास्त्र के विषय में हैं, तो तुम्हीं जानो; क्योंकि मैं इन विषयों का न्याय नहीं करना चाहता।' और उसने उन्हें न्यायासन १६ के सामने से निकलवा दिया। तब सबने सभागृह के अध्यक्ष सोस्थिनेस १७ को पकड़ कर न्यायासन के संमुख ही पीटा, पर गल्लियो ने इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया।

सूरिया लौटना

इसके अनंतर पौलुस वहां बहुत दिन रहे। फिर भाइयों से विदा १८ लेकर जलमार्ग द्वारा सूरिया को चल दिए। उनके साथ प्रिस्किल्ला और अक्विला भी थे। किसी व्रत के कारण उन्होंने किंख्रिया में अपने सिर का

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
१९ मुंडन करा लिया। इफिसुस पहुंच कर पौलुस ने उनको वहीं छोड़ दिया,
२० और स्वयं सभागृह में प्रवेश कर यहूदियों से वाद-विवाद करने लगे। जब उन लोगों ने निवेदन किया कि हमारे साथ कुछ दिन रहिए तो उन्होंने
२१ स्वीकार नहीं किया, परंतु यह कह कर विदा ली कि यदि परमेश्वर
२२ की इच्छा हुई तो आपके पास फिर आऊंगा। वह इफिसुस से जलमार्ग द्वारा कैसरिया गए और वहां से यरूशलेम जाकर कलीसिया का
२३ अभिवादन किया और अंताकिया चले आए। वहां कुछ दिन ठहर कर वह फिर बाहर निकले और क्रमशः गलातिया और फ्रूगिया में भ्रमण करते हुए शिष्यों को सुदृढ़ करते रहे।

इफिसुस में अपुल्लोस

२४ अपुल्लोस नामक एक यहूदी जिसका जन्म सिकंदरिया में हुआ था
२५ और जो अच्छा वक्ता एवं धर्मशास्त्र का पंडित था, इफिसुस पहुंचा। उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी और यीशु की कथा को बड़े उत्साह से ठीक ठीक सुनाता और सिखाता था, परंतु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा
२६ से परिचित था। वह सभागृह में निर्भीकता से बोलने लगा। प्रिस्किल्ला और अक्विला उसकी बातें सुनकर उसे अपने साथ ले गए और अधिक
२७ सूक्ष्म रूप में परमेश्वर के मार्ग के विषय में उसे बताया। उसकी इच्छा थी कि समुद्र पार अखाया को जाए। भाइयों ने उसे इस विषय में प्रोत्साहित किया और शिष्यों को लिखा कि उसका स्वागत करें। वहां पहुंच कर उसने उन लोगों की बड़ी सहायता की जो अनुग्रह के कारण
२८ विश्वासी बन चुके थे; क्योंकि उसने यहूदियों का सबके सामने प्रबल खंडन कर शास्त्र से प्रमाणित किया कि ख्रिस्त, यीशु ही हैं।

इफिसुस में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के शिष्य

19 जिस समय अपुल्लोस कुरिंथुस में था तो पौलुस समुद्र से दूरवर्ती प्रदेशों का पर्यटन करते हुए इफिसुस आए। वहां उन्हें कुछ
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
शिष्य मिले जिनसे उन्होंने पूछा, 'क्या विश्वास करते समय तुम्हें पवित्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा प्राप्त हुआ ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'हमने तो सुना भी नहीं कि पवित्र आत्मा हैं।' पौलुस ने कहा, 'तो तुमने किसका वपतिस्मा ३ लिया?' वे वोले, 'यूहन्ना वपतिस्मा देनेवाले का।' इस पर पौलुस ने ४ उनसे कहा, 'यूहन्ना वपतिस्मा देनेवाले हृदय-परिवर्तन का वपतिस्मा देते थे। वह लोगों से कहते थे कि जो मेरे पीछे आनेवाले हैं उन पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।' यह सुन कर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम में ५ वपतिस्मा लिया। जव पौलुस ने उन पर हाथ रखा तो पवित्र आत्मा उन ६ पर उतरा और वे भाषाएं वोलने तथा नवूवत करने लगे। ये सव लगभग ७ वारह पुरुष थे।

इफिसुस में पौलुस

अस्तु, पौलुस सभागृह में गए और तीन महीने तक परमेश्वर के ८ राज्य के विषय में निर्भीकता पूर्वक विवाद करते और समझाते रहे। परंतु जव कुछ लोगों ने कठोर होकर उनकी वात न मानी और सभा में ९ इस मार्ग की निंदा करने लगे तो पौलुस ने उनको छोड़ दिया और शिष्यों को भी पृथक् कर लिया। अव वह तुरन्नुस के गोष्ठी-भवन में प्रतिदिन* वाद विवाद करने लगे। यह क्रम दो वर्ष तक चला यहां तक कि १० आसिया निवासी, क्या यहूदी, क्या यूनानी, सवने प्रभु का वचन सुन लिया। परमेश्वर ने पौलुस के हाथों अलौकिक सामर्थ्य के काम किए; यहां ११ तक कि उनके शरीर से स्पर्श किए हुए अंगोछे और रूमाल रोगियों पर १२ डाल दिए जाते तो उनके रोग दूर हो जाते और दुष्टात्माएं निकल जाती थीं।

कुछ इधर-उधर घूमने वाले यहूदी-ओझों ने प्रयत्न किया कि अशुद्ध १३ आत्माओं से ग्रस्त लोगों पर प्रभु यीशु के नाम का प्रयोग करें और कहें, 'तुम्हें यीशु की शपथ जिनका प्रचार पौलुस करते हैं।' स्किवा नामक १४ यहूदी महापुरोहित के सात पुत्र ऐसा ही करते थे। दुष्टात्मा ने उनसे १५

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* कुछ प्राचीन प्रतियों में 'प्रतिदिन ग्यारह वजे से चार वजे तक'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, 'यीशु को मैं जानती हूं, और पौलुस को भी पहिचानती हूं, पर तुम
१६ कौन हो ?' और दुष्टात्मा ग्रसित मनुष्य ने झपट कर उन सबको वशीभूत
कर लिया और ऐसा पछाड़ा कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से
१७ निकल भागे। यह बात इफिसुस के रहनेवाले सब यहूदियों और यूनानियों
पर विदित हो गई। उन सब पर भय छा गया और प्रभु यीशु के नाम का
१८ गुणगान होने लगा। जिन्होंने विश्वास किया था उनमें से अनेकों ने स्पष्ट
१९ स्वीकार कर अपने साधनों को प्रकट कर दिया। बहुत से जादू टोनों
के व्यवसायियों ने अपनी पोथियां एकत्र कर सबके संमुख जला दीं, और
२० जब उनका मूल्य जोड़ा गया तो लगभग पचास हजार रुपया निकला। इस
प्रकार प्रभु का वचन प्रबलता से फैला और प्रभावशाली हुआ।

२१ यह सब होने पर पौलुस ने संकल्प किया, 'मैं मकिदूनिया और
अखाया होते हुए यरूशलेम जाऊँगा और वहां पहुंचने के पश्चात्
२२ रोम भी अवश्य देखूंगा।' अतः उन्होंने अपने सहायकों में से दो अर्थात्
तिमुथियुस और इरास्तुस को मकिदूनिया भेज दिया और स्वयं कुछ दिन
तक आसिया में ठहरे रहे।

इफिसुस में विरोध

२३ इन्हीं दिनों की बात है कि इस मार्ग को लेकर बड़ी हलचल मची।
२४ देमेत्रियुस नामक सुनार अरतिमिस के मंदिर की रजत प्रतिकृतियां*
२५ बनवाकर कारीगरों को बहुत काम दिलाता था। इनको और ऐसे ही
अन्य व्यवसायों के कारीगरों को एकत्र कर उसने कहा, 'सज्जनो, आप
२६ जानते हैं कि इस व्यवसाय से हमें कितना धन मिलता है! और आप
यह भी देख रहे हैं और सुन रहे हैं कि इस पौलुस ने केवल इफिसुस में ही
नहीं, वरन् लगभग समस्त आसिया में एक बड़े समुदाय को समझा
२७ बुझाकर बहका दिया है कि "हाथ के बने देवता, देवता नहीं।" इस से

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*अक्षरशः 'मंदिर'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
केवल यही डर नहीं कि हमारे व्यवसाय की प्रतिष्ठा जाती रहेगी, वरन् यह भी कि लोग महान् देवी अरतिमिस के मंदिर को तुच्छ समझने लगेंगे; और यह देवी, जिसकी समस्त आसिया और संसार पूजा करता है, अपने प्रताप से वंचित हो जाएगी।'

यह सुनकर लोग क्रोधित हो चिल्लाने लगे, 'इफिसियों की देवी २८ अरतिमिस महान् है!' नगर में खलबली मच गई। लोगों ने गयुस २९ और अरिस्तर्खुस को, जो पौलुस के सहयात्री और मकिदूनिया-निवासी थे, पकड़ लिया और एक साथ रंगशाला की ओर दौड़ पड़े। पौलुस ३० भीतर जनता के संमुख जाना चाहते थे, पर शिष्यों ने उन्हें जाने न दिया। आसिया के कई शासक पौलुस के मित्र थे; उन्होंने भी संदेश ३१ भेजकर निवेदन किया कि रंगशाला में जाने का दुस्साहस न कीजिए। अस्तु, कोई कुछ चिल्ला रहा था, कोई कुछ। सभा में कोलाहल मचा ३२ हुआ था। अधिकांश लोग यह भी नहीं जानते थे कि वे किस कारण इकट्ठे हुए हैं! तब कुछ लोगों ने सिकंदर को, जिसे यहूदियों ने खड़ा ३३ किया था, भीड़ से आगे बढ़ाया। सिकंदर ने हाथ से चुप रहने का संकेत कर जनता से अपने पक्ष के समर्थन में कुछ कहना चाहा; परंतु जब ३४ लोगों को ज्ञात हुआ कि वह यहूदी है तो सबके सब कोई दो घंटे तक एक स्वर से चिल्लाते रहे, 'इफिसियों की अरतिमिस की जय।' तब नगर के ३५ मंत्री ने जनसमूह को शांत कर कहा, 'इफिसुस निवासी सज्जनो, ऐसा कौन मनुष्य है जो नहीं जानता कि इफिसुस का यह नगर महान्-देवी अरतिमिस के मंदिर का और आकाश* से गिरी मूर्ति का सेवक है? अस्तु, यदि यह बात निर्विवाद है तो आपको शांत रहना चाहिए और ३६ बिना सोचे विचारे कोई काम नहीं करना चाहिए। आप ऐसे मनुष्यों को ३७ पकड़ लाए हैं जिन्होंने न तो मंदिर को अपवित्र किया है और न हमारी देवी का अपमान। यदि देमेत्रियुस और उसके साथी कारीगरों का किसी से कुछ ३८

---

* अथवा 'ज्यूस'

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विवाद है तो न्यायालय खुले हैं और प्रतिपति विद्यमान हैं : वे एक दूसरे
३९ पर अभियोग चलावें। परंतु यदि आप कुछ और‡ चाहते हैं तो इसका
४० निर्णय नियमित सभा में किया जाएगा। हमें शंका है कि आज के
विप्लव का दोष कहीं हम पर न मढ़ा जाए क्योंकि हम इस अव्यवस्था
का कारण नहीं बता सकेंगे।' यह कहकर उसने सभा विसर्जित कर दी।

मकिदूनिया, यूनान और त्रोआस में पौलुस

20 उपद्रव शांत होने के पश्चात् पौलुस ने शिष्यों को बुला भेजा
और उन्हें प्रोत्साहित कर तथा उनसे विदा होकर मकिदूनिया
२ की ओर चल दिए। वह इन भूभागों में लोगों का उत्साह बढ़ाते हुए
३ यूनान आए। वहां तीन महीने बिताने के उपरांत जब वह जलमार्ग से
सूरिया जाने लगे तो उन्हें ज्ञात हुआ कि यहूदी उनके विरुद्ध षड्यंत्र कर
रहे हैं। अस्तु, उन्होंने मकिदूनिया होकर लौटने का निश्चय किया।
४ उनके साथ पुरुस के पुत्र सोपत्रुस जो बिरीया के निवासी थे. थिस्सलुनी
किया के निवासी अरिस्तर्खुस एवं सिकंदुस, दिरबे नगर के गयुस,
५ तिमुथियुस, तथा आसिया के तुखिकुस और त्रुफिमुस थे। ये लोग
६ जाकर, त्रोआस में हमारी प्रतीक्षा करने लगे। हमने अखमीरी रोटियों
के पर्व के पश्चात् फिलिप्पी से जलयात्रा आरंभ की और पांच दिन में
उनके पास त्रोआस पहुंचे और वहां सात दिन रहे।

यूतुखुस

७ सप्ताह के पहले दिन हम रोटी को तोड़ने के निमित्त एकत्रित हुए।
पौलुस, जो दूसरे दिन चले जाने को थे, लोगों से वार्तालाप करने लगे, और
८ यह वार्ता आधी रात तक चलती रही। अब जिस अटारी पर हम लोग
९ एकत्रित हुए थे, वहां बहुत से दीपक जल रहे थे। जब पौलुस देर तक

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
‡अनेक प्राचीन प्रतियों में 'कुछ अन्य विशेष बात'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वार्तालाप करते रहे, तो यूतुखुस नामक एक युवक को जो खिड़की पर बैठा था गहरी नींद आ गई। वह नींद के झोंके में तिमंजिले से नीचे गिर पड़ा और मृत अवस्था में उठाया गया। तब पौलुस नीचे उतरे, झुक कर उसका १० आलिंगन किया और बोले, 'घबराओ मत ; इसमें अभी प्राण शेष हैं।' फिर ऊपर जाकर उन्होंने रोटी तोड़ी और खाई। उसके पश्चात् वह ११ इतनी देर तक बातें करते रहे कि प्रातःकाल हो गया। तब वह विदा हुए। लोग उस नवयुवक को जीवित ले आए और उनकी सांत्वना की सीमा न १२ रही।

मीलेतुस को यात्रा

हम नौका द्वारा पहिले ही अस्सुस को चल दिए थे। हमारा उद्देश १३ था कि वहां पौलुस को नौका पर चढ़ा लें—वह स्थल मार्ग से आने को थे, अतः उन्होंने ऐसा ही प्रबंध किया था। अस्तु, अस्सुस में वह हमसे १४ मिले तो हमने उन्हें नौका पर चढ़ा लिया और मितुलेने में आए। दूसरे १५ दिन वहां से लंगर उठा कर हम खियुस के सामने पहुंचे, अगले दिन सामुस जा लगे* और फिर एक दिन पश्चात् मीलेतुस में आए। पौलुस ने निश्चय १६ कर रखा था कि इफिसुस को छोड़ते हुए निकल जाएंगे जिससे आसिया में विलंब न हो। वह इसलिए शीघ्रता कर रहे थे कि हो सके तो पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में हों।

इफिसुस के धर्मवृद्धों से विदा लेना

अतः उन्होंने मिलेतुस से इफिसुस संदेश भेज कर कलीसिया के १७ धर्मवृद्धों को बुलाया। और उनके आने पर उनसे कहा, १८

'तुम जानते हो कि जिस दिन से मैं आसिया पहुंचा, मैंने अपना सारा समय तुम्हारे साथ किस प्रकार बिताया ; किस प्रकार अत्यंत दीनता १९

*अनेक प्राचीन प्रतियों के अनुसार, 'और त्रोगुल्यिन में रुकने के पश्चात् फिर . . .'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से आंसू बहा बहाकर उन संकटों में, जो यहूदियों के षड्यंत्रों के कारण
२० मुझ पर आ पड़े थे, मैं प्रभु की सेवा करता रहा। जो बातें तुम्हारे हित की थीं उनके विषय में मैं मौन नहीं रहा; और सार्वजनिक रूप से
२१ तथा घर घर जाकर तुमको उपदेश देता रहा। मैं यहूदियों और यूनानियों दोनों के संमुख के स्पष्ट साक्षी देता रहा कि वे परमेश्वर की ओर मन फिराएं और हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्त पर विश्वास करें।

२२ 'परंतु अब मैं आत्मा की प्रेरणा से विवश होकर यरूशलेम जा रहा
२३ हूं। वहां मुझ पर क्या बीतेगी, मैं नहीं जानता। केवल यह जानता हूं कि प्रत्येक नगर में पवित्र आत्मा मुझे चेतावनी दे रहा है कि बेड़ियां और
२४ विपत्तियां मेरी राह देख रही हैं। मेरे जीवन का मेरे लिए कोई महत्व नहीं; यदि है तो केवल यह कि मेरी वह दौड़ और वह सेवा पूर्ण हो जो प्रभु यीशु ने मुझे प्रदान की है, अर्थात् मैं परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण
२५ सुसमाचार की साक्षी देता रहूं। अब, देखो, मुझे निश्चय है तुम सब, जिनके बीच मैं राज्य* का सुसमाचार सुनाता रहा, मेरा मुंह फिर न देखने
२६ पाओगे। इस कारण मैं आज तुम्हारे संमुख साक्षी देता हूं कि मैं तुम
२७ सबके रक्त से निर्दोष हूं। मैंने परमेश्वर का संपूर्ण अभिप्राय तुम्हें बताने
२८ में कोई बात नहीं उठा रखी। अपना और अपने समस्त समूह का ध्यान रखो। इस समूह पर पवित्र आत्मा ने तुमको अध्यक्ष नियुक्त किया है कि तुम परमेश्वर ‡ की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उन्होंने अपने §
२९ प्रिय के रक्त से उपार्जित किया है। मैं जानता हूं कि मेरे जाने के
३० उपरांत भयानक भेड़िए तुममें घुस आएंगे, जो समूह को न छोड़ेंगे। हां, तुम्हारे ही मध्य ऐसे लोग उठ खड़े होंगे जो शिष्यों को अपना अनुगामी
३१ बनाने के लिए उन्हें उलटी–सीधी शिक्षाएं देंगे। इसलिए जागते रहो और

---

* कुछ प्रतियों में 'परमेश्वर के राज्य'

‡ पाठान्तर, 'प्रभु'

§ अथवा, 'स्वयं अपने'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्मरण रखो कि मैं ने तीन वर्ष तक दिन-रात आंसू बहा बहाकर तुममें से एक एक व्यक्ति को समझाया है।

'और अब मैं तुमको परमेश्वर के और उनके अनुग्रहपूर्ण वचन के संरक्षण में छोड़ता हूं, जो तुम्हारा निर्माण करने और समस्त संतों के साथ तुम्हारा उत्तराधिकार तुम्हें प्रदान करने में समर्थ हैं। मैंने किसी के सोने चांदी और वस्त्रों का लोभ नहीं किया। तुम स्वयं जानते हो कि इन हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएं पूरीं कीं हैं। मैंने सदा तुम्हारे संमुख उदाहरण रखा कि हमें किस प्रकार परिश्रम करके निर्बलों को संभालना चाहिए और प्रभु यीशु के वचन स्मरण रखना चाहिए जो उन्होंने स्वयं कहे थे, "लेने की अपेक्षा देना धन्य है।" ३२ ३३ ३४ ३५

इतना कहकर उन्होंने घुटने टेके और सबके साथ प्रार्थना की। तब वे सब फूट-फूटकर रोने और पौलुस के गले लिपट कर उन्हें बार बार चुंबन करने लगें। विशेपकर पौलुस के इस कथन से कि 'तुम मेरा मुंह फिर न देख पाओगे,' वे अत्यंत शोकातुर हुए। वे लोग उनको जलयान तक पहुंचाने आए। ३६ ३७ ३८

सूर से मीलेतुस

21 उनसे वियुक्त होकर हमने लंगर उठाया तो सीधे मार्ग से कोस फिर आए, दूसरे दिन रुदुस और वहां से पतारा* वहां फीनेके जाने वाला एक जलयान मिलने पर हम उस पर चढ़े और लंगर खोल दिया। अब हमें कुप्रुस दीख पड़ा परंतु हम उसे अपने बाएं छोड़कर सूरिया की ओर बढ़े और सूर में उतरे; क्योंकि वहां जलयान को अपना भार उतारना था। हमने वहां शिष्यों को ढूंढ़ निकाला और सात दिन तक उनके यहां रहे। उन्होंने आत्मा द्वारा पौलुस से कहा कि यरूशलेम में पांव न रखें। जब ये दिन पूरे हुए और हम विदा लेकर चले तो सब लोग स्त्री-बच्चों सहित, नगर के बाहर तक हमें पहुंचाने आए। हमने समुद्र १ २ ३ ४ ५

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* कुछ प्रतियों के अनुसार, पतारा और मूरा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ तट पर घुटने टेककर प्रार्थना की, और एक दूसरे से विदा होकर, हम जलयान पर चढ़े और वे अपने घर लौट गए।

कैसरिया को

७ हमने सूर से पतुलिमयिस पहुंच कर अपनी जलयात्रा समाप्त की ८ और भाइयों का अभिवादन कर एक दिन उनके यहां रहे। वहां से चलकर हम दूसरे दिन कैसरिया पहुंचे और धर्मप्रचारक फिलिप्पुस के यहां जाकर ९ ठहरे जो 'सात' में से एक थे। इनके चार कुमारी कन्याएं थी जो १० भविष्यवाणी किया करती थीं। हमको वहां रहते रहते कई दिन ११ बीत गए, तो अगबुस नामक नबी यहूदिया से वहां आए। जब वह हमसे मिलने आए तो उन्होंने पौलुस का कटिबंध लिया और अपने हाथ पांव बांधकर कहा, 'पवित्र आत्मा का कहना है कि जिस व्यक्ति का यह कटिबंध है उसको यरूशलेम में यहूदी इसी प्रकार बांधेंगे और विजातियों १२ के हाथ सौंप देंगे।' जब हमने यह सुना तो हम और वहां के लोग पौलुस १३ से अनुरोध करने लगे कि वह यरूशलेम न जाएं। पर उन्होंने उत्तर दिया, 'तुम यह क्या कर रहे हो? इस प्रकार से रो-रोकर तुम मेरे हृदय को क्यों पीड़ित करते हो? मैं तो प्रभु यीशु के नाम के कारण यरूशलेम १४ में बंदी होने को ही नहीं वरन् मरने को भी प्रस्तुत हूं।' जब उन्होंने न माना तो हम यह कहकर चुप हो गए कि प्रभु की इच्छा पूरी हो।

यरूशलेम को

१५ इन दिनों के उपरांत हमने तैयारी की और यरूशलेम को चल १६ दिए। कुछ शिष्य कैसरिया से हमारे साथ आए और हमें कुप्रुस निवासी मनासोन के घर ले गए। यह एक पुराने शिष्य थे जिनके यहां हमें अतिथि होना था।

यहूदी-ख्रिस्तियों को प्रसन्न करने का प्रयत्न

१७ जब हम यरूशलेम पहुंचे तो भाइयों ने हमारा सहर्ष स्वागत किया।
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
१८ दूसरे दिन पौलुस हमें याकूब के पास ले गए। वहां सब धर्मवृद्ध

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एकत्रित थे। पौलुस ने उनका अभिवादन किया और परमेश्वर ने उनके १६
सेवा-कार्य द्वारा जो कुछ विजातियों के बीच में किया था—सब एक-एक
करके उन्हें बता दिया। उन्होंने यह सुनकर परमेश्वर की स्तुति की २०
और कहा, 'भाई, तुम देखते हो कि यहूदियों में से कई सहस्र लोगों ने
विश्वास कर लिया है; और ये सब नियमशास्त्र के कट्टर समर्थक हैं।
इनको बताया गया है कि विजातियों के बीच रहनेवाले यहूदियों को २१
तुम सिखाते हो कि मूसा की शिक्षा त्याग दें, अर्थात् अपने बच्चों का
खतना न कराएं और विधियों के अनुसार आचरण न करें। तो फिर क्या २२
किया जाए? ये अवश्य सुन लेंगे कि तुम आ पहुंचे हो। अतः जो २३
हम बताते हैं, वह करो। हमारे यहां चार व्यक्ति हैं, जिन्होंने व्रत लिया
हैं; उन्हें ले जाओ और उनके साथ अपने को शुद्ध करो एवं उन्हें व्यय २४
दो कि वे अपना मुंडन कराएं। इस प्रकार सब लोगों को पता लग जाएगा
कि तुम्हारे विषय में उन्हें जो कुछ बताया गया है वह मिथ्या है, और
तुम स्वयं नियमशास्त्र को मानते एवं उस पर चलते हो। रहा विजातियों २५
के विषय में, जिन्होंने विश्वास कर लिया है—इस संबंध में हमने निर्णय
भेज ही दिया है कि वे मूर्तियों पर चढ़ाए हुए प्रसाद से, रक्त से, गला घोटे
हुए पशुओं के मांस से और व्यभिचार से अपने को बचाएं।' अस्तु, दूसरे २६
दिन पौलुस इन मनुष्यों को लेकर और उनके साथ शुद्ध हो मंदिर में गए,
और सूचित किया कि शुद्धिकरण के दिन, अर्थात् उनमें से प्रत्येक के लिए
बलिदान चढ़ाने के दिन, कब पूरे होंगे।

यरूशलेम में उपद्रव, पौलुस का बंदी होना

सात दिन की अवधि पूर्ण होने को थी। आसिया के यहूदियों ने २७
पौलुस को मंदिर में देख कर समस्त जनसमूह में उत्तेजना फैला दी और
उनको पकड़कर चिल्लाने लगे, 'इस्राएली सज्जनो, सहायता करो। यही २८
वह व्यक्ति है जो सर्वत्र सबको हमारी प्रजा, नियमशास्त्र एवं इस स्थान के
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
विरुद्ध शिक्षा देता है। इतना ही नहीं इसने यूनानियों को मंदिर में लाकर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९ इस पवित्र स्थान को भ्रष्ट कर दिया है।' वे लोग पौलुस के साथ इफिसुस निवासी त्रेफिमुस को नगर में देख चुके थे, इसलिए उन्होंने समझा कि
३० पौलुस उसे मंदिर में ले आए हैं। सारे नगर में हलचल मच गई और लोगों का जमघट लग गया। वे पौलुस को पकड़कर मंदिर के बाहर घसीट
३१ लाए और तुरंत द्वार बंद हो गए। वे लोग पौलुस को मार डालना चाहते थे कि सैन्यदल के सहस्रपति को सूचना मिली कि सारे यरूशलेम
३२ में उपद्रव मचा हुआ है। वह शीघ्र ही सैनिकों और शतपतियों को लेकर दौड़ पड़ा; जब लोगों ने सहस्रपति और सैनिकों को देखा तो
३३ पौलुस को पीटना छोड़ दिया। सहस्रपति ने समीप आकर पौलुस को बंदी कर लिया और उन्हें दो बेड़ियों में बांधे जाने की आज्ञा दी। तब
३४ उसने पूछा, 'यह कौन है? इसने क्या किया है?' भीड़ में से कोई कुछ चिल्ला रहा था और कोई कुछ। हुल्लड़ के मारे वह तथ्य तक न
३५ पहुंच सका, अतः उसने पौलुस को गढ़ में ले जाने की आज्ञा दी। जब पौलुस सीढ़ी पर पहुंचे तो भीड़ की हिंसक वृत्ति के कारण सिपाहियों को
३६ उन्हें उठा कर ले जाना पड़ा, क्योंकि भीड़ उनका पीछा कर रही थी और चिल्ला रही थी कि इसका अंत कर दो।

३७ पौलुस जब गढ़ में प्रवेश करने को थे तो उन्होंने सहस्रपति से कहा, 'आज्ञा हो तो मैं आपसे कुछ निवेदन करूं।' उसने कहा, 'क्या तुम
३८ यूनानी जानते हो। क्या तुम वह मिस्र निवासी नहीं जिसने कुछ दिन पहले विद्रोह और चार सहस्र कृपाणधारी लोगों को निर्जन प्रदेश
३९ में ले गया था?' पौलुस ने कहा, 'मैं यहूदी हूं किलकिया के तरसुस का निवासी—मैं किसी छोटे नगर का नागरिक नहीं हूं। आपसे निवेदन
४० है कि मुझे इन लोगों से बातचीत करने की अनुमति दीजिए।' जब उसने अनुमति दे दी तो पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर लोगों को हाथ का संकेत किया। चारों ओर सन्नाटा छा जाने पर वह इब्रानी भाषा में कहने लगे :

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहूदियों के सम्मुख पौलुस का भाषण

22 'भाइयो और पितृगण, मेरे पक्ष के समर्थन में वक्तव्य सुनो।' १
जब लोगों ने सुना कि पौलुस उनसे इब्रानी में बोल रहे हैं तो २
वे और भी चुप हो गए।–वह बोले, 'मैं यहूदी हूं, किलकिया के तरसुस ३
नगर में मेरा जन्म हुआ, पर मैंने अपनी शिक्षा-दीक्षा इस नगर में गमलीएल
के चरणों में बैठ कर पाई। पूर्वजों के नियमशास्त्र का मैंने विधिवत्
अध्ययन किया और परमेश्वर का ऐसा उत्साही उपासक बना जैसे कि
तुम सब आज हो। मैंने इस 'मार्ग' के प्रति घोर अत्याचार किया और ४
इसके पुरुषों एवं स्त्रियों को बांध-बांध कर बंदीगृह में डाल दिया। इस ५
बात के लिए स्वयं महापुरोहित और सब धर्मवृद्ध मेरे साक्षी हैं। मैं इनसे
भाइयों के नाम पत्र लेकर दमिश्क जा रहा था कि वहां के लोगों को भी
बंदी कर दंड दिलाने यरूशलेम लाऊं।

'जब मैं यात्रा करते करते दमिश्क के निकट पहुंचा तो दोपहर के ६
समय आकाश से एक महान् ज्योति एकाएक मेरे चारों ओर चमक उठी।
मैं भूमि पर गिर पड़ा, और एक वाणी को अपने से कहते सुना, "शाऊल, ७
शाऊल, तुम मुझे क्यों सताते हो?" मैंने पूछा, "प्रभु, आप कौन हैं?" ८
उन्होंने मुझसे कहा, "मैं नासरत का यीशु हूं जिसे तुम सता रहे हो।"–
मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी, पर जो मुझसे बोल रहे थे, उनकी ९
वाणी नहीं सुनी–मैंने कहा, "प्रभु, मैं क्या करूं?" प्रभु ने मुझसे कहा, १०
"उठो, और दमिश्क जाओ। जो कुछ तुम्हारे करने के लिए निर्धारित
किया गया है, वह सब तुमको वहीं बताया जाएगा।" जब उस ज्योति ११
के तेज के कारण मुझे कुछ दिखाई न दिया तो मैं अपने साथियों के हाथ
पकड़े हुए दमिश्क आया।

'तब हनन्याह नामक एक व्यक्ति, जो नियमशास्त्र के अनुसार १२
धर्मनिष्ठ थे और उस स्थान के यहूदियों में प्रतिष्ठित गिने जाते थे, मेरे १३
पास आकर खड़े हो गए और मुझसे बोले, "शाऊल भाई, दृष्टि प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
१४ करो !" उसी क्षण मुझे दृष्टि मिल गई और मैंने उन्हें देखा। तब उन्होंने कहा, "हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने पहले से ही तुम्हारा निर्वाचन कर लिया है कि तुम उनकी इच्छा को जानो, धर्म-पुरुष के दर्शन करो एवं उनके
१५ मुख की वाणी सुनो, क्योंकि तुम उनकी ओर से सब मनुष्यों के संमुख उन
१६ बातों के साक्षी होनेवाले हो जो तुमने देखी और सुनी हैं। अब विलम्ब क्यों? उठो, बपतिस्मा लो और उनका नाम लेकर अपने पापों को धो डालो।"

१७ 'जब मैं यरूशलेम लौटा और मंदिर में प्रार्थना कर रहा था,
१८ तो मैं ध्यानमग्न हो गया। मैंने देखा कि प्रभु मुझसे कह रहे हैं, "शीघ्रता करो और तुरंत यरूशलेम से बाहर चले जाओ, क्योंकि ये लोग मेरे
१९ संबंध में तुम्हारी साक्षी स्वीकार नहीं करेंगे।" मैंने कहा, "प्रभु, इन्हें तो ज्ञात है कि मैं आपके विश्वासियों को बंदी करता और पीटता था;
२० और जब आपके शहीद* स्तिफनुस का रक्तपात हो रहा था, उस समय मैं स्वयं पास खड़ा था और सहमत होकर हत्यारों के वस्त्रों की रखवाली
२१ कर रहा था।" किंतु प्रभु ने मुझसे कहा, "जाओ, क्योंकि मैं तुम्हें विजातियों के पास दूर दूर तक भेजूंगा।"'

पौलुस की रोमी नागरिकता

२२ यहां तक तो लोगों ने उनका कथन सुना। पर अब वे ऊंचे स्वर से चिल्ला उठे, 'इस मनुष्य को पृथ्वी से हटा दो। यह जीवित रहने योग्य
२३ नहीं।' जब वे चिल्लाने, वस्त्र उछालने और आकाश में धूल उड़ाने
२४ लगे तो सहस्रपति ने आदेश दिया, 'इसे भीतर गढ़ में ले चलो और कोड़े मारकर इसकी जांच करो कि मुझे ज्ञात हो कि ये लोग इसके विरुद्ध
२५ इस प्रकार क्यों चिल्ला रहे हैं।' जब वे लोग उनको बंधनों में जकड़ चुके तो पौलुस ने पास खड़े शतपति से पूछा, 'क्या यह विधि-सम्मत है कि

---

*अथवा साक्षी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप ऐसे व्यक्ति को जो रोमी नागरिक हो और अपराधी सिद्ध नहीं हुआ हो, कोड़े लगाएं।' जब शतपति ने यह सुना तो सहस्रपति के पास २६ जाकर कहा, 'यह आप क्या कर रहे हैं? यह व्यक्ति तो रोमी है!' सहस्रपति ने उनके पास जाकर पूछा, 'मुझे बताओ, क्या तुम रोमी २७ नागरिक हो?' उन्होंने कहा, 'हां।' सहस्रपति बोला, 'मुझे यह २८ नागरिकता प्रचुर धन व्यय करने पर मिली।' पौलुस ने कहा, 'पर मैं तो जन्म से ही रोमी हूं।' तब वे लोग जो उनकी जांच करने को २९ थे तत्काल दूर हट गए। सहस्रपति भी यह जानकर सहम गया कि यह रोमी नागरिक हैं और मैंने इनको बंदी किया है।

पौलुस का परिषद् के संमुख वक्तव्य

दूसरे दिन तथ्य जानने की इच्छा से कि यहूदी उन पर क्यों ३० अभियोग लगाते हैं, उसने पौलुस के बंधन खोल दिए, महापुरोहितों एवं समस्त महासभा को एकत्रित होने की आज्ञा दी, और पौलुस को लाकर उनके संमुख खड़ा किया।

23 पौलुस ने महासभा की ओर एकटक दृष्टि से देखा और कहने १ लगे, 'भाइयो, मैंने आज के दिन तक परमेश्वर के लिए शुद्ध अंतःकरण से जीवन व्यतीत किया है।' इस पर महापुरोहित हनन्याह २ ने पास खड़े लोगों को आज्ञा दी कि इसके मुंह पर थप्पड़ मारो। पौलुस ३ ने उससे कहा, 'हे पुती हुई भीत, तुम्हें परमेश्वर मारेगा। तुम नियमशास्त्र के अनुसार मेरा न्याय करने बैठे हो और नियमशास्त्र के ही विरुद्ध मुझे मारने को कहते हो?' पास खड़े लोग उनसे बोले, 'क्या तुम ४ परमेश्वर के महापुरोहित को अपशब्द कह रहे हो?' इस पर पौलुस ५ ने कहा, 'भाइयो, मुझे नहीं ज्ञात था कि यह महापुरोहित है, क्योंकि शास्त्र का लेख है, "प्रजा के किसी शासक को अपशब्द न कहना।"'

पौलुस ने यह देख कर कि एक दल सदूकियों का है और दूसरा ६ फरीसियों का, महासभा में पुकार कर कहा, 'भाइयो, मैं फरीसी हूं और

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरीसियों का वंशज। मृतकों के पुनरुत्थान की आशा के कारण मुझ
७ पर अभियोग चलाया जा रहा है।' उनका यह कहना था कि फरीसियों
८ और सदूकियों में विवाद होने लगा और सभा में फूट पड़ गई। क्योंकि सदूकियों का कहना है कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न आत्मा;
९ परंतु फरीसी इन सबको मानते हैं। अस्तु, बड़ा कोलाहल मचा; फरीसी दल के कुछ शास्त्री उठकर झगड़ने और कहने लगे, 'हम इस व्यक्ति में कोई बुराई नहीं पाते। कौन जाने इससे कोई आत्मा या स्वर्गदूत बोला
१० हो?' जब विवाद बहुत बढ़ा तो सहस्रपति को भय हुआ कि कहीं वे पौलुस को खंड-खंड न कर डालें; इसलिए उसने सैन्यदल को आज्ञा दी
११ कि नीचे जाकर उनको छुड़ा लें और गढ़ में ले आएं। उसी रात को प्रभु ने पौलुस के समीप खड़े होकर कहा, 'निर्भय रहो; जैसे तुमने यरूशलेम में मेरी साक्षी दी है, वैसे ही तुम्हें रोम में साक्षी देनी होगी।'

यहूदियों का पौलुस के विरुद्ध षड्यंत्र

१२ दिन होने पर यहूदियों ने षड्यंत्र रचा और मिलकर शपथ ली कि
१३ जब तक पौलुस को मार न डालें अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। जिन लोगों
१४ ने यह षड्यंत्र रचा था वह चालीस से अधिक थे। उन्होंने महापुरोहितों और धर्मवृद्धों के पास जाकर कहा, 'हमने घोर शपथ ली है कि जब तक
१५ पौलुस को मार न डालें, अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे; इसलिए आप लोग परिषद् और सहस्रपति को सूचित करें कि वे उसे आपके पास भेज दें, मानो आप उसके संबंध में और भी ठीक जांच करना चाहते हैं; और हम लोग उसके पहुंचने से पहले ही उसे मार डालने को तैयार हैं।'

१६ पौलुस के भांनजे ने इस षड्यंत्र के विषय में सुना तो गढ़ में
१७ पहुंचा और भीतर जाकर पौलुस को समाचार सुनाया। पौलुस ने एक शतपति को बुला कर कहा, 'इस नवयुवक को सहस्रपति के पास ले जाइए
१८ क्योंकि इसको उनसे कुछ कहना है।' अतः उसने सहस्रपति के पास उसे ले जाकर कहा, 'बंदी पौलुस ने मुझे बुलाकर निवेदन किया कि इस

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नवयुवक को आपके पास लाऊं क्योंकि यह आपसे कुछ कहना चाहता है।' सहस्रपति उसे हाथ पकड़ कर एकांत में ले गया और पूछा, 'तुम १६ मुझे कौन सी बात बताना चाहते हो?' उसने कहा, 'यहूदियों ने मंत्रणा २० की है कि आपसे निवेदन करें कि कल आप पौलुस को परिषद् में ले जाएं मानों वे उनके संबंध में और अधिक जांच करना चाहते हैं। आप उन लोगों की बात मत मानिए, क्योंकि उनमें से चालीस से अधिक मनुष्य २१ पौलुस की घात में हैं; उन्होंने शपथ ली है कि जब तक उन्हें मार न डालें, अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। वह इस क्षण भी तैयार हैं, और आपकी अनुमति की प्रतीक्षा कर रहे हैं।' सहस्रपति ने उसे यह आदेश २२ देकर बिदा किया, 'यह किसी को न बताना कि तुमने इन बातों की सूचना मुझे दे दी है।'

पौलुस का कैसरिया को प्रयाण

तब उसने दो शतपतियों को बुलाकर कहा, 'कैसरिया जाने को २३ दो सौ सैनिक, सत्तर अश्वारोही और दो सौ भालैत एक प्रहर रात तक तैयार रखो।' घोड़ों का भी प्रबंध करो जिन पर पौलुस को बैठाकर २४ व उन्हें राज्यपाल फेलिक्स के पास सकुशल पहुंचा दें।' उसने इस आशय २५ का पत्र भी लिखा,

'परम श्रेष्ठ राज्यपाल फेलिक्स को क्लौदियुस लूसियास का २६ नमस्कार। इस मनुष्य को यहूदियों ने पकड़ लिया था और वे इसे मार २७ डालना चाहते थे; पर मैं सैनिकों सहित जा पहुंचा, और जब मुझे ज्ञात हुआ कि यह रोमी नागरिक है तो इसे छुड़ा लिया। मैं जानना चाहता २८ था कि इसके विरुद्ध क्या अभियोग है, इसलिए मैं इसे उनकी परिषद् में ले गया। वहां मुझे पता चला कि वे अपने नियमशास्त्र के कतिपय २६ प्रश्नों के विषय में इस पर अभियोग लगा रहे हैं, पर कोई ऐसा अभियोग नहीं जिसके कारण इसे कारागार या मृत्युदंड दिया जाए। मुझे ज्ञात ३० हुआ है कि इस मनुष्य के विरुद्ध षड्यंत्र रचा जा रहा है इसलिए मैं इसे तुरत

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आपके पास भेज रहा हूं। मैंने इसके अभियोगियों को भी आदेश दिया है कि आपके सामने इसके विरुद्ध अभियोग चलाएं।'

३१ सैनिक आज्ञानुसार पौलुस को लेकर रातों रात अंतिपत्रिस आए,
३२ और दूसरे दिन अश्वारोहियों को उनके साथ जाने के लिए छोड़कर
३३ गढ़ को लौट गए। उन्होंने कैसरिया जाकर राज्यपाल को पत्र दिया
३४ और पौलुस को भी उसके संमुख उपस्थित किया। पत्र पढ़ने के उपरांत उसने पुछा, 'तुम किस प्रांत के हो?' और यह जानकर कि वह
३५ किलकिया के निवासी हैं, उसने कहा, 'जब तुम्हारे अभियोगी आ जाएंगे तब तुम्हारी सुनवाई होगी।' उसने आदेश दिया कि पौलुस को हेरोदेस के गढ़ में सुरक्षित रखा जाए।

फेलिक्स के संमुख पौलुस का अभियोग

24 पांच दिन पश्चात् महापुरोहित हनन्याह धर्मवृद्धों और तिरतुल्लुस नामक अभिभापक के साथ वहां आया। इन लोगों ने राज्यपाल के संमुख पौलुस के विरुद्ध प्रकरण प्रस्तुत किया।
२ जब पौलुस की पुकार हुई तो तिरतुल्लुस ने उनपर इस प्रकार अभियोग लगाया :

'परमश्रेष्ठ फेलिक्स, आपके कारण हमारे बीच शांति स्थापित है, एवं आपकी दूरदर्शिता से इस जाति के निमित्त अनेक सुधार संपन्न हुए
३ हैं—यह बात हम लोग सब प्रकार से सब स्थानों में बड़ी कृतज्ञता पूर्वक
४ स्वीकार करते हैं। मैं आपका अधिक समय नहीं लेना चाहता, अतः
५ आपसे निवेदन करता हूं कि हमारे दो शब्द सुनने की कृपा करें। यह मनुष्य संक्रामक रोग के सदृश है, यह संसार भर के सारे यहूदियों में
६ आंदोलन करता फिरता है और नासरी कुपंथ का मुखिया है। इसने यहां तक प्रयत्न किया कि मंदिर को अपवित्र करे पर हमने इसे पकड़ लिया।
७ इसे हमने अपने नियमशास्त्र के अनुसार दण्ड दिया होता, किंतु सहस्त्रपति
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
लूसियास ने आकर इसे हमारे हाथ से छीन लिया, और इस पर अभियोग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लगाने के अभियोगियों को आपके संमुख उपस्थित होने की आज्ञा दी।
आप स्वयं इन सब बातों के विषय इससे पूछताछ करें, तो आपको हमारे ८
लगाए अभियोगों की सत्यता विदित हो जाएगी।' यहूदियों ने भी ९
अभियोग का समर्थन किया और कहा, 'ये बातें ठीक इसी प्रकार हैं।'
राज्यपाल ने पौलुस को बोलने का संकेत किया तो उन्होंने इस प्रकार १०
उत्तर दिया, 'यह जानकर कि आप अनेक वर्षों से इस जाति के न्यायाधीश
हैं, मुझे अपने पक्ष का समर्थन करने में हर्ष हो रहा है। आप पता लगा ११
सकते हैं कि मुझे उपासना के लिए यरूशलेम में आए अभी बारह दिन
से अधिक नहीं हुए हैं; पर इन लोगों ने मुझे न तो मंदिर में, न १२
सभागृहों* और न कहीं नगर में किसी से वाद विवाद करते अथवा
जनता में उत्तेजना फैलाते पाया; और न वे इन अभियोगों को, जो वे १३
अब मुझ पर लगा रहे हैं, आपके सामने प्रमाणित कर सकते हैं।
हां, यह मैं आपके संमुख स्वीकार करता हूं कि उस 'मार्ग' के अनुसार १४
जिसे ये कुपंथ कहते हैं, मैं अपने पूर्वजों के परमेश्वर की उपासना करता हूं,
और नियमशास्त्र एवं नबियों ने जो कुछ लिखा है उस सब पर मेरा विश्वास
है। मुझे परमेश्वर से आशा है, जैसे इनको भी है, कि धर्मात्मा और अधर्मी, १५
दोनों का पुनरुत्थान होगा। इसलिए मेरा सदा प्रयत्न रहता है कि १६
परमेश्वर और मनुष्यों की दृष्टि में मेरा अंतःकरण निर्दोष प्रमाणित हो।
अनेक वर्षों के अनंतर मैं अपने लोगों को दान पहुंचाने एवं भेंट चढ़ाने आया १७
था; मुझे लोगों ने शुद्ध दशा में मंदिर के भीतर यह सब करते हुए देखा। १८
मैं न तो भीड़ लगाए था और न हुल्लड़ मचा रहा था। परंतु आसिया के १९
कुछ यहूदी........ उचित तो यह था कि यदि उन्हें मेरे विरोध में कुछ कहना
था तो आपके सामने उपस्थित होकर अभियोग लगाते। या फिर ये लोग २०
ही बताएं कि जब मैं परिषद् के संमुख उपस्थित हुआ तो इन्होंने मुझमें
कौनसा अपराध पाया? हां, मैं इनके बीच खड़ा होकर यह अवश्य पुकार २१

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

*मूल में 'प्रेतोरियम'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उठा था, "मृतकों के पुनरुत्थान के विषय में आज आपके सामने मुझ पर अभियोग चलाया जा रहा है।"'

फेलिक्स द्वारा सुनवाई का स्थगित होना

२२ फेलिक्स को इस 'मार्ग' की अच्छी जानकारी थी, इसलिए उसने सुनवाई स्थगित कर दी और कहा, 'सहस्रपति लूसियास के आने पर मैं २३ तुम्हारे प्रकरण पर निर्णय दूंगा।' फिर उसने शतपति को बुलाकर आज्ञा दी कि पौलुस को पहरे में रखा जाए, पर उन्हें कुछ स्वतन्त्रता रहे और उनके स्वजनों को उनकी सेवा करने से न रोका जाए।'

२४ कुछ दिनों पश्चात् फेलिक्स अपनी पत्नी, द्रुसिल्ला नामक यहूदी महिला को लेकर आया। उसने पौलुस को बुलवा कर उनसे ख्रिस्त यीशु २५ पर विश्वास करने के विषय वार्ता सुनी। परंतु जब वह धार्मिकता, संयम और आनेवाले दंड की चर्चा करने लगे तो फेलिक्स भयभीत हो उठा और बोला, 'अभी तुम जाओ; समय मिलने पर मैं तुम्हें फिर बुला- २६ ऊंगा।' उसे पौलुस से कुछ धन प्राप्त होने की आशा थी। इसलिए २७ भी वह प्रायः उन्हें बुलाकर उनसे वार्तालाप करता रहा। दो वर्ष बीतने पर जब फेलिक्स के स्थान पर पुरकियुस फेस्तुस नियुक्त हुआ तो फेलिक्स यहूदियों को प्रसन्न करने के लिए पौलुस को बंदी ही छोड़ गया।

फेस्तुस के संमुख पौलुस पर अभियोग

25 फेस्तुस अपने प्रांत में आने के तीन दिन पश्चात् कैसरिया से यरूशलेम गया। वहां महापुरोहितों और यहूदियों के प्रमुख पुरुषों ने पौलुस का प्रकरण उसके संमुख रखा और अनुरोध किया, ३ 'आप उन्हें यरूशलेम फिर बुलवा लें तो बड़ी कृपा होगी,' क्योंकि वे लोग मार्ग में ही उनकी हत्या कर डालने का षड्यंत्र रच रहे थे। ४ फेस्तुस ने उत्तर दिया, 'पौलुस कैसरिया में बंदी है और मैं वहां शीघ्र ५ जाने वाला हूं। इसलिए आप लोगों में से जो अधिकारी हैं वे मेरे साथ

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले, और यदि उसने कोई अनुचित काम किया है तो उस पर अभियोग चलाएं।'

वह उनके बीच कोई आठ या दस दिन बिताकर कैसरिया गया ६ और दूसरे ही दिन न्यायासन पर बैठ कर आज्ञा दी कि पौलुस को उपस्थित किया जाए। उनके उपस्थित होने पर यरूशलेम से आए हुए यहूदियों ७ ने उन्हें घेर लिया और उन पर अनेक गम्भीर आरोप लगाने लगे, जिन्हें वे प्रमाणित नहीं कर सके। पौलुस ने अपने पक्ष के समर्थन में कहा, 'मैंने न ८ तो यहूदियों के नियमशास्त्र के विरुद्ध, न मंदिर के विरुद्ध, और न कैसर के विरुद्ध कोई अपराध किया है।' फिर भी फेस्तुस ने यहूदियों को प्रसन्न ९ करने के लिए पौलुस से पूछा 'क्या तुम चाहते हो कि यरूशलेम जाओ और वहां मेरे संमुख इन बातों के संबंध में तुम्हारा न्याय हो?' इस १० पर पौलुस ने कहा, मैं कैसर के न्यायासन के संमुख खड़ा हुआ हूं, यहीं मेरा न्याय होना चाहिए। जैसा कि आपको भलीभांति ज्ञात है कि मैंने यहूदियों को कोई हानि नहीं पहुंचाई। यदि मैं अपराधी हूं, और यदि ११ मैंने मृत्युदंड के योग्य कोई काम किया है तो मैं मरने से मुंह नहीं मोड़ता; परंतु यदि इनके द्वारा मुझ पर लगाए गए अभियोग मिथ्या हैं तो कोई मुझे इनके हाथ नहीं सौंप सकता। मैं कैसर की दुहाई देता हूं।' तब १२ फेस्तुस ने मंत्रिमंडल से परामर्श कर उत्तर दिया, 'तुमने कैसर की दुहाई दी है; तुम कैसर के यहां ही जाओगे।'

अग्रिप्पा और बिरनीके

कुछ दिन और बीत गए तो राजा अग्रिप्पा और बिरनीके फेस्तुस १३ का अभिनंदन करने कैसरिया में आए। वे वहां कई दिन ठहरे। १४ फेस्तुस ने पौलुस के विषय राजा को बताते हुए कहा, 'फेलिक्स एक मनुष्य को बंदी छोड़ गए हैं; जब मैं यरूशलेम में था तो यहूदियों के महा- १५ पुरोहितों और धर्मवृद्धों ने उसके संबंध में मुझे सूचना दी और निवेदन किया कि उसे दंड दिया जाए। मैंने उन्हें उत्तर दिया, "रोमियों की १६

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथा यह नहीं है कि अभियुक्त को दंडित करें, और पहिले उसे अभियोगियों
१७ के संमुख अभियोग के प्रतिवाद का अवसर न दें।" अस्तु, जब वे लोग
यहां एकत्रित हुए तो मैं अविलम्ब दूसरे ही दिन न्यायासन पर बैठा और
१८ उस मनुष्य को उपस्थित करने की आज्ञा दी। जब अभियोगी खड़े
हुए तो उन्होंने उस पर कोई ऐसा अभियोग नहीं लगाया, जिसे मैं अपराध
१९ मान सकूं। उससे उनका विवाद अपने धार्मिक विषयों के संबंध में था,
और किसी यीशु के विषय में भी, जो मर चुका है, परंतु पौलुस का कथन
२० है कि वह जीवित है। मेरी समझ में नहीं आया कि इन बातों की
छानबीन कैसे की जाए, अतः मैंने उससे पूछा कि क्या तुम यरूशलेम जाना
२१ चाहोगे कि वहां इस संबंध में तुम्हारा न्याय किया जाए। परंतु जब
पौलुस ने दुहाई दी कि उसे सम्राट् के न्याय एवं निर्णय के लिए संरक्षण
में रखा जाए, तो मैंने आदेश दिया कि जब तक मैं उसे कैसर के पास
२२ नहीं भेजता, वह पहरे में रहे।' इस पर अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, 'मेरी
भी अभिलाषा रही है कि इस व्यक्ति को सुनूं।' फेस्तुस बोला, 'कल आप
सुन लेंगे।'

२३ अतः दूसरे दिन अग्रिप्पा और बिरनीके बड़े समारोह के साथ आए
और सहस्रपति एवं नगर के गण्यमान्य व्यक्तियों के साथ सभा-भवन
२४ में प्रवेश किया। तब फेस्तुस के आदेश से पौलुस लाए गए। फेस्तुस
ने कहा, 'हे राजन् अग्रिप्पा और समस्त उपस्थित सज्जनो, इस व्यक्ति को
देखिए जिसके विषय में सब यहूदियों ने यहां और यरूशलेम में भी मुझसे
चिल्ला चिल्ला कर अनुरोध किया कि यह व्यक्ति जीवित रहने योग्य
२५ नहीं। मैं इस निश्चय पर पहुंचा हूं कि इसने मृत्युदंड के योग्य कोई काम
नहीं किया है; परंतु जब स्वतः इसी ने सम्राट् की दुहाई दी तो मैंने इसे
२६ भेज देने का निर्णय किया। मेरे पास इसके विषय में स्वामी को लिखने
के लिए कोई निश्चित बात नहीं है। अतएव मैंने आप लोगों के संमुख,
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
और विशेषकर, हे राजन् अग्रिप्पा, आपके संमुख, इस व्यक्ति को उपस्थित
किया है कि इसकी जांच करने के उपरांत लिखने के लिए मुझे कुछ मिले।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे यह बात तर्कसंगत नहीं लगती कि बंदी को भेजा जाए, पर उसके अभियोगों का निर्देश न किया जाए।' २७

पौलुस का स्वपक्ष-समर्थन

26 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, 'तुम्हें अपने संबंध में बोलने की अनुमति है।' इस पर पौलुस हाथ उठा कर अपना पक्ष-समर्थन करते हुए कहने लगे : १

'हे राजन् अग्रिप्पा, यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आपके सामने उन बातों का प्रतिवाद करने का अवसर मिला है जिनका अभियोग यहूदी मुझ पर लगाते हैं। आप यहूदियों की सब प्रथाओं और विवादों से विशेष रूप से परिचित हैं, इसलिए मेरी प्रार्थना है कि मेरी बात धैर्यपूर्वक सुनने की कृपा करें।' २ ३

'मेरा जीवन आरम्भ से ही अपनी जाति में और यरूशलेम में बीता है : वह युवावस्था से ही कैसा रहा इसे सब यहूदी जानते हैं। वे मेरे पुराने परिचित हैं; यदि वे साक्षी देना चाहें तो उन्हें ज्ञात है कि हमारे धर्म के सबसे कठोर पंथ के अनुसार मैंने फरीसी-जीवन बिताया है। परंतु अब मुझ पर अभियोग चल रहा है, क्योंकि मुझे उस प्रतिज्ञा की आशा है जो परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से की ! इसी आशा की पूर्ति के लिए हमारे बारह गोत्र तत्परता से अहर्निश परमेश्वर की उपासना करते हैं ; और हे राजन्, इसी आशा के लिए, यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं। आप लोगों को यह बात अविश्वसनीय क्यों लगती है कि परमेश्वर मृतकों को जीवित करते हैं। ४ ५ ६ ७ ८

'मैं स्वयं सोचता था कि नासरत निवासी यीशु के नाम के विरुद्ध मुझे बहुत कुछ करना है। मैंने यरूशलेम में ऐसा ही किया भी। मैंने महापुरोहितों से अधिकार लेकर, अनेक संतों को कारागार में डाल दिया, और जब उनकी हत्या की गई तो उसमें मेरी सम्मति थी। मैंने अनेक सभागृहों में प्रयत्न किया कि मार-मार कर उन्हें यीशु की निंदा ९ १० ११

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिए विवश करूं। मैं क्रोध के कारण इतना उन्मत्त हो गया था कि विदेशी नगरों में भी जाकर उनको सताता था।

१२ 'ऐसी स्थिति में महापुरोहितों से अनुमति और अधिकार प्राप्त कर
१३ मैं दमिश्क को जा रहा था। तब हे राजन्, मध्यान्ह के समय मार्ग में मुझे एक दिव्य-ज्योति दीख पड़ी जो सूर्य से भी अधिक दीप्तिवान् थी,
१४ और जो मेरे तथा मेरे सहयात्रियों के चारों ओर चमक रही थी। जब हम सब पृथ्वी पर गिर पड़े तो मैंने सुना कि एक वाणी इब्रानी भाषा में मुझसे कह रही है, "शाऊल, शाऊल, तुम मुझे क्यों सताते हो? अंकुश
१५ पर पदप्रहार करना तुम्हारे लिए दुष्कर है।" मैंने पूछा, "प्रभु आप
१६ कौन हैं?" प्रभु ने कहा," मैं यीशु हूं, जिसे तुम सता रहे हो। परंतु उठो और अपने पैरों पर खड़े हो, क्योंकि मैंने तुमको इस कारण दर्शन दिया है कि जो बातें मैंने तुमको दिखाई हैं और दिखाऊँगा उन सबके निमित्त
१७ तुमको मैं अपना सेवक और साक्षी नियुक्त करूं। मैं इस प्रजा से तुम्हारी रक्षा करूंगा, और उन विजातियों से भी जिनके पास मैं तुमको भेज रहा
१८ हूं। मैं तुमको भेज रहा हूं कि उनकी आंखें खोल दो, जिससे वे अंधकार से ज्योति की ओर, तथा शैतान की शक्ति से परमेश्वर की ओर फिरें, अपने पापों की क्षमा पाएं और उन लोगों के बीच अधिकृत स्थान प्राप्त करें जो मुझ पर विश्वास द्वारा पवित्र हुए हैं।"

१९ 'फलतः हे राजन् अग्रिप्पा, मैंने इस स्वर्गीय-दर्शन की आज्ञा का
२० उल्लंघन नहीं किया, परंतु पहिले दमिश्क में और तब यरूशलेम तथा समस्त यहूदिया प्रदेश एवं विजातियों में प्रचार करता रहा, "हृदय परिवर्तन कर परमेश्वर की ओर लौटो और हृदय-परिवर्तन के अनुरूप
२१ कार्य करो।" यही कारण था कि यहूदियों ने मुझे मंदिर में पकड़ा और
२२ मार डालने की चेष्टा की। किंतु परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक विद्यमान हूं, और छोटे बड़े सबके संमुख साक्षी दे रहा हूं। जिन बातों की भविष्यवाणी नबियों ने और मूसा ने की, उनसे अधिक मैं कुछ नहीं बताता।
२३ अर्थात् यह कि ख्रिस्त को दुख उठाना है, और यह कि वही पहले पहले

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मृतकों में से जीवित होकर अपनी प्रजा को एवं विजातियों को ज्योति का संदेश देंगे।'

जब वह इस प्रकार अपने पक्ष का समर्थन कर रहे थे, तो फेस्तुस २४ उच्च स्वर में चिल्ला उठा, 'पौलुस तुम पागल हो। अत्यधिक विद्याभ्यास ने तुम्हें विक्षिप्त कर दिया हैं।' पौलुस ने उत्तर दिया, 'परम श्रेष्ठ २५ फेस्तुस, मैं पागल नहीं हूं। मेरे वचन सत्य और विवेकपूर्ण हैं। महाराज २६ इस विषय को जानते हैं, उन्हीं के संमुख मैं निस्संकोच हो बोल रहा हूं। मुझे निश्चय है कि उनसे कोई बात छुपी नहीं क्योंकि यह घटना किसी कोने में नहीं हुई। राजन् अग्रिप्पा, क्या आप नबियों पर विश्वास करते हैं? २७ मैं जानता हूं कि आप विश्वास करते हैं?' इस पर अग्रिप्पा ने पौलुस २८ से कहा, 'क्या तुम अनायास ही* मुझे सहमत करना और ख्रिस्ती बनाना चाहते हो?' पौलुस ने उत्तर दिया, 'अनायास हो या सप्रयास, परमेश्वर २९ करें कि न केवल आप, वरन् ये सब, जो आज मेरा वचन सुन रहे हैं, इन बेड़ियों को छोड़, मेरे सदृश हो जाएं।'

तब राजा, राज्यपाल और बिरनीके तथा उनके साथ बैठे हुए व्यक्ति ३० उठ गए और एकांत में एक दूसरे से बातें करने और कहने लगे, 'इस ३१ व्यक्ति ने मृत्युदंड अथवा कारागार के योग्य कोई काम नहीं किया है।' अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, 'यदि इस पुरुष ने कैसर की दुहाई न दी ३२ होती तो मुक्त हो सकता था।'

पौलुस की रोम यात्रा: क्रेत

27 जब यह निश्चित हो गया कि हम जलयान द्वारा इतालिया १ जाएंगे तो पौलुस और अन्य कई बंदीजन यूलियुस नामक शतपति के हाथ सौंप दिए गए। वह सम्राट् औगुस्तुस के सैन्यदल का था

*अथवा 'अल्प समय में ही।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ हम लोग अद्रमुत्तियुम के एक जलयान पर चढ़े जो आसिया के तटवर्ती स्थानों पर होता हुआ जाने वाला था, और लंगर खोल दिया। थिस्सलुनीके-निवासी अरिस्तर्खुस नामक एक मकिदूनी भी हमारे साथ ३ था। दूसरे दिन हमने सैदा में लंगर डाला। यहां यूलियुस ने पौलुस के प्रति सौजन्य दिखाया और उन्हें अपने मित्रों के यहां जाने एवं उनकी ४ सहायता स्वीकार करने की अनुमति दे दी। वहां से लंगर उठाकर हम ५ कुप्रुस की आड़ में खेने लगे क्योंकि वायु विपरीत थी। जब हम किलकिया और पंफूलिया के तटवर्ती समुद्र को पार कर चुके तो लूसिया के मूरा ६ नामक स्थान पर पहुंचे। वहां शतपति को सिकंदरिया का एक जलयान इतालिया जाता हुआ मिला जिस पर उसने हमें चढ़ा दिया। ७ हम लोग कई दिनों तक धीरे धीरे खेकर कठिनता से कनिदुस के संमुख पहुंचे। अब वायु हमें आगे बढ़ने से रोक रही थी इसलिए हम ८ सलमोन के समीप क्रेते की आड़ में खेने लगे। उसके किनारे किनारे खेते हुए हम कठिनता से "मनोहर पोताश्रय" नामक स्थान पर पहुंचे। यहां से लसया नगर निकट है।

मिलिते की ओर: भूमध्यसागर में तूफान

९ पर्याप्त समय बीत चुका था, यहां तक कि उपवास के दिन भी बीत गए थे, इसलिए जल-यात्रा करना निरापद नहीं था। अतः पौलुस ने लोगों १० को परामर्श दिया, 'सज्जनो, मैं देख रहा हूं कि हमें इस जलयात्रा से माल और जलयान की ही नहीं, वरन् प्राणों की भी हानि उठानी पड़ेगी।' ११ किंतु शतपति ने पौलुस के कथन की अपेक्षा नायक और जलयान के स्वामी १२ की बातों पर अधिक ध्यान दिया। यह बंदरगाह शीत ऋतु के लिए उपयुक्त नहीं था, इस कारण अधिकांश लोगों की सम्मति हुई कि यहां से लंगर खोल दें और किसी न किसी प्रकार फीनिक्स पहुंच कर शीत-ऋतु विताएं। यह क्रेत का एक बंदरगाह है जिसका मुख दक्षिण-पश्चिम और १३ उत्तर पश्चिम* को है। जब दक्षिण-पवन मंद-मंद बहने लगा तो उन्होंने

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अथवा 'उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पूर्व

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचा कि हमारा उद्देश सफल हो गया। उन्होंने लंगर उठाया और क्रेत के किनारे किनारे चल पड़े। पर शीघ्र ही स्थल की ओर से यूरकुलीन* १४ नामक आंधी उठी। जब जलयान आंधी में फंस गया और उसका सामना १५ करने में असमर्थ हुआ तो हमने उसे बहने दिया। क्लौदा‡ नामक एक १६ छोटे द्वीप की आड़ में बहते-बहते हम कठिनाई से डोंगी को ऊपर खींच सके। उसे उठाने के पश्चात् नाविकों ने अनेक उपाय करके जलयान १७ को नीचे से बांधा और सुरतिस† में फंस जाने के भय से पाल उतार कर योंही बह चले। हम आंधी से बुरी तरह झकझोरे खा रहे थे, इसलिए वे १८ दूसरे दिन माल समुद्र में फेंकने लगे; तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों १९ जलयान के रस्से आदि भी फेंक दिए। बहुत दिनों तक सूर्य और नक्षत्रों २० के दर्शन नहीं हुए एवं आंधी का वेग भी वैसा ही रहा था। अब हमें अपने बचने की कोई आशा न रही।

लोग कई दिनों से निराहार थे, अतः पौलुस ने उनके बीच में २१ खड़े होकर कहा, 'सज्जनो, उचित तो यह था कि तुम मेरे कथन पर ध्यान देते और क्रेत से लंगर न उठाते ; तब न तो यह विपत्ति सहनी पड़ती और न यह हानि उठानी पड़ती। तो भी मेरा तुमसे अनुरोध है कि धैर्य २२ रखो। तुम लोगों में से किसी की प्राण–हानि न होगी, केवल जलयान नष्ट हो जाएगा। जिस परमेश्वर का मैं हूं और जिसकी उपासना मैं करता २३ हूं, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे समीप खड़े होकर कहा, "पौलुस, २४ डरो मत। तुम्हारा कैसर के संमुख उपस्थित होना अनिवार्य है। और देखो, परमेश्वर ने तुम्हारे सब सहयात्री तुमको प्रदान किए हैं।" इस २५ कारण, सज्जनो, धैर्य रखो। मुझे परमेश्वर पर विश्वास है कि जैसा मुझ से कहा गया है, ठीक वैसा ही होगा। हम अवश्य किसी द्वीप से जा लगेंगे।' २६

---

* अर्थात् 'पूर्वोत्तर'

‡ पाठांतर कौदा

† एक उथली खाड़ी का नाम

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७ जब चौदहवीं रात आई और हम अद्रिया-सागर में इधर उधर भटक रहे थे तो लगभग आधी रात को नाविकों ने अनुभव किया कि हम २८ किसी देश के निकट पहुंच रहे हैं। उन्होंने थाह ली तो बीस व्याम जल पाया ; थोड़ा आगे चलकर उन्होंने फिर थाह ली तो पंद्रह व्याम। २९ तब इस डर से कि कहीं चट्टानों में न जा पड़ें उन्होंने जलयान के पिछले भाग से चार लंगर डाले और प्रातःकाल होने की प्रतीक्षा करने लगे। ३० किंतु नाविक जलयान से भागने का विचार कर रहे थे और अगले भाग ३१ से लंगर डालने के बहाने वे डोंगी को समुद्र में उतार चुके थे। अतः पौलुस ने शतपति और सैनिकों से कहा, 'यदि ये मनुष्य जलयान पर ३२ न ठहरे तो आप लोग भी नहीं बच सकते' इस पर सैनिकों ने रस्सियां काट कर डोंगी गिरा दी।

३३ जब दिन निकलने को हुआ तो पौलुस ने उन सबको भोजन करने के लिए उत्साहित किया, 'आज चौदह दिन हो गए, तुम लोग चिंता के ३४ कारण निराहार हो। तुमने कुछ नहीं खाया। मेरा तुमसे अनुरोध है कि कुछ तो भोजन करो ; इससे तुम्हें बल मिलेगा ! तुममें से किसी ३५ का बाल भी बांका न होगा।' यह कहकर उन्होंने रोटी ली, सबके सामने ३६ परमेश्वर को धन्यवाद दिया और तोड़कर खाने लगे। इससे सबको ३७ आश्वासन मिला और वे भी भोजन करने लगे। जलयान पर हम सब ३८ दो सौ छिहत्तर* प्राणी थे। भोजन से तृप्त हो जाने पर लोगों ने समुद्र में गेहूं फेंक कर जलयान को हलका किया।

३९ जब दिन निकला तो वे उस भूमि को न पहिचान सके, पर उनकी दृष्टि एक खाड़ी पर पड़ी जिसका तट रेतीला था। उन्होंने विचार किया ४० कि यदि हो सके तो इसीमें जलयान को लगा दिया जाए। उन्होंने लंगर काट कर समुद्र में डाल दिए और साथ ही पतवारों के बंधन ढीले ४१ कर दिया। तब वे वायु के संमुख पाल चढ़ा कर तट की ओर चले। परंतु

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* कुछ प्रतियों के अनुसार, 'छिहत्तर'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलमग्न बालू में धंस जाने के कारण उन्होंने जलयान को वैसे ही रहने दिया। उसका अगला भाग गड़ कर अचल हो रहा पर पिछला भाग लहरों के थपेड़ों से टूटने लगा। ४२ सैनिकों का विचार था कि बंदियों को मार डाला जाए जिससे कोई तैरकर भाग न सके। ४३ परंतु शतपति ने पौलुस की प्राणरक्षा के निमित्त उनकी योजना रोकी। उसने आज्ञा दी कि जो तैर सकते हैं वे पहले कूद कर भूमि पर निकल जाएं, ४४ और शेष लोग लकड़ी के पटरों और जलयान की टूटी वस्तुओं के सहारे जाएं। इस प्रकार हम सब भूमि पर सकुशल पहुंच गए।

मिलिते में पौलुस का स्वागत

28 १ इस प्रकार बच जाने के उपरान्त हमें ज्ञात हुआ कि उस द्वीप का नाम मिलिते है। २ वहां के निवासियों ने हमारे प्रति बड़ी सहृदयता प्रदर्शित की और आग जलाकर हमारा स्वागत किया, क्योंकि वर्षा होने लगी थी और ठंड भी थी। ३ जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठा एकत्रित कर आग पर रखा था तो ताप के कारण एक सर्प निकला और उनके हाथ से लिपट गया। ४ वहां के निवासियों ने उस जंतु को उनके हाथ से लटकते देखा तो एक दूसरे से कहने लगे, 'निश्चय, यह कोई हत्यारा है। यह समुद्र से बच निकला था पर न्याय की देवी* इसे जीने नहीं देना चाहती।' ५ पौलुस ने उस सर्प को अग्नि में झटक दिया, और उन्हें कोई हानि नहीं पहुंची। ६ लोगों का अब भी अनुमान था कि वह सूज जाएंगे और सहसा गिरकर मर जाएंगे। जब वे देर तक प्रतीक्षा करते रहे और देखा कि उनका कुछ अशुभ नहीं हुआ तो उन लोगों का विचार बदल गया और वे कहने लगे 'यह कोई देवता है।'

७ उस स्थान के आसपास, द्वीप के पुबलियुस नामक मुखिया की भूमि थी। उसने हमारा स्वागत कर तीन दिन प्रेम भाव से हमारा आतिथ्य किया। ८ पुबलियुस का पिता ज्वर तथा उदर रोग से पीड़ित था। पौलुस

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अक्षरशः "दिके"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने उसके पास घर में जाकर प्रार्थना की और उस पर हाथ रख कर उसे
९ स्वस्थ कर दिया। जब यह ज्ञात हुआ तो द्वीप के अन्य रोगी भी आकर
१० स्वस्थ होने लगे। उन्होंने हमारा बहुत आदर किया* और जब हम चलने लगे तो हमारी आवश्यकता की वस्तुएं लाकर जलयान पर रख दीं।

मिलिते से रोम की ओर

११ तीन महीने के पश्चात् हम सिकंदरिया के एक जलयान पर चढ़े, जो इस द्वीप में शीत काल भर था और जिसका चिह्न था दियुसकूरी†।
१२ हम सुरकूसा में लंगर डाल कर वहां तीन दिन ठहरे। वहां से किनारे
१३ किनारे जलयान पर रेगियुम पहुंचे, और एक दिन पश्चात् दक्षिण-पवन
१४ चलने लगी, तो दूसरे दिन पुतियुली आए। वहां बंधुओं से हमारी भेंट हुई। उनके अनुरोध पर हम सात दिन उनके यहां ठहरे। इस प्रकार हम
१५ रोम तक आ पहुंचे। यहां बंधुगण हमारी चर्चा सुन कर हमसे मिलने के लिए अप्पियुस के चौक और 'तीन सराय' नामक स्थान तक आए। उन्हें देखकर पौलुस प्रफुल्लित हुए और परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

१६ जब हम रोम पहुंचे तो पौलुस को अनुमति मिल गई कि एक सैनिक के साथ, जो उनकी रखवाली के लिए नियुक्त था, अपने निजी स्थान में रहें।

रोम के यहूदियों से वार्तालाप

१७ तीन दिन पश्चात् पौलुस ने यहूदियों के प्रमुख पुरुषों को बुलाया और उनके एकत्रित होने पर कहा, 'भाइयो, मैंने अपनी जाति अथवा पूर्वजों की प्रथाओं के विरुद्ध कोई काम नहीं किया, फिर भी मुझे बंदी बना

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अथवा, "हमें बहुत उपहार दिए"

† अर्थात् "यमजदेव"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर यरूशलेम से रोमियों के हाथ दे दिया गया है। इन लोगों ने मेरी १८
जांच कर मुझे मुक्त करना चाहा, क्योंकि मैंने मृत्युदंड के योग्य कोई काम
नहीं किया था, परंतु यहूदियों के विरोध से विवश होकर मुझे सम्राट् की १९
दुहाई देनी पड़ी-यह नहीं कि मुझे अपने ही लोगों पर अभियोग लगाना
था। इसी कारण मैंने आपको आमंत्रित किया है कि आप से मिलूं और २०
वार्तालाप करूं। मैं इस्राएल की आशा का समर्थक हूं; इसीलिए मैं
इन शृंखलाओं से बँधा हूं।' उन्होंने पौलुस से कहा, 'हमें यहूदिया से २१
आपके संबंध में कोई पत्र नहीं मिला, और न वहां से आए हुए भाइयों में
से किसी ने आपके विषय में संदेश दिया अथवा कोई बुरी बात कही। हम २२
आपके विचार सुनना चाहते हैं क्योंकि हमें ज्ञात है कि इस पंथ का सर्वत्र
विरोध हो रहा है।'

उन्होंने पौलुस के लिए एक दिन निश्चित किया और बड़ी संख्या २३
में उनके यहां आए। पौलुस ने प्रातःकाल से सायंकाल तक परमेश्वर के
राज्य की साक्षी दी और उन्हें यीशु के संबंध में मूसा के नियमशास्त्र तथा
नबियों के लेख से समझाया। कुछ ने उनके कथन को माना पर कुछ २४
अविश्वासी बने रहे। जब वे आपस में सहमत नहीं हुए और विदा २५
होने लगे, तब पौलुस ने उनसे यह एक बात कही: 'पवित्र आत्मा ने
यशायाह नबी द्वारा तुम्हारे पूर्वजों से ठीक ही कहा है:—

"इस प्रजा के पास जाकर कहो, २६
तुम सुनोगे अवश्य, पर न समझोगे,
तुम देखोगे अवश्य, पर तुम्हें सूझ न पड़ेगा;
क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, २७
वे कानों से ऊंचा सुनने लगे हैं,
उन्होंने अपनी आंखें बंद कर लीं हैं
कि कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें,
कानों से सुनें, मन से समझें, और लौट आएं
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
और मैं उनको स्वस्थ कर दूं।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८ इसलिए तुम्हें विदित हो कि परमेश्वर का यह उद्धार विजातियों को २९ भेजा गया है ; वे सुनेंगे।' उनके यह कहने पर यहूदी आपस में विवाद करते हुए वहां से चले गए।*

उपसंहार

३० पौलुस वहां अपने व्यय से† पूरे दो वर्ष तक रहे ; वह अपने ३१ पास आने वाले लोगों का स्वागत करते, निस्संकोच होकर निर्विघ्न रूप से परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते और प्रभु यीशु ख्रिस्त के विषय में शिक्षा देते थे।

---

* कुछ प्रतियों में पद २९ नहीं पाया जाता।
† अथवा 'किराए के घर में'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोमियों को पौलुस प्रेरित का पत्र

अभिवादन

1 ख्रिस्त यीशु के दास पौलुस की ओर से जो प्रेरित होने के लिए बुलाया गया और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिए पृथक् किया गया है, जिसकी प्रतिज्ञा उन्होंने पहिले से ही अपने नबियों के द्वारा पवित्र शास्त्र में अपने पुत्र एवं हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्त के संबंध में की ; वह शरीर की दृष्टि से दाऊद के वंश में उत्पन्न हुए पर पवित्रता की आत्मा की दृष्टि से और मृतकों में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर के पुत्र प्रमाणित हुए ; उनके द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरितत्व मिला कि उनके नाम के निमित्त सब जातियों को विश्वास का अनुगामी बनाएं जिनमें तुम भी हो, जो यीशु ख्रिस्त के होने के लिए बुलाए गए हो : १ २ ३ ४ ५ ६

तुम सबके नाम जो रोम में परमेश्वर के प्रिय हो और संत होने के लिए बुलाए गए हो : ७

तुम्हें हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु ख्रिस्त से अनुग्रह और शांति प्राप्त हों।

रोमगमन की अभिलाषा

पहिले, मैं यीशु ख्रिस्त के द्वारा तुम सबके लिए अपने परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं क्योंकि तुम्हारे विश्वास की कीर्ति समस्त संसार में फैल रही है। जिन परमेश्वर की आत्मिक आराधना मैं उनके पुत्र के सुसमाचार द्वारा करता हूं, वह मेरे साक्षी हैं कि किस प्रकार मैं तुम्हें निरंतर अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण करता हूं, और सदा विनय करता हूं कि परमेश्वर की इच्छा से यदि संभव हो तो किसी प्रकार शीघ्र तुम्हारे पास आने में सफल होऊं। मैं तुमसे मिलने के लिए उत्कंठित हूं कि तुम्हें सुदृढ़ करने के लिए आध्यात्मिक वरदान दे सकूं ; अर्थात् जब मैं तुम्हारे बीच ८ ९ १० ११ १२

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में होऊं तो मैं तुम्हारे विश्वास से प्रोत्साहन प्राप्त करूं और तुम मेरे
१३ विश्वास से। भाइयों, मैं नहीं चाहता कि तुम इससे अनजान रहो कि मैंने बार बार तुम्हारे पास आने की योजना बनाई है कि जैसे अन्य जातियों में वैसे ही तुम्हारे बीच भी कुछ फल प्राप्त कर सकूं, परंतु अब तक उसमें विघ्न पड़ते रहे हैं।

सुसमाचार का स्वरूप

१४ मैं यूनानियों और बर्बरों का, तथा ज्ञानियों और अज्ञानियों का
१५ ऋणी हूं; इसलिए मुझे उत्सुकता है कि तुम रोम-निवासियों को
१६ भी सुसमाचार सुनाऊं। सुसमाचार से मैं लज्जित नहीं होता: यह परमेश्वर की सामर्थ्य है जो प्रत्येक विश्वासी के उद्धार के लिए है—पहिले
१७ यहूदी, और फिर यूनानी के लिए। क्योंकि इसमें परमेश्वर का धर्म,* जो आदि से अन्त तक विश्वास पर ही आधारित है, प्रकट हो रहा है, जैसा कि शास्त्र का लेख है, 'विश्वास द्वारा धार्मिक जिएगा।'

विजातियों में पापाचार

१८ परंतु जो अधर्म से सत्य को दबाते हैं उनकी समस्त अभक्ति और
१९ अधर्म पर स्वर्ग से परमेश्वर का कोप प्रकट हो रहा है; कारण यह कि परमेश्वर के विषय में जो कुछ जाना जा सकता है वह उन पर प्रकट
२० है, स्वयं परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया है। परमेश्वर के अदृश्य गुण, अर्थात् उनकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, सृष्टि के आरंभ से ही उनकी रचना में स्पष्ट हैं, अतः उन लोगों के पास कोई उत्तर नहीं
२१ है; उन्होंने परमेश्वर को जानते हुए भी परमेश्वर के उपयुक्त उनकी स्तुति नहीं की और न उन्हें धन्यवाद दिया, वरन् व्यर्थ कुतर्क में पड़ गए,
२२ 'यहां तक कि उनका विवेकशून्य मन अंधकारमय हो गया। उन्होंने अपने

---

*मूल में, 'दिकैओसुने'। विद्वानों ने इस शब्द के अनेक प्रकार से अर्थ किए हैं, उदाहरण के लिए, 'योजना, नीतिमत्ता, धार्मिकता, धर्म' आदि।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बुद्धिमान् समझा परंतु मूर्ख सिद्ध हुए। उन्होंने अविनाशी परमेश्वर २३
के वैभव के स्थान पर नाशवान् मनुष्य, पक्षियों, पशुओं और सर्पों की
मूर्तियां ग्रहण कर लीं।

इस कारण परमेश्वर ने उन्हें मन की दुर्वासनाओं में छोड़ दिया जिसके २४
फलस्वरूप वे आपस में अपने शरीरों को दुर्व्यवहार द्वारा अपवित्र करने
लगे। ऐसे लोगों ने ईश्वरीय सत्य के स्थान पर झूठ को अपनाया; उन्होंने २५
सृष्टि की उपासना और आराधना की, सृष्टिकर्ता की नहीं, जो सर्वदा
धन्य है। आमेन।

इसलिए परमेश्वर ने उन्हें अधम वासनाओं में छोड़ दिया; यहां २६
तक कि उनकी स्त्रियां प्राकृतिक संबंध के स्थान पर अप्राकृतिक संबंध
रखने लगीं। इसी प्रकार पुरुष भी प्राकृतिक संबंध छोड़ कर एक दूसरे २७
के प्रति कामाग्नि में जलने लगे; पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज्ज कर्म
कर अपने में ही अपने भ्रष्टाचार का उचित फल पाया। उन्होंनें परमेश्वर २८
को मान्यता नहीं दी तो परमेश्वर ने भी उन्हें उन्हीं की नीच बुद्धि के
आश्रित छोड़ दिया, जिससे वे अनुचित काम करने लगे। वे प्रत्येक प्रकार २९
के अधर्म, दुष्टभाव, लोभ और द्वेष से भर गए, तथा ईर्ष्या, हत्या, विरोध,
कपट और कुबुद्धि से परिपूर्ण हो गए। वे चुगलखोर, परनिंदक, ईश्वर- ३०
द्वेषी, धृष्ट, उद्धत, आत्मा-प्रशंसक, नए नए कुकर्मों के आविष्कारक,
माता-पिता की आज्ञा उल्लंघन करनेवाले, बुद्धिरहित, विश्वासरहित, ३१
स्नेहरहित और दयारहित हो गए। वे परमेश्वर का निर्णय जानते हैं ३२
कि ऐसे कुकर्म करनेवालों का दंड मृत्यु है, फिर भी न केवल स्वयं ऐसे
काम करते हैं, वरन् इस प्रकार के कर्म करने वालों के समर्थक भी हैं।

यहूदी भी दंडनीय है

2 इस कारण हे दोष लगाने वाले मनुष्य, तुम कोई भी क्यों न हो, १
[illegible] हो, क्योंकि दूसरे पर दोष लगाते समय तुम अपने विरुद्ध
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
निर्णय देते हो। कारण यह कि तुम जो दोष लगाते हो स्वयं वे ही कर्म करते

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ हो। हम जानते हैं कि ऐसे कर्म करने वालों पर परमेश्वर की दंडाज्ञा
३ होना ठीक है। परंतु हे मनुष्य, क्या तुम सोचते हो कि तुम जो ऐसे कर्म करने वालों पर दोष लगाते हो और स्वयं वे ही कर्म करते हो—क्या तुम
४ परमेश्वर की दंडाज्ञा से बच निकलोगे ? या तुम उनकी कृपा, सहनशीलता और धैर्य रूपी निधि की अवज्ञा कर रहे हो ? क्या तुम नहीं जानते कि परमेश्वर की कृपा का अभिप्राय यह है कि तुममें हृदय-परिवर्तन हो ?
५ परंतु तुम अपनी कठोरता और हठ के कारण अपने लिए उस कोप—दिवस के निमित्त कोप संचित कर रहे हो जब परमेश्वर का निष्पक्ष
६ न्याय प्रकट होगा। 'वह प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार फल
७ देंगे : 'जो लोग धीरतापूर्वक सत्कर्म करते हुए महिमा, आदर और अमरत्व
८ की खोज में हैं, उनको वह शाश्वत जीवन प्रदान करेंगे ; परंतु जो दलवन्दी करते और सत्य को न मान कर अधर्म पर चलते हैं, वे क्रोध एवं
९ प्रकोप के पात्र होंगे। प्रत्येक व्यक्ति पर जो दुष्कर्म करता है—पहिले यहूदी
१० पर और फिर यूनानी पर—कष्ट और संकट पड़ेंगे ; किंतु प्रत्येक व्यक्ति को जो सत्कर्म करता है—पहिले यहूदी को और फिर यूनानी को—महिमा,
११ प्रतिष्ठा और शांति प्राप्त होंगी। क्योंकि परमेश्वर मुंह देखा न्याय नहीं करते।

१२ जिन्होंने नियमशास्त्र विहिन दशा में पाप किया है उनका उस दशा में नाश होगा ; और जिन्होंने नियमशास्त्र के अधीन होकर पाप किया
१३ है, उन्हें नियमशास्त्र के अनुसार दंड मिलेगा। क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में नियमशास्त्र के श्रवण करने वाले धर्मात्मा नहीं, वरन् नियमशास्त्र पर
१४ आचरण करने वाले धर्मात्मा गिने जाएंगे। जब विजातियों के लोग, जिन्हें नियमशास्त्र नहीं मिला, स्वभाव से ही नियमशास्त्र की बातों पर आचरण करते हैं तो वे नियमशास्त्र-विहीन होने पर भी अपने लिए स्वयं नियम-
१५ शास्त्र बन जाते हैं। वे नियमशास्त्र के आदेशों को अपने हृदय पर अंकित प्रदर्शित करते हैं। उनका अंतःकरण साक्षी देता है, तथा उनके विचार परस्पर एक दूसरे को कभी दोषी बताते हैं, और, संभवत : कभी निर्दोष।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिन जब परमेश्वर ख्रिस्त यीशु द्वारा, जैसा मेरा सुसमाचार बताता है, मनुष्यों की गूढ़ बातों का न्याय करेंगे। १६

यदि तुम यहूदी कहलाते हो, यदि नियमशास्त्र पर तुम्हारा भरोसा है, यदि परमेश्वर पर तुम्हें गर्व है, यदि उनकी इच्छा का तुम्हें ज्ञान है और यदि नियमशास्त्र में शिक्षित होने के कारण तुम श्रेय को प्रेय जानते हो ; यदि तुम्हारी धारणा है कि तुम अंधों के पथ प्रदर्शक हो, अंधकार में पड़े हुओं के लिए प्रकाश हो, अज्ञानियों के शिक्षक हो और बालकों के गुरु हो, क्योंकि तुम्हें नियमशास्त्र में ज्ञान और सत्य का स्वरूप उपलब्ध हुआ है–तो तुम जो दूसरों को शिक्षा देते हो क्या अपने को शिक्षा नहीं देते? तुम प्रचार करते हो, 'चोरी मत करो' पर क्या तुम स्वयं चोरी करते हो ? तुम कहते हो, 'व्यभिचार मत करो', परंतु क्या तुम स्वयं व्यभिचार करते हो ? तुम मूर्तियों से घृणा करते हो, पर क्या तुम स्वयं मंदिरों की लूट में साझा रखते हो ? तुम जो नियमशास्त्र पर अभिमान करते हो, क्या तुम नियमशास्त्र का उल्लंघन कर परमेश्वर का अपमान करते हो ? जैसा कि शास्त्र का लेख है, 'तुम्हारे कारण विजातियों में परमेश्वर के नाम की निंदा होती है।' १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४

खतने से लाभ है–यदि तुम नियमशास्त्र का पालन करो ; परंतु यदि तुम नियमशास्त्र का उल्लंघन करो तो तुम्हारा खतना ऐसा है मानो वह खतना न हो। इसी प्रकार यदि कोई खतना विहीन व्यक्ति नियमशास्त्र की मांगों को पूरा करे, तो क्या उसकी खतना-विहीन दशा खतने के सदृश नहीं गिनी जाएगी ? वह शरीर से खतना-विहीन होने पर भी नियमशास्त्र का पूर्ण पालन करता है ; इस प्रकार वह तुम्हें, जो शास्त्र और खतने से संपन्न होकर भी नियमशास्त्र का उल्लंघन करते हो, दोषी सिद्ध करेगा। क्योंकि यहूदी वह नहीं जो बाह्य रूप से यहूदी है, और खतना वह नहीं जो बाह्य और शारीरिक है ; किंतु यहूदी वह है जिसका अंतःकरण यहूदी है और खतना वह जो हृदय का है, और नियमशास्त्र पर नहीं परंतु आत्मा पर निर्भर है। ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा मनुष्यों से नहीं, परमेश्वर से होती है। २५ २६ २७ २८ २९

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंका-समाधान

3 फिर यहूदी को विशेष क्या मिला ? अथवा, खतने से क्या लाभ हुआ ? सब प्रकार से बहुत कुछ; प्रथम तो यह कि
३ परमेश्वर की दिव्य वाणी उनको सौंपी गई। यदि कुछ अविश्वासी निकले तो क्या हुआ ? क्या उनका विश्वासघात परमेश्वर की विश्वस्तता को
४ विनष्ट कर देगा ? कदापि नहीं। चाहे प्रत्येक मनुष्य झूठा निकले, परमेश्वर सच्चे प्रमाणित होंगे, जैसा कि शास्त्र का लेख है,

'जब आप बोलें तो नीतिमान् प्रमाणित हों
जब आपका न्याय हो, तो आप विजयी हों।'

५ परंतु यदि हमारा अधर्म परमेश्वर के धर्म को स्पष्ट करता है तो हम क्या कहें ? क्या यह कि जब परमेश्वर कोप करते हैं तो अन्याय करते हैं ?
६ (मैं मानवी व्यवहार के अनुसार बोल रहा हूं) कदापि नहीं। अन्यथा,
७ परमेश्वर संसार का न्याय कैसे करेंगे ? यदि मेरे झूठ से परमेश्वर का सत्य प्रमाणित होता है, और उनकी महिमा बढ़ती है, तो मैं पापी के
८ समान दंडनीय क्यों होता हूं ? फिर, हम बुराई क्यों न करें जिससे भलाई उत्पन्न हो ?—जैसा कि कुछ लोग हमारी निंदा करते हुए कहते हैं कि हम यही सिखाते हैं। ऐसे लोगों को दंड मिलना न्यायसंगत है।

मानव की पूर्ण असफलता

९ तो फिर क्या हुआ ? क्या हम अधिक श्रेष्ठ हैं ? लेशमात्र भी नहीं। मैं पहिले ही सब पर—यहूदियों और यूनानियों दोनों पर—दोष
१० लगा चुका हूं कि सब के सब पाप के अधीन हैं; जैसा कि शास्त्र का लेख है :

'कोई भी धर्मात्मा नहीं है, एक भी नहीं।
११ कोई भी बुद्धिमान् नहीं है, कोई परमेश्वर की खोज नहीं करता।
१२ सब के सब भटक गए हैं, सभी भ्रष्ट हो गए हैं।
कोई भी भलाई नहीं करता, एक भी नहीं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका गला खुली कब्र है, उनकी वाणी में कपट है। १३
और उनके ओठों में नाग का विष है।
उनके मुख अभिशाप और कटुता से भरे हैं। १४
उनके पाँव रक्तपात के लिए दौड़ पड़ते हैं, १५
उनके मार्ग में विनाश और क्लेश हैं, १६
और वे शांति के पथ से अपरिचित हैं। १७
उनकी दृष्टि में परमेश्वर का भय नहीं है।' १८

हमें ज्ञात है कि नियमशास्त्र जो कुछ कहता है वह उन्हींसे कहता १९ है जो नियमशास्त्र के अधीन हैं, जिससे प्रत्येक व्यक्ति का मुंह बंद हो जाए और समस्त संसार परमेश्वर के संमुख उत्तरदायी हो; क्योंकि २० नियमशास्त्र के कर्मों से कोई भी प्राणी परमेश्वर के संमुख धर्मात्मा नहीं गिना जाएगा : कारण कि नियमशास्त्र से पाप का ज्ञान होता है।

विश्वास द्वारा धार्मिकता की प्राप्ति

परंतु अब परमेश्वर का धर्म प्रकट हुआ है, जो नियमशास्त्र से नितांत २१ पृथक् है—यद्यपि नियमशास्त्र और नबी उसकी साक्षी देते हैं। परमेश्वर २२ का यह धर्म यीशु ख्रिस्त पर विश्वास करने से प्राप्त होता है और उन सब के लिए है जो विश्वास करते हैं। क्योंकि अब कोई भेदभाव नहीं रहा : सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हो २३ गए हैं, परंतु परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा वे धार्मिक गिने गए हैं। यह उस २४ विमोचन द्वारा हुआ जो ख्रिस्त यीशु में है, जिन्हें परमेश्वर ने पापनिवारण २५ का साधन बनाया। यह पापनिवारण उनके रक्त में विश्वास करने से होता है। इस प्रकार परमेश्वर ने अपना धर्म प्रमाणित किया क्योंकि उन्होंने अपनी सहनशीलता के कारण पूर्वकृत पापों पर ध्यान नहीं दिया। अस्तु, वर्तमान युग में उन्होंनें अपना धर्म प्रमाणित कर दिखाया कि २६ वह स्वयं धर्म स्वरूप हैं एवं उसे धर्मात्मा गिनते हैं जो यीशु पर विश्वास करता है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७ तो फिर हमारा अहंकार कहां रहा? उसके लिए कोई स्थान नहीं। किस विधान से? कर्म के विधान से? नहीं, विश्वास के
२८ विधान से। क्योंकि हमारी मान्यता है कि मनुष्य, नियमशास्त्र के
२९ कर्मों से नहीं, विश्वास से धार्मिक गिना जाता है। क्या परमेश्वर केवल यहूदियों का ही है, क्या वह विजातियों का नहीं? हां, वह विजातियों
३० का भी है, क्योंकि परमेश्वर एक है। वह खतनावालों को उनके विश्वास के आधार पर और खतना विहीन को उनके विश्वास द्वारा धर्मात्मा
३१ गिनेगा। तब क्या हम विश्वास द्वारा नियमशास्त्र का लोप करते हैं? कदापि नहीं; वरन् नियमशास्त्र की स्थापना करते हैं।

विश्वास के संबंध में अब्रहाम का उदाहरण

4 तो हम अब्रहाम के विषय में क्या कहें जो शरीर के नाते हमारे पूर्वज हैं?* उन्हें क्या मिला?* यदि अब्रहाम कर्मों द्वारा धार्मिक गिने गए होते तो वह अहंकार कर सकते थे, किंतु परमेश्वर
३ के समक्ष नहीं; क्योंकि धर्मशास्त्र का क्या कथन है 'अब्रहाम ने परमेश्वर
४ पर विश्वास किया और यह उनके लिए धार्मिकता गिना गया।' काम करने वाले को मजदूरी देना कृपा नहीं, वरन् उसका हक माना जाता है।
५ पर यहां जो काम नहीं करता किंतु पापी को धार्मिक बनानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास धार्मिकता के रूप में गिना गया है।
६ दाऊद ने भी उस मनुष्य की धन्यता का वर्णन किया है जिसे परमेश्वर कर्मों के बिना ही धर्मात्मा गिनते हैं:

७ 'धन्य हैं वे जिनके अपराध क्षमा हो गए,
और जिनके पाप ढक दिए गए;

८ धन्य है वह मनुष्य जिसके पाप का लेखा प्रभु नहीं लगाएंगे।'
९ तो क्या यह आशीर्वचन खतनावालों के लिए ही है? या खतना-विहीन

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* कुछ प्रतियों में ये शब्द नहीं मिलते।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए भी ? हमारा कहना है, 'अब्रहाम के लिए उनका विश्वास ही धार्मिकता गिना गया।' तो यह कैसे गिना गया ? खतने की दशा १० में या खतनाविहीन दशा में ? खतने की दशा में नहीं, किंतु खतना-विहीन दशा में : खतने का संस्कार तो उस धार्मिकता का जो उन्हें खतना- ११ विहीन दशा में विश्वास द्वारा प्राप्त हुई, चिह्न मात्र था। यह इसलिए कि वह उन सबके पूर्वज हो सकें जो खतना-विहीन होते हुए भी विश्वास करते हैं और इस प्रकार उनका विश्वास धार्मिकता गिना जाता है, और इसलिए भी कि वह उन लोगों के पूर्वज हो सकें जो खतने की दशा में १२ है, परंतु जो खतने पर ही निर्भर नहीं वरन् विश्वास-पथ पर अंकित चरण-चिह्नों का अनुसरण करते हैं। इसी पथ पर हमारे पूर्वज अब्रहाम खतना-विहीन दशा में चले थे।

अब्रहाम और उनके वंश से प्रतिज्ञा की गई थी कि वे पृथ्वी के १३ उत्तराधिकारी होंगे। यह प्रतिज्ञा नियमशास्त्र द्वारा नहीं वरन् विश्वास से मिलनेवाली धार्मिकता द्वारा की गई थी। यदि नियमशास्त्र के बल १४ पर उत्तराधिकारी बनते हैं तो विश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल है। क्योंकि नियमशास्त्र का परिणाम प्रकोप है; परंतु जहां नियमशास्त्र १५ नहीं, वहां उसका उल्लंघन भी नहीं।

परमेश्वर की योजना का आधार है विश्वास, जिससे सब कुछ १६ अनुग्रह पर निर्भर रहे और प्रतिज्ञा सब वंशजों के लिए अटल हो—केवल उनके लिए ही नहीं जो नियमशास्त्र को मानते हैं, वरन् उनके लिए भी जो अब्रहाम का सा विश्वास रखते हैं। वह हम सब के पिता हैं, जैसा कि १७ शास्त्र का लेख है, 'मैंने तुम्हें बहुत सी जातियों का पिता नियुक्त किया।' अस्तु, यह प्रतिज्ञा परमेश्वर के संमुख अटल हुई, जिन पर अब्रहाम ने विश्वास किया, और जो मृतकों को जीवन प्रदान करते हैं, तथा जिन वस्तुओं का अस्तित्व नहीं उनका नाम ऐसे लेते हैं मानों वे हों। अब्रहाम ने निराशा में भी आशा रख कर विश्वास किया, जिससे इस वचन १८ के अनुसार कि ''तुम्हारा वंश ऐसा होगा' वह बहुत सी जातियों

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९ के पूर्वज बनें। वह जानते थे कि उनका शरीर मृतकवत् है—उनकी अवस्था लगभग सौ वर्ष की थी—और सारा का गर्भ भी नितांत
२० शक्तिहीन है, तो भी उनका विश्वास दुर्बल नहीं हुआ। उन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञा के विषय में, अविश्वास के कारण, संशय नहीं किया, वरन्
२१ विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की स्तुति की। उनको पूर्ण निश्चय था कि जिस बात की परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है वह उसे पूरा करने में समर्थ
२२ है। इसी कारण यह विश्वास 'उनके लिए धार्मिकता गिना गया।'

२३ और ये वचन कि 'उनके लिए धार्मिकता गिना गया' केवल उनके
२४ लिए ही नहीं वरन् हमारे लिए भी लिखे गए। हमारे लिए भी यह 'गिना जाना' निश्चित है—यदि हम उन पर विश्वास करें जिन्होंने हमारे
२५ प्रभु यीशु को मृतकों में से जीवित किया, जो हमारे अपराधों के कारण पकड़वाए गए और हमारे धर्मात्मा गिने जाने के निमित्त फिर जी उठे।

विश्वास का परिणाम

5 विश्वास के आधार पर हम धर्मात्मा गिने गए हैं, अतः हमें अपने प्रभु यीशु ख्रिस्त द्वारा परमेश्वर में शांति प्राप्त है*। उन्हीं के द्वारा† हमारी इस अनुग्रह तक पहुंच हुई है जिसमें हम स्थित हैं, तथा परमेश्वर की महिमा में भागी होने की आशा से फूले नहीं समाते।
३ इतना ही नहीं हम कष्टों में भी आनंद मनाते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि
४ कष्ट से धीरता, धीरता से सच्चरित्रता और सच्चरित्रता से आशा उत्पन्न
५ होती है; और यह आशा हमें निराश नहीं होने देती, क्योंकि पवित्र आत्मा द्वारा, जो हमें प्राप्त है, परमेश्वर के प्रेम की हमारे हृदयों में वर्षा हुई है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* पाठांतर हम.........शांति प्राप्त करें।

† कुछ प्राचीन प्रतियों के अनुसार जोड़िए : 'विश्वास के कारण

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख्रिस्त के बलिदान द्वारा ईश्वरीय प्रेम का प्रदर्शन

जब हम असहाय थे तभी, निर्धारित समय पर, ख्रिस्त हम अधर्मियों के लिए मरे। कदाचित् ही कोई किसी धर्मात्मा के लिए अपने प्राण दे—हां किसी सज्जन के लिए कोई मरने का साहस करे तो करे। परतु परमेश्वर ने हमारे प्रति अपना प्रेम इस प्रकार प्रमाणित किया है कि जब हम पापी ही थे तो ख्रिस्त हमारे लिए मरे। अस्तु, जब हम उनके रक्त के कारण धर्मात्मा गिने गए हैं तो फिर उनके द्वारा कोप से क्यों न बचेंगे? क्योंकि जब शत्रुता की अवस्था में परमेश्वर के साथ हमारा मिलाप उनके पुत्र की मृत्यु द्वारा हो गया, तो फिर मिलाप हो जाने पर उनके जीवन द्वारा हमारा उद्धार क्यों नहीं होगा? केवल इतना ही नहीं, हम अपने प्रभु यीशु ख्रिस्त के द्वारा, जो हमारे मिलाप का कारण हैं, परमेश्वर में आनंद-मग्न हैं। ६ ७ ८ ९ १० ११

आदम द्वारा मृत्यु, ख्रिस्त द्वारा जीवन

यह बात विचारणीय है कि एक व्यक्ति द्वारा संसार में पाप आया और पाप द्वारा मृत्यु आ गई; और इस प्रकार मृत्यु का सब मनुष्यों में प्रसार हुआ क्योंकि सबने पाप किया है। यह सच है कि नियमशास्त्र के दिए जाने से पूर्व संसार में पाप था; परंतु जहां नियमशास्त्र नहीं, वहां पाप की गणना नहीं होती। फिर भी मृत्यु ने आदम से लेकर मूसा पर्यंत उन लोगों पर भी शासन किया जिनके पाप आदम के अपराध के सदृश नहीं थे-और आदम उसके प्रतीक हैं जो आने वाला था। १२ १३ १४

परंतु अपराध वैसा नहीं था, जैसा वरदान मिला। क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से अनेक मरे, तो अब अनेकों के लिए परमेश्वर का अनुग्रह अधिक उमड़ पड़ा। यह एक मानव अर्थात् यीशु ख्रिस्त के अनुग्रह-पूर्ण वरदान द्वारा हुआ। कहां उस एक व्यक्ति के पाप का परिणाम और कहां परमेश्वर का यह वरदान। क्योंकि यदि एक अपराध* के १५ १६

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अथवा 'एक'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण दंड की आज्ञा मिली थी तो अब अनेक अपराधों से मुक्ति का
१७ वरदान मिला है। यदि एक व्यक्ति के अपराध के कारण उसी के द्वारा, मृत्यु ने शासन किया, तो जिन्होंने प्रचुर अनुग्रह और धार्मिकता का वरदान प्राप्त किया है, वे एक ही मनुष्य अर्थात् यीशु ख्रिस्त द्वारा, जीवन में शासन अवश्य करेंगे।

१८ जिस प्रकार एक अपराध द्वारा सब मनुष्यों को दंडाज्ञा मिली, वैसे
१९ एक धर्म-कार्य के द्वारा सब मनुष्यों को जीवन-मुक्ति मिली; क्योंकि जैसे एक मनुष्य के आज्ञा-उल्लंघन से बहुत लोग पापी हुए, उसी प्रकार
२० एक मनुष्य के आज्ञा-पालन से बहुत लोग धर्मात्मा बनाए जाएंगे। नियम बीच में आ गए कि अपराध में वृद्धि हो। परंतु जहां पाप की बढ़ती
२१ हुई वहां अनुग्रह की और भी अधिक वृद्धि हुई कि जिस प्रकार पाप ने मृत्यु को फैलाते हुए शासन किया उसी प्रकार अनुग्रह धार्मिकता द्वारा शासन करे और इसका परिणाम हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्त द्वारा शाश्वत जीवन हो।

ख्रिस्तीय-जीवन और पाप का परस्पर विरोध

6 तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह की वृद्धि हो? कदापि नहीं! हम जो पाप के प्रति मर चुके हैं,
३ अब कैसे उसमें जीवन बिताएं? क्या तुम नहीं जानते कि हम जिन्होंने ख्रिस्त यीशु में बपतिस्मा लिया है, उनकी मृत्यु में बपतिसमा लिया है?
४ हम मृत्यु का बपतिस्मा पाने के द्वारा उनके साथ गाड़े गए हैं कि जैसे पिता की महिमा से ख्रिस्त मृतकों में से जीवित हो उठे, वैसे ही हम भी नए
५ जीवन पथ पर चलें। क्योंकि यदि उनकी मृत्यु के प्रतीक द्वारा हमारा
६ उनसे संयोग हुआ है तो पुनरुत्थान द्वारा भी होगा। हमें ज्ञात है कि हमारा पुराना स्वभाव उनके साथ क्रूसित हो चुका है कि हमारा पापमय शरीर अशक्त हो जाए और हम आगे पाप के दास न रहें। क्योंकि जो
८ मर चुका वह पाप से मुक्त हो गया। परंतु यदि हम ख्रिस्त के साथ मर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चुके हैं तो हमें विश्वास है कि उनके साथ जीवन में भी भागी होंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि ख्रिस्त मृतकों में से जीवित होकर फिर कभी ९ मरने के नहीं; उन पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की। वह मरे तो १० पाप के लिए एक बार ही मरे; परंतु वह जीवित हैं तो परमेश्वर के लिए जीवित हैं। इसी प्रकार तुम अपने आपको पाप के लिए मृतक और ११ परमेश्वर के लिए ख्रिस्त यीशु में जीवित समझो।

अतएव पाप को अपने नश्वर शरीर पर शासन मत करने दो जिससे १२ तुम शारीरिक वासनाओं के अधीन होने से बचो। अपने अंगों को अधर्म १३ का साधन होने के लिए पाप के अर्पित मत करो; वरन् अपने को, मृतकों में से जीवित मनुष्यों के समान, परमेश्वर के समर्पित करो तथा अपने अंगों को धार्मिकता के साधन होने के लिए परमेश्वर के अर्पित कर दो। तब पाप की तुम पर प्रभुता नहीं होगी, क्योंकि तुम नियम के वश में नहीं, १४ अनुग्रह के अधीन हो।

दासत्व प्रथा से दृष्टांत

तो क्या हुआ? क्या हम पाप करें क्योंकि हम नियम के वश नहीं १५ वरन् अनुग्रह के अधीन हैं? कदापि नहीं! क्या तुम नहीं जानते कि १६ जिसकी आज्ञा मानने के लिए अपने आपको दासों के सदृश सौंप देते हो, तुम उसी के दास हो? यह चाहे पाप की अधीनता हो जिसका अंत मृत्यु है, चाहे आज्ञाकारिता की जिसका फल धार्मिकता है। परंतु परमेश्वर १७ को धन्यवाद! तुम जो पहिले पाप के दास थे अब हृदय से उस शिक्षा का, *जिसके सांचे में तुम ढाले गए, *पालन करने लगे हो, और पाप से मुक्त १८ किए जाने पर धार्मिकता के दास हो गए हो। मैं तुम्हारी मानवीय १९ दुर्बलता के कारण मनुष्यों की भांति ही बोल रहा हूं कि जैसे तुमने अपने अंगों को अपवित्रता और दुराचार की दासता में दे दिया था, जिससे

*अथवा 'जिसकी मुहर तुम पर लगी'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुराचार बढ़ा, उसी प्रकार अब अपने अंगों को धर्म की दासता में अर्पित कर दो कि पवित्र बन सको।

२० जब तुम पाप के दास थे तो धर्म से स्वतंत्र थे। तब तुम्हें क्या फल २१ मिला ? केवल वे बातें जिनसे अब तुम लज्जित होते हो क्योंकि उनका २२ परिणाम मृत्यु है। परंतु अब तुम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर के दास बन गए हो ; जिसका फल है पवित्रता की प्राप्ति, और जिसका परिणाम है शाश्वत जीवन।

२३ अस्तु, पाप का वेतन है मृत्यु, परंतु परमेश्वर का वरदान है शाश्वत जीवन जो हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्त में है।

विवाहित जीवन से दृष्टांत

7 भाइयो, मैं नियमशास्त्र के जानने वालों से कह रहा हूं—क्या तुम नहीं जानते कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है तभी तक २ उस पर नियमशास्त्र की प्रभुता रहती है। उदाहरण के लिए, नियमशास्त्र के अनुसार विवाहिता स्त्री अपने पति के जीवन काल में उसके बंधन में है, परंतु यदि उसका पति मर जाए तो वह उस पति संबंधी व्यवस्था से छूट ३ जाती है। इसलिए यदि पति के जीवन काल में वह किसी दूसरे के साथ रहे तो व्यभिचारिणी कहलाएगी ; परंतु यदि पति मर जाए तो वह उस व्यवस्था से मुक्त है, और किसी दूसरे पुरुष की हो जाने पर व्यभिचारिणी ४ नहीं। मेरे भाइयो, इसी प्रकार तुम भी नियमशास्त्र के लिए, ख्रिस्त की देह द्वारा, मर चुके कि दूसरे के हो जाओ, अर्थात् उनके जो मृतकों में से ५ जी उठे हैं, जिससे हम परमेश्वर के लिए फलदायक हों। जब हम शारीरिक स्वभाव के अनुसार आचरण करते थे, तो पाप की वासनाएं नियमशास्त्र से प्रेरणा पाकर, हमारे अंगों में काम कर रहीं थीं कि मृत्यु के फल ६ उत्पन्न हों। परंतु अब हम नियमशास्त्र से मुक्त हो गए हैं, क्योंकि उसके प्रति मर चुके हैं जो हमें बंधन में डाले हुए था, कि ऐसी सेवा कर सकें जो प्राचीन लिखित पद्धति पर न हो वरन् नवीन आध्यात्मिक पद्धति के अनुसार हो।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियमशास्त्र द्वारा पाप की वृद्धि

तो हम क्या कहें ? क्या नियम पाप है ? कदापि नहीं ! नियम के　७
बिना मैं पाप को नहीं पहिचान सकता था। यदि नियमशास्त्र ने नहीं कहा
होता 'लालच मत कर' तो मैं लालच को नहीं जानता। परंतु आज्ञा　८
की उपस्थिति से पाप को अवसर मिला और उसने मुझमें सब प्रकार की
बुरी वासनाएं उत्पन्न कर दीं, क्योंकि नियमशास्त्र के बिना पाप निर्जीव
है। मैं स्वयं पहिले नियमशास्त्र के बिना जीवित था, पर आज्ञा आई तो　९
पाप जीवित हुआ और मैं मर गया : और उस प्रकार आज्ञा जो जीवन के　१०
निमित्त थी, वह मेरे लिए मृत्यु का कारण हुई। क्योंकि पाप ने आज्ञा की　११
उपस्थिति से अवसर पाकर मुझे धोखा दिया और उसी के द्वारा मुझे मार
डाला। निष्कर्ष यह कि नियमशास्त्र पवित्र है : और आज्ञा भी पवित्र,　१२
धर्म-संगत एवं कल्याणकारी है।

मनुष्य के हृदय का अंतर्द्वंद

तो क्या जो कल्याणकारी था वही मेरे लिए घातक सिद्ध हुआ ?　१३
कदापि नहीं। वरन् पाप, कल्याणकारी वस्तु के द्वारा, मेरे लिए घातक
सिद्ध हुआ, जिससे आज्ञा के द्वारा पाप अतिशय पापपूर्ण बन जाए और
प्रत्यक्ष हो जाए कि वह पाप ही है। हम जानते हैं कि नियमशास्त्र　१४
आध्यात्मिक है ; पर मैं प्राकृत हूं, पाप के हाथों बिका हूं। मेरी समझ में　१५
नहीं आता कि मैं क्या कर बैठता हूं। क्योंकि मैं जो चाहता हूं वह नहीं
करता, परंतु जिस बात से घृणा करता हूं वही करता हूं। अब यदि मैं वही　१६
काम करता हूं जिसे मैं नहीं चाहता तो मैं स्वीकार कर लेता हूं कि नियम-
शास्त्र उत्तम है। ऐसी दशा में कर्ता मैं नहीं रहा वरन् वह पाप है जो　१७
मुझमें बसा हुआ है। क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझमें, अर्थात् मेरे शरीर　१८
में, कोई भलाई वास नहीं करती। इच्छा तो मुझमें है पर सुकार्य मुझ से बन
नहीं पड़ते। क्योंकि जिस सत्कर्म को मैं करना चाहता हूं उसे नहीं करता,　१९
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
पर जिस कुकर्म को करना नहीं चाहता उसी को करता हूं। फलतः यदि　२०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं वह काम करता हूं जिसे मैं करना नहीं चाहता तो कर्ता मैं न रहा वरन्
२१ पाप है, जो मुझ में बसा हुआ है। मैं यह नियम पाता हूं कि जब मैं किसी
२२ सत्कर्म का संकल्प करता हूं तो कुकर्म ही मुझ से बन पड़ता है। मेरी अंत-
२३ रात्मा तो परमेश्वर के नियम से प्रसन्न है; पर मुझे अपने शरीर के अंगों में दूसरा ही नियम दीख पड़ता है जो मेरे अंतर्मन के नियम से संघर्ष करता और मुझे उस पाप के नियम का बंदी बना देता है जो मेरे अंगों में
२४ है। मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु के शरीर से कौन छुड़ाएगा? हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्त द्वारा मैं परमेश्वर का आभार मानता
२५ हूं। अतः अंतरात्मा से तो मैं परमेश्वर के नियम का दास हूं, परंतु शरीर से पाप के नियम का।

आत्मा के अनुसार आचरण

8 अतएव जो लोग ख्रिस्त यीशु में हैं उनके लिए अब कोई दंडाज्ञा नहीं है! क्योंकि मुझे उस जीवन-प्रदायक आध्यात्मिक विधान ने, जो ख्रिस्त यीशु में है, पाप और मृत्यु के नियम से स्वतंत्र कर दिया है।
३ परमेश्वर ने वह काम किया जो मानवस्वभाव की दुर्बलता के कारण नियमशास्त्र के लिए असाध्य था; अर्थात् अपने पुत्र को पापी शरीर के रूप में पाप का बलिदान होने के निमित्त भेजा और शरीर में पाप को
४ दंडित किया, जिससे हम लोगों में, जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार आचरण करते हैं, नियमशास्त्र की उचित मांग पूरी
५ हो जाए। शरीर के अनुसार आचरण करनेवालों की भावनाएं शारीरिक होती हैं, परंतु आत्मा के अनुसार आचरण करनेवालों की भावनाएं
६ आध्यात्मिक; शारीरिक भावना के अर्थ हैं मृत्यु, और आध्यात्मिक
७ भावना के अर्थ हैं, जीवन और शांति; क्योंकि शारीरिक भावनाएं रखना परमेश्वर से शत्रुता करना है; ये भावनाएं परमेश्वर के नियम
८ के अधीन नहीं होतीं- हो ही नहीं सकतीं। शरीर-सेवी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु तुम तो शरीर-सेवी नहीं, आध्यात्मिक हो—यदि परमेश्वर ९
का आत्मा सचमुच तुममें निवास करता है। क्योंकि जिस व्यक्ति में ख्रिस्त
का आत्मा नहीं, वह ख्रिस्त का नहीं। यदि ख्रिस्त का तुममें निवास है, १०
तो पाप के कारण चाहे तुम्हारा शरीर मृत हो, परंतु धार्मिक गिने जाने के
कारण तुम्हारी आत्मा जीवित है। यदि उनका आत्मा, जिन्होंने यीशु ११
को मृतकों में से जीवित कर दिया, तुममें निवास करता है, तो जिन्होंने
ख्रिस्त यीशु को मृतकों में से जीवित किया, वह अपने आत्मा के द्वारा,
जिसका तुममें निवास है, तुम्हारे नश्वर शरीरों को भी नवजीवन प्रदान
करेंगे।

अतः भाइयों, हम ऋणी हैं, किंतु शारीरिक स्वभाव के नहीं कि १२
उसके अनुसार जीवन बिताएं। यदि तुम शरीर के अनुसार जीवन १३
बिताते हो तो निश्चय मरोगे, परंतु यदि आत्मा के द्वारा शारीरिक
प्रवृतियों का दमन करते हो तो जीवन प्राप्त करोगे ; क्योंकि जिनका १४
संचालन परमेश्वर के आत्मा द्वारा होता है वे परमेश्वर के पुत्र हैं।
तुम्हें दासता की आत्मा नहीं मिली है कि पुनः भयग्रस्त हो, वरन् दत्तकता १५
की आत्मा प्राप्त हुई है, जिसके द्वारा हम पुकारते हैं, 'अब्बा, हे पिता।'
स्वयं आत्मा हमारी आत्मा के साथ मिलकर साक्षी देता है कि हम परमेश्वर १६
के संतान हैं, और यदि संतान हैं तो उत्तराधिकारी भी—परमेश्वर के
उत्तराधिकारी और ख्रिस्त के सह-उत्तराधिकारी ; केवल एक प्रतिबंध
है कि हम उनके साथ दुःख सहें, जिससे उनके साथ महिमा में भी सहभागी
हों।

निकट भविष्य में प्रकट होनेवाली महिमा

मेरा निश्चित मत है कि जो महिमा हम पर प्रकट होनेवाली है, १८
उसकी तुलना में वर्तमान समय के दुःख नगण्य हैं। सृष्टि आतुर उत्कंठा १९
से परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रही है ; क्योंकि २०
सृष्टि अपनी इच्छा से निस्सारता के अधीन नहीं हुई परंतु उसकी इच्छा

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१ से जिसने उसे अधीन कर दिया ; इस आशा से कि स्वयं सृष्टि विकृति की दासता से मुक्त हो और परमेश्वर के संतान की गौरवपूर्ण स्वतंत्रता
२२ में भाग ले। हम जानते हैं कि समस्त सृष्टि अब तक प्रसव वेदना के कष्ट
२३ में कराह रही है। केवल यही नहीं, वरन् हम भी, जिन्हें आत्मा का प्रथम फल प्राप्त है, भीतर ही भीतर तड़पते हैं और दत्तकता अर्थात् शरीर
२४ के विमोचन की प्रतीक्षा करते है। इस आशा में हमारा उद्धार हुआ है। यदि आशा दृष्टि का विषय हो जाए तो वह आशा कहां रही। मनुष्य
२५ जिस वस्तु को देख रहा है उसकी आशा क्या करेगा ? परंतु यदि हम उस वस्तु की आशा करते हैं जिसे नहीं देखते, तो धीरतापूर्वक उसकी प्रतीक्षा करते हैं।

२६ इसी प्रकार आत्मा भी दुर्बलता में हमारी सहायता करता है ; क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें* किस रीति से* प्रार्थना करना चाहिए, किंतु आत्मा स्वय अनिर्वचनीय निश्वासों द्वारा हमारे लिए आवेदन
२७ करता है। और अंतर्यामी, जो हृदयों के पारखी हैं जानते हैं कि आत्मा का अभिप्राय क्या है, क्योंकि वह परमेश्वर की
२८ इच्छानुसार संतों के लिए प्रार्थना करता है। हमें ज्ञात है कि जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उनके उद्देश्य के अनुरूप बुलाए गए हैं †उनका कल्याण परमेश्वर प्रत्येक परिस्थिति में
२९ करते हैं। क्योंकि जिनको उन्होंने पहिले से जान लिया, उनको अपने पुत्र के समरूप होने के लिए पहले से ही निर्धारित कर दिया कि यीशु बहुत
३० से बंधुओं में ज्येष्ठ ठहरें ; और जिनको पहले से निर्धारित किया, उनको बुलाया भी, और जिनको बुलाया उन्हें धार्मिक भी किया, एवं जिनको धार्मिक किया उन्हें महिमान्वित भी किया।

---

* अथवा, 'किस बात के लिए'

† अथवा 'उनके लिए सब बातें मिल कर भलाई ही उत्पन्न करती हैं।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमेश्वर का प्रेम

तो इन बातों के विषय में हम क्या कहें ? यदि परमेश्वर हमारे ३१ अनुकूल हैं तो प्रतिकूल कौन होगा ? उन्होंने अपने पुत्र को भी नहीं रख ३२ छोड़ा, वरन् हम सबके निमित्त समर्पित कर दिया तो साथ ही और सब कुछ हमें क्यों नहीं देंगे ? परमेश्वर के निर्वाचित लोगों पर कौन ३३ अभियोग लगाएगा ? परमेश्वर मुक्त कर रहे हैं, तो फिर ३४ कौन दंडाज्ञा देगा ? स्वयं ख्रिस्त यीशु मरे, इतना ही नहीं, वह जीवित भी हो उठे और परमेश्वर की दाहिनी ओर विराजमान हैं ; वह हमारी ओर से आवेदन करते हैं। कौन हमें ख्रिस्त के प्रेम से वियुक्त करेगा ? ३५ क्या कष्ट, या संकट या अत्याचार, या दुर्भिक्ष, या नग्नता, या भय, या तलवार ? जैसा शास्त्र का लेख है, ३६

'तुम्हारे निमित्त दिन भर हमारी हत्या होती है
वध होनेवाली भेड़ों में हमारी गणना की जाती है।'

परंतु जिसने हमें प्रेम किया है उसके द्वारा हम इन सब बातों में महान् ३७ विजेता प्रमाणित होते हैं। मुझे पूर्ण निश्चय है कि न तो मृत्यु न जीवन, ३८ न स्वर्गदूत न अपदूत, न वर्तमान न भविष्य, न आकाश की शक्तियां, न पाताल की और न कोई अन्य सृष्ट वस्तु, हमें परमेश्वर के प्रेम से वियुक्त कर सकेगी जो हमारे प्रभु ख्रिस्त यीशु में है।

यहूदियों के लिए पौलुस की अंतर्वेदना

9 मैं ख्रिस्त में सच कह रहा हूं, मैं झूठ नहीं बोलता, पवित्र आत्मा १ में मेरा अंतःकरण इस बात का साक्षी है कि मुझे भारी शोक २ है और मेरे हृदय में निरंतर वेदना रहती है। मैं तो यहां तक चाहता हूं ३ कि मेरे बंधुओं, शरीर की दृष्टि से मेरे सजातियों, के निमित ख्रिस्त मुझे अभिशप्त बना दें। ये लोग इस्राएली हैं; इन्हें पुत्रत्व का अधिकार, ४
CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
महिमा के दर्शन, व्यवस्थान, नियमशास्त्र, बलि-विधान और अभिवचन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५ प्राप्त हुए ; महान् पूर्वज इनके हैं और शरीर के नाते इन्हीं में से ख्रिस्त भी हैं—*परम प्रधान परमेश्वर की युगानुयुग स्तुति हो, आमीन* ।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा विफल नहीं हुई

६ यह बात नहीं कि परमेश्वर का वचन विफल हो गया । क्योंकि जिन्होंने इस्राएल के वंश में जन्म लिया है, वे सबके सब इस्राएली नहीं, ७ और न सब अब्रहाम के वंशज होने के कारण उनकी संतान हैं ; वरन् ८ शास्त्र के वचनानुसार, 'इसहाक से तेरा वंश चलेगा', तात्पर्य यह कि शरीर-जन्य संतान परमेश्वर की संतान नहीं, पर प्रतिज्ञा-जन्य संतान ९ ही उनकी संतान गिनी जाएगी । प्रतिज्ञा के शब्द हैं, 'मैं निर्धारित समय १० पर आऊंगा, और सारा के पुत्र होगा ।' और इतना ही बस नहीं । रिबका ११ एक ही पुरुष अर्थात् हमारे पूर्वज इसहाक से गर्भवती हुई । अभी बालक उत्पन्न भी नहीं हुआ था और न उसने कोई सुकर्म अथवा कुकर्म ही किया था, तो भी रिबका से कहा गया, 'ज्येष्ठ पुत्र छोटे का दास होगा'— १२ इसलिए कि परमेश्वर का निर्वाचन संबंधी उद्देश्य पूरा हो, जो कर्मों पर १३ नहीं, बुलाने वाले पर निर्भर है । शास्त्र का लेख भी है, 'याकूब से मैंने प्रेम किया, किंतु एसौ को अप्रिय जाना ।'

परमेश्वर अन्यायी नहीं

१४ तो हम क्या कहें ? परमेश्वर के यहां अन्याय होता है ? कदापि १५ नहीं । क्योंकि उन्होंने मूसा से कहा है, 'मै जिस पर कृपा करना चाहूंगा, उस पर कृपा करूंगा ; एवं जिस पर करुणा करना चाहूंगा, उस पर १६ करुणा ।' अतः यह मनुष्य की इच्छा पर अथवा उसके दौड़ धूप करने १७ पर नहीं, परंतु परमेश्वर की कृपा पर निर्भर है । जैसा कि फिराऊन के प्रति शास्त्र का कथन है, 'तुझे खड़ा करने में मेरा अभिप्राय यह है कि तेरे

* अथवा, 'जो परम प्रधान परमेश्वर हैं ; उनकी युगानुयुग स्तुति हो, आमीन ।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
द्वारा मैं अपनी सामर्थ्य प्रकट करूं जिससे समस्त जगत में मेरे नाम का प्रचार हो।' निष्कर्ष यह कि वह जिस पर चाहें कृपा करें और जिसे चाहें हठधर्मी बना दें। १८

परमेश्वर सर्वाधिपति हैं

तुम मुझसे प्रश्न करोगे, 'तो परमेश्वर दोष क्यों लगाते हैं? कौन उनकी इच्छा का विरोध कर सकता है?' अरे मनुष्य, तू है कौन जो परमेश्वर को प्रत्युत्तर दे? क्या गढ़ी हुई वस्तु अपने गढ़ने वाले से कह सकती है कि तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया? क्या मिट्टी पर कुम्हार को अधिकार नहीं कि एक ही लोंदे में से किसी पात्र को उत्कृष्ट कार्यों के निमित्त बनाए और किसी को निकृष्ट कार्यों के निमित्त। यदि परमेश्वर ने अपना प्रकोप प्रदर्शित करने और अपनी सामर्थ्य दिखाने की इच्छा से प्रकोप के पात्रों को, जो विनष्ट होने के लिए प्रस्तुत थे, बड़े धैर्य से सहन किया तो क्या हुआ। यह उन्होंने इसलिए किया कि अपनी महिमा का वैभव अपने कृपा पात्रों पर प्रकट करें जिनको उन्होंने महिमा के लिए पहले से ही नियुक्त किया है। वे कृपा पात्र हम हैं जिनको उन्होंने केवल यहूदियों में से ही नहीं वरन् विजातियों में से बुलाया है। उन्होंने होशे की पुस्तक में कहा भी है: १९ २० २१ २२ २३ २४ २५

'जो मेरी प्रजा नहीं है, उन्हें मैं अपनी प्रजा कहूंगा;
जो मेरी प्रेयसी नहीं है, उसे मैं अपनी प्रेयसी कहूंगा।
क्योंकि जिस स्थान पर उनसे कहा गया २६
कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो
वहीं वे जीवंत परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।'

और इस्राएल के विषय यशायाह के उद्गार हैं: २७

'इस्राएल के संतान की संख्या
सागर में सिकता-कण के सदृश ही क्यों न हो,
तो भी उनमें से अवशेष मात्र ही परित्राण पाएगा;
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८ क्योंकि पृथ्वी पर प्रभु अपना संक्षिप्त और अंतिम आदेश देंगे ।'

२९ यशायाह यह भी कह चुके हैं,

'यदि सेनाओं के प्रभु ने हमारे लिए कुछ वंशज नहीं छोड़े होते,
तो हम सदोम के सदृश होते,
और हमारी उपमा अमारा से दी जाती ।'

इस्राएल की विफलता का कारण

३० तो अब क्या कहें? यह कि विजातियों ने, जो धार्मिकता के लिए प्रयत्न नहीं करती थीं, धार्मिकता—विश्वास-जन्य धार्मिकता—प्राप्त ३१ की ; किंतु इस्राएल जो धार्मिकता के नियम के लिए सदा प्रयत्नशील ३२ रहा, उस नियम को नहीं प्राप्त कर पाया । क्यों ? इसलिए कि उसका आधार विश्वास नहीं, कर्म था । इस प्रकार ठेस के पत्थर से उन्हें ठेस ३३ लग ही गई । जैसा कि शास्त्र का लेख है :

'देखो, मैं सिय्योन में ठेस का पत्थर
और ठोकर खाने की शिला रखता हूं;
परंतु उस पर विश्वास करने वाला निराश नहीं होगा ।'

10 भाइयो, मेरी यह हार्दिक अभिलाषा है और परमेश्वर से प्रार्थना है कि यहूदियों का उद्धार हो । मैं उनके विषय प्रमाणित करता हूं कि उनमें परमेश्वर के लिए उत्साह है, पर यह उत्साह विवेकपूर्ण ३ नहीं । वे परमेश्वर प्रदत्त धार्मिकता से अनभिज्ञ हैं और अपनी धार्मिकता स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं, इसलिए परमेश्वर प्रदत्त धार्मिकता उन्हें मान्य नहीं ।

४ अस्तु, ख्रिस्त नियमशास्त्र के अंत हैं कि सब विश्वासियों को धार्मिकता प्राप्त हो ।

धार्मिकता का यह नवीन मार्ग सबके लिए है

५ मूसा ने लिखा है कि जो व्यक्ति नियमशास्त्र पर आधारित धार्मिकता का अनुसरण करता है वह उसके द्वारा जीवन प्राप्त करेगा ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर विश्वास पर आधारित धार्मिकता का वक्तव्य है, 'अपने मन में यह ६ मत कह कि स्वर्गारोहण कौन करेगा' (इसके अर्थ हैं ख्रिस्त को नीचे लाना) अथवा, 'अधोलोक में कौन उतरेगा' (इसके अर्थ हैं ख्रिस्त को ७ मृतकों में से उठाना)। परंतु उसका क्या कथन है। 'संदेश तुम्हारे ८ समीप है, वह तुम्हारे मुख में और हृदय में है'—अर्थात् वह विश्वास संबंधी संदेश जिसका हम प्रचार करते हैं। यदि तुम मुख से स्वीकार करो कि ९ 'यीशु प्रभु हैं', और हृदय से विश्वास करो कि परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से जीवित किया तो तुम्हारा उद्धार होगा; क्योंकि मनुष्य हृदय से १० विश्वास कर धार्मिकता प्राप्त करता है और मुख से स्वीकार कर उद्धार। शास्त्र का भी कथन है, 'जो कोई उन पर विश्वास करे, वह लज्जित नहीं ११ होगा।' अत: यहूदी और यूनानी में अब कोई भेद नहीं रहा; वही प्रभु १२ सबके प्रभु हैं और वह अपने प्रार्थियों के लिए समृद्ध एवं उदार हैं। क्योंकि 'जो प्रभु के नाम की दुहाई देगा, उसका उद्धार होगा।' १३

पर लोग उसकी दुहाई कैसे देंगे जिसमें वे विश्वास नहीं करते? और १४ उसमें विश्वास कैसे करेंगे जिसके विषय में उन्होंने सुना नहीं? और सुनेंगे कैसे जब तक कोई प्रचार न करे? और लोग प्रचार कैसे करेंगे जब १५ तक कि भेजे न जाएं?" अत. शास्त्र का लेख है, 'सुसमाचार प्रचारकों का आगमन कैसा सुखद होता है'*। परंतु सबको यह सुसमाचार मान्य १६ नहीं हुआ; क्योंकि यशायाह का कथन है, 'प्रभु, हमारे संदेश पर किसने विश्वास किया।' अस्तु, विश्वास श्रवण से होता है, और श्रवण ख्रिस्त १७ के वचन पर निर्भर है। परंतु मैं पूछता हूं, 'क्या उन्होंने नहीं सुना?' १८ अवश्य ही सुना है,

'उनकी वाणी समस्त पृथ्वी पर
और उनका संदेश अखिल विश्व में पहुंच गया है।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अथवा, 'के चरण कैसे सुंदर होते हैं।'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९ मैं फिर पूछता हूं, 'क्या इस्राएल ने इसे नहीं समझा ?' 'पहिले तो मूसा का कथन है,

'जो लोग राष्ट्र नहीं हैं, उनके प्रति मैं तुम्हें ईर्ष्यालु बनाऊंगा।
निर्बुद्धिराष्ट्र के प्रति मैं तुम्हें कुपित करूंगा।'

२० फिर यशायाह ने तो साहस कर यहां तक कहा है—

'जो मेरी खोज नहीं करते थे, उन्होंने मुझे पा लिया,
जो मेरा पता नहीं पूछते थे, मैं उन पर प्रकट हो गया हूं।'

२१ किंतु इस्राएल के विषय में उनका कथन है, ? 'आज्ञा न मानने वाली विद्रोही प्रजा की ओर मैं सारे दिन हाथ फैलाए रहा।'

परमेश्वर ने इस्राएल का पूर्णत: त्याग नहीं किया

11 मेरा प्रश्न है : 'क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा का परित्याग कर दिया ?' मैं यह नहीं मानता। मैं स्वयं इस्राएली हूं, २ अब्रहाम के वंश का हूं और बिन्यामीन के गोत्र का। परमेश्वर ने अपनी प्रजा का, जिसे वह पहिले से जानते हैं, परित्याग नहीं किया। क्या तुम्हें ज्ञात नहीं कि शास्त्र एलिय्याह के विषय क्या कहता है ? कैसे ३ उन्होंने इस्राएल के विरुद्ध परमेश्वर से याचना की, 'प्रभु, उन्होंने तेरे नबियों की हत्या कर डाली और तेरी वेदियों को ध्वस्त कर दिया। अकेला ४ मैं ही बचा हू, और वे मेरे प्राण भी लेना चाहते हैं।' पर दिव्य वाणी ने क्या कहा ? 'मैंने अपने लिए सात सहस्र पुरुषों को रख छोड़ा है जिन्होंने ५ बाअल के आगे घुटने नहीं टेके।' ठीक इसी प्रकार वर्तमान समय में ६ कुछ व्यक्ति शेष हैं जिनका निर्वाचन अनुग्रह द्वारा हुआ है। परंतु यदि अनुग्रह से यह हुआ है तो कर्मों से नहीं, अन्यथा अनुग्रह, अनुग्रह नहीं रह जाता।

७ इसका परिणाम ? इस्राएल जिसकी खोज में था, वह उसे नहीं ८ मिली पर निर्वाचितों को वह प्राप्त हो गया। शेष लोग जड़मति हो गए, जैसा कि शास्त्र का लेख है,

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परमेश्वर ने उनकी चेतना मंद कर दी,
उन्हें ऐसे नेत्र दिए, जो न देखें,
उन्हें ऐसे कान दिए, जो न सुनें,
और आज तक उनकी दशा ऐसी ही बनी हुई है।'

दाऊद भी कहते हैं, ९

'उनका भोजन उनके लिए जाल और फंदा बन जाए,
वह उनके निमित्त पतन एवं दंड का कारण हो।
उनकी आंखों के आगे अंधेरा छा जाए कि वे देख न सकें। १०
उनकी कमर को तू सदैव झुकाए रख।'

पर मैं पूछता हूं, क्या उन्हें ऐसी ठोकर लगी कि उनका नितांत अधःपतन ११ हो गया? कदापि नहीं। किंतु इनके पतन द्वारा विजातियों का उद्धार हुआ है कि इन्हें प्रतिस्पर्धा* हो। अब यदि इनके पतन से संसार की १२ समृद्धि हुई, और इनकी क्षति से विजातियों की समृद्धि तो फिर इनकी पूर्णता से क्या कुछ नहीं होगा?

विजातियों का उद्धार : कलम लगाने का उदाहरण

तुम विजातियों से मेरा कथन है। मैं विजातियों के लिए प्रेरित १३ हूं अतएव तुम्हारे प्रति अपनी सेवा को विशेष महत्व देता हूं कि अपने १४ सजातियों में प्रतिस्पर्धा उत्पन्न कर किसी प्रकार उनमें से कुछ का उद्धार कर सकूं। यदि उन्हें परित्याग करना, संसार के मिलाप का कारण हुआ १५ तो उनका अंगीकरण, मृत-संजीवन के अतिरिक्त और क्या होगा। यदि १६ अर्पण का प्रथम पेड़ा पवित्र है तो पूरा गुंधा हुआ आटा भी पवित्र है; यदि मूल पवित्र है तो शाखाएं भी। यदि कुछ शाखाएं काट डाली गईं १७ और तुम जंगली जैतून, उनके स्थान पर कलम लगाए गए और जैतून के मूल तथा रस भंडार के सहभोगी हुए तो उन शाखाओं के समक्ष गर्व मत १८

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अथवा, ईर्ष्या

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना, और यदि तुम्हें गर्व हो तो स्मरण रखना कि मूल पर तुम आश्रित हो न कि मूल तुम पर।

१९ तुम कहोगे, 'शाखाएं काटी गईं कि मैं कलम लगा सकूं।' यह
२० ठीक है, पर वे अविश्वास के कारण काटी गईं और तुम विश्वास के कारण
२१ रक्षित हो। अतएव अहंकार मत करो, वरन् भय मानो ; क्योंकि यदि परमेश्वर ने प्राकृतिक शाखाओं को नहीं छोड़ा तो तुम्हें भी नहीं छोड़ेंगे।
२२ परमेश्वर की कृपालुता और कठोरता दोनों पर ध्यान दो—पराङ्मुख व्यक्तियों पर उनकी कठोरता है तथा तुम पर उनकी कृपा, प्रतिबंध यह कि तुम उनकी कृपा के पात्र रहो, अन्यथा तुम भी काट डाले जाओगे।
२३ इसी प्रकार, यदि वे अविश्वास में अड़े नहीं रहे तो वे भी कलम लगाए जाएंगे ; परमेश्वर सामर्थ्यवान् हैं और उन्हें फिर लगा सकते हैं।
२४ क्योंकि यदि तुम जंगली जैतून से कटकर उपवन के जैतून में प्रकृति के विरुद्ध कलम लगाए गए, तो फिर वे प्राकृतिक शाखाएं अपने ही वृक्ष में कितनी सरलता से लगाई जा सकेंगी।

परमेश्वर का चरम उद्देश्य : सब पर करुणा करना

२५ भाइयो, कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने को बहुत बुद्धिमान् समझ बैठो ; अतएव मैं नहीं चाहता कि इस रहस्य से अपरिचित रहो, कि जब तक विजातियों का पूर्ण प्रवेश न हो जाए तभी तक इस्राएल का एक
२६ भाग जड़मति रहेगा। और इस प्रकार समस्त इस्राएल का उद्धार होगा। जैसा कि शास्त्र का लेख है,

'सिय्योन से मुक्तिदाता का आगमन होगा,
वह याकूब के वंश से आसुरी भाव दूर करेंगे।
२७ जब मैं उनके पापों का हरण करूंगा
तो उनके साथ मेरा यही व्यवस्थान होगा।'

२८ सुसमाचार की दृष्टि से तुम्हारे निमित्त वे परमेश्वर के शत्रु हैं, परंतु
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
२९ निर्वाचन की दृष्टि से पूर्वजों के कारण वे परमेश्वर के प्रिय हैं, क्योंकि

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमेश्वर के वरदान एवं आह्वान सदा अमोघ हैं। जिस प्रकार तुम कभी ३० परमेश्वर की अवज्ञा करते थे परंतु उन अवज्ञाकारियों के कारण अब तुमने दया प्राप्त की है, उसी प्रकार वे अब अवज्ञा करते हैं कि तुम्हें दया ३१ प्राप्त करते देख स्वयं दया प्राप्त करें। परमेश्वर ने सब को अवज्ञा की ३२ परिधि में बांध लिया है कि सब पर दया करें।

अहा, कैसा अगाध है परमेश्वर का वैभव, बुद्धि और ज्ञान। कैसे ३३ गहन हैं उनके निर्णय। कैसे अगम हैं उनके मार्ग। क्योंकि ३४

'प्रभु का मन किसने जाना है?
अथवा कौन उनका मंत्री हुआ है?'
'किसने उनको कुछ दिया है ३५
कि उनसे अधिकारपूर्वक मांगे?'

सब कुछ उन्हीं से, उन्हीं के द्वारा तथा उन्हीं के लिए है। उनकी ३६ स्तुति युगानुयुग हो। आमीन।

नवीन जीवन-क्रम

12 अतएव भाइयो, मैं परमेश्वर की करुणा की स्मृति दिलाकर १ तुमसे अनुरोध करता हूं कि अपने शरीर को जीवित, पवित्र और रुचिकर बलिदान के रूप में परमेश्वर को अर्पित करो; यही तुम्हारी आध्यात्मिक उपासना है। इस संसार* के अनुरूप मत बनो; मन के २ नवीन होने से तुम में आमूल-परिवर्तन हो जाए जिससे तुम परमेश्वर की इच्छा का अनुभव कर सको कि उनकी दृष्टि में उत्तम, रुचिकर और पूर्ण क्या है।†

आध्यात्मिक वरदानों का उचित उपयोग

मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझे प्राप्त हुआ है, तुम सबसे कहता ३ हूं कि तुम में से कोई अपने आपको जितना उचित है, उससे अधिक न

---

* अक्षरशः 'युग'

† अथवा 'तुम परमेश्वर की उत्तम, रुचिकर और पूर्ण इच्छा का अनुभव कर सको'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझे ; परंतु विश्वास की मात्रा के अनुसार, जैसा कुछ परमेश्वर ने दिया
४ है, उसी के अनुसार संयमपूर्वक अपना मूल्यांकन करे। क्योंकि जिस प्रकार
५ शरीर में अनेक अंग हैं, और इन सब अंगों का कार्य एक सा नहीं, उसी प्रकार
हम अनेक होते हुए भी, ख्रिस्त में एक शरीर हैं और परस्पर एक दूसरे
६ के अंग हैं। हमारे वरदान भी, हम पर किए गए अनुग्रह के अनुसार, भिन्न
७ भिन्न हैं। यदि किसी को भविष्यवाणी का वरदान प्राप्त है तो वह
विश्वास के अनुरूप उसका ठीक ठीक उपयोग करे, यदि सेवा का, तो
सेवा करे, जो शिक्षक है वह शिक्षा देने में संलग्न रहे, और जो उपदेशक है
८ वह उपदेश देने में। दाता उदारता पूर्वक दे, अधिकारी यत्नपूर्वक नेतृत्व
करे, एवं जो दया करे, वह सहर्ष करे।

ख्रिस्तीय जीवन के नियम

९ प्रेम निष्कपट हो। बुराई से घृणा करो, भलाई में लगे रहो।
१० भ्रातृ भावना से प्रेरित होकर एक दूसरे से स्नेह रखो। आदर करने में
११ एक दूसरे से बढ़ चलो। प्रयत्न करने में आलसी न हो, आत्मिक उत्साह
१२ से पूर्ण रहो, प्रभु की सेवा करो। आशा में आनंदित रहो ; विपत्ति
१३ में धैर्य रखो ; प्रार्थना में लवलीन रहो। अभाव की अवस्था में संतों
१४ की सहायता करो, और अतिथि-सेवा में तत्पर रहो। अपने सतानेवालों
१५ को आशीर्वाद दो, हां आशीर्वाद दो, अभिशाप नहीं। जो आनंद में हैं
उनके साथ आनंदित हो, और जो शोक हैं उनके साथ शोकित।
१६ परस्पर एक सी भावना रखो। अहंकारी मत बनो किंतु *दीन जनों
के साथ मिल जुलकर रहो। अपने आपको बहुत बुद्धिमान मत समझो।
१७-१८ बुराई के बदले बुराई मत करो। जो बातें सब मनुष्यों की दृष्टि में
सात्विक हैं उन्हें अपना लक्ष्य बनाओ। जहां तक तुम्हारा संबंध है,
१९ सबके साथ, यथासंभव, शांतिपूर्वक रहो। प्रिय, प्रतिशोध न लो,
किंतु ईश्वरीय प्रकोप को कार्य करने का अवसर दो, क्योंकि शास्त्र में लेख

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अथवा, 'तुच्छ समझे जाने वाले कर्तव्यों को मन लगाकर पूरा करो।'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है, 'प्रभु कहते हैं कि प्रतीकार लेना मेरा काम है, मैं बदला लूंगा।' अस्तु, यदि तुम्हारा शत्रु भूखा है तो उसे भोजन कराओ, और यदि प्यासा है तो उसे पानी पिलाओ, क्योंकि इस प्रकार तुम उसके सिर पर दहकते अंगारों का ढेर लगाओगे। बुराई से पराजित न हो किंतु भलाई से बुराई पर विजय प्राप्त करो। २० २१

अधिकारियों के प्रति अधीनता

13 प्रत्येक व्यक्ति शासन के अधिकारियों के अधीन रहे। कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से नहीं—और वर्तमान अधिकारियों की व्यवस्था परमेश्वर द्वारा हुई है। फलतः जो शासन का विरोध करता है, वह परमेश्वर से विद्रोह करता है; और विद्रोही दंड के भागी होंगे। शासकवर्ग सुकर्म के लिए नहीं, किंतु कुकर्म के लिए भय का कारण है। क्या तुम शासक से निर्भय रहना चाहते हो? तो सुकर्म करो और वह तुम्हारा प्रशंसक होगा; क्योंकि वह तुम्हारी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है। किंतु यदि तुम कुकर्म करते हो तो डरो क्योंकि वह व्यर्थ ही शस्त्र धारण नहीं करता; वह परमेश्वर का सेवक है और उनके प्रकोप का साधन होकर कुकर्मियों को दंड देता है। फलतः अनिवार्य है कि तुम केवल प्रकोप के कारण ही नहीं, वरन् अंतरात्मा के कारण भी शासन के अधीन रहो। तुम राज्य-कर इसलिए देते हो कि अधिकारी परमेश्वर के सेवक हैं और इस सेवा में तत्पर हैं। जिसका जो प्राप्तव्य है वह उसे दो; जिसे कर देना चाहिए उसे कर दो, जिसे चुंगी देना चाहिए उसे चुंगी दो, जिससे भय मानना चाहिए उससे भय मानो, जिसका सन्मान करना चाहिए उसका सन्मान करो। १ २ ३ ४ ५ ६ ७

पारस्परिक प्रेम

पारस्परिक प्रेम को छोड़ कर अन्य किसी विषय में एक दूसरे के ऋणी मत बनो; क्योंकि जो पड़ोसी से प्रेम करता है, उसने नियमशास्त्र ८

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
९ का पूर्ण रूप से पालन किया है। कारण, 'परस्त्रीगमन मत कर, हत्या मत कर, चोरी मत कर, लालच मत कर' और इनके अतिरिक्त यदि कोई और आज्ञा हो तो उसका भी सारांश इस वचन में पाया जाता है कि
१० 'अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम करो।' प्रेम, पड़ोसी का अपकार नहीं करता, इसलिए प्रेम नियमशास्त्र की परिपूर्ति है।

ख्रिस्त दिवस का आगमन

११ संकट-काल को पहिचानो और इन सब बातों पर ध्यान दो। तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने का समय आ पहुंचा है, क्योंकि जब हमने विश्वास किया था, उस समय की अपेक्षा अब हमारा उद्धार अधिक समीप
१२ है। रात्रि बीत चुकी है और दिन निकलने को है, इसलिए हमें चाहिए कि
१३ अंधकार के कुकर्मों को त्याग कर प्रकाश के शस्त्र धारण करें। हम ऐसा आचरण करें जो दिन में शोभनीय होता है, न कि रस-रंग, मदिरासेवन,
१४ लंपटता और निर्लज्जता, ईर्ष्या और वादविवाद में फंस जाएं। प्रभु यीशु ख्रिस्त को धारण करो और शारीरिक वासनाओं की तृप्ति का ध्यान छोड़ दो।

दुर्बल-विश्वासियों के प्रति उदार बनो

14 जो विश्वास में दुर्बल है उसे अपना लो, किंतु उसकी विभिन्न धारणाओं पर उससे विवाद मत करो। किसी का विश्वास है कि सब कुछ खाना विहित है; दूसरा विश्वास में दुर्बल है और शाकपात ही
३ खाता है। खानेवाला, न-खानेवाले को तुच्छ न जाने; और न-खानेवाला, खानेवाले पर दोष न लगाए, क्योंकि परमेश्वर ने इसे अपना
४ लिया है। दूसरे के सेवक पर दोष लगाने वाला तू कौन है? उसकी स्थिरता और पतन, उसका स्वामी जाने। और वह अवश्य स्थिर रहेगा क्योंकि उसको स्थिर रखने की सामर्थ्य उसके प्रभु में है।

५ कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़ कर मानता है और दूसरा सब दिनों को एक समान समझता है। ऐसे विषयों पर प्रत्येक की अपनी
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारणा होनी चाहिए। जो किसी दिन को विशेप रूप से मनाता है, वह उसे ६
प्रभु के निमित्त मनाता है। इसी प्रकार जो सब कुछ खाता है, वह प्रभु
के निमित्त खाता है क्योंकि वह परमेश्वर को धन्यवाद देता है; जो नहीं
खाता वह भी प्रभु के निमित्त नहीं खाता एवं परमेश्वर को धन्यवाद देता
है। हम में से न तो कोई अपने लिए जीता है और न अपने लिए मरता है। ७
यदि हम जीवित हैं तो प्रभु के लिए, और यदि मरते हैं तो प्रभु के लिए; ८
अतः हम जिएं या मरें, प्रभु के ही हैं। ख्रिस्त इसीलिए मरे और जीवित ९
हुए कि मृतक के और जीवित दोनों के प्रभु हो सकें।

तो तू अपने भाई पर दोप क्यों लगाता है? अथवा अपने भाई को १०
तुच्छ क्यों समझता है? हम सब को परमेश्वर के न्यायासन के संमुख
खड़ा होना है; क्योंकि शास्त्र का लेख है, ११

'प्रभु का वचन है, मैं दृढ़तापूर्वक कहता हूं
कि प्रत्येक घुटना मेरे आगे टिकेगा,
और प्रत्येक वाणी परमेश्वर को अंगीकार करेगी।'

अतः हममें से प्रत्येक अपना-अपना लेखा परमेश्वर को देगा। १२

अतएव अब से हम एक दूसरे पर दोप लगाना छोड़ दें, निश्चय कर लें १३
कि अपने भाई के मार्गमें रोड़े नहीं अटकाएंगें, और जाल नहीं बिछाएंगे।
मैं जानता हूं, और प्रभु यीशु में मुझे निश्चय है, कि कोई वस्तु स्वतः अशुद्ध १४
नहीं होती; परंतु यदि कोई व्यक्ति उसे अशुद्ध मानता है तो वह उसके
लिए अशुद्ध है। यदि तुम्हारे भोजन के कारण तुम्हारे भाई को क्षोभ होता १५
है तो तुम प्रीति की रीति पर नहीं चल रहे। जिसके लिए ख्रिस्त ने प्राण
दिए उसका भोजन से विनाश मत करो। तुम्हारी दृष्टि में जो भला है १६
उसका ऐसा उपयोग मत करो कि तुम्हारे संबंध में बुरी चर्चा फैले;
क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाने-पीने में नहीं, किंतु धार्मिकता, शांति १७
और आनंद में है जो पवित्र आत्मा से प्राप्त होता है। जो मनुष्य इस १८
प्रकार ख्रिस्त की सेवा करता है, वह परमेश्वर को प्रसन्न करता है और
मनुष्यों को खरा जंचता है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९ हम ऐसे कार्यों में संलग्न रहें जिनसे शांति मिलती और एक दूसरे
२० के जीवन का निर्माण होता है। भोजन के लिए परमेश्वर की कृति का
विनाश मत करो। वस्तुतः सब कुछ शुद्ध है किंतु भोजन द्वारा दूसरे के
२१ मार्ग में रोड़े अटकाना बुरा है। उत्तम तो यह है कि मांस-मदिरा का
सेवन न किया जाए और न अन्य कोई ऐसा कार्य किया जाए जिससे
२२ तुम्हारा भाई पथ-भ्रष्ट* हो। यदि तुम्हारा कोई विश्वास है तो उसे
अपने तक और परमेश्वर तक सीमित रखो; धन्य है वह जो अपने
२३ विश्वास की कसौटी पर अपने को खरा पाता है। परंतु यदि कोई
संशयात्मा होकर कुछ खाता है तो दोष का भागी होता है, क्योंकि उसका
कार्य विश्वास-जन्य नहीं, और जो कार्य विश्वास-जन्य नहीं वह पाप है।

15 हम जो सशक्त हैं, हमें चाहिए कि अशक्त मनुष्यों की
दुर्बलताओं के प्रति सहनशील रहें और केवल अपने ही सुख
२ का ध्यान न रहे। हममें से प्रत्येक अपने पड़ोसी के कल्याण एवं जीवन-
३ निर्माण के निमित्त उसके सुख का ध्यान रखे। क्योंकि ख्रिस्त ने अपने
सुख का ध्यान नहीं रखा, जैसा शास्त्र का लेख है, 'तेरे निंदकों से निंदा
४ ही मुझे मिली।' पूर्वकाल में जो कुछ लिखा गया, हमारी शिक्षा के निमित्त
लिखा गया जिससे धैर्य द्वारा एवं शास्त्र के आश्वासन द्वारा हम आशावान्
५ हों। धैर्य एवं आश्वासन प्रदान करनेवाले परमेश्वर ऐसा वर दें
६ कि ख्रिस्त यीशु के सदृश तुम परस्पर एक-चित्त रहो, और मिलकर एक
स्वर से हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्त के पिता परमेश्वर की स्तुति करते रहो।

७ जैसे ख्रिस्त ने परमेश्वर की महिमा के निमित्त तुम्हें अपनाया वैसे
८ ही तुम भी एक दूसरे को अपनाओ। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि
ख्रिस्त, परमेश्वर की विश्वस्तता प्रमाणित करने के निमित्त खतनेवालों
९ के सेवक बने जिससे पूर्वजों से की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करें, और

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
* पाठांतर, 'क्षुब्ध'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विजातियां भी दया प्राप्त कर परमेश्वर की स्तुति करें। जैसा कि शास्त्र का लेख है,

'इस कारण मैं विजातियों में आपकी स्तुति करूंगा,
और आपके नाम के स्तोत्र गाऊंगा।'

शास्त्र फिर कहता है, १०

'विजातियों के लोगो, उनकी प्रजा के साथ आनंद मनाओ।'

पुनश्च:, ११

'समस्त जातियों के लोगो, उनकी स्तुति करो।
समस्त राष्ट्र उनकी प्रशंसा करें।'

और यशायाह का कथन है, १२

'यिशै का मूल प्रकट होगा,
विजातियों पर शासन करने के लिए उसका उत्थान होगा;
विजातियां उस पर आशा रखेंगी।'

परमेश्वर, जो आशा के श्रोत हैं, तुमको विश्वास-जन्य और संपूर्ण आनंद १३ तथा शांति से परिपूर्ण करें जिससे पवित्र आत्मा की सामर्थ्य द्वारा तुम्हें विपुल आशा प्राप्त हो।

अधिकारपूर्वक लिखने का कारण

मेरे भाइयो, मुझे तुम्हारे विषय में निश्चय है कि तुम भलाई से १४ परिपूर्ण हो, समस्त ज्ञान के भंडार हो, और एक दूसरे को परामर्श देने में समर्थ हो। फिर भी मैंने तुम्हारी स्मृति के लिए कुछ विषयों पर लिखने १५ का साहस किया है; कारण परमेश्वर से मुझे यह अनुग्रह मिला कि मैं १६ विजातियों के बीच ख्रिस्त यीशु का सेवक बनूं, और परमेश्वर के सुसमाचार की सेवा पुरोहित के रूप में करूं, जिससे विजातियां पवित्र आत्मा से पवित्र होकर अर्पित हों और सुग्राह्य हों। मैंने जो कार्य परमेश्वर के १७ निमित्त किए हैं, उनके लिए मुझे ख्रिस्त यीशु में गर्व है। अस्तु, मैं किसी १८
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
अन्य विषय पर बोलने का साहस नहीं करूंगा, केवल यही बताऊंगा कि

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९ वचन और कर्म द्वारा, चिह्नों और चमत्कारों द्वारा, तथा पवित्र आत्मा की सामर्थ्य द्वारा ख्रिस्त ने मुझे निमित्त बना कर विजातियों को आज्ञाकारी बनाया; फलतः मैंने यरूशलेम से आरंभ कर इल्लुरिकुम तक
२० चारों ओर ख्रिस्त के समाचार का पूरा पूरा प्रचार कर दिया है। मैंने इसमें गौरव माना है कि जहां ख्रिस्त का नाम अज्ञात है वहीं प्रचार करूं,
२१ कहीं ऐसा न हो कि मैं दूसरे की नींव पर घर उठाऊं; प्रत्युत जैसा शास्त्र का लेख है:

'जिन्हें उनका संवाद नहीं मिला, वे देखेंगे ;
और जिन्होंने नहीं सुना है, वे समझेंगे।'

यात्रा की रूपरेखा

२२ यही कारण है कि मुझे अनेक बार तुम्हारे यहां आने से रुकना पड़ा।
२३ परंतु अब इस भूभाग में मेरे लिए कोई नया कार्य-क्षेत्र नहीं रहा एवं बहुत वर्षों से मुझे उत्कंठा रही है कि इसपानिया जाते समय तुम्हारे पास होता
२४ हुआ जाऊं, इसलिए मुझे आशा है कि इस यात्रा में तुम्हारे दर्शन होंगे, जिससे प्रथम, तुम्हारी संगति से तृप्ति लाभ करूं और तदनंतर तुम मुझे कुछ दूर
२५ पहुंचा कर विदा कर दो। अभी तो मैं संतों की सेवा के निमित्त यरूशलेम
२६ जा रहा हूं, क्योंकि मकिदूनिया और अखया के लोगों ने शुभ संकल्प किया है कि यरूशलेम के निर्धन संतों के निमित कुछ आर्थिक सहायता भेजें।
२७ उनका यह संकल्प उत्तम है, और सच तो यह है कि वे इनके ऋणी भी हैं; क्योंकि यदि विजातियां आध्यात्मिक संपत्ति में इनकी साझेदार हुई तो
२८ यह उचित ही है कि वे लौकिक संपत्ति द्वारा इनकी सेवा करें। कार्य समाप्त करने पर अर्थात् यह* दान उनको सौंपने के पश्चात् मैं तुम्हारे
२९ पास होता हुआ इसपानिया जाऊंगा। और मुझे निश्चय है कि जब मैं तुम्हारे समीप आऊंगा तो ख्रिस्त की पूर्ण आशिषों के साथ आऊंगा।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

* अक्षरश: 'फलों को मुद्रांकित करने'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाइयो, हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्त द्वारा और पवित्र आत्मा के प्रेम द्वारा, मेरा तुमसे अनुरोध है कि मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरा साथ दो, जिससे मैं यहूदिया-निवासी अविश्वासियों से निरापद रहूं, यरूशलेम के निमित्त मेरी सेवा संतों को रुचिकर हो और परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे यहां सानंद पहुंचकर कुछ दिन तुम्हारी संगति से विश्राम प्राप्त करूं। शांति-श्रोत परमेश्वर तुम सबके साथ हों। आमेन। ३० ३१

अभिवादन

16 किंख्रिया की कलीसिया की सेविका—हमारी बहिन फीबे—के लिए मेरा निवेदन है कि, जैसा संतों के लिए शोभनीय है, तुम प्रभु में उसका स्वागत करो, और यदि किसी कार्य में उसे तुम्हारी आवश्यकता हो तो उसकी सहायता करो ; क्योंकि वह बहुतों की, और मेरी भी उपकारिणी रही है। १ २

ख्रिस्त यीशु में मेरे सहकर्मी प्रिसका और अक्विला को नमस्कार जिन्होंने मेरी प्राणरक्षा के लिए स्वयं अपना जीवन संकट में डाल दिया। मैं ही नहीं वरन् विजातियों की समस्त कलीसियाएं उनकी अनुग्रहीत हैं। उनके घर में एकत्रित होने वाली कलीसिया को भी नमस्कार। मेरे प्रिय इपैनितुस को, जो ख्रिस्त के निमित्त आसिया के प्रथम फल हैं, नमस्कार। मरियम को जिस ने तुम्हारे लिए बहुत परिश्रम किया, नमस्कार। अन्द्रनीकुस और यूनियास को नमस्कार, जो मेरे सगोत्र हैं, मेरे साथ कारागार में रह चुके हैं और प्रेरितों में प्रख्यात हैं ; यह मुझसे भी पहिले ख्रिस्त की शरण में आए। प्रभु में मेरे प्रिय अम्पलियातुस को नमस्कार। ख्रिस्त में हमारे सहकर्मी उरबानुस को, तथा मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार। ख्रिस्त में सुपरीक्षित अपिल्लेस को नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के परिवार को नमस्कार। मेरे सगोत्र हेरोदियोन को नमस्कार। प्रभु में श्रम करनेवाली त्रूफेना और त्रूफोसा को नमस्कार। प्रिय पिरसिस को, जिसने प्रभु में बहुत श्रम किया है, नमस्कार। प्रभु-निर्वाचित रूफुस तथा उनकी माता को, जो मेरी भी माता है, नमस्कार। असुंक्रितुस, ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिलगोन, हिर्मस, पत्रुवास, हिर्मास एवं उनके साथ के भाइयों को
१५ नमस्कार। फिलुलुगुस, यूलिया, नेर्युस एवं उनकी बहिन, और
१६ उलुंपास तथा उनके साथी समस्त संतों को नमस्कार। पवित्र चुंबन
द्वारा परस्पर नमस्कार करना। ख्रिस्त की समस्त कलीसियाओं की
ओर से तुम्हें नमस्कार।

१७ भाइयो, मेरा तुमसे अनुरोध है कि जो शिक्षा तुमने पाई है, उसके
विरुद्ध मतभेद पैदा करने वालों और पथभ्रष्ट करने वालों से सावधान
१८ रहना, और उनके निकट न जाना; क्योंकि वे हमारे प्रभु ख्रिस्त की सेवा
नहीं, अपनी पेट-पूजा करते हैं और चिकनी चुपड़ी बातों से सरल हृदय
१९ लोगों को भुलावे में डालते हैं। तुम्हारी आज्ञा पालन की कीर्ति सब लोगों
में फैल चुकी है, इससे मुझे प्रसन्नता है; फिर भी मेरी कामना है कि तुम
२० सुकर्म करने में दक्ष बनो और कुकर्मों से पृथक् रहो। शांति-श्रोत परमेश्वर
शीघ्र ही शैतान को तुम्हारे पैरों तले कुचल देंगे। हमारे प्रभु यीशु का
अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।

२१ मेरे सहकर्मी तिमुथियुस, और मेरे सगोत्र लूकियुस, यासोन,
२२ और सोसिपत्रुस का तुमको नमस्कार। इस पत्र को लिपिबद्ध करनेवाले,
२३ मुझ तिरतियुस का, आप लोगों को नमस्कार। मेरे और समस्त
कलीसिया का आतिथ्य करने वाले, गयुस का तुम लोगों को नमस्कार।
नगर-कोपाध्यक्ष इरास्तुस और भाई क्वारतुस का भी तुम्हें नमस्कार।

परमेश्वर-स्तवन

२५ अब जो तुमको मेरे सुसमाचार एवं यीशु ख्रिस्त के संदेशानुसार सुदृढ़
रखने में समर्थ हैं, उस रहस्य के उद्घाटन के अनुसार जो युगों से छुपा
२६ हुआ था, परंतु अब प्रकाशित होकर, नबियों के ग्रंथों द्वारा शाश्वत
परमेश्वर के आदेशानुसार, सब जातियों में उद्घोषित है, जिससे कि वे
२७ विश्वास की अधीनता स्वीकार करें, उन्हीं अद्वैत प्रज्ञामय परमेश्वर
की यीशु ख्रिस्त द्वारा युगानुयुग स्तुति हो। आमेन।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब मैंने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा; क्योंकि पहिले आकाश और पहिली पृथ्वी का लोप हो चुका था और समुद्र का भी पता नहीं था। और मैंने देखा कि पवित्र नगरी, नूतन येरुशलेम, परमेश्वर की ओर से एवं स्वर्ग से उतर रही है। वह अपने दुल्हे के लिए श्रृंगार की हुई दुलहिन के सदृश सुसज्जित थी। फिर मैंने सिंहासन से गंभीर वाणी सुनी, 'देखो, मनुष्यों के बीच परमेश्वर का आवास। वह उनके साथ निवास करेंगे, वे लोग उनकी प्रजा होंगे और परमेश्वर स्वयं उनके साथ रहेंगे और उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेंगे। इसके अनंतर न मृत्यु रहेगी, न शोक, न विलाप और न कष्ट, क्योंकि पहिली बातें बीत चुकी हैं।'

—प्रकाशनग्रंथ २१:१-४

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Printed at the G.L.S. Press, Bombay 75.